विश्वशांति महावीर विधान

गणिनी प्रमुख आर्यिका ज्ञानमती

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का २०६वाँ पुष्प

विश्वशांति

महावीर विधान

रचयित्री :

तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ निर्माण की पावन प्रेरिका,

दो सौ ग्रंथों की लेखिका, गणिनीप्रमुख आर्यिका शिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी

प्रकाशक :

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

हस्तिनापुर (मेरठ) उ० प्र०

फोन : (01233) 80184, 80236 email : jainravindra@yahoo.com

Websites : www.adinath.org www.jamboodweep-hastinapur.org

द्वितीय संस्करण	वीर नि० सं० २५२८	मूल्य
२२०० प्रतियाँ	२ अक्टूबर २००१	७०.००

प्रस्तावना

द्वारा - आर्यिका चन्दनामती

जिनेन्द्र भगवान का नाममात्र भी प्रत्येक प्राणी के लिए शांतिदायक होता है तथा उससे पापों का नाश होता है, इस बात को आचार्य श्री मानतुंग स्वामी ने भक्तामरस्तोत्र के नवमें काव्य में स्वयं कहा है -

आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं,
त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि।।

अर्थात् हे जिनेन्द्र ! आपके निर्दोष स्तवन में तो अचिन्त्य शक्ति है ही, परन्तु आपकी पवित्र कथा का सुनना ही प्राणियों के पापों को नष्ट कर देता है। जैसे सूर्य तो दूर ही रहता है, परंतु उसकी उज्जवल किरणें ही सरोवरों में कमलों को विकसित कर देती हैं।

उपर्युक्त कथन का तथ्य यह है कि इस धरती पर सदैव से ही पापों का क्षालन करने के लिए प्रभुभक्ति का सहारा लेने का उपदेश हमारे ऋषियों ने दिया है क्योंकि पुराणों में भक्ति को नदी की उपमा प्रदान कर उसमें स्नान करने की प्रेरणा आई है। जैन परम्परा यद्यपि ईश्वर को पूर्ण वीतरागी मानकर उन्हें किसी के सुख-दुख का कर्ता स्वीकार नहीं करता है, फिर भी भावों से की गई भगवान की भक्ति से सबके मनोरथों की सिद्धि इसलिए हो जाती है कि भक्ति से परिणामों में पवित्रता आती है, पुण्यकर्म का आश्रव होता है और पापकर्म स्वयं नष्ट होकर कार्य की सिद्धि हो जाती है। कर्मसिद्धान्त के इस गूढ़ रहस्य को जैनधर्म के अतिरिक्त किसी धर्म ने नहीं माना है।

पूर्व में बंधे कर्मों को पूरे समय तक फल देकर नष्ट होने एवं समय से पूर्व अकाल में उन कर्मों को नष्ट करने के लिए भक्ति, पूजा-विधान, यज्ञ आदि की परम्परा प्राचीनकाल से रही है, जैसे-महासती मैनासुन्दरी ने एक मुनिराज की प्रेरणानुसार अष्टान्हिका पर्व में सिद्धचक्र विधान की पूजन

करके अपने पति एवं सात सौ कुष्टरोगियों का रोग समाप्त कर दिया था। तब से सिद्धचक्र विधान की परम्परा आज तक चली आ रही है।

भक्ति-विधानों की प्राचीन श्रृंखला को नया रूप प्रदान किया जैनसमाज की प्रमुखसाध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी ने। सन् १९७४ से जब से उन्होंने अपनी सरस और सरल भाषा में विधानों का लेखन प्रारम्भ किया तब से समाज में एक नई चेतना आई है और लोगों ने विद्वान् एवं संगीतज्ञों का पुनर्मूल्यांकन करना सीख लिया है। जिन विद्वानों को मात्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं यदा-कदा अष्टान्हिका या दशलक्षण में समाज द्वारा आमंत्रित किया जाता था, उन विद्वानों को आज प्रतिमाह कहीं न कहीं विधानों में व्यस्त देखा जाता है। माताजी द्वारा क्रम क्रम से लिखे गये शांतिविधान, इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, तीनलोक, जम्बूद्वीप, ऋषभदेव, पंचपरमेष्ठी एवं ऋषिमण्डल आदि विधान तो इतने लोकप्रिय हो चुके हैं कि तमाम नास्तिक एवं आधुनिक नवयुवक भी इन्हें करके भावविभोर हो जाते हैं।

उपर्युक्त नामों के साथ-साथ लगभग ४० विधान जहाँ जनमानस में भक्ति की गंगा प्रवाहित कर रहे हैं वहीं अब अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर के २६००वें जन्मजयन्ती महोत्सव को भक्तिपूर्ण माहौल प्रदान करने हेतु पूज्य माताजी ने महोत्सव प्रारम्भ होने से पूर्व ही विश्वशांति **महावीर विधान** नाम से एक नूतन महाविधान रचकर १ जनवरी २००१ को नवनिर्मित तीर्थ **"तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली-प्रयाग"** में भगवान महावीर के श्रीचरणों में समर्पित कर भक्तों के लिए नई भक्तिसरिता में स्नान करने का अवसर प्रदान किया है।

इस महावीर विधान को २६००वीं जन्मजयंती से जोड़ते हुए रचयित्री ने इसमें महावीर स्वामी के गुण, नाम, विशेषण एवं उनके पुण्य आदि गुणों का बखान करते हुए पूरे २६०० मंत्र लिखे हैं जो लेखिका की असीम जिनेन्द्रभक्ति के साथ ही श्रुतज्ञान प्रखरता का परिचय प्रदान करते हैं।

कितने दिन में लिखा गया है यह विधान -

भगवान महावीर के २५२६वें निर्वाणदिवस के समापन एवं २५२७वें

वर्ष के प्रारम्भ में कार्तिक कृष्णा अमावस दिनाँक २७.१०.२००० मंगलवार को मंगलाचरण पूर्वक प्रारम्भ किये गये इस अतिशयकारी महाविधान का लेखन १.१.२००१ सोमवार, वीर निर्वाण संवत् २५२७ पौष शुक्ला षष्ठी को पूर्ण हुआ। अर्थात् पूरे ६६ दिन तक लिखी गई १३५ पृष्ठों की यह कृति ६७वें दिन स्वयं अपने करकमलों द्वारा पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने प्रभुचरणों में समर्पित कर असीम आल्हाद का अनुभव किया।

मंत्रों ने प्रदान की शारीरिक ऊर्जा -

पूज्य माताजी का संघ सहित सन् २००० का वर्षायोग एक भक्तिमान् श्रावक श्री अंनिल कुमार जैन के विशेष निवेदन पर उनके द्वारा मकान परिसर में स्वनिर्मित कमलमंदिर प्रीतविहार-दिल्ली में हुआ। वहाँ भगवान ऋषभदेव अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत जैन समाज प्रीतविहार द्वारा आयोजित कैलाशमानसरोवर यात्रा, ऋषभदेव तपस्थली प्रयाग तीर्थ निर्माण आदि भावी योजनाओं के साथ ही माताजी के मन-मस्तिष्क में सन् २००१ से प्रारम्भ होने वाले महावीर २६००वें जन्मोत्सव वर्ष में आयोजित करने वाले अनेक कार्यक्रमों की योजना प्रादुर्भूत हुई, जिसके विषय में उन्होंने कतिपय आचार्यों एवं समाज के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं से बातचीत कर उन्हें धीरे-धीरे क्रियान्वित करने का निर्णय लिया पुनः वर्षायोग समापन की प्रत्यूष बेला में कमल मन्दिर में निर्वाण लाडू चढ़ते-चढ़ते ही वे कुछ क्षणों के लिए महावीर स्वामी के ध्यान में लीन हो गईं, बस उसी ध्यान में अन्तर्प्रेरणा प्राप्त हुई और लेखनी उठाकर उन्होंने कुछ लिखना प्रारम्भ कर दिया। मेरी दृष्टि उनकी लेखनी पर गई तो पाया कि सिद्धों की वन्दना से किसी नई कृति का शुभारम्भ हुआ है।

उसकी प्रारम्भिक पंक्ति हैं -

सिद्धों की भक्ति वंदना ही, सब मनोकामना सिद्ध करे।
अर्हन्तों को प्रणमन करते, सम्पूर्ण अमंगल विघ्न टरें।।

लेखिका के अन्तर्ज्ञान से निकले ये शब्द वास्तव में इनकी कार्यसिद्धि में तो कारण बने ही, १ नवम्बर २००० को दिल्ली से संघ का

विहार होने के बाद भी इनकी लेखनी निरंतर निर्बाध चलती रही और हम सभी को वे मंत्र शक्ति प्रदान करते रहे तभी प्रयाग की पूरी यात्रा व्यापक धर्मप्रभावना के साथ ५८ दिन में निर्विघ्न सम्पन्न हो गई।

बन्धुओं ! विधान के २६०० मंत्रों की शब्दवर्गणाओं ने जिसप्रकार हम लोगों को शारीरिक एवं आध्यात्मिक ऊर्जा प्रदान की है, उसी प्रकार इस विधान को करने पर आप भी अपने अन्दर आरोग्यता एवं बलिष्ठता का संचार पाएंगे, साथ ही आपके आर्थिक संकट दूर होकर खूब धन-धान्य की वृद्धि होगी।

हस्तलिखित कृति का लोकार्पण किया केन्द्रीय मंत्री धनंजय जैन ने-

पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली प्रयाग दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र पर ४ फरवरी से ८ फरवरी २००१ तक आयोजित किये गये पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महाकुम्भ मस्तकाभिषेक महोत्सव के अवसर पर ८ फरवरी को मस्तकाभिषेक एवं एकवर्षीय ऋषभदेव अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष की समापन बेला में पधारे केन्द्रीय वस्त्र एवं उद्योगमंत्री श्री वी. धनंजय कुमार जैन ने जैनसमाज के सर्वोच्च नेता साहू श्री रमेशचन्द जैन की अध्यक्षता में माताजी द्वारा हस्तलिखित **महावीर विधान** का जनता के समक्ष लोकार्पण किया।

हस्तलिखित प्रति का दर्शन हस्तिनापुर में होगा -

इस विधान की मुद्रित प्रतियाँ श्रद्धालुओं तक पहुँचाने के साथ ही इसकी हस्तलिखित ऐतिहासिक प्रति जम्बूद्वीप लाइब्रेरी में सुरक्षित रखी गई है, पूज्य माताजी के हस्तलिखित ग्रन्थों का दर्शन करने वाले लोगों के लिए इस विधान की कृति भी हस्तिनापुर में उपलब्ध रहेगी।

विधान की कतिपय पंक्तियाँ, जो अन्तरिम भाव एवं ज्ञान को दरशाती हैं -

पूज्य माताजी ने अपने अनेकानेक साहित्य सृजन के प्रारम्भ में सिद्ध प्रभु की वन्दना के साथ आगे कलम चलाई है। इसका कारण पूछने पर वे बतलाती हैं कि "सिद्ध" या "सिद्धि" शब्द कार्य की निविघ्न पूर्णता कर मनवाञ्छित फल की सिद्धि करवाता है तथा सम्पूर्ण कर्मों से रहित सिद्धपरमेष्ठियों के नमन से हमारी शब्दवर्गणाएं सिद्धशिला तक पहुँचकर

वहाँ का स्पर्श कर इष्ट की सिद्धि कर देती हैं।

इस प्रकार विधान की प्रारम्भिक वन्दना में सिद्धपद को प्राप्त हो चुके तीस चौबीसी तीर्थंकर भगवन्तों को नमस्कार करके अपनी मनोभावना भी झलकाई है -

महावीर प्रभू के प्रसाद से, यह विधान अतिशायी होगा।
नलिनीदल पर जलविन्दु यथा, मोतीसम सुन्दर चमकेगा।।
यह सब जग में मंगलकारी, यह सर्वविघ्नहारी होगा।
सब जन मन में सौहार्द करे, सबको ही सुखकारी होगा।।१४।।

अर्थात् उन्होंने आचार्य श्री मानतुंगस्वामी की तरह से अपनी लघुता प्रदर्शित करते हुए उपर्युक्त छन्द में यह कहा है कि हे प्रभो ! दुनिया के लोग मेरे शब्दों में चमत्कार मानने लगते हैं किन्तु वास्तव में मेरे शब्दों में तो आपकी स्तुति करने की कोई शक्ति ही नही हैं फिर भी वे भक्तिरूप परिणत हो जाने पर यदि अतिशयपूर्ण बन जाते हैं तो उसमें आपकी कृपाप्रसाद का ही फल छिपा रहता है। जैसे कि जल की बूंद जब कमल पत्र पर पड़ती है तो वह मोती के समान सुन्दर दिखने लगती है उसी प्रकार मेरे द्वारा रचित यह पूजा-विध्ससनरूपी जलबिन्दुएँआपकी भक्तिरूपी कमलपत्र के संसर्ग से मोती के समान चमकदार-सुन्दर चमत्कारिक बन जाएंगी, तभी वे जगत के लिए मंगलकारी फल प्रदान करने में सक्षम होंगी।

इस प्रकार शंभु छन्द के १६ पद एवं एक दोहा सहित १७ छन्दों में विधान की प्रारम्भिक "वन्दना" विशेष पठनीय है पुनः संस्कृत में "श्रीमहावीर जिनस्तोत्र" है जिसमें महावीर स्वामी के पंचकल्याणक की तिथियाँ, माता-पिता, जन्मनगरी, निर्वाणभूमि के नाम हैं तथा शरीर की अवगाहना, वर्ण आदि का वर्णन इस स्तोत्र की सर्वांगीणता का प्रतीक है। उसके आगे हिन्दी में पद्यमयी (शंभु छन्द में) **"महावीर स्तोत्र"** है, इसे पढ़कर मंडल पर रत्नमिश्रित पुष्पांजलि क्षेपण करने एवं अनेक प्रकार के वाद्य बजाने का संकेत दिया गया है।

विधान की पूजन प्रारंभ करने से पूर्व उक्त विधि के पश्चात् पूज्य माताजी ने मंडल के ऊपर चारों दिशाओं में जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र सम्बन्धी

तीनचौबीसी के ७२ तीर्थंकर एवं ऐरावत क्षेत्र के तीन चौबीसी के ७२ तीर्थंकरों के नाम वाले **६ अर्घ्य** दिये हैं, विद्यमान बीस तीर्थंकरों का **१ अर्घ्य** है तथा एक सौ सत्तर कर्मभूमियों में जन्में अनन्तानन्त तीर्थंकरों को **१ अर्घ्य** समर्पित किया है। इन अर्घ्यों में मण्डल के ऊपर मध्यलोक की रचना के अनुसार दिशाओं का विभाजन किया गया है, जैसे- जम्बूद्वीप रचना में सुमेरू पर्वत की दक्षिण दिशा में भरत क्षेत्र रहता है अतः मंडल पर भी सर्वप्रथम दक्षिण दिशा में भरतक्षेत्र की त्रिकाल चौबीसी के (भूत, वर्तमान एवं भविष्यत्कालीन तीर्थंकरों के) **तीन अर्घ्य** चढ़ाने का विधान है और ऐरावत क्षेत्र मेरूपर्वत की उत्तर दिशा में है अतः ऐरावतक्षेत्र की त्रिकालचौबीसी के **तीन अर्घ्य** मंडल पर उत्तर दिशा में चढ़ाना है पुनः पूर्व दिशा में विदेह क्षेत्र के विद्यमान बीस तीर्थंकरों का **एक अर्घ्य** एवं अनन्त तीर्थंकरों का **एक अर्घ्य** पश्चिम दिशा में अर्पित किये जाने का क्रम बतलाया है।

प्रारम्भ में पूज्य माताजी ने इन तीर्थंकर भगवन्तों के जो अर्घ्य दिये हैं उनका अभिप्राय यह है कि आजकल जो महावीर को जैनधर्म का संस्थापक मानने लगे उन्हें यह पता चले कि महावीर से पहले भी इस धरती पर अनंत तीर्थंकर हो चुके हैं और भविष्य में भी अनंत-अनंत तीर्थंकर होते रहेंगे।

इसके बाद मंडल पर सामने भगवान महावीर के पंचकल्याणक के **पाँच अर्घ्य** चढ़ाकर विधान की समुच्चय पूजन प्रारम्भ हो जाती है। इन पंचकल्याणक अर्घ्यों में से भी गर्भकल्याणक के प्रथम अर्घ्य का पद्य यहाँ प्रस्तुत है जिसे पढ़कर आप बिना दीर्घकाय पुराणग्रंथ पढ़े ही तमाम ज्ञान प्राप्त कर लेंगे -

शंभु छन्द - सिद्धार्थ महानृप कुंडपुरी में त्रिशला माँ के आंगन में।
प्रतिदिन त्रयकाल रत्नवृष्टी की पन्द्रह महिने धनपति ने।।
सोलह स्वप्ने माता देखे आषाढ़ सुदी छठ गर्भागम।
इन्द्रों ने गर्भकल्याणक उत्सव किया वीर प्रभु का उत्तम।।१।।

इस पद्य के माध्यम से पूज्य माताजी ने आप सभी को भगवान महावीर की जन्मनगरी कुण्डपुर-कुण्डलपुर, पिता सिद्धार्थ, माता त्रिशला

और उनके द्वारा आषाढ शुक्ला षष्ठी तिथि को देखे गये सोलह स्वप्नों के साथ गर्भकल्याणक में कुबेर द्वारा की गई रत्नवृष्टि का महत्व बतलाया है।

वर्तमान में कुछ लोग महावीर की जन्मभूमि वैशाली कहने लगे हैं जो आगमदृष्टि से असंगत लगता है। यद्यपि वैशाली और कुण्डलपुर ये दोनों ही नगर विहार प्रान्त में स्थित हैं फिर भी इस विषय में सही तथ्य जानने के लिए हमें मूलविषयवस्तु को जान लेना आवश्यक होगा। जैसा कि उत्तरपुराण, हरिवंशपुराण, तिलोयपण्णत्ति, वीरजिणिन्दचरिउ आदि ग्रन्थों में स्पष्ट आया है कि - वैशाली नगरी के राजा चेटक और उनकी रानी सुभद्रा से त्रिशला, मृगावती, सुप्रभा, प्रभावती, चेलना, ज्येष्ठा और चन्दना ये ७ पुत्रियाँ उत्पन्न हुईं और धनदत्त, धनभद्र, उपेन्द्र, शिवदत्त, हरिदत्त, कम्बोज, कम्पन, प्रयंग, प्रभंजन और प्रभास इन दस पुत्रों ने जन्म लिया, उनमें सबसे बड़ी पुत्री त्रिशला का विवाह कुण्डलपुर के राजा सर्वार्थ के पुत्र सिद्धार्थ के साथ हुआ था। इन्हीं राजा सिद्धार्थ की महारानी त्रिशला के आँगन में तीर्थंकर बालक के जन्म से १५ मास पूर्व से धनकुबेर ने रत्नवृष्टि की थी। जैसा कि सैद्धान्तिक नियमानुसार प्रत्येक तीर्थंकर की माता के आँगन में ही रत्नवृष्टि होती है, इसलिए कुण्डलपुर ही महावीर की जन्मभूमि है ऐसा माना गया है।

वैशाली तो महावीर के नाना का घर था अतः वहाँ महावीर का जन्म भला कैसे माना जा सकता है? जैन समाज की निष्क्रियता के कारण भले ही "कुण्डलपुर" तीर्थ अधिक महिमामण्डित नहीं हो पाया किंतु महावीर के काल में वैशाली से अधिक कुण्डलपुर की पूज्यता एवं बड़ी सीमा थी क्योंकि यह एक निर्विवाद सत्य है कि तीर्थंकर के शासन काल में उनसे बड़ा कोई राजा इस धरती पर नहीं होता है तथा छोटे-मोटे राज्य और राजा तो तीर्थंकर भगवान के दासानुदास होने में ही अपना परम सौभाग्य समझते हैं। वैशाली नगर के अस्तित्व को कथमपि नकारा नहीं जा सकता क्योंकि राजा चेटक के पुत्रों का अधिकार एवं क्रमपरम्परा से वहाँ चेटक के पौत्र, प्रपौत्रों की राज्यसत्ता रही ही होगी, ऐसे में वहाँ महावीर की

विराट सत्ता का प्रश्न कैसे उठ सकता है ? प्रत्येक पुत्र अपने पिता की सम्पत्ति का स्वामी बन पाता है पुनः क्या उनके गर्भकल्याणक एवं जन्मकल्याणक के समय वैशाली में नाना - नानी के आंगन में रत्न बरसे होंगे ? विद्वान इन विषयों पर गम्भीरता से विचार करें और कुण्डलपुर नगरी को महावीर जन्मभूमि के साभाग्य से वंचित न होने दें।

वैशाली में यदि कोई पुरातत्व अवशेष प्राप्त होते हैं तो कोई अतिशयोक्ति वाली बात नहीं है क्योंकि महावीर के जन्मकाल में कुण्डलपुर अति विस्तृत (९६ मील की) नगरी थी और उसी में वैशाली की सीमा भी मन्दिर-मूर्तियों से समन्वित तो रही ही होगी। यदि महावीर जन्मजयंती के अवसर पर वैशाली का उद्धार और विकास हो रहा है तो भी कोई गलत नहीं है किंतु महावीर जन्मभूमि के नाम से उसे प्रचारित करने पर कहीं ऐसा तो नहीं कि असली जन्मभूमि कुण्डलपुर जैन समाज के हाथों से ही निकल जाए, क्योंकि किसी का जन्म दो स्थानों पर तो हो नहीं सकता। जो भी हो ! यह प्रौढ़ता के साथ निर्णय करने का विषय है। किसी भी दिगम्बर जैन ग्रन्थ में वैशाली को राजा सिद्धार्थ की राजधानी एवं महावीर की जन्मभूमि नहीं माना है।

इस विश्वशांति महावीर विधान की प्रथम समुच्चय पूजा एवं उसकी जयमाला सुन्दर पठनीय है जिसमें भगवान के जन्माभिषेक को करने एवं देखने से सम्यग्दर्शन प्राप्त होने का वर्णन है।

दूसरी पूजा में अष्टक के पश्चात् १०० अर्घ्य हैं पुनः जयमाला से पूर्व जाप्य मंत्र के साथ विश्वशांति की भावना भाते हुए १०८ रत्नों से जाप्य करने का निर्देश है। इसी प्रकार पूजा नं. ३ में २०० अर्घ्य हैं, पूजा नं. ४ में २०० अर्घ्य हैं, पाँचवी पूजा में ३०० अर्घ्य हैं, छठी पूजा में ३०० अर्घ्य हैं, सातवीं पूजा में ४०० अर्घ्य, आठवीं पूजा में ५०० तथा अंतिम नवमी पूजा में ६०० अर्घ्य हैं इस प्रकार कुल १००+२००+२००+३००+ ३००+४००+५००+६०० = **२६०० अर्घ्य** इस विश्वशांति महावीर विधान में संजोये गये हैं। इन अर्घ्य के मंत्रों में जो रहस्य और सार छिपा है उनको आप विधानाचार्य के माध्यम से अथवा एकाग्रतापूर्वक स्वाध्याय से प्राप्त कर

सकते हैं। मैं यहाँ पर विषय को अधिक न बढ़ाकर प्रत्येक पूजा के अन्त में दिया गया गीता छन्द प्रस्तुत कर रही हूँ -

जो विश्वशांती महावीर, विधान भक्ती से करें।
सब आपदायें दूर कर, सर्वत्र सुख शांती भरें।।
तीर्थेश प्रभु का मेरु पर, जन्माभिषेकोत्सव करें।
फिर स्वयं तीर्थंकर बनें निज "ज्ञानमति" सम्पति भरें।।

अर्थात् अपनी आपत्तियों की निवारण भावना के साथ-साथ इसमें सम्पूर्ण विश्व के प्रति शांति की भावना निहित है जो जैनधर्म की उदारता का परिचायक है। विधान में अंत की बड़ी जयमाला में भगवान महावीर के समवसरण का वर्णन कर यह भावना भायी है कि -

व्यवहार नयाश्रित भक्ती से, चैतन्य कमल विकसित कीजे।
निश्चयनय से निज में तिष्ठूँ, ऐसी शक्ती मुझको दीजे।।
चिंतित फलदात्ता चिन्तामणि, वाञ्छित फलदाता कल्पतरू।
कैवल्य "ज्ञानमति" प्राप्त करूं, निजआत्म सुधारस पान करूं।।

अर्थात् भगवान की भक्ति करना व्यवहारनय है और आत्मा में रमण करना निश्चयनय है इसलिए लेखिका ने भक्ति के फल में आत्मरमण की भावना व्यक्त करते हुए अपनी भावविशुद्धि का परिचय दिया है।

विधान का मूलमंत्र -

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय विश्वशांतिकराय सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः इस ३१ अक्षरी मंत्र की सामूहिक उच्चध्वनि निश्चितरूप से विधानकर्ताओं को सर्वसुख प्रदान करेगी और विश्वभर में शांति के परमाणु भी फैलकर सभी को शांति प्रदान करेंगे।

विधान के जाप्यानुष्ठान में यही मंत्र जपें अथवा - **ॐ ह्रीं विश्वशांतिकराय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय नमः** मंत्र जपें।

विधान का मंडल कैसा है ?

महावीर जन्मजयंती के उपलक्ष्य में लिखे गये इस विधान के **मंडल** को पूज्य माताजी ने **सुमेरू पर्वत** का आकार प्रदान किया है इसमें नीचे से ऊपर तक भद्रशाल, नन्दन, सौमनस एवं पाण्डुक ये चारवन होते हैं, इनमें २६०० अर्घ्यों में प्रत्येक अर्घ्य के साथ एक-एक रत्न चढ़ाना है तथा प्रत्येक पूजा के अन्त में १०८ बार होने वाले जाप्य के मंत्र में पीले पुष्प के

एक-एक रत्न लेकर मंत्र जपना है। इन मंत्रित रत्नों को श्रावक श्राविकाओं को वितरित करना है। इस प्रकार इस विधान को करते-करते आप सभी सुमेरू पर्वत की यात्रा करके असीम पुण्य का संचय भी करेंगे।

मंडल पर किस क्रम से अर्घ्य चढ़ाना है ?

कम से कम ८×८ या अधिक से अधिक २६×२६ फुट के स्टेज पर सुमेरु पर्वत का आकार सुन्दर रंग-बिरंगी रांगोली से बनाकर सबसे ऊपर पाण्डुकशिला के प्रतीक में सुमेरू की चूलिका पर ऊँचे सिंहासन के ऊपर भगवान महावीर की ७ या ६ इंच प्रतिमा विराजमान करें पुनः अर्घ्य चढ़ाने का क्रम निम्न प्रकार रहेगा।

पांडुकवन में	-	१०० अर्घ्य (पूजा नं. २ के)
सौमनसवन में	-	४०० अर्घ्य (पूजा नं. ३ और ४ के)
नंदनवन में	-	१००० अर्घ्य (पूजा नं. ५,६,७ के)
भद्रशालवन में	-	११०० अर्घ्य (पूजा नं. ८ एवं ६ के)

इस प्रकार ऊपर विराजमान भगवान महावीर के श्रीचरणों के समीप से अर्घ्य एवं रत्न चढ़ाते-चढ़ाते क्रमशः नीचे भद्रशालवन की ओर अर्घ्य और रत्न चढ़ाना है।

अर्घ्य में श्रीफल (कच्चे नारियल), सूखे गोले (छीलकर केशर में रंगकर) अथवा बादाम में से कोई भी चीज अपनी शक्ति और भक्ति के अनुसार चढ़ाई जा सकती है। क्योंकि उत्तमफल की प्राप्ति के लिए सर्वोत्तम सामग्री चढ़ाना ही श्रेयस्कर है। चावल आदि अष्टद्रव्य की सामग्री सुमेरू पर्वत के मंडल पर न चढ़ाकर वहाँ एक थाली रखकर उसमें चढ़ावें और बाद में प्रतिदिन वह सामग्री नीचे चढ़ी हुई पूजन सामग्री में ही मिला दें।

यह विश्वशान्ति महावीर विधान करने वाले, कराने वाले, देखने वाले, पढ़ने वाले, सुनने वाले एवं अनुमोदना करने वाले सभी अस्तिकवादियों का कल्याण करे, सम्पूर्ण राज्य, राष्ट्र एवं विश्व भर के राजा, प्रजा के लिए सुभिक्ष तथा शांतिकारी होवे इसी मंगल भावना के साथ अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर के चरणों में कोटि-कोटि नमन तथा विधान की रचयित्री पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के चरणों में शत-शत वन्दन।

सुमेरू पर्वत का चित्र

卐 विश्वशान्ति महावीर विधान 卐

वंदना

शंभु छंद

सिद्धों की भक्ति वन्दना ही, सब मनोकामना सिध्द करे।
अर्हंतों को प्रणमन करते, संपूर्ण अमंगल विघ्न हरे।।
श्री ऋषभदेव से महावीर तक, चौबिस तीर्थंकर प्रणमूं।
आचार्य उपाध्याय साधु नमूँ, मां सरस्वती को भी प्रणमूं।।१।।
ढाई द्वीपों में इक सौ सत्तर, उत्तम कर्मभूमियां हैं।
बस इक सौ साठ विदेह क्षेत्र- में शाश्वत कर्मभूमियां है।।
जो पांच भरत पण ऐरावत, षट्काल परावर्तन इनमें।
दश आर्य खण्ड में चतुर्थ काल, में सुखकर तीर्थंकर जन्में।।२।।
शाश्वत- अशाश्वत कर्मभूमि, इनमें तीर्थंकर होते हैं।
जिनधर्म अनादि- अनिधन है, इस पालकजन अघ धोते हैं ।।
हो चुके अनन्तों तीर्थंकर, आगे भी अनन्तों होवेंगे ।
हैं वर्तमान सुविदेहों में, भव्यों को शिवप्रद होवेंगे ।। ३ ।।
इस वर्तमान अवसर्पिणि में, सुतृतिय काल के अंतिम में।
पहले तीर्थंकर ऋषभदेव, जन्में थे पुरी अयोध्या में ।।
तब भोगभूमि का अन्त हुआ, शुभ कर्मभूमि प्रारंभ हुई।
प्रभु कथित असी मसि आदि क्रिया, से कर्मसृष्टि उत्पन्न हुई।।४।।
युग की आदी में ऋषभ देव, सब विद्याओं के जनक हुये।
संपूर्ण कला औ वर्णव्यवस्था- धर्मविधाता प्रथम हुये।।
ऋषभेश के पौत्र मरीची ने, यद्यपि साधूपद धारा था।
पर धर्ममार्ग से चलित हुये, नहिं मिला भवाब्धि किनारा था।।५।।
फिर धर्म ग्रहण कर अन्तिम- तीर्थंकर सन्मति होकर जन्में।
महावीर बने जिनधर्म अहिंसा, के उपदेष्टा थे जग में ।।
ये चौबिसवें तीर्थंकर हैं, महावीर नाम से जग जाने।
ये वर्तमान जिनशासनपति, इस विध जिनशास्त्र सभी मानें।।६।।

इन श्रोता मुख्य हुये श्रेणिक, वे ही आगे उत्सर्पिणि में।
होंगे तीर्थंकर महापद्म, युग सृष्टिविधाता भी प्रथमें।।
भावी तीर्थंकर परंपरा के, अतः वीर प्रभु जनक अहो।
इस युग के अन्तिम तीर्थंकर, नहिं अन्तिम हैं श्रुत से समझो ।।७।।
अब छब्बिस सौंवा जन्म दिवस, इन महावीर का आया है।
जिनधर्म अहिंसामय शासन का, धर्मध्वज लहराया है।।
यह जन्म जयंती महा महोत्सव, एक वर्ष तक अति पावन।
भारत में क्या संपूर्ण विश्व में, धर्म महोत्सव मनभावन।।८।।
श्री प्रधानमंत्री राष्ट्रपति भी, सहभागी इस उत्सव में।
सब भेद भाव तज जैन सभी मिल, भक्ति करें इस उत्सव में।।
जैसे तब प्रभु के जन्मसमय में, हिंसा की अतिवृध्दी थी।
वैसे ही वर्तम्रान में हिंसा-पिशाचिनी तांडव करती।।९।।
अब वर्तमान में आवश्यकता, महावीर जन्मोत्सव हो।
हो नगर नगर में गली गली में, धर्म अहिंसा की जय हो।।
यह विश्व शांतिकर धर्म अहिंसा, परम वीर प्रभु का शासन।।
संपूर्ण विश्व में ऋषभदेव, महावीर नाम गूंजे पावन।। १०।।
इसलिये प्रेरणा दी मैंने, सब प्रथम ऋषभप्रभु गुण गावो।
निर्वाण महोत्सव अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनवाओ।।
मानव संस्कृति के आद्य प्रणेता, ऋषभदेव हैं सब मानें।
जिन शास्त्र व वैदिक वेद पुराणों, में वर्णित सब जग जानें ।। ११ ।।
इस जैन धर्म के संस्थापक, नहिं महावीर प्रभु हो सकते।
ऋषभादिक तेविस तीर्थंकर, हो चुके पूर्व इस भूतल पे।।
अतएव ऋषभ निर्वाणोत्सव का, वर्ष मनाया सब जग ने।
उद्घाटन किया है दिल्ली में, भारत के प्रधानमंत्री ने।।१२।।
महावीर जयंती उत्सव भी, अब एक वर्ष तक होवेगा।
छब्बीस सौवां यह जन्मोत्सव, सब जग में सुखप्रद होवेगा।।
मेरे मन में हो रहे भाव, महावीर जयंती उत्सव में।
छब्बीस सौ मंत्र के अर्घ्य रचूं, महावीर विधान बनाऊं मैं।।१३।।

महावीर प्रभू के प्रसाद से, यह विधान अतिशायी होगा।
नलिनी दल पर जलबिंदु यथा, मोतीसम सुंदर चमकेगा।
यह सब जग में मंगलकारी, यह सर्वविघ्नहारी होगा।
सब जन-जन में सौहार्द करे, सबको ही सुखकारी होगा।।१४।।

यह विश्वशांति महावीर विधान, सुमंत्र सहित महिमाशाली।
त्रिभुवन शेखर चूड़ामणि सन्मति, प्रभु अनंत गुणमणिमाली।।
मैं नमूं अनंतों बार नमूं, मेरी रत्नत्रय निधी मिले।
महावीर विधान इष्टफल दे,सब जन-जन के मनकमल खिलें।।१५।।

दोहा - सिद्ध अनंतानंत को, त्रिधा नमूं शिर टेक।
अगणित फल देती सदा, प्रभु भक्ती ही एक ।। १६।।

ॐ विश्वशान्ति-महावीरविधान महायज्ञप्रतिज्ञापनाय मण्डलस्योपरि
पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(मंडल पर पुष्पाञ्जलि क्षेपण करें)

श्रीमहावीरविश्वशांतिजिनस्तोत्रम्

(संस्कृत)

(मयूरगतिछंद - २३ अक्षरी)

सिद्धिवधूप्रियनाथ! जिनेश्वर! वीर! महागुणरत्नसुराशे !
कुण्डपुरे त्रिशलाजननी बहुपुण्यवती सुरवृंदनुतासीत्।।
मंगलदं भुवि हर्षकरं जिन! गर्भमवाप शुचौ सितषष्ट्यां।
सन्मतिदेव! सदा मम सन्मतये भवतात् प्रणमामि मुदा त्वाम्।।१।।

(तन्वीछंद - २४ अक्षरी)

चैत्रसिते या जिनजनिरभवत्, सा त्रययुक्तदशमदिवसे वै।
देवसुरेन्द्रैः सुरगिरिशिखरे, जन्ममहोत्सवविधिरभिनीतः।।
मार्गसुकृष्णे दशमितदिवसे, रत्नमहाव्रतगुणविधृतस्त्वम्।
भूर्युपसर्गं भव इति बिहितः, ध्यानरतो नहि विचलितचित्तः।।२।।

(क्रौंचपदाछंद- २५ अक्षरी)

घातिविघाती केवलबोधः स्फुरितसकलभुवि निजरविरुदितः।
माधवमासे शुक्लदशम्यां त्रिभुवनमिदमिति करतलफलवत्।।
श्रावण आद्ये गीस्तव दिव्या भविजनहृदयकमलमुदमकरोत्।
आयुरभूद् द्वासप्ततिवर्षास्तव जिनवर! मम भव शिवगतये ।। ३ ।।

तन्वीछंद - (२४ अक्षरी)

कार्तिकमासे शिवपदमगमत्, कृष्णचतुर्दशदिवसनिशांते।
तीर्थसुपावापुरमिह भणितं सप्तकरोच्छ्रित इति कनकाभः।।
बालयतिस्त्वं जिनवरचरमो मृत्युजयी खलु मृगपतिचिन्हः।
नौम्यतिवीरं शमदमकथकं वीरमनंतमतुलसुखराशिम्।। ४ ।।
स्यादिति वादः सुवचनममृतं ते जिनसंसृतिगदमपहर्तृ।
मारजयी त्वं हरमदहरणो नाथ सुवंशतिलक इहलोके।।
ज्ञानमतिश्री झटिति भवतु मे भक्तिवशात् तव मुनिगणवंद्या।
स्वात्मजसिद्धिर्ध्रुवसुखजननी सन्मतिदेव! सकलविमला स्यात्।।५।।

अनुष्टुप् छंद

वर्द्धमानो महावीरः, श्रीमान् सिद्धार्थनन्दनः।
यत्संस्तुतेः स्मृतेश्चापि, विघ्नौघः प्रलयं व्रजेत्।। ६।।
जीयाद् वीरांजनेंद्रस्य, शासनं जिनशासनम्।
प्रभवेत् वर्द्धमानस्य, धर्मचक्रं सदा भुवि।। ७ ।।
ॐ नमः श्रीमहावीरजिनेन्द्राय स्वर्णरजतादिपुष्पसमन्वितरत्नवृष्टिं करोम्यहम्।
(इस स्तोत्र को पढ़कर मंत्रोच्चारणपूर्वक मंडल पर स्वर्णपुष्प, चांदी पुष्प, बेला आदि फूलों से सहित रत्नों को बिखेरें - क्षेपण करें पुनः अनेक प्रकार के बाजे बजावें।)

महावीर जिनस्तोत्र (हिंदी)

शंभुछंद

महावीर! वीर! सन्मति! भगवान ! अतिवीर! सदा मंगल करिये।
हे वर्धमान! भववारिधि से, अब मुझको पार त्वरित करिये।।
वह कुंडलपुरि जगपूज्य हुई, सिद्धार्थ दुलारे जन्मे थे।
त्रिशला माता की गोदी में, त्रिभुवन के गुरुवर खेले थे।। १ ।।
आषाढ़ सुदी छठ पूज्य हुई, जब गर्भ में प्रभु अवतार लिया।
प्रियकारिणि माँ की सेवा का, सुर ललनाओं ने भार लिया।।
शुभ चैत्र सुदी तेरस का दिन, है धन्य धन्य वह सुखद घड़ी।
जब वर्द्धमान ने जन्म लिया, नभ से सुर पंक्ती उमड़ पड़ी।। २ ।।
प्रभु शैशव में अजगर फण पर, चढ़कर संगम सुर जीता था।
नहिं ब्याह किया, नहिं राज्य किया, जनता का मन भी जीता था।।
मगसिर वदी दशमी धन्य हुई, जब केंशलोच कीना तुमने।
नृप कूल ने प्रथम आहार दिया, पंचाश्चर्य किया देवगण ने।।३।।
कौशाम्बी में चंदनासती, शिर मुंडित जकड़ी बेड़ी में।
प्रभु दर्शन से बेड़ियां झड़ी, सुंदर तन हुआ एक क्षण में।।
कोदों भोजन हो गया खीर, प्रभु को आहार दे धन्य हुई।

यह महिमा तीर्थंकर प्रभु की, पंचाश्चर्यों की वृष्टि हुई।।४।।
अतिमुक्तक वन में ध्यान लीन, थे भव ने आ उपसर्ग किया।
तब अचलित प्रभु को देख स्वयं, भार्या सह पूजा भक्ति किया।।
वैशाख सुदी दशमी तिथि में, केवल रविकिरणें प्रगट हुईं।
शुभ समवसरण था रचा हुआ, दिव्यध्वनि फिर भी खिरी नहीं।।५।।
श्रावण श्यामा एकम उत्तम, जब गौतम गणधर आये हैं।
विपुलाचल पर ध्वनि प्रगट हुई, मुनिगण सुरनर हर्षाये हैं।।
हे वीरप्रभो! तव शासन में, मुझको रत्नत्रय निधी मिली।
मैं भक्ति सहित प्रणमूं तुमको, मेरी मन कलियां आज खिलीं।।६।।
तनु सात हाथ कांचन कांती, आयु बाहत्तर वर्ष कही।
है चिन्ह मृगेन्द्र प्रभो तेरा, जो ध्यावें पावें मोक्ष मही।।
कार्तिक वदि चौदश रात्रि अंत, आमावस का प्रत्यूष कहा।
सब कर्मनाश प्रभु मोक्ष गये, स्वात्मोत्थ सहज आनंद लहा।।७।।
पावापुर के उपवन में जो, सरवर है कमल खिलें उसमें।
प्रभु के निर्वाण कल्याणक से,अब तक भी कमल खिले सच में।।
देवों ने आकर पूजा की, महावीर प्रभू त्रिभुवनपति की।
अंधियारी में दीपक ज्वालें, तब से ही दीपावली हुई।। ८ ।।
हे वीर प्रभो! मंगलमय तुम, लोकोत्तम शरणभूत तुम ही।
भव भव के संचित पाप पुंज, इक क्षण में नष्ट करो सब ही।।
मैं बारंबार नमूं तुम को, भगवन्! मेरे भव त्रास हरो।
सज्ज्ञानमती सिद्धी देकर, स्वामिन्! अब मुझे कृतार्थ करो।। ९ ।।

ॐ ह्रीं मंडलस्योपरि रजत-स्वर्णपुष्प-मल्लिकाकमलादिपुष्प-पंचवर्ण-मयरत्नसमन्वितपुष्पांजलिं क्षिपेत्।)

(मंडल पर रजत पुष्प, स्वर्णपुष्प, बेला, मालती, कमलादि पुष्प तथा पंचवर्णी रत्न सहित पुष्पांजलि क्षेपण करें तथा अनेक प्रकार के बाजे बजावें।)

(मंडल पर चारों दिशाओं में क्रम से आठ अर्घ्य चढ़ावें)

मंडल पर दक्षिण दिशा में तीन चौबीसी के तीन अर्घ्य

(१) भूतकालीन चौबीस तीर्थंकर का अर्घ्य

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थित-श्रीनिर्वाणनाथ-सागरनाथ-महासाधु-नाथ-विमलप्रभनाथ-श्रीधरनाथ-सुदत्तनाथ-अमलप्रभनाथ- उद्धरनाथ-अंगिरनाथ-सन्मतिनाथ-सिंधुनाथ-कुसुमांजलिनाथ-शिवगणनाथ- उत्साहनाथ-ज्ञानेश्वरनाथ-परमेश्वरनाथ-विमलेश्वरनाथ-यशोधरनाथ-कृष्णनाथ-ज्ञानमतिनाथ-शुद्धमतिनाथ-श्रीभद्रनाथ-अतिक्रान्तनाथ-शान्तनाथ-नामभूतकालीन-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

(२) वर्तमानकालीन चौबीस तीर्थंकर का अर्घ्य

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थित-श्री ऋषभनाथ-अजितनाथ-संभवनाथ-अभिनंदननाथ-सुमितनाथ-पद्मप्रभनाथ-सुपार्श्वनाथ-चन्द्रप्रभनाथ-पुष्पदंतनाथ-शीतलनाथ-श्रेयांसनाथ-वासुपूज्यनाथ-विमलनाथ-अनंतनाथ-धर्मनाथ-शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरनाथ-मल्लिनाथ-मुनिसुव्रतनाथ-नमिनाथ-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-महावीरस्वामिनामवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं....

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

(३) भविष्य कालीन चौबीस तीर्थंकर का अर्घ्य

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थित-श्रीमहापद्मनाथ-सुरदेवनाथ-सुपार्श्वनाथ-स्वयंप्रभनाथ-सर्वात्मभूतनाथ-देवपुत्रनाथ-कुलपुत्रनाथ-उदंकनाथ-प्रौष्ठिलनाथ-जयकीर्तिनाथ-मुनिसुव्रतनाथ-अरनाथ-निष्पापनाथ-निष्कषायनाथ-विपुलनाथ-निर्मलनाथ-चित्रगुप्तनाथ-समाधिगुप्तनाथ-स्वयंभूनाथ-अनिवर्तकनाथ-जयनाथ-विमलनाथ-देवपालनाथ-अनन्तवीर्यनाथनामभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं....

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

मंडल पर उत्तर दिशा में तीन चौबीसी के तीन अर्घ्य

(४) भूतकालीन चौबीस तीर्थंकर का अर्घ्यं

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थित-श्रीपंचरूपनाथ-जिनधरनाथ-सांप्रतिकनाथ-ऊर्जयंतनाथ-आधिक्षायिकनाथ-अभिनंदननाथ-रत्नसेननाथ-रामेश्वरनाथ-अनंगोज्झितनाथ-विन्यासनाथ-अशेषनाथ-सुविधाननाथ-प्रदत्तनाथ-कुमारनाथ-सर्वशैलनाथ-प्रभंजननाथ-सौभाग्यनाथ-व्रतविंदुनाथ-सिद्धकरनाथ-ज्ञानशरीरनाथ-कल्पद्रुमनाथ-तीर्थफलेशनाथ-दिनकरनाथ-वीरप्रभनाथनामभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

(५) वर्तमानकालीन चौबीस तीर्थंकर का अर्घ्य

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थित-श्री बालचंद्रनाथ-सुव्रतनाथ-अग्निसेननाथ-नंदिसेननाथ-श्रीदत्तनाथ-व्रतधरनाथ-सोमचंद्रनाथ-धृतदीर्घनाथ-शतायुष्यनाथ-विवसितनाथ-श्रेयोनाथ-विश्रुतजलनाथ-सिंहसेननाथ--उपशांतनाथ-गुप्तशासननाथ-अनंतवीर्यनाथ-पार्श्वनाथ-अभिधाननाथ-मरुदेवनाथ-श्रीधरनाथ-शामकंठनाथ-अग्निप्रभनाथ-अग्निदत्तनाथ-वीरसेननाथनामभूतकालीन-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं.....।

शांतये शंतिधारा दिव्यपुष्पांजलिः।

(६) भविष्यकालीन चौबीस तीर्थंकर का अर्घ्य

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थित-श्री सिद्धार्थनाथ-विमलनाथ-जयघोषनाथ-नंदिसेननाथ-स्वर्गमंगलनाथ-वज्राधारिनाथ-निर्वाणनाथ-धर्मध्वजनाथ-सिद्धसेननाथ-महासेननाथ--रविमित्रनाथ-सत्यसेननाथ-चंद्रनाथ-महीचंद्रनाथ-श्रुतांजननाथ-देवसेननाथ-सुव्रतनाथ-जिनेंद्रनाथ-सुपार्श्वनाथ-सुकौशलनाथ-अनंतनाथ-विमलनाथ-अमृतसेननाथ-अग्निदत्तनाथनामभविष्यत्कालीन-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं.....

शांतये शांतिधारा। दिव्यपुष्पांजलिः।

(७) मंडल पर पूर्व दिशा में बीस तीर्थंकर का अर्घ्य

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचममहाविदेहक्षेत्रस्थित-श्रीसीमंधरनाथ-युगमंधरनाथ-बाहुनाथ-सुबाहुनाथ-संजातकनाथ-स्वयंप्रभनाथ-ऋषभाननाथ-अनंतवीर्यनाथ-सूरिप्रभनाथ-विशालकीर्तिनाथ-वज्रधरनाथ-चंद्राननाथ-चंद्रबाहुनाथ-भुजंगमनाथ-ईश्वरनाथ-नेमिप्रभनाथ-वीरसेननाथ-महाभद्रनाथ-

देवयशोनाथ-अजितवीर्यनाथनाम-विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं....
शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

मंडल पर पश्चिम दिशा में अर्घ्य

(८) एक सौ सत्तर कर्मभूमि के अनंतानंत तीर्थंकरों का अर्घ्य

सार्धद्वीपद्वये सप्त-त्युत्तराणि शतानि च।
सन्ति कर्मभुवस्तासु, त्रैकालिक जिनेश्वराः।।१।।
अनन्तानंततीर्थेशा, मोक्षमार्गप्रदर्शकाः।
तीर्थचक्रभृतश्चैतान्, वंदे सर्वार्थसिद्धये।।२।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधि-पंचभरत-पंचैरावत-पंचमहाविदेहस्थितसप्तत्युत्तरशत-कर्मभूमिषूत्पन्नभूतवर्तमानभविष्यत्कालीनानन्तानन्ततीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं.....
शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

पांच कल्याण के पांच अर्घ्य

(मंडल पर भगवान के सामने चढ़ावें)

शंभुछंद

सिद्धार्थ महानृप कुंडपुरी में, त्रिशला मां के आंगन में।
प्रतिदिन त्रयकाल रत्नवृष्टी की, पंद्रह महिने धनपति ने।।
सोलह स्वप्ने माता देखे, आषाढ़ सुदी छठ गर्भागम।
इंद्रों ने गर्भकल्याणक उत्सव, किया वीर प्रभु का उत्तम।। १ ।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लाषष्ठ्यां श्रीमहावीरजिनेन्द्रगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं.....

सित चैत्र त्रयोदशि जन्म हुआ, इंद्रों के आसन कंप हुये।
सुरगृह में बाजे स्वयं बजे, सुरपति के मुकुट भी नमित हुये।।
सुरपति ने मेरु पर ले जाकर, पयजल से न्हवन किया शिशु का।
जन्माभिषेक उत्सव कर वीर, व वर्द्धमानप्रभु नाम रखा।।२ ।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लात्रयोदश्यां श्रीमहावीरजिनेंद्रजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं....

प्रभु नाथवंश अवतंस बाल-ब्रह्मचारी मगसिरवदि दशमी।
बेला कर सालवृक्ष नीचे, षंड वन में दीक्षा ली स्वामी।।
लौकांतिक आदि सुरों ने भी, तपकल्याणक में भाग लिया।

नृपकुल ने प्रथम आहार दिया, पंचाश्चर्यों को प्राप्त किया।।३।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षदशम्यां श्रीमहावीरजिनेंद्रदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं....

बारह वर्षों तप करके प्रभु, वैशाख सुदी दशमी तिथि में।
जृंभिकाग्राम में ऋजुकूला, नदि तट पर सालवृक्ष तल में।।
ध्यानस्थ हुये केवली बने, प्रभु समवसरण गगनांगण में।
द्वादशगण भक्ति सहित बैठें, ज्ञानोत्सव किया शत इंद्रों ने।।४।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लादशम्यां श्रीमहावीरजिनेंद्रकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं..

छ्यासठ दिन ध्वनि नहिं खिरी इंद्र, गौतम लाये वे मुनी बने।
श्रावण बदि एकम ध्वनि प्रगटी, रचा द्वादशांगगणधर प्रभु ने।।
चंदना अर्यिका में गणिनी, श्रेणिक नृप श्रोता मुख्य बने।
कार्तिक वदि मावस उषाकाल, प्रभु पावापुरि से सिद्ध बने।।५।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यां श्रीमहावीरजिनेंद्रमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं....

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

श्री तीर्थंकर महावीर समुच्चय पूजा

पूजा नं. 1

स्थापना - गीताछंद

प्रभुवीर का छब्बीस सौवां, जन्म उत्सव जग प्रथित।
सब विश्व में लहरा रहा, महावीर प्रभु का धर्म ध्वज।।
इन महावीर जिनेन्द्र की, स्थापना विधि हम करें।
छब्बीस सौ गुण मंत्र से, अर्चें जनम दुख परिहरें।। 1।।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक - चौबोलछंद

गंगा यमुना सरस्वती के, संगम का जल लाया हूँ।
महावीर प्रभु के पद में त्रय, धारा देने आया हूँ।।
वीर प्रभू का जन्मकल्याणक, जग में मंगलकारी है।
सर्वअमंगल दूर भगाकर, सब जन को सुखकारी है।। 1।।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केशर सुरभित घिसकर, प्रभु चरणों में चर्चूं मै।
जग संताप दूर करने को, प्रभु चरणों में प्रणमूं मैं।।
वीर प्रभू का जन्मकल्याणक, जग में मंगलकारी है।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, सब जन को सुखकारी है।। २ ।।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्जवल शालि सुगंधित लेकर, पुंज चढ़ाऊं प्रभु आगे।
अक्षयपद की प्राप्ति सुखद हो, पुनर्जन्म के दुख भागें।।
वीर प्रभू का जन्मकल्याणक, जग में मंगलकारी है।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, सब जन को सुखकारी है।। ३ ।।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये
अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला जुही चमेली सुरभित, पुष्प चढ़ाऊं चरणों में।
कामदेवमदविजयी प्रभु की, पूजा कर लूं सुखकर मैं।।
वीर प्रभू का जन्मकल्याणक, जग में मंगलकारी है।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, सब जन को सुखकारी है।। ४ ।।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फेनी गुझिया खाजे ताजे, भरकर थाल चढ़ाऊँ मैं।
क्षुधा वेदनी दूर करो प्रभु, भक्ती से गुण गाऊं मै।।
वीर प्रभू का जन्मकल्याणक, जग में मंगलकारी है।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, सब जन को सुखकारी है।। ५ ।।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय
नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृतदीपक में ज्योति जलाकर, करूँ आरती भक्ती से।
निज घट का अज्ञान दूर हो, सम्यग्ज्ञान ज्योति प्रगटे।।
वीर प्रभू का जन्मकल्याणक, जग में मंगलकारी है।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, सब जन को सुखकारी है।। ६ ।।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय
दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर चंदन से मिश्रित, धूप सुगंधित खेवूं मैं।
अशुभ कर्म को भस्मसात् कर, आतम अनुभव लेवूं मैं।।
वीर प्रभू का जन्मकल्याणक, जग में मंगलकारी है।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, सब जन को सुखकारी है।। ७ ।।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय
धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव आम अंगूर सरसफल, भर कर थाल चढ़ाऊं मैं।
जिनवर सन्निध अर्पण करके, स्वात्मसुधारस पाऊं मैं।।
वीर प्रभू का जन्मकल्याणक, जग में मंगलकारी है।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, सब जन को सुखकारी है।। ८ ।।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये
फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत कुसुमावलि, आदिक अर्घ्य बनाऊँ मैं।
उसमें रत्न मिलाकर अर्पूं, निजगुण मणि को पाऊं मैं।।
वीर प्रभू का जन्मकल्याणक, जग में मंगलकारी है।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, सब जन को सुखकारी है।। ९ ।।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा - **महावीर अतिवीर, तुम पद पंकज में सदा।**
मिले भवोदधि तीर, शांतीधारा मैं करूँ।। १०।।
शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार गुलाब, सुरभित करते दश दिशा।
महावीर पादाब्ज, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।। ११।।
दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य - ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमहावीरजिनेंद्राय विश्वशांतिकराय सर्वसौख्यं कुरू कुरू ह्रीं नमः।

(सुगन्धितपुष्प, लवंग या पीले चावल मिश्रित रत्नों से १०८ मंत्रों का जाप्य करें। पूजा के अनन्तर इन मंत्रों से मंत्रित १०८ रत्नों को श्रद्धालुओं में वितरित करें।)

जयमाला

शेरछंद -

जय वीर महावीर आप जन्म जब लिया।
संपूर्ण लोक में महा आश्चर्य भर दिया।।
स्वर्गों में कल्पवृक्ष पुष्पवृष्टि कर झुकें।
इन्द्रों के सिंहासन भी आप आप हिल उठें।। १ ।।
शीतल सुगंध वायु मंद मंद बही थी।
पृथ्वी भी तो आनंदभरी नाच रही थी।।
संपूर्ण दिशायें गगन भी स्वच्छ हुये थे।
सागर भी तो लहरा रहा हर्षातिरेक से।। २ ।।
व्यंतर गृहों में भेरियों के शब्द हो उठे।
भवनालयों में शंखनाद गूंजने लगे।।
ज्योतिष गृहों में सिंहनाद स्वयं हो उठा।
सुर कल्पवासि भवन में घंटा भी बज उठा।। ३ ।।
इंद्रों के मुकुट अग्र भी स्वयमेव झुक गये।
जिन जन्म जान आसनों से सब उतर गये।।
तब इंद्र के आदेश से सुरपंक्ति चल पड़ी।
सबके हृदय में हर्ष की नदियां उमड़ पड़ीं।। ४ ।।
सुरपति प्रभू को गोद में ले गज पे चढ़े हैं।
ईशान इंद्र प्रभु पे छत्र तान खड़े हैं।।
सानत्कुमार औ महेन्द्र चंवर ढोरते।
सब देव देवियां बहुत भक्ती विभोर थे।। ५ ।।
क्षण में सुमेरुगिरि पे जाके प्रभु को बिठाया।
पांडुक शिला पे नाथ का अभिषेक रचाया।।
सौधर्म इंद्र ने हजार हाथ बनाये।
संपूर्ण स्वर्ण कलश एक साथ उठाये।। ६ ।।

उनसे प्रभू का न्हवन एक साथ कर दिया।
जय जय ध्वनी से देवों ने आकाश भर दिया।
सब इंद्र औ इन्द्राणियों ने न्हवन किया था।
सब देव औ देवांगनाओं ने भी किया था।। ७ ।।
अभिषेक जल उस क्षण में पयोसिंधु बना था।
देवों की सेना डूब रही हर्ष घना था।।
जन्माभिषेक जिन का स्वयं इंद्र कर रहे।
उत्सव विशेष और की फिर बात क्या कहें।। ८ ।।
सुरपति ने पुनः प्रभु को लाके जनक को दिया।
बहु देव और देवियां सेवा में रख दिया।।
सुर धन्य वे जो नाथ संग खेल खेलते।
संसार के दुःख संकटों को वे न झेलते।। ९ ।।
मैं भी करूँ सेवा प्रभू की भक्ति भाव से।
मिथ्यात्व का निर्मूल हो समकित प्रभाव से।।
बस एक प्रार्थना पे नाथ! ध्यान दीजिये।
सज्ज्ञानमती पूर्ण हो ये दान दीजिये।। १०।।

दोहा- वर्धमान गुणरत्न को, गिनत न पावहिं पार।
तीन रत्न के हेतु मैं, नमूं अनंतों बार।। ११ ।।

ॐ ह्रीं अंतिमतीर्थंकर श्रीमहावीरजिनेंद्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

गीताछंद- जो विश्वशान्ती महावीर विधान भक्ती से करें।
सब आपदाऐं दूर कर, सर्वत्र सुख शांती भरें।।
तीर्थेश प्रभु का मेरू पर, जन्माभिषेकोत्सव करें।
फिर स्वयं तीर्थंकर बने, निज 'ज्ञानमति' संपति भरें।।१।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं. २

स्थापना - गीताछंद

महावीर तीर्थंकर जगत में, शुद्धमति दाता कहे।
निज आतमा को शुद्ध करके, लोक मस्तक पर रहें।।
मुनि चार ज्ञानी भी सतत, वंदन करें संस्तव करें।
हम भक्ति से थापें यहां, प्रभु पदकमल अर्चन करें।। १ ।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिन्! अत्र अवतर अवतर! संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक-गीताछंद

प्रभु चार गतियों में बहुत ही, घूम कर अब थक चुका।
इस हेतु तुम पद शरण लेकर, नीर से पूजूं मुदा।।
हे वीरजिन! तुम पाद पंकज, की करूँ मैं अर्चना।
सौ मंत्र से आराधना कर, करूँ यम की तर्जना।। १ ।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

एकेन्द्रियादिक देह में, दुख दाव से संतप्त हो।
प्रभु गंध से पद चर्चते, निज आत्मा में तृप्ति हो।।
हे वीरजिन! तुम पाद पंकज, की करूँ मैं अर्चना।
सौ मंत्र से आराधना कर, करूँ यम की तर्जना।। २ ।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अहमिन्द्र से भि निगोद तक, सुख दुखमयी सब पद धरे।
अक्षय सुपद के हेतु भगवन्! पुंज अक्षत के धरे।।
हे वीरजिन! तुम पाद पंकज, की करूँ मै अर्चना।
सौ मंत्र से आराधना कर, करूँ यम की तर्जना।। ३ ।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुविध अयश से खिन्न हो, नहिं स्वात्मगुण यश पा सका।
बहुविध महक युत पुष्प सुंदर, अतः चरणों में रखा।।
हे वीरजिन! तुम पाद पंकज, की करूँ मैं अर्चना।
सौ मंत्र से आराधना कर, करूँ यम की तर्जना।। ४ ।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लाडू इमरती पूरियां, फेनी मलाई खीर से।
नहीं तृप्ति पायी इसलिये, नेवज चढ़ाऊँ प्रीति से।।
हे वीरजिन! तुम पाद पंकज, की करूँ मैं अर्चना।
सौ मंत्र से आराधना कर, करूँ यम की तर्जना।। ५ ।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक अंधेरा दूर करता, एक कमरे का प्रभो!
तुम आरती करते सकल, अज्ञानतम हरता विभो।।
हे वीरजिन! तुम पाद पंकज, की करूँ मैं अर्चना।
सौ मंत्र से आराधना कर, करूँ यम की तर्जना।। ६ ।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वरधूप खेते अग्नि में, सब कर्म भस्मीभूत हों।
निज आत्म समरस प्राप्त हो, फिर मोहवैरी दूर हो।।
हे वीरजिन! तुम पाद पंकज, की करूँ मैं अर्चना।
सौ मंत्र से आराधना कर, करूँ यम की तर्जना।। ७। ।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम पिस्ता सेव केला, आम दाड़िम फल लिया।
बस मोक्षफल की आश लेकर, आपको अर्पण किया।।
हे वीरजिन! तुम पाद पंकज, की करूँ मैं अर्चना।
सौ मंत्र से आराधना कर, करूँ यम की तर्जना।। ८ ।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प में, बहुरत्न आदि मिलाय के।
मै अर्घ्य अर्पण करूं प्रभु को, हर्ष अधिक बढ़ाय के।।

हे वीरजिन! तुम पाद पंकज, की करूँ मैं अर्चना।
सौ मंत्र से आराधना कर, करूँ यम की तर्जना।। ९ ।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- वर्धमान पद पद्म, शांतीधारा मैं करूं।
मिले शांतिसुखसद्म, त्रिभुवन में सुख शांति हो।। १० ।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूं।
परमानंद सुख लाभ, मिले सर्व सुख संपदा।। ११ ।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ सौ मंत्र अर्घ्य

(प्रत्येक अर्घ्य के साथ एक-एक रत्न चढ़ाना है। इस तरह मण्डल पर सुमेरू में २६०० अर्घ्य के साथ एक-एक रत्न ऐसे २६०० रत्न चढ़ाना है।)

दोहा- वीरप्रभू के गुण शतक, पूजूं मंत्र उचार।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, भरे सौख्य भंडार।। १ ।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनशुद्धिप्राप्तकारकाय दर्शनविशुद्धिभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

ॐ ह्रीं चतुर्विधविनयगुणप्रापणसमर्थाय विनयसंपन्नताभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्तश्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२।।

ॐ ह्रीं निरतिचारव्रतशीलादिपालनबुद्धिप्रदायकाय शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।३।।

ॐ ह्रीं सततज्ञानाभ्यासकरणसमर्थाय अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्तश्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।। ४ ।।

ॐ ह्रीं संसारशरीरभोगवैराग्यकरणबुद्धिप्रदायकाय संवेगभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्तश्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं..... ।। ५ ।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रयधारणबुद्धिकरणसमर्थाय शक्तितस्त्यागभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्तश्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं..... ।।६।।

ॐ ह्रीं नानाविधतपश्चरणकरणशक्तिप्रदायकाय शक्तितस्तपोभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्तश्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।७।।

ॐ ह्रीं साधुगणधर्म्यशुक्लध्यानलीनभक्तिशक्तिप्रापकाय साधुसमाधिभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्तश्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।८।।

ॐ ह्रीं गुरुसेवाकरणशक्तिप्रदायकाय वैयावृत्यकरणभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्तश्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।। ९ ।।

ॐ ह्रीं मनोवाञ्छितफलदानसमर्थाय अर्हद्भक्तिभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्तश्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।। १०।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रधारणशक्तिदानसमर्थाय आचार्यभक्तिभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्तश्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।। ११।।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानपूर्णकरणसमर्थाय बहुश्रुतभक्तिभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्तश्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।। १२।।

ॐ ह्रीं चतुर्विधसंघभक्तिभावनावर्द्धकाय प्रवचनभक्तिभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्तश्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं..... ।। १३ ।।

ॐ ह्रीं षडावश्यकक्रियाकरणशक्तिप्रदाय आवश्यकापरिहाणिभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्तश्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं..... ।। १४ ।।

ॐ ह्रीं जिनधर्मप्रभावनाकरणबुद्धिवृद्धिंकराय मार्गप्रभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्तश्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं।। १५।।

ॐ ह्रीं साधर्मिवात्सल्यबुद्धिकरणसमर्थाय प्रवचनवत्सलत्वभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्तश्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं..... ।। १६ ।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्योत्तमपदधारिपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुरैरावतहस्तिशुभस्वप्न प्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१७।।

ॐ ह्रीं समस्तलोकज्येष्ठपदधारकपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुर्महावृषभशुभस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१८।।

ॐ ह्रीं अनन्तबलशालिपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुःसिंहशुभस्वप्न-प्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।। १९ ।।

ॐ ह्रीं सद्धर्मतीर्थप्रवर्तनकारिपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुःस्रग्युग्म-शुभस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीर जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२०।।

ॐ ह्रीं सुरेन्द्रकृतसुमेरुशिखराभिषेकप्राप्तपदधारिपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुर्लक्ष्मीशुभस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२१।।

ॐ ह्रीं सर्वजनाल्हादनकारिपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुश्चन्द्रशुभस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।। २२ ।।

ॐ ह्रीं भास्वद्युतिधारकपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुःसूर्यशुभस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।। २३ ।।

ॐ ह्रीं निधिस्वामिपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुःकुंभयुगलशुभस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२४।।

ॐ ह्रीं अतिशयसौख्यधारकपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुर्मत्स्ययुग्मशुभस्वप्न-प्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२५।।

ॐ ह्रीं सहस्राष्टलक्षणोद्भासिपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुःसरोवरशुभस्वप्न-प्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानोपलब्धिकृतपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुःसमुद्रशुभस्वप्न-प्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२७।।

ॐ ह्रीं जगद्गुरुसामाज्यधारिपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुःसिंहासनशुभस्वप्न प्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्र य अर्घ्यं....।। २८।।

ॐ ह्रीं स्वर्गावतारिपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुःस्वर्विमानशुभस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।। २९।।

ॐ ह्रीं अवधिज्ञानलोचनधारिपुत्रजन्मसूचकाय मातुर्धरणेन्द्रभवनशुभस्वप्न-प्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३०।।

ॐ ह्रीं गुणाकरस्वरूपपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुःप्रोद्यद्रत्नरा-शीक्षणशुभस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।३१।।

ॐ ह्रीं कर्मेन्धनदहनकारकपुत्रजन्मफलसूचकाय मातुर्निर्धूमज्वलनेक्षण शुभस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३२।।

ॐ ह्रीं शरीरस्वास्थ्यप्रदायकाय निःस्वेदत्वसहजातिशयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।३३।।

ॐ ह्रीं स्वात्मविशुद्धिप्रदायकाय मलविरहितसहजातिशयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।३४।।

ॐ ह्रीं समरसीभावप्रदायकाय क्षीरसमरुधिरत्वसहजातिशयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।३५।।

ॐ ह्रीं निजात्मशक्तिवर्धकाय वज्रऋषभनाराचसंहनन-सहजातिशयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।३६।।

ॐ ह्रीं स्वात्मसौख्यप्रदायकाय समचतुरस्रसंस्थान-सहजातिशयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।३७।।

ॐ ह्रीं इन्द्रनरेन्द्र-धरणेन्द्रखगेन्द्रनेत्रमनोहारिसौंदर्यसमन्विताय अनुपमरूप सहजातिशयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।३८।।

ॐ ह्रीं स्वात्मसुयशोविस्तारकाय सौगन्ध्यसहजातिशयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।३९।।

ॐ ह्रीं अशुभकर्मनिवारकाय अष्टोत्तरसहस्रशुभलक्षण-सहजातिशयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।४०।।

ॐ ह्रीं आत्मवलवर्धकाय अनन्तबलवीर्यसहजातिशयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।४१।।

ॐ ह्रीं कण्ठाकुंठितफलप्रदाय प्रियहितमधुरवचनसहजातिशयगुणमंडिताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।४२।।

ॐ ह्रीं सर्वत्र क्षेमकराय गव्यूतिशतचतुष्टयसुभिक्षताकेवलज्ञाना-तिशयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४३।।

ॐ ह्रीं उत्तमगतिप्रदायकाय गगनगमनत्वकेवलज्ञानातिशयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।४४।।

ॐ ह्रीं अनुकंपागुणविकसिताय प्राणिवधाभावकेवलज्ञा-नातिशयगुणमण्डिताय श्री महावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४५।।

ॐ ह्रीं आहारशुद्धिफलप्रदायकाय कवलाहाराभावकेवल-ज्ञानातिशयगुणमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४६।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवनिवारणसमर्थाय उपसर्गाभावकेवलज्ञानातिशय-गुणमण्डिताय श्रीमहवीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।४७।।

ॐ ह्रीं सर्वजनमनोहराय चतुर्मुखत्वकेवलज्ञानातिशयगुणमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४८।।

ॐ ह्रीं भगवच्छत्रछायाप्रापकाय छायारहितकेवलज्ञानातिशयगुणमण्डिताय श्रीमहवीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।४९।।

ॐ ह्रीं ज्ञाननेत्रप्रदायकाय पक्ष्मस्पंदरहितकेवलज्ञानातिशयगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५०।।

ॐ ह्रीं स्वात्मतत्त्वज्ञानप्रापकाय सर्वविद्येश्वरताकेवलज्ञानातिशय-गुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५१।।

ॐ ह्रीं सर्वजनताभयदानदायकाय नखकेशवृद्धिरहितकेवलज्ञानातिशय-गुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५२।।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानप्राप्तिकराय अक्षरानक्षरात्मकसर्वभाषामयदिव्यध्वनिकेवल-ज्ञानातिशयगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५३।।

ॐ ह्रीं सर्वजनमनःकमलविकासकाय सर्वर्तुफलादिशोभिततरुपरिणाम-देवोपनीतातिशयगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५४।।

ॐ ह्रीं उष्णपित्तादिरोगनिवारकाय वायुकुमारोपशमितधूलिकण्टकादि-देवोपनीतातिशयगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५५।।

ॐ ह्रीं सर्वजनविरोधनिवारकाय सर्वजनमैत्रीभावदेवोपनी-तातिशयगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५६।।

ॐ ह्रीं सर्वकष्टनिवारणकराय आदर्शतलप्रतिमारत्नमयीमहीदेवोपनीतातिशय-गुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५७।।

ॐ ह्रीं रक्तपित्तिविस्फोटकादिनानाव्याधिनिवारकाय मेघकुमारकृत-गंधोदकवृष्टिदेवोपनीतातिशयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।५८।।

ॐ ह्रीं सर्वोत्तमफलप्रदानसमर्थाय फलभारनम्रशालि-देवोपनीतातिशयगुण-विभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५९।।

ॐ ह्रीं परमसौख्यप्रदायकाय सर्वजनपरमानन्दत्व-देवोपनीतातिशय-गुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६०।।

ॐ ह्रीं प्रतिकूलजनापसारकाय अनुकूलविहरणवायुत्व-देवोपनीतातिशय-गुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६१।।

ॐ ह्रीं स्वात्मसुधारसप्रदायकाय निर्मलजलपूर्णकूपसरोवरादि-देवोपनीतातिशयगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।६२।।

ॐ ह्रीं चतुर्दिग्यशोविस्तारकाय शरत्कालवन्निर्मलाकाश-देवोपनीतातिशयगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६३।।

ॐ ह्रीं परमस्वास्थ्यविधायकाय सर्वजनरोगशोकबाधारहितत्व-देवोपनीतातिशयगुणविराजिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६४।।

ॐ ह्रीं सद्धर्मबुद्धिविवर्धकाय यक्षेन्द्रमस्तकोपरिस्थितधर्मचक्रचतुष्टय-देवोपनीतातिशयगुणमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।६५।।

ॐ ह्रीं चतुर्गतिभ्रमणनिवारणसमर्थाय तीर्थंकरदेवचरणकमलतलस्वर्ण-कमलरचना-देवोपनीतातिशयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।६६।।

ॐ ह्रीं संपूर्णशोकनिवारणसमर्थाय अशोकवृक्षमहाप्रातिहार्यगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६७।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनसौख्यसाधनकराय छत्रत्रयमहाप्रातिहार्यगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६८।।

ॐ ह्रीं सर्वजनपूज्यपददायकाय सिंहासनमहाप्रातिहार्यगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६९।।

ॐ ह्रीं असंख्यप्राणिगणानुग्रहकारकाय द्वादशगणवेष्टितमहाप्रा-तिहार्यगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७०।।

ॐ ह्रीं जिनधर्मप्रभावकाय देवदुंदुभिमहाप्रातिहार्यगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७१।।

ॐ ह्रीं गुणसुरभिप्रसारकाय सुरपुष्पवृष्टिमहाप्रातिहार्यगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७२।।

ॐ ह्रीं स्वात्मप्रभाविस्तारकाय भामंडलमहाप्रातिहार्यगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७३।।

ॐ ह्रीं सर्वजनमनःप्रियकराय चतुःषष्टिचामरमहाप्रातिहार्यगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७४।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणकर्मक्षपणयुक्तिप्रदाय अनन्तज्ञानगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७५।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरणकर्मक्षपणयुक्तिप्रदाय अनन्तदर्शनगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।७६।।

ॐ ह्रीं मोहनीयकर्मनाशनबुद्धिप्रदाय अनंतसौख्यगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७७।।

ॐ ह्रीं अन्तरायकर्मविनाशनबुद्धिप्रदाय अनंतवीर्यगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७८।।

ॐ ह्रीं स्वात्मसंतुष्टिकारकाय क्षुधामहादोषविरहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७९।।

ॐ ह्रीं संसारसंतापनिवारकाय तृषामहादोषविरहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८०।।

ॐ ह्रीं सप्तभयविरहितनिर्दोषसम्यक्त्वप्रदाय भयमहादोषविरहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८१।।

ॐ ह्रीं क्षमाभावप्रदायकाय क्रोधमहादोषविरहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८२।।

ॐ ह्रीं स्वात्मचिंतनबुद्धिप्रदाय चिन्तामहादोषविरहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८३।।

ॐ ह्रीं परमौदारिकदिव्यदेहप्रदाय जरामहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८४।।

ॐ ह्रीं सरागवीतरागसम्यक्त्वप्रदाय रागमहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८५।।

ॐ ह्रीं बहिरात्मबुद्धिनिवारकाय मोहमहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८६।।

ॐ ह्रीं नानाव्याधिनिवारणसमर्थाय रोगमहादोषविरहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।८७।।

ॐ ह्रीं यमराजजयबुद्धिप्रदाय मृत्युमहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।८८।।

ॐ ह्रीं शरीरश्रमापनुदनयुक्तिप्रदाय स्वेदमहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।८९।।

ॐ ह्रीं परमाल्हादसौख्यप्रदायकाय विषादमहादोषविरहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।९०।।

ॐ ह्रीं अष्टविधमदनिवारणबुद्धिप्रदाय मदमहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।९१।।

ॐ ह्रीं स्वात्मरमणबुद्धिप्रदायकाय रतिमहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।९२।।

ॐ ह्रीं परमाश्चर्यस्वरूपसिद्धिपदसाधनकराय विस्मयमहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।९३।।

ॐ ह्रीं मुक्तिपदसाधनालस्यनिवारकाय निद्रामहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।९४।।

ॐ ह्रीं पुनःपुनर्भवनिवारकाय जन्ममहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९५।।

ॐ ह्रीं द्वेषबुद्धिनाशनयुक्तिप्रदाय अरतिमहादोषविवर्जिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।९६।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुपर्वतोपरिजन्माभिषेकानन्तर इंद्रकृतवर्धमाननामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।९७।।

ॐ ह्रीं बाल्यकालसंजयविजयमुनिद्वयशंकासमाधानप्राप्तसमय-महामुनिकृतसन्मतिनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।९८।।

ॐ ह्रीं देवबालकसार्धक्रीडासमयसंगमदेवकृतमहाफणधरोपसर्गविजयितद्-देवकृत-महावीरनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।९९।।

ॐ ह्रीं अतिमुक्तकवनमध्यध्यानस्थकालरूद्रकृतमहोपसर्गविजयसमय तन्महादेवकृतमहतिमहावीरनाममण्डिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।१००।।

शंभुछंद

चिन्मूर्ति चिदम्बर चिंतामणि, चिंतित फल दाता वीर प्रभो !
संपूर्ण कर्ममल धो करके, निज आत्मा किया पवित्र विभो।।
जो पूजा भक्ति करें रुचि से, वे स्वयं पूज्य बन जाते हैं।
पूर्णार्घ चढ़ाऊं मै रुचि से , मेरे अघ कर्म नशाते हैं।।१०१।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनादिमहितमहावीर-नामपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय विश्वशान्तिकराय सर्वसौख्यं कुरू कुरू ह्रीं नमः।

(सुगन्धित पुष्प, लवंग या पीले पुष्पों के साथ एक-एक रत्नों से उपर्युक्त मंत्र का १०८ बार जाप्य करें। पूजा के अनंतर इन मंत्रों से मंत्रित १०८ रत्नों को श्रद्धालुओं में वितरित करें।)

जयमाला

सोरठा - नित्य निरंजन नाथ, परम हंस परमात्मा।
नमूं नमाकर माथ, गाऊं गुणमणिमालिका।।१।।

नरेन्द्र छंद-

चिन्मय ज्योति चिदात्मा चेतन, चिच्चैतन्य सुधाकर।
जय जय चिन्मूरति चिंतामणि, चिंतितप्रद रत्नाकर।।
आप अलौकिक कल्पवृक्ष प्रभु, मुंह मांगा फल देते।
आप भक्त सुरपति चक्री-तीर्थंकर पद पा लेते।।२।।
जो तुम चरण सरोरुह पूजें, जग में पूजा पावें।
जो जन तुमको चित में ध्यावें, सब जन उनको ध्यावें।।
जो तुम वचन सुधारस पीते, सब उनके वच पालें।
जो तुम आज्ञा पालें उनकी, आज्ञा कोई न टालें।।३।।
जो तुम सन्मुख भक्ति भाव से, नृत्य करें हर्षित हो।

तांडव नृत्य करें उन आगे, सुरपति भी प्रभुदित हो।।
जो तुम गुण को नित्य उचरते, भवि उनके गुण गाते।
जो तुम सुयश सदा विस्तारें, वे जग में यश पाते।।४।।
मन से भक्ति करें जो भविजन, वे मन निर्मल करते।
वचनों से संस्तुति को पढ़कर, वचन सिद्धि वे करते।।
काया से अंजलि प्रणमन कर, तन के रोग भगाते।
त्रिकरण शुचि से वंदन करके, कर्म कलंक नशाते।।५।।
सोलहकारण शुद्धभावना, तीर्थंकर पद दात्री।
सर्वश्रेष्ठ ये सर्वहितंकर, त्रिभुवन सौख्य विधात्री।।
तीर्थंकर गर्भागम पहले, माता महिमाशाली।।
उत्तम सोलह स्वप्न देखती, पुत्र जनें गुणशाली।।६।।
छ्यालिस गुणधारी तीर्थंकर, नमूं नमूं भक्ती से।
दोष अठारह रहित जिनेश्वर, नित प्रणमूं अति रुचि से।।
वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, हितोपदेशी भगवन्।
घात घातिया केवलज्ञानी, मुक्तिरमा पति स्वामिन्।।७।।
बहुविध यश तुम आगम वर्णे, श्रवण किया मैं जब से।
तुम चरणों में प्रीत लगी है, शरण लिया मैं तब से।।
प्रभु महावीर! कृपा ऐसी अब, मुझ पर तुरतहिं कीजे।
सम्यग्ज्ञानमती लक्ष्मी को, देकर निज सम कीजे।।८।।

दोहा - महावीर अतिवीर जिन, पंचकल्याणक ईश।
नमूं नमूं तुमको सतत, श्रद्धा से नत शीश।।९।।

ॐ ह्रीं शतमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद - जो विश्वशांती महावीर, विधान भक्ती से करें।
सब आपदाएं दूर कर, सर्वत्र सुख शांती भरें।।
तीर्थेश प्रभु का मेरु पर, जन्माभिषेकोत्सव करें।
फिर स्वयं तीर्थंकर बनें, निज ज्ञानमति संपति भरें।।१।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं० ३

स्थापना - नरेन्द्र छंद

अर्धचन्द्रसम सिद्ध शिला पर, महावीर प्रभु राजें।
स्वर्णिम आभा देह छवी को, देख सूर्य भी लाजें।।
अतः आप के श्रीचरणों में, हुये समर्पित भविजन।
तुम सम गुण की प्राप्ति हेतु प्रभु, करूँ यहां आह्वानन।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेंद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक-गीताछंद

हे नाथ! जग में जन्मव्याधी, बहुत ही दुख दे रही।
अब मेट दीजे इसलिये, त्रयधार दे पूजूं यहीं।।
दो शतक मंत्रों से यहां, प्रभु वीर की आराधना।
मिल जाय आतम सौख्य मुझको, यही मेरी प्रार्थना।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! इस यमराज का, संताप अब नहिं सहन है।
इस हेतु तुम पादाब्ज में, चर्चूं सुगंधित गंध है।।
दो शतक मंत्रों से यहां, प्रभु वीर की आराधना।
मिल जाय आतम सौख्य मुझको, यही मेरी प्रार्थना।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! मेरे ज्ञान के बहु खंड खंड हुये यहां।
कर दो अखंडित ज्ञान तंदुल, पुँज से पूजूं यहां।।
दो शतक मंत्रों से यहां, प्रभु वीर की आराधना।
मिल ज़ाय आतम सौख्य मुझको, यही मेरी प्रार्थना।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! भवशर विश्वजेता, आप ही इसके जयी।
इस हेतु तुम पादाब्ज में, बहु पुष्प अर्पूं मैं यहीं।।
दो शतक मंत्रों से यहां, प्रभु वीर की आराधना।
मिल जाय आतम सौख्य मुझको, यही मेरी प्रार्थना।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! त्रिभुवन अन्न खाया, भूख अब तक ना मिटी।
प्रभु भूख व्याधी मेट दो, इस हेतु चरु अर्पूं अभी।।
दो शतक मंत्रों से यहां, प्रभु वीर की आराधना।
मिल जाय आतम सौख्य मुझको, यही मेरी प्रार्थना।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणि रत्न दीपक से कभी, मन का अंधेरा ना भगा।
हे नाथ! तुम आरति करत ही, ज्ञान का सूरज उगा।।
दो शतक मंत्रों से यहां, प्रभु वीर की आराधना।
मिल जाय आतम सौख्य मुझको, यही मेरी प्रार्थना।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! मेरे कर्म कैसे, भस्म हों यह युक्ति दो।
मै धूप खेऊं अग्नि में, ये कर्म बैरी भस्म हों।।
दो शतक मंत्रों से यहां, प्रभु वीर की आराधना।
मिल जाय आतम सौख्य मुझको, यही मेरी प्रार्थना।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! चाहा बहुत फल, बहुते चरण में नत हुआ।
नहिं तृप्ति पायी इसलिये, फल सरस तुम अर्पण किया।।
दो शतक मंत्रों से यहां, प्रभु वीर की आराधना।
मिल जाय आतम सौख्य मुझको, यही मेरी प्रार्थना।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! निज के रत्नत्रय, अनमोल श्रेष्ठ अनर्घ हैं।
मुझको दिलावो शीघ्र ही, इस हेतु अर्घ्य समर्प्य है।।

दो शतक मंत्रों से यहां, प्रभु वीर की आराधना।
मिल जाय आतम सौख्य मुझको, यही मेरी प्रार्थना।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्रायअनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा - वर्धमान चरणाब्ज, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले निजातम स्वाद, तिहुँजग में भी शांति हो।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

सुरभित हरसिंगार, जिन पद पुष्पांजलि करूँ।
भरे सौख्य भंडार, रोग शोक संकट टलें।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ दो सौ मंत्र अर्घ्य

(प्रत्येक अर्घ्य के साथ-साथ एक रत्न चढ़ाना है)

दोहा- लोकोत्तम फलप्रद तुम्हीं, कल्पवृक्ष जिनदेव।
पुष्पांजलि से पूजहूं, करूँ भक्ति भर सेव।।१।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं अनेकभवगहनव्यसनप्रापणहेतुभूतकर्मशत्रुजिताय जिननामधारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।१।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रपदप्रापणसमर्थाय जिनेन्द्रनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२।।

ॐ ह्रीं जिनसदृशमहिमाप्रदाय जिनराड्नामधारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।३।।

ॐ ह्रीं जिनेषु प्रधानपदप्रापणसमर्थाय जिनपृष्ठनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।४।।

ॐ ह्रीं कर्मशत्रुविध्वंसनकराय जिनोत्तमनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।५।।

ॐ ह्रीं भक्तानां संसारभ्रमणकारणकर्मारातिमर्दनाय जिनाधिपनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।६।।

ॐ ह्रीं पूजकानां जिनपदलक्ष्मीदायकाय जिनाधीशनामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।७।।

ॐ ह्रीं भव्यानां मोक्षमार्गविघ्नविनाशनसमर्थाय जिनस्वामिनामधारकाय श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।८।।

ॐ ह्रीं भव्यानां कर्मशत्रुनाशनशक्तिप्रदाय जिनेश्वरनामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।९।।

ॐ ह्रीं पूजकानां सर्वसौख्यप्रदानसमर्थाय जिननाथनामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।१०।।

ॐ ह्रीं सर्वजगत्पूज्यपददायकाय जिनपतिनामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।११।।

ॐ ह्रीं अनंतानुबंध्यादिसप्तप्रकृतिघातनशक्तिप्रदाय जिनराजनामालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणादिकर्मविध्वंसनशक्तिप्रदाय जिनाधिराट्-नामसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणादिकर्मशातनशक्तिप्रदायकाय जिनप्रभु-नामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४।।

ॐ ह्रीं संज्वलनक्रोधादिचतुष्टयकर्मनिर्मूलनशक्तिप्रदाय जिनविभुनाममंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१५।।

ॐ ह्रीं हास्यादिनवनोकषायप्रकृतिविध्वंसनशक्तिप्रदाय जिनभर्तृनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६।।

ॐ ह्रीं संपूर्णमोहनीयकर्मनाशनशक्तिदायकाय जिनाधिभूनामालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्गप्रापणसमर्थाय जिननेतृनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८।।

ॐ ह्रीं शिवपथप्रदर्शकाय जिनेशाननाममंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दृष्ट्यादिभव्यानां मार्गप्रदर्शकाय जिनेननामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२०।।

ॐ ह्रीं भव्यजीवानां शरणदायकाय जिननायकनाममंडिताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२१।।

ॐ ह्रीं कर्मपर्वतभेदनशक्तिप्रदाय जिनेट्नामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२।।

ॐ ह्रीं मतिज्ञानावरणादिकर्मचूर्णीकृतशक्तिप्रदायकाय जिनपरिवृढ-नामालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२३।।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानावरणादिकर्मविध्वंसनशक्तिप्रदायकाय जिनदेवनामालांकृताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२४।।

ॐ ह्रीं अवधिज्ञानावरणकर्मनिर्मूलनशक्तिप्रदायकाय जिनेशितृनाममंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२५।।

ॐ ह्रीं मनःपर्ययज्ञानावरणकर्मशातनशक्तिदायकाय जिनाधिराजनाम-विभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।२६।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानावरणकर्मविध्वंसनशक्तिवर्धनाय जिनपनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२७।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणकर्मचूरणशक्तिदायकाय जिनेशिनामालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२८।।

ॐ ह्रीं पूजकानां रक्षाकरणदक्षाय जिनशासितृनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२९।।

ॐ ह्रीं भक्तजनपालनसमर्थाय जिनाधिनाथनामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३०।।

ॐ ह्रीं भव्यजनशरणागतरक्षकाय जिनाधिपतिनामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३१।।

ॐ ह्रीं पूजकानां सर्वतःपालकाय जिनपालकनामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३२।।

ॐ ह्रीं भक्तानां सद्वचनैराल्हादकाय जिनचन्द्रनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३।।

ॐ ह्रीं भव्यानामज्ञानान्धकारनाशनाय जिनादित्यनामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४।।

ॐ ह्रीं स्तुतिकारकाणां मोहान्धकारविध्वंसनशक्तिदायकाय जिनार्कनाम-विभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५।।

ॐ ह्रीं त्रिजगत्सुप्रधानपदधारकाय जिनकुंजरनामालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३६।।

ॐ ह्रीं चन्द्रसमकांतिप्रदाय जिनेन्दुनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३७।।

ॐ ह्रीं सत्यपथाचरणशक्तिप्रदाय जिनधौरेयनाममंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३८।।

ॐ ह्रीं मुक्तिपथप्रदर्शकाय जिनधुर्यनामालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३९।।

ॐ ह्रीं सर्वोकृष्टमार्गदर्शकाय जिनोत्तरनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४०।।

ॐ ह्रीं सर्वश्रेष्ठगुणप्रदाय जिनवर्यनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४१।।

ॐ ह्रीं भक्तानां सर्वोत्तमगुणप्रदायकाय जिनवरनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४२।।

ॐ ह्रीं सर्वजनतानां मुख्यधर्मप्ररूपकाय जिनसिंहनामालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४३।।

ॐ ह्रीं जिनधर्मोद्धरणसमर्थाय जिनोद्वहनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४४।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनश्रेष्ठपदप्रदाय जिनर्षभनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।। ४५।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनजनेषूत्तमगुणदायकाय जिनवृषनामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ४६।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनजनेषु रत्नसमपदप्रदाय जिनरत्ननामालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ४७।।

ॐ ह्रीं भक्तजनपुत्रसमपालनसमर्थाय जिनोरसनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ४८।।

ॐ ह्रीं सर्वजनेश्वरत्वपदप्रदाय जिनेशनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ४९।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनजनप्रधानपदप्रदाय जिनशार्दूलनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.... ।। ५०।।

ॐ ह्रीं कर्मशत्रुजयहेतुमार्गदर्शकाय जिनाग्र्यनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ५१।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दृष्ट्यादिद्वादशान्तगुणस्थानवर्तिजनानां नेतृत्वकारकाय जिनपुंगवनामालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ५२।।

ॐ ह्रीं भव्यजनप्रधानपददायकाय जिनहंसनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ५३।।

ॐ ह्रीं संसारमध्योत्कृष्टयशःप्रापकाय जिनोत्तंसनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५४।।

ॐ ह्रीं सर्वजनतानां सर्वोत्कृष्टमहिमादायकाय जिननागनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।५५।।

ॐ ह्रीं भव्यजनेषु प्रधानत्वगुणप्रकटीकराय जिनाग्रणीनामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५६।।

ॐ ह्रीं भक्तगणानां उत्कृष्टबुद्धिदायकाय जिनप्रवेकनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।५७।।

ॐ ह्रीं भक्तानां सिद्धपदप्रापणसमर्थाय जिनग्रामणीनामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५८।।

ॐ ह्रीं भव्यजनेषूत्तमगुणप्रदायकाय जिनसत्तमनामालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।५९।।

ॐ ह्रीं जिनमुख्यपदप्रदानसमर्थाय जिनप्रवर्हनामालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।६०।।

ॐ ह्रीं कर्मारातिघातनपदप्रदाय परमजिननामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।६१।।

ॐ ह्रीं कर्मशत्रुविजयहेतुसर्वोत्तममार्गप्रदर्शकाय जिनपुरोगमनाममंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।६२।।

ॐ ह्रीं जिनमतबुद्धिप्रदाय जिनश्रेष्ठनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।६३।।

ॐ ह्रीं धर्मप्रभावेन ज्येष्ठपदप्रापणबुद्धिदायकाय जिनज्येष्ठनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।६४।।

ॐ ह्रीं सर्वजनेषु मुख्यपददायकाय जिनमुख्यनामालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।६५।।

ॐ ह्रीं संसारेषु अग्रिमपदप्रदानसमर्थाय जिनाग्रिमपदप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।६६।।

ॐ ह्रीं अन्तरंग-बहिरंगलक्ष्मीदायकाय श्रीजिननामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ६७।।

ॐ ह्रीं सर्वोत्तममहिमाशालिपदप्रापणसमर्थाय उत्तमजिननामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ६८।।

ॐ ह्रीं संसारभ्रमणकारणकर्मारिविजयकारकपददायकाय जिनवृंदारकनामालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ६९।।

ॐ ह्रीं मोहशत्रुविजयकरणबुद्धिदायकाय अरिजिन्नामभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ७०।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्गविघ्ननिवारकाय निर्विघ्ननामालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ७१ ।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरण-दर्शनावरणरजोविनाशनबुद्धिप्रदाय विरजोनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ७२ ।।

ॐ ह्रीं कर्ममलकलंकरहितपददायकाय शुद्धनामालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ७३।।

ॐ ह्रीं अज्ञानांधकारविनाशनसमर्थाय निस्तमस्कनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ७४।।

ॐ ह्रीं द्रव्यकर्म-भावकर्म-नोकर्मांजनविनाशनबुद्धिप्रदाय निरंजननामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ७५।।

ॐ ह्रीं मोहनीय-ज्ञानावरण-दर्शनावरण-अन्तरायकर्मघातिविघातकाय घातिकर्मान्तकनाममंडिताय श्रीमहावीरजिनेंन्द्राय अर्घ्यं.... ।।७६।।

ॐ ह्रीं भक्तजनकर्ममूलविनाशनबुद्धिप्रदाय कर्ममर्मावित्नामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... !।७७।।

ॐ ह्रीं संसारमूलकारणकर्मविध्वंसनबुद्धिदायकाय कर्महन्नामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।७८।।

ॐ ह्रीं पापत्यजनबुद्धिप्रदाय अनघनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७९।।

ॐ ह्रीं रागविजयकरणबुद्धिदायकाय वीतरागनामालंकृताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८०।।

ॐ ह्रीं क्षुधातृषादिबाधानिवारकाय क्षुध्महादोषरहिताय अक्षुन्नामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ८1।।

ॐ ह्रीं शत्रून्प्रति विद्वेषभावविरहितबुद्धिप्रदाय अद्वेषनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ८२।।

ॐ ह्रीं निर्ममताबुद्धिप्रदर्शकाय निर्मोहननामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ८३।।

ॐ ह्रीं अष्टविधाहंकारनिर्णाशनबुद्धिप्रदाय निर्मदनामालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ८४।।

ॐ ह्रीं नानाविधव्याधिविनाशनसमर्थाय अगदनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेनद्राय अर्घ्यं.....।।८५।।

ॐ ह्रीं विषयाभिलाषाविध्वंसनाय मोक्षाभिलाषाप्रकटीकरणसमर्थाय वितृष्णनामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ८६।।

ॐ ह्रीं ममकारभावविनाशकाय प्रत्यक्षपरोक्षप्रमाणज्ञानदायकाय निर्ममनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ८७।।

ॐ ह्रीं परिग्रहत्यजनबुद्धिदायकाय असंगनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ८८।।

ॐ ह्रीं भक्तानां सप्तविधभयविनाशनसमर्थाय केवलज्ञानज्योतिः-समन्विताय निर्भयनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ८९।।

ॐ ह्रीं विस्मय-कर्मविषादिदोषविध्वंसनसमर्थाय विस्मयनामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ९०।।

ॐ ह्रीं स्वप्न-निद्रादिदोषनिवारणसमर्थाय अप्रमत्तावस्थाप्रदाय अस्वप्ननामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ९१।।

ॐ ह्रीं श्रमखेदविवर्जित-बाह्याभ्यंतरतपश्चरणाचरणबुद्धिप्रदाय निःश्रमनामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ९२।।

ॐ ह्रीं गर्भवासदुःखनिवारणसमर्थाय अजन्मानामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ९३।।

ॐ ह्रीं स्वेदादिदोषविरहितवांछितधनादिदायकाय निःस्वेदनामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ९४।।

ॐ ह्रीं वृद्धत्वादिदोषनिवारणसमर्थाय निर्जरनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.... ।। ९५।।

ॐ ह्रीं मृत्युभयविजयकरणबुद्धिप्रदाय मृत्युंजयपदप्राप्ताय अमरनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ९६।।

ॐ ह्रीं अरुचिभावविरहितशुभरागदायकाय अरत्यतीतनामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।। ९७।।

ॐ ह्रीं काममोहपरचिंताविरहितबुद्धिप्रदाय स्वात्मचिंतामतिकरणाय निश्चिंतनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ९८।।

ॐ ह्रीं पश्चात्तापादिदुर्भावविध्वंसनाय निर्विषादनामालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ९९।।

ॐ ह्रीं शुक्लध्यानालंबनबलेन त्रिषष्टिकर्मप्रकृतिविनाशकाय त्रिषष्टिजिन्नामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १००।।

पूर्णार्घ्य - तर्ज - मेरा नम्र प्रणाम है.....

वंदन शत शत बार है .....

अंतिम जिनवर महावीर को वंदन शत शत वार है।

जिनका नाम मंत्र जपने से होते भवदधि पार हैं।।
वंदन शत शत बार है।।१।।
द्विविधरत्नत्रय धारण करके धरा दिगम्बर वेष है।
आत्मध्यान पीयूष पान कर हरा मृत्यु का क्लेश है।।
विविध तपश्चर्या कर करके भरा सुगुण भंडार है।
अंतिम .....।।२।।
कर्म शत्रुजित् 'जिन' कहलाये, जैनधर्म के प्राण हैं।
त्रेसठ प्रकृती नाश 'त्रिषष्टीजित्' मुनिगण से मान्य हैं।।
अतिशय श्रेष्ठ गुणों के स्वामी, बने मुक्ति भरतार हैं।
अंतिम .....।।३।।

ॐ ह्रीं जिनादित्रिषष्टिजिन्नामपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

ॐ ह्रीं त्रिलोक-त्रिकालवर्तिसर्वद्रव्यपर्यायात्मकवस्तुस्वरूपज्ञायकाय सर्वज्ञनामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १०१।।

ॐ ह्रीं सर्वचराचरजगद्वित्ज्ञानप्रदाय सर्वविन्नामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १०२।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनावलोकनसमर्थदर्शनप्रापणकराय सर्वदर्शिनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १०३।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यदर्शनसमर्थनेत्रसहिताय सर्वावलोकननामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १०४।।

ॐ ह्रीं मुक्तिपथाचरणशक्तिप्रदाय अनवधिपराक्रमसहिताय अनन्तविक्रमनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १०५।।

ॐ ह्रीं अनन्तबलप्रदानसमर्थाय अनन्तवीर्यनामालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १०६।।

ॐ ह्रीं अनवधिसुखप्रदाय अनन्तसुखात्मकनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १०७।।

ॐ ह्रीं अतीन्द्रियसुखप्रापणशक्तिप्रदाय अनन्तसौख्यनामधारकाय

श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १०८।।

ॐ ह्रीं समस्तविश्वज्ञातृशक्तिप्रदाय विश्वज्ञनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १०९।।

ॐ ह्रीं अखिलजगदावलोकनसमर्थयुक्तिप्रदाय विश्वदृश्वन्नामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ११०।।

ॐ ह्रीं समस्तपदार्थावलोकनदृष्टिधारकाय अखिलार्थदृङ्नामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १११।।

ॐ ह्रीं इन्द्रियसाहाय्यमन्तरेण सर्वलोकालोकावलोकनसमर्थाय न्यक्षदृङ्नामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ११२।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानदर्शनचक्षुभ्यां सर्वविश्वावलोकनसमर्थाय विश्वतश्चक्षुर्नामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ११३।।

ॐ ह्रीं सर्वजगदावलोकनदर्शनप्रदाय विश्वचक्षुर्नामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ११४।।

ॐ ह्रीं सर्वलोकालोकज्ञायकाय अशेषविन्नामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ११५।।

ॐ ह्रीं अतीन्द्रियसौख्यसागरनिमग्नाय आनंदनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ११६।।

ॐ ह्रीं परमोत्कृष्टसौख्यप्रदानसमर्थाय परमानन्दनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ११७।।

ॐ ह्रीं सर्वकालोदयास्तमनविरहितसौख्यमंडिताय सदानन्दनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ११८।।

ॐ ह्रीं उत्कृष्टाभ्युदयप्रदानसमर्थाय सदोदयनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। ११९।।

ॐ ह्रीं शाश्वतसौख्यप्रदायकाय नित्यानन्दनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १२०।।

ॐ ह्रीं भक्तानां चरणपूजया महानन्दप्रदायकाय महानन्दनामसहिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।१२१।।

ॐ ह्रीं भक्तानां चरणपूजया उत्कृष्टानन्दप्रदायकाय परानन्दनामसहिताय

श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १२२।।

ॐ ह्रीं परमोत्कृष्टज्ञानोदयप्रदायकाय परोदयनामालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।। १२३।।

ॐ ह्रीं अतिशयकारि-उत्साहप्रदायकाय परमोजनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १२४।।

ॐ ह्रीं उत्कृष्टभास्करप्रकाशरूपसमन्विताय परंतेजोनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १२५।।

ॐ ह्रीं उत्कृष्टधामप्रापणसमर्थाय परंधामनामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १२६।।

ॐ ह्रीं परमतेजःस्वरूपसमन्विताय परंमहोनामसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १२७।।

ॐ ह्रीं कोटिरविप्रभालज्जितकरणभामंडलविभवप्राप्ताय प्रत्यग्ज्योतिर्नामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १२८।।

ॐ ह्रीं लोकालोकलोचनोत्कृष्टनेत्रसमन्विताय परंज्योतिर्नामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १२९।।

ॐ ह्रीं पंचमज्ञानस्वरूपाय परंब्रह्मनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १३०।।

ॐ ह्रीं रहस्यमयात्मतत्त्वोपदेशनकराय परंरहोनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १३१।।

ॐ ह्रीं उत्कृष्टबुद्धिप्रदायकाय प्रत्यगात्मनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।। १३२।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानप्रदानकरणसमर्थाय प्रबुद्धात्मनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १३३।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहसा लोकालोकव्यापकाय महात्मनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरनामोदयविभूतिसमन्विताय आत्ममहोदयनामधारकाय

श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।१३५।।

ॐ ह्रीं उत्कृष्टकेवलज्ञानप्रदायकाय परमात्मनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १३६।।

ॐ ह्रीं घातिकर्मक्षयकरणबुद्धिप्रदाय प्रशान्तात्मनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १३७।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानोपेताय परात्मनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १३८।।

ॐ ह्रीं शरीरस्वरूपपरनिवासविरहितात्मगृहनिवासबुद्धिप्रदाय आत्मनिकेतननामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १३९।।

ॐ ह्रीं इन्द्रधरणेन्द्रनरेन्द्रगणीन्द्रादिवंदितपदस्थिताय परमेष्ठिनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १४०।।

ॐ ह्रीं अतिशाय्यात्मस्वरूपसमन्विताय अष्टमीभूमिस्थिताय महिष्ठात्मनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ।। १४१।।

ॐ ह्रीं अतिप्रशस्तकेवलज्ञानापेक्षासर्वव्यापकाय श्रेष्ठात्मनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।१४२।।

ॐ ह्रीं निजशुद्धबुद्धैकस्वरूपात्मस्थिताय स्वात्मनिष्ठितनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १४३।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमयब्रह्मस्वरूपात्मस्थिताय ब्रह्मनिष्ठनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १४४।।

ॐ ह्रीं सर्वोत्कृष्टयथाख्यातचारित्रस्थिताय महानिष्ठनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।। १४५।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनप्रसिद्धात्मस्वरूपाय निरूढात्मनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १४६।।

ॐ ह्रीं निश्चलस्वरूपानन्तबलोपेतसत्तामात्रावलोकनसमर्थदृक्समन्विताय दृढात्मदृङ्नामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १४७।।

ॐ ह्रीं एकाद्वितीयकेवलज्ञानलक्षणोपलक्षितविद्यासमन्विताय

एकविद्यनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १४८।।

ॐ ह्रीं महतीकेवलज्ञानविद्याप्रदायकाय महाविद्यनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १४९।।

ॐ ह्रीं महाब्रह्मरूपमोक्षपदस्वामिने महाब्रह्मपदेश्वरनामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १५०।।

ॐ ह्रीं पंचविधज्ञानप्रदाय पंचपरमेष्ठिगुणविभूषिताय पंचब्रह्ममयनाम-धारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १५१।।

ॐ ह्रीं सर्वप्राणिनां हितैषिणे सार्वनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १५२।।

ॐ ह्रीं सर्वविद्यानां स्वामिने सर्वविद्याप्रदाय सर्वविद्येश्वरनामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १५३।।

ॐ ह्रीं समवसरणलक्षणास्थानप्राप्ताय स्वभूनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १५४।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्गे बुद्धिस्थिरीकरणाय अनन्तधीनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १५५।।

ॐ ह्रीं अनंतकेवलज्ञानोपलक्षिताय अनन्तात्मनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १५६।।

ॐ ह्रीं अनन्तशक्तिप्रदाय अनन्तशक्तिनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १५७।।

ॐ ह्रीं केवलदर्शनप्रापणबुद्धिदायकाय अनन्तदृङ्नामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं..... ।। १५८।।

ॐ ह्रीं अनवधिबुद्धि-शक्तिप्रदाय अनन्तानंतधीशक्तिनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १५९।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानचिज्ज्योतिःप्रदाय अनन्तचिन्नामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १६०।।

ॐ ह्रीं अनवधिसुखकारकाय अनन्तमुद्नामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६१।।

ॐ ह्रीं अखंडप्रकाशपुंजप्रदायकाय सदाप्रकाशनामप्राप्ताय

श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १६२।।

ॐ ह्रीं सर्वद्रव्यगुणपर्यायप्रत्यक्षकरणशक्तिप्रदाय सर्वार्थसाक्षात्कारिनाम-धारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १६३।।

ॐ ह्रीं समस्तज्ञेयप्रमाणबुद्धिधारणसमर्थाय समग्रधीनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १६४।।

ॐ ह्रीं पुण्यपापरूपकर्मज्ञायकाय कर्मसाक्षिनामधारकाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १६५।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनस्थितप्राणिनां लोचनसदृशज्ञायकाय जगत्चक्षुर्नामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १६६।।

ॐ ह्रीं छद्मस्थमुनीनामदृश्यस्वरूपाय अलक्ष्यात्मनामसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १६७।।

ॐ ह्रीं अस्मादृशानां दृढचरित्रप्रदाय निश्चलस्थानप्राप्ताय अचलस्थितिनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १६८।।

ॐ ह्रीं सर्वबाधाविरहितपदप्रदाय निराबाधनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।। १६९।।

ॐ ह्रीं छद्मस्थजनचिंतनविरहिताय अप्रतर्क्यात्मनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १७०।।

ॐ ह्रीं सहस्रारदेदीप्यमान-जगज्जनसंतापशान्तकरणसमर्थाय धर्मचक्रप्राप्ताय धर्मचक्रिनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।१७१।।

ॐ ह्रीं सर्वविद्वज्जनश्रेष्ठपदप्रदाय विदांवरनामविभूषिताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १७२।।

ॐ ह्रीं लोकालोकस्वरूपज्ञायकाय भूतात्मनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १७३।।

ॐ ह्रीं स्वाभाविकज्ञानज्योतिःप्रदाय सहजज्योतिर्नामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १७४।।

ॐ ह्रीं लोकालोकप्रकाशनज्योतिःप्रदाय विश्वज्योतिर्नामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।१७५।।

ॐ ह्रीं इन्द्रियमनोविरहितज्ञानप्रदाय अतीन्द्रियनामप्राप्ताय

श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १७६।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानप्रापणकराय केवलिनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १७७।।

ॐ ह्रीं अतीन्द्रियज्ञानप्रकाशप्रदाय केवलालोकनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १७८।।

ॐ ह्रीं लोकालोकप्रकाशज्ञानप्रदाय लोकालोकविलोकननामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १७९।।

ॐ ह्रीं सर्वविषयेभ्यः पृथग्भूताय विविक्तनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १८०।।

ॐ ह्रीं असहायज्ञानप्रदायकाय केवलनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १८१।।

ॐ ह्रीं इन्द्रियमनोऽगोचरपददायकाय अव्यक्तनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १८२।।

ॐ ह्रीं अर्तिमथनसमर्थाय सर्वजनशरणप्रदाय शरण्यनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १८३।।

ॐ ह्रीं साधारणजनमनोऽगोचरवैभवप्रदाय अचिन्त्यवैभवनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १८४।।

ॐ ह्रीं अखिलविश्वजनतापोषणसमर्थाय विश्वभृद्नामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १८५।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकिरणैस्त्रैलोक्यव्याप्ताय विश्वरूपात्मनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १८६।।

ॐ ह्रीं विश्वस्थितप्राणिगणनिजसदृशावलोकनदक्षाय विश्वात्मनाम-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १८७।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानेन लोकालोकव्यापकाय विश्वतोमुखनामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १८८।।

ॐ ह्रीं आत्मप्रदेशैर्लोकपूरणसमुद्घातकाले विश्वव्यापकाय विश्वव्यापि-नामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।। १८९।।

ॐ ह्रीं आत्मज्योतिःस्वरूपभास्कराय स्वयंज्योतिर्नामसमन्विताय

श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१९०।।

ॐ ह्रीं अवाङ्मानसगोचरस्वरुपप्रद्राय अचिन्त्यात्मनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१९१।।

ॐ ह्रीं कोटिभास्कर-कोटिचन्द्रसमानशरीरतेजःसमन्विताय अमितप्रभानामधारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१९२।।

ॐ ह्रीं वाञ्छितफलप्रदायकदानशक्तिसमन्विताय महौदार्यनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१९३।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रयप्राप्तिस्वरूपबोधिप्रदाय महाबोधिनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१९४।।

ॐ ह्रीं नवकेवललब्धिस्वरूपलाभदायकाय महालाभनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१९५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरनामकर्मोदयसहिताय महोदयनामसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१९६।।

ॐ ह्रीं सच्छत्रचामरसिंहासनाशोकतरुप्रमुखमुहुर्भोग्यसमवसरणादिलक्षण-विभवसहिताय महोपभोगनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१९७।।

ॐ ह्रीं शोभनबुद्धिकेवलज्ञानस्वरूपाय सुगतिनामधारकाय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१९८।।

ॐ ह्रीं गंधोदकवृष्टि-पुष्पवृष्टिशीतलमृदुसुगंधवातादिलक्षणभोग्य-वस्तुसमन्विताय महाभोगनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।१९९।।

ॐ ह्रीं समस्तवस्तुपरिच्छेदलक्षणानन्तवीर्यसहिताय महाबलनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२००।।

पूर्णार्घ्य-

नाथ ! आपको अर्घ्य चढ़ाकर, शीश झुकाकर नमन करें।
मन मन्दिर का मोह अंधेरा, दूर भगाकर ज्ञान भरें।।
जय जय वीर जिनम् बोलो जय जय महावीर जिनम्।टेक।।
हृदय कमल में आप विराजो, सब दुख संकट दूर करो।
परमानंद सुखामृत देकर, प्रभु मुझको संतुष्ट करो।।
इसीलिए प्रभुवीर तुम्हारे चरणों में हम नमन करें।
मन मन्दिर का मोह अंधेरा दूर भगाकर ज्ञान भरें।।

जय वीर जिनम्-२।

वंदे जिनवरं - ३ ।।२०१।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञादिमहाबलनामपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य -

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमहावीरजिनेंद्राय विश्वशांतिकराय सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः।

(सुगंधितपुष्प, लवंग या पीले चावल मिश्रित रत्नों से १०८ मंत्रों का जाप्य करें पूजा के अनंतर इन मंत्रित रत्नों को श्रद्धालुओं में वितरित कर दें।)

जयमाला

दोहा - अगणित गुणमणि के धनी, गणधर गण से वंद्य।
गाऊं प्रभु गुणमालिका, दीजे सौख्य अनिंद्य।। १।।

पंच चामर छंद -

जयो जिनेश! आप तीर्थनाथ तीर्थरूप हो।
जयो जिनेश! आप मुक्तिनाथ मुक्तिरूप हो।।
जयो जिनेश! आप तीन लोक के अधीश हो।
जयो जिनेश! आप सर्वआश्रितों के मीत हो।। २।।
सभी सुरेन्द्र भक्ति से सदैव वंदना करें।
सभी नरेन्द्र आपकी सदैव अर्चना करें।।
सभी खगेंद्र हर्ष से जिनेन्द्र कीर्ति गावते।
सभी मुनीन्द्र चित्त में तुम्हीं को एक ध्यावते।। ३।।
अपूर्व तेज आप देख कोटि सूर्य लज्जते।
अपूर्व सौम्यमूर्ति देख कोटि चंद्र लज्जते।।
अपूर्व शांति देख क्रूर जीव वैर छोड़ते।
सुमंद मंद हास्य देख शुद्ध चित्त होवते।। ४।।
अनेक भव्य आपके पदाब्ज पूजते सदा।
अनेक जन्म पाप भी क्षणेक में नशें तदा।।
अनेक जीव भक्ति बिन अनंत जन्म धारते।

अनेक जीव भक्ति से अनंत सौख्य पावते।। ५।।
अनंत ज्ञानरूप हो अनंत ज्ञानदायि हो।
अनंत दर्शरूप हो अनंत दर्शदायि हो।।
अनंत सौख्यरूप हो अनंत सौख्यदायि हो।
अनंत वीर्यरूप हो, अनंत शक्तिदायि हो।।६।।
प्रभो अचिंत्य हो अपूर्व सौख्य पूर्ण सूर्य हो।
तुम्हें जपें समस्त ईति आपदायें दूर हों।।
पहाड़ टूट के गिरे व भूमि कंपमान हो।
तथापि कष्ट रंच ना यदी जिनेन्द्र नाम हो।।७।।
नदी प्रवाह पूर वायुयान अभ्र से गिरें।
सुभक्ति से न कष्ट हो महासमुद्र भी तिरें।।
न अग्नि भी जला सके जिनेन्द्र नाम मंत्र से।
पहाड़ बर्फ के गिरें न कष्ट दे सकें उसे।। ८ ।।
त्रिचक्रिका चतूषचक्रिका भिडंत हों जबे।
गिरे सुदूर जायके न चोट भी जरा लगे।।
अनेक कष्टदायि संकटादि आ पड़े यदी।
तथापि भक्ति के प्रभाव भक्त को न दुःख भी।। ९।।
पिशाचिनी व डाकिनी व भूत व्यंतरादि भी।
न रंच कष्ट दे सकें अनेक शत्रु देव भी।।
प्रसिद्ध वीर नाम मंत्र के प्रभाव से अबे।
समस्त शत्रु मित्र हों अनेक रत्न भेंट दें।। १०।।
सुनी सुकीर्ति आपकी अतेव अर्चना करूं।
'सुज्ञानमति' कीजिये अतेव वंदना करूं।।
निकाल दुःखवार्धि से निजात्मधाम दीजिये।
अनंत दर्श ज्ञान सौख्य दे निहाल कीजिये।। ११।।

दोहा - गुण रत्नाकर वीरजिन, महावीर भगवान।
जिनवरगुणसंपत्ति से, करो हमें धनवान।। १२।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीताछंद - जो विश्वशांती महावीर विधान भक्ती से करें।
सब आपदाएं दूर कर, सर्वत्र सुख शांती भरें।।
तीर्थेश प्रभु का मेरु पर, जन्माभिषेकोत्सव करें।
फिर स्वयं तीर्थंकर बनें, निज 'ज्ञानमति' संपति भरें।।१।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं. ४

स्थापना - नरेन्द्र छंद

श्री महावीर प्रभू तीर्थंकर, त्रिभुवन आनंदकारी।
तिष्ठ रहे त्रैलोक्य शिखर पर, अनवधिगुणनिधिधारी।।
परमानंद सुखारस स्वादी, मुनिगण तुमको ध्याते।
आह्वानन कर तुम्हें बुलाऊं, पूजूं मन हर्षा के।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथअष्टक - नरेन्द्रछंद

सरयू नदि का शीतल जल ले, जिनपद धार करूँ मैं।
साम्यसुधारस शीतल पीकर, भव भव त्रास हरूँ हैं।।
दो सौ मंत्रों से सन्मति को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊं।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.....

काश्मीरी केशर चंदन घिस जिनपद में चर्चूं मैं।
मानस तनु आगंतुक त्रयविध ताप हरो अर्चूं मैं।।
दो सौ मंत्रों से सन्मति को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊं।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं.....

मोतीसम उज्ज्वल अक्षत से, सन्मुख पुंज चढ़ाऊं।
निजगुणमणि को प्रगटित करके, फेर न भव में आऊं।।
दो सौ मंत्रों से सन्मति को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊं।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्ताये अक्षतं.....

जुही मोगरा सेवंती, वासंती पुष्प चढ़ाऊं।
कामदेव को भस्मसात्करके, आतम सौख्य बढ़ाऊं।।
दो सौ मंत्रों से सन्मति को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊं।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं .....

घेवर फेनी लाडू पेड़ा, रसगुल्ला भर थाली।
तुम्हें चढ़ाऊं क्षुधानाश हो, भरे मनोरथ खाली।।
दो सौ मंत्रों से सन्मति को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊं।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....

स्वर्णदीप में ज्योति जलाऊं, करूँ आरती रूचि से।
मोह अंधेरा दूर भगे सब, ज्ञान भारती प्रगटे।।
दो सौ मंत्रों से सन्मति को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊं।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं.....

एला चंदन कर्पूरादिक, मिश्रित धूप सुगंधी।
जिनसन्मुख अग्नी में खेऊं, धूम उड़े दिश अंधी।।
दो सौ मंत्रों से सन्मति को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊं।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....

आडू लीची सेव संतरा, आम अनार चढ़ाऊं।
सरस मधुर फल पाने हेतु, शत-शत शीश झुकाऊं।।
दो सौ मंत्रों से सन्मति को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊं।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....

जलगंधादिक अर्घ्य बनाकर, सुवरण पुष्प मिलाऊं।
भक्तिभाव से गीतनृत्य कर, प्रभु को अर्घ्य चढ़ाऊं।।
दो सौ मंत्रों से सन्मति को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊं।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....

सोरठा- यमुना सरिता नीर, प्रभु चरणों धारा करूँ।।
मिले भवोदधितीर, शांतीधारा शं करे।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

सुरभित खिले सरोज, जिनचरणों अर्पण करूँ।
निर्मद करूं मनोज, पाऊं जिनगुण संपदा।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ दौ सौ मंत्र अर्घ्य

(मंडल पर प्रत्येक अर्घ्य के साथ एक-एक रत्न चढ़ाना है।)

दोहा- गुण अनंत के तुम धनी, कतिपय गुण से नाथ।
पुष्पांजलि से पूजहूं, नमूं नमाकर माथ।।१।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं इन्द्र-धरणेन्द्र-नरेन्द्रादिकृतानन्यसंभाविनी पूजायोग्याय यज्ञार्हगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१।।

ॐ ह्रीं भग-ज्ञानपरिपूर्णैश्वर्य-तपःश्रीवैराग्यमोक्षप्राप्ताय भगवद्गुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२।।

ॐ ह्रीं चतुर्ज्ञानधारिगणधरादिकृतानन्यसाधारणीवंदनाप्राप्ताय अर्हद्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यप्रतिष्ठितजनमहतीप्रशंसाप्राप्ताय महार्हगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४।।

ॐ ह्रीं इन्द्रादिपूजितपदप्राप्ताय मघवार्चितनामसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५।।

ॐ ह्रीं सत्यार्थयज्ञयोग्यपदप्रदानसमर्थाय भूतार्थयज्ञपुरुषगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६।।

ॐ ह्रीं सत्यार्थयज्ञयोग्यपदधारकाय भूतार्थक्रतुपुरुषगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।७।।

ॐ ह्रीं जगत्पूज्यपदप्राप्ताय पूज्यगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय

अर्घ्यं....।।८।।

ॐ ह्रीं स्याद्वादपरीक्षार्थपण्डितजनप्रेरणाप्रदायकाय भट्टारकगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९।।

ॐ ह्रीं पूज्यानामपि पूज्यपदधारकाय तत्रभवान्नामसार्थकगुणयुक्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनपूज्यपदप्राप्ताय अत्रभवान्गुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।११।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनमस्तकस्थितसर्वजनश्रेष्ठपदप्राप्ताय महान्नामसार्थक-गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।१२।।

ॐ ह्रीं महतीपूजायोग्याय महामहार्हगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशाश्वतायुर्धारकाय तत्रायुर्गुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४।।

ॐ ह्रीं अनन्तानन्तकालावधिस्थितपुनरागमनविरहिताय दीर्घायुगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१५।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनजनपूज्यदिव्यध्वनिरूपवचनप्राप्ताय अर्घ्यवाक्गुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६।।

ॐ ह्रीं सर्वजनाराधनायोग्यपदप्राप्ताय आराध्यगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनजनासाधारणपूजायोग्याय परमाराध्य-गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८।।

ॐ ह्रीं गर्भावतार-जन्माभिषेक-निष्क्रमण-ज्ञान-निर्वाणनाम-पंचकल्याणक पूजाप्राप्ताय पंचकल्याणपूजितगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं..।।१९।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनविशुद्धियुक्तद्वादशगणप्रमुखाय दृग्विशुद्धिगणोदग्र-गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२०।।

ॐ ह्रीं रत्नसुवर्णादिधनवृष्टिभिर्मातृभवनांगणपूजिताय वसुधारार्चितास्पद-

ॐ ह्रीं गर्भावतारपूर्वजननीषोडशस्वप्नप्रदर्शकाय सुस्वप्नदर्शिगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२।।

ॐ ह्रीं मनुष्येषु असाधारणतेजबलधारकाय दिव्यौजस्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२३।।

ॐ ह्रीं स्वजननीपादकमलशचीपूजितकराय शचीसेवितमातृकगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२४।।

ॐ ह्रीं गर्भावतारसमये पञ्चदशमासरत्नवृष्टिसहितपदप्राप्ताय रत्नगर्भगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५।।

ॐ ह्रीं श्री-ह्री- धृतिकीर्तिबुद्धिलक्ष्मीशान्तिपुष्टिदेवीभिःपवित्रितगर्भवासाय श्रीपूतगर्भगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६।।

ॐ ह्रीं सुरेन्द्रादिकृतगर्भकल्याणोत्सवसमुन्नताय गर्भोत्सवोच्छ्रितगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२७।।

ॐ ह्रीं दिव्यदेवोपनीतपूजया पुष्टिप्राप्ताय दिव्योपचारोपचितगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरपुण्यप्रभावेन मातृगर्भाशयकमलकर्णिकासिंहासनोपरि गर्भावासकरणाय पद्मभूसार्थकगुणसमन्विताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२९।।

ॐ ह्रीं कालकलाव्यतीताय निष्कलगुणसमन्वितायश्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३०।।

ॐ ह्रीं स्वात्मनोत्पद्यमानजन्मधारकाय स्वजगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३१।।

ॐ ह्रीं सर्वजनहितकरजन्मधारकाय सर्वीयजन्मगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३२।।

ॐ ह्रीं पुण्योपार्जनहेतुभूतशरीरधारकाय पुण्यांगगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३।।

ॐ ह्रीं कोटिचन्द्रसूर्याधिकतेजोधारकाय भास्वद्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४।।

ॐ ह्रीं सर्वोत्कृष्टपुण्यधारकाय उद्भूतदैवतगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनजनज्ञापितजन्मधारकाय विश्वविज्ञातसंभूतिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३६।।

ॐ ह्रीं भवनवासि-वानव्यंतर-ज्योतिष्क-कल्पवासिदेवागमनेन विश्वस्मिन्नाश्चर्यकराय विश्वदेवागमाद्भुतगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३७।।

ॐ ह्रीं शचीकृतमायामयबालकस्वरूपदर्शकाय शचीसृष्टप्रतिच्छन्दगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३८।।

ॐ ह्रीं इन्द्रलोचनानंदकारकाय सहस्राक्षदृगुत्सवगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३९।।

ॐ ह्रीं जन्माभिषेकार्थगमनकाले नृत्यदैरावतहस्तिनउपरि उपविष्टाय नृत्यदैरावतासीननामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४०।।

ॐ ह्रीं शतेन्द्रवंद्यपदप्राप्ताय सर्वशक्रनमस्कृतगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४१।।

ॐ ह्रीं आनन्दोत्सुक-परधर्मानुरागसहितामरविद्याधरगणवंदिताय हर्षाकुलामरखगनामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४२।।

ॐ ह्रीं चारणर्द्धिसमन्वितमुनिगणाभीष्टजन्माभिषेक-कल्याणप्राप्ताय चारणर्षिमतोत्सवनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४३।।

ॐ ह्रीं प्राणिवर्गस्य विशेषरक्षाकारिणे व्योमनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४४।।

ॐ ह्रीं विष्णुपद-प्राणिवर्गपद-चतुर्दशमार्गणास्थानरक्षकपरमकारूणिक-पदप्राप्ताय विष्णुपदारक्षनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४५।।

ॐ ह्रीं जन्माभिषेकचतुष्किका-मेरुपर्वतप्राप्ताय स्नानपीठायिताद्रिराट्-नामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४६।।

ॐ ह्रीं तीर्थस्वरूपजलाशयस्वामिरूपंमन्यमानक्षीरसमुद्रपवित्रीकृताय तीर्थेशंमन्यदुग्धाधिनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४७।।

ॐ ह्रीं स्नानजलेन वासवशरीरप्रक्षालिताय स्नानाम्बुस्नातवासवनाम-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४८।।

ॐ ह्रीं जन्माभिषेकजलेन त्रिभुवनपवित्रीकृताय गन्धाम्बुपूतत्रैलोक्य-गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४९।।

ॐ ह्रीं स्वाभाव्येन छिद्रसहितप्रभुकर्णइन्द्रवज्रसूचीकर्णवेधविधिप्राप्ताय वज्रसूचीशुचिश्रवस्नाम समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५०।।

ॐ ह्रीं सफलीकृत-इन्द्रमहादेवीहस्ताय कृतार्थितशचीहस्तनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५१।।

ॐ ह्रीं इन्द्रेण सर्वमानितनामघोषणाप्राप्ताय शक्रोद्घुष्टेष्टनामक-गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।५२।।

ॐ ह्रीं मेरुपर्वतस्योपरिजन्माभिषेकानन्तरं इन्द्रकृतानंदनर्तनप्राप्ताय शक्रारब्धानन्दनृत्यगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।५३।।

ॐ ह्रीं शच्या प्रभुवैभवं प्रदर्श्य जिनजननी-आश्चर्योत्पादकाय शचीविस्मापिताम्बिकगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।५४।।

ॐ ह्रीं जन्माभिषेकानन्तरमिन्द्रकृतपितृसमक्षनर्तनाय इन्द्रनृत्यन्तपितृकगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।५५।।

ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्रादेशप्राप्तकुबेरेण जगज्जनमनोरथपूर्णीकृताय रैदपूर्णमनोरथगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५६।।

ॐ ह्रीं आदेशग्राहकसौधर्मेन्द्रकृतसेवाभक्तियुक्ताय आज्ञार्थीन्द्रकृतासेवगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।५७।।

ॐ ह्रीं लौकान्तिकदेवाभीष्टप्रभुमोक्षोद्यमसहिताय देवर्षीष्टशिवोद्यम-गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५८।।

ॐ ह्रीं जैनेश्वरीदीक्षासमयसमस्तजगत्क्षोभिताय दीक्षाक्षणक्षुब्ध-जगन्नाम्नालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५९।।

ॐ ह्रीं अधोमध्योर्ध्वलोकस्वामिपूजिताय भूर्भुवःस्वःपतीडितगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६०।।

ॐ ह्रीं कुबेरकृतसमवसरणमहिमामण्डिताय कुबेरनिर्मितास्थान-गुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६१।।

ॐ ह्रीं नवनिधिलक्षणबहिरंगाभ्युदयलक्ष्मी-अनन्तचतुष्टय-रूपान्तरंग-लक्ष्मीप्रदानसमर्थाय श्रीयुक्-गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६२।।

ॐ ह्रीं यम-नियम-प्राणायाम-प्रत्याहार-धारणा-ध्यान-समाधि-लक्षणाष्ट-योगसहितयोगिजनानामीश्वरगणधरदेवादिभिरर्चिताय योगीश्वरार्चितगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६३।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मापरनामाहमिन्द्रै:स्तुत्याय ब्रह्मेड्यगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।६४।।

ॐ ह्रीं आत्मस्वरूपज्ञायकाय ब्रह्मविद्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६५।।

ॐ ह्रीं योगिवृंदज्ञानगम्याय वेद्यगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६६।।

ॐ ह्रीं पूजायोग्यपदप्राप्ताय याज्यगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६७।।

ॐ ह्रीं यज्ञ-महामहस्वामिने यज्ञपतिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६८।।

ॐ ह्रीं योगिध्यानप्रकटीभूताय क्रतुनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६९।।

ॐ ह्रीं पूजाविध्युपायप्रदर्शिताय यज्ञांगगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७०।।

ॐ ह्रीं मृत्युविजयिपदप्राप्ताय अमृतगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७१।।

ॐ ह्रीं पूजायोग्यपदप्राप्ताय यज्ञगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७२।।

ॐ ह्रीं निजात्मस्वरूपे कर्मेन्धनहवनकरणसमर्थाय हविनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७३।।

ॐ ह्रीं इन्द्र-नागेन्द्र-चक्रवर्ति-गणधरादिभिःस्तुतियोग्याय स्तुत्यगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७४।।

ॐ ह्रीं सर्वजगत्प्राणिभिःस्तुतिप्राप्ताय स्तुतीश्वरगुणसमन्विताय श्रीमहावीर जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७५।।

ॐ ह्रीं आत्मस्वभावोपलब्धिरूपाय समवसरणविभूतिमंडिताय भावनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७६।।

ॐ ह्रीं महामहस्वरूपमहतीकल्पद्रुमादिपूजाप्राप्ताय महामहपति-गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७७।।

ॐ ह्रीं घातिकर्मेन्धनहोमलक्षणलक्षिताय महायज्ञगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७८।।

ॐ ह्रीं याजकेषु प्रमुखपदप्राप्ताय अग्रयाजकगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७९।।

ॐ ह्रीं करूणास्वरूपपूजाप्राप्ताय दयायागगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।८०।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनजनपूज्यपदप्राप्ताय जगत्पूज्यगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।८१।।

ॐ ह्रीं अष्टविधार्चनयोग्याय पूजार्हगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।८२।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यस्थितभव्यप्राणिगणपूजिताय जगदर्चितगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।८३।।

ॐ ह्रीं इन्द्रादिषु श्रेष्ठपदप्राप्ताय देवाधिदेवगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।८४।।

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशदिन्द्रपूजिताय शक्रार्च्यगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।८५।।

ॐ ह्रीं देवानां देव-परमदेवपदप्राप्ताय देवदेवगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।८६।।

ॐ ह्रीं जगत्स्थितप्राणिवर्गपितृतुल्योपदेशकाय जगद्गुरुगुणसमन्विताय-श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।८७।।

ॐ ह्रीं इन्द्रादेशामंत्रितचतुर्विधदेववृंदपूजिताय संहूतदेवसंघार्च्यगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८८।।

ॐ ह्रीं देवरचितकमलोपरिचरणकमलनिक्षेपणकराय पद्मयानगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८९।।

ॐ ह्रीं मोहारिविजयिध्वजधारकाय जयध्वजिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९०।।

ॐ ह्रीं कोट्यर्कसमानतेजोमंडलसहिताय भामंडलीगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९1।।

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशद्यक्षसंवीज्यमानचतुःषष्टिचामरसहिताय चतुःषष्टि-चामरगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९२।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वादशकोटिवाद्योद्घोषमहिमाप्राप्ताय देवदुंदुभिनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९३।।

ॐ ह्रीं तालु-ओष्ठादिस्पर्शविरहितदिव्यध्वनिप्राप्ताय वागस्पृष्टासनगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९४।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रयविभूतिधारकाय छत्रत्रयराट्गुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९५।।

ॐ ह्रीं उपरिमुखाधोवृंतकृतद्वादशयोजनपर्यंतकुसुमवृष्टिमहिमाप्राप्ताय पुष्पवृष्टिभाक्नामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९६।।

ॐ ह्रीं दिव्यामानुषमहामंडपोपरिस्थितयोजनैक- प्रमाणविस्तृतमणि-मयाशोकवृक्षमहिमाधारकाय 'दिव्याशोक' नामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९७।।

ॐ ह्रीं दूरादपि दर्शनमात्रेण मिथ्यावादि-अहंकारशतखण्डीकरणसमर्थ-चतुर्मानस्तंभप्राप्ताय मानमर्दिनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९८।।

ॐ ह्रीं गीत-नृत्य-वादित्र सहितनाट्यशालागतदेवांगनानर्तनविभवधारकाय संगीतार्हनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९९।।

ॐ ह्रीं प्रतिप्रतोलि-शृंगारतालकलशध्वजस्वस्तिकछत्रदर्पणचामर नामाष्टमंगलद्रव्यविभवधारकाय अष्टमंगलनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१००।।

पूर्णार्घ्य- तर्ज- सद्राह पे जीवन नैया लगा.....

सन्मति के गुणों को गाते चलो, मन वांछित फल पा जावोगे।
भक्ती से अर्घ्य चढ़ाते चलो, धनसुख संपत्ति पा जावोगे।।
इंद्रों से पूजा योग्य आप, यज्ञार्ह नाम को प्राप्त हुये।
इन प्रभु को अपना मान चलो, जिनगुणसंपद् पा जावोगे।।१।।
सन्मति.....

मंगलद्रव्यों से पूज्य 'अष्ट मंगल' गुण आदिक प्राप्त किये।
इन महावीर प्रभु को भज लो, निजआतम सुख पा जावोगे।।
।। सन्मति...।।२।।

ॐ ह्रीं यज्ञार्हादि-अष्टमंगल नामपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं....।।

शांतये शांतिधारा। दिव्यपुष्पांजलिः।

ॐ ह्रीं संसारसागरपारकरणसमर्थद्वादशांगशास्त्रमयतीर्थकरणकुशलाय तीर्थकृद्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०१।।

ॐ ह्रीं स्वपादस्पर्शमात्राद्भूमिपर्वतादिस्थलतीर्थकरणसमर्थाय तीर्थसृट्नामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०२।।

ॐ ह्रीं संसारवार्द्धितारणसमर्थरत्नत्रयस्वरूपभावतीर्थसृजनकरणाय तीर्थकरगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०३।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणविभवकारितीर्थकरनामकर्मप्रकृतिबंधप्राप्ताय तीर्थंकरगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०४।।

ॐ ह्रीं क्षायिकसम्यक्त्वप्राप्ताय सुदृक्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०५।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्रप्रवर्तनसमर्थाय तीर्थकर्तृनामसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०६।।

ॐ ह्रीं धर्मतीर्थपोषणकराय तीर्थभर्तृगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०७।।

ॐ ह्रीं तीर्थस्वामिपदप्राप्ताय तीर्थेशगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय

अर्घ्यं.....।।१०८।।

ॐ ह्रीं अनन्तभव्यप्राणिमोक्षमार्गनयनसमर्थाय तीर्थनायकगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१०९।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशधर्मतीर्थप्रवर्तनकराय धर्मतीर्थकरविभवसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।११०।।

ॐ ह्रीं अहिंसापरमधर्मलक्षणतीर्थप्रणयनकुशलाय तीर्थप्रणेतृगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१११।।

ॐ ह्रीं वस्तुस्वभावलक्षणतीर्थप्रवर्तनाय तीर्थकारकगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।११२।।

ॐ ह्रीं जीवदयालक्षणधर्मतीर्थप्रवर्तनकराय तीर्थप्रवर्तकगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।११३।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलक्षणसद्धर्मतीर्थसृजनकराय तीर्थवेधस्नाम-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।११४।।

ॐ ह्रीं अखिलविश्वमध्ये सर्वोत्तमसुखप्रापकधर्मतीर्थसृष्टिकराय तीर्थ-विधायकनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।११५।।

ॐ ह्रीं शाश्वतसौख्यदायिशिवपथप्रदर्शकसत्यतीर्थप्रवर्तकाय सत्यतीर्थकर-गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।११६।।

ॐ ह्रीं तीर्थभूतमहापुरूषसेवितचरणकमलाय तीर्थसेव्यगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।११७।।

ॐ ह्रीं पुण्यक्षेत्रकैलाशगिरिचंपापावागिरनारादियात्राकारकजनतारकाय तैर्थिकतारकपदसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।११८।।

ॐ ह्रीं सत्यवाक्यसहितदिगम्बरमहर्षिगणस्वामिने सत्यवाक्याधिपगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।११९।।

ॐ ह्रीं पूर्वापरविरोधरहितसत्यशास्त्रकारिणे सत्यशासनगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१२०।।

ॐ ह्रीं अनंतसुखानन्तवीर्यसहिताय मिथ्यामतैरखंडितशासनाय

अप्रतिशासननामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२१।।

ॐ ह्रीं स्यात्पदपूर्वामोघशस्त्रेणैकान्तवादनिराकरणसमर्थाय स्याद्वादिगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२२।।

ॐ ह्रीं मानुषीप्रकृतिविरहितसर्वभाषामयीवाणीसहिताय दिव्यगीर्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२३।।

ॐ ह्रीं देवमनुष्यपशुपक्षिगणस्व-स्वभाषापरिणताय दिव्यध्वनिगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२४।।

ॐ ह्रीं प्राणिमात्रघातविरहितवाणीसहिताय अव्याहतार्थवाक्नाम-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२५।।

ॐ ह्रीं स्वर्गादिसौख्यप्रदायकपुण्योपार्जनहेतुभूतवाणीसहिताय पुण्यवाक्-गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२६।।

ॐ ह्रीं गणधरचक्रिशक्रादिभिःप्रार्थनीयवचनसहिताय अर्थ्यवाक्गुण-समन्विताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१२७।।

ॐ ह्रीं अर्धमगधदेशभाषार्धसर्वभाषामयीदिव्यवाक्सहिताय अर्धमागधी-योक्तिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२८।।

ॐ ह्रीं परमातिशायिवचनधारकाय इच्छवाक्नामसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२९।।

ॐ ह्रीं अनेकधर्मात्मकवस्तुधर्मोपदेशनकराय अनेकान्तदिक्नामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३०।।

ॐ ह्रीं जीवनित्यानित्यैकांतवादान्धकारभेदनसमर्थाय एकांतध्वांतभिद्-गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३१।।

ॐ ह्रीं एकान्तवादिकथितदुर्णयविध्वंसनकराय दुर्णयान्तकृद्गुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३२।।

ॐ ह्रीं जीवादिपदार्थप्रतिपादनसमर्थाय अभ्युदयनिःश्रेयसलक्ष्मीप्रदायका-न्वर्थवचनधारकाय सार्थवाक्गुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।१३३।।

ॐ ह्रीं भव्यजीवपुण्यप्रेरितदिव्यध्वनिसहिताय अप्रयत्नोक्तिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३४।।

ॐ ह्रीं मिथ्यादृष्टिप्रतिपादिताहंकारविनाशनकारिवचनप्राप्ताय प्रतितीर्थ-

मदघ्नवाक्समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३५।।

ॐ ह्रीं स्यात्पदचिन्हसमन्वितवचनप्राप्ताय स्यात्कारध्वजवाग्गुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३६।।

ॐ ह्रीं मोहनीयकर्मविनाशनेन इच्छाविरहितवचननिर्गमनातिशयप्राप्ताय ईहापेतवाग्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३७।।

ॐ ह्रीं निश्चलौष्ठवचननिर्गमनातिशयप्राप्ताय अचलौष्ठवाग्गुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३८।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधनद्वादशांगश्रुतज्ञानरूपवचनोपदेशकाय अपौरुषेय-वाक्शास्तृगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३९।।

ॐ ह्रीं मुखोद्घाटनविरहितवाणीप्राप्ताय रुद्धवाक्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१४०।।

ॐ ह्रीं स्यादस्ति-स्यान्नास्ति-स्यादस्तिनास्ति--स्यादवक्तव्य- स्यादस्ति-अवक्तव्य- स्यान्नास्त्यवक्तव्य-स्यादस्तिनास्त्यवक्तव्याख्यसप्तभंगमय- वचनो-पदेशनकराय सप्तभंगिवाक्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४१।।

ॐ ह्रीं अकारादिवर्णविरहितनिरक्षरवचनप्राप्ताय अवर्णगीनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४२।।

ॐ ह्रीं सर्वदेशस्थाष्टादशमहाभाषासप्तशतकलघुभाषामयीवाणीधारकाय सर्वभाषामयगीगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४३।।

ॐ ह्रीं श्रोतृणां कर्णप्रदेशगतस्पष्टाक्षररूपपरिणताय व्यक्तवर्णगीनाम-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४४।।

ॐ ह्रीं सफलीभूतवचनप्राप्ताय अमोघवाग्गुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४५।।

ॐ ह्रीं क्रमरहित-युगपत्सर्वतत्त्वप्रकाशनसमर्थाय अक्रमवाग्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४६।।

ॐ ह्रीं शब्दागोचरानन्तपदार्थप्रकाशनसमर्थाय अवाच्यानन्तवाग्गुण-विभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४७।।

ॐ ह्रीं सर्वजनासाधारणवचनप्राप्ताय अवाग्गुणसमन्विताय श्रीमहावीर-

जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१४८।।

ॐ ह्रीं अद्वैतमात्रात्मैकशासिकावाणीप्राप्ताय अद्वैतगीनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१४९।।

ॐ ह्रीं सत्यवचनोपदेशकराय सूनृतगीर्नामधारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१५०।।

ॐ ह्रीं सत्यानुभयवचनोपदेशनसमर्थाय सत्यानुभयगीगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१५१।।

ॐ ह्रीं शोभनावाणीनाथाय सुगीनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१५२।।

ॐ ह्रीं एकयोजनव्यापिनीवाणीप्राप्ताय योजनव्यापिगीनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१५३।।

ॐ ह्रीं गोदुग्धवदुज्ज्वलवाणीप्राप्ताय क्षीरगौरगीनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१५४।।

ॐ ह्रीं अनन्तजन्मपापप्रक्षालिनीवाणीधारकाय तीर्थकृत्वगीगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१५५।

ॐ ह्रीं भव्यजीवश्रवणयोग्यवाणीप्राप्ताय भव्यैकश्रव्यगुनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१५६।।

ॐ ह्रीं शाश्वतसमीचीनवाणीप्राप्ताय सद्गुनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१५७।।

ॐ ह्रीं नानाविधभव्यजीवसंबोधनवचनवक्त्रे चित्रगुनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१५८।।

ॐ ह्रीं परमनिःश्रेयसपथप्रदर्शकवचनवक्त्रे परमार्थगुनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१५९।।

ॐ ह्रीं आत्यंतिकशांतिप्रदायिनीवाणीधारकाय प्रशान्तगुनाममंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१६०।।

ॐ ह्रीं प्रश्नकर्तृणां प्रश्नानुसारवाणीप्राप्ताय प्राश्निकगुवचनसमन्विताय

श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१६१।।

ॐ ह्रीं कर्मक्षयकारिवचनवक्त्रे सुगुनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१६२।।

ॐ ह्रीं पूर्वाण्ह-मध्यान्ह-अपराण्ह-अर्धरात्रिकचतुर्नियतसमयदिव्यध्वनि-निर्गमनपुण्यप्राप्ताय नियतकालगुनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१६३।।

ॐ ह्रीं द्वादशांगरूपश्रुतिप्राप्ताय सुश्रुतिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१६४।।

ॐ ह्रीं अबाधितार्थशास्त्रप्रणयनसहिताय सुश्रुतगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१६५।।

ॐ ह्रीं महापंडितगणपूज्यशास्त्रप्रणेत्रे याज्यश्रुतिनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१६६।।

ॐ ह्रीं श्रोतृगणभंक्तिपूर्वकश्रवणकराय सुश्रुन्नामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१६७।।

ॐ ह्रीं सर्वार्थप्रकाशनसमर्थवाणीप्राप्ताय महाश्रुतिगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१६८।।

ॐ ह्रीं संसारसमुद्रोत्तारणविशिष्टधर्मोपदेशनकराय धर्मश्रुतिगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१६९।।

ॐ ह्रीं धर्मार्थकाममोक्षपुरुषार्थप्रतिपादनस्वामिने श्रुतिपतिगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१७०।।

ॐ ह्रीं अनादिकालीनापौरुषेयश्रुतोद्धारकाय श्रुत्युद्धर्त्तृगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१७१।।

ॐ ह्रीं शाश्वतषट्द्रव्योपदेशकाय ध्रुवश्रुतिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१७२।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्गोपदेशनकराय निर्वाणमार्गादिग्गुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१७३।।

ॐ ह्रीं श्रावकमुनिधर्मप्रतिपादकाय मार्गदेशकगुणसमन्विताय

श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१७४।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दृष्टि-मिथ्यादृष्टिसर्वप्राणिगमनकारणसंसारमोक्षमार्गदर्शकाय सर्वमार्गादिग्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१७५।।

ॐ ह्रीं स्वात्मज्ञानपथप्रदर्शकाय सारस्वतपथगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१७६।।

ॐ ह्रीं सर्वसमयसिद्धान्तेषु परमप्रकृष्टतीर्थकराय तीर्थपरमोत्तमतीर्थ-कृत्नामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१७७।।

ॐ ह्रीं भव्यजीवानां स्वामितयोपदेशकाय देष्ट्गुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१७८।।

ॐ ह्रीं वाचोयुक्तिपटूनां स्वामिने वाग्मीश्वरगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१७९।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रलक्षणधर्मप्रतिपादकाय धर्मशासकगुण-विभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१८०।।

ॐ ह्रीं सर्वजीवदयाधर्मोपदेशनकराय धर्मदेशकगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१८१।।

ॐ ह्रीं एकादशांगचतुर्दशपूर्ववाणीप्राप्ताय वागीश्वरगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१८२।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यस्वामिने त्रयीनाथगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१८३।।

ॐ ह्रीं त्रिविधभंगप्रतिपादनकराय त्रिभंगीशगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१८४।।

ॐ ह्रीं प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगरूप-वाणीस्वामिने गिरांपतिगुणसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१८५।।

ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्राज्ञापालनकारकाय सिद्धाज्ञगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१८६।।

ॐ ह्रीं सिद्धवचनप्राप्ताय सिद्धवाग्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१८७।।

ॐ ह्रीं आदेशसिद्धकारिपदप्राप्ताय आज्ञासिद्धगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८८।।

ॐ ह्रीं सर्वशासनेषु एकमात्रशासनसिद्धकराय सिद्धैकशासनगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८९।।

ॐ ह्रीं भव्यप्रतिपादितसिद्धान्तजगत्प्रसिद्धमान्याय जगत्प्रसिद्धसिद्धान्तगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९०।।

ॐ ह्रीं भवज्ज्ञानजगत्प्रसिद्धाय सिद्धमंत्रगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९१।।

ॐ ह्रीं अतिशयसिद्धवाणीप्राप्ताय सुसिद्धवाक्नामसमन्विताय श्रीमहावीर जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९२।।

ॐ ह्रीं भव्यकर्णपवित्रकारिवचनप्रतिपादकाय शुचिश्रवस्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९३।।

ॐ ह्रीं प्रमाणसंगतवचनवक्त्रे निरूक्तोक्तिगुणविभूषिताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९४।।

ॐ ह्रीं पूर्णश्रुतज्ञानप्ररूपकाय तंत्रकृन्नामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९५।।

ॐ ह्रीं न्यायशास्त्रप्ररूपणसमर्थाय न्यायशास्त्रकृन्नामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९६।।

ॐ ह्रीं सर्वजगत्पूज्यवाणीधारकाय महिष्ठवाग्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९७।।

ॐ ह्रीं ॐकारमयमहाध्वनिप्राप्ताय महानादगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९८।।

ॐ ह्रीं गणधरदेवादिस्वामिने कवीन्द्रगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९९।।

ॐ ह्रीं जयजयकारस्वरूपपटहादिनानावाद्यपूज्याय दुंदुभिस्वनगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२००।।

पूर्णार्घ्य - तर्ज - गोमटेश, जय गोमटेश.....

वर्द्धमान, जय वर्द्धमान, मम हृदय विराजो..२।
हम यही भावना करते हैं, ऐसा आने वाला कल हो।
हो नगर नगर में प्रभु भक्ती, सारे जग में शुभ मंगल हो।।
हम.....।।१।।

जो धर्म तीर्थ को करते हैं, वे प्रभो! "तीर्थकृत्" कहलाते।
देवों द्वारा दुंदुभि बजते, 'दुंदुभिस्वन' नाम अतः पाते।।
इन सन्मति को वंदन करते, मेरा जीवन भी उज्जवल हो।।
हम.....।।२।।

जो प्रभु की पूजा करते हैं, वे नरभव पावन करते हैं।
लौकिक संपति सुख पाकर के, निज आत्म निधी को वरते हैं।।
इन महावीर की भक्ती से, मेरा मन अतिशय उज्ज्वल हो।।
हम.....।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थकृदादिदुंदुभिस्वनगुणपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं.....

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य- ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमहावीरजिनेंद्राय विश्वशांतिकराय सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः।

(सुगंधित पुष्प, लवंग या पीले चावल मिश्रित रत्नों से १०८ मंत्रों का जाप्य करें पूजा के अनंतर मंत्रित रत्नों को श्रद्धालुओं में वितरित कर दें।)

जयमाला

दोहा- नाथ ! आप गुणसिंधु हैं, को कहि पावे पार।
नाम मंत्र ही आपका, करे भवोदधि पार।।१।।

रोलाछंद- जय जय सन्मितिदेव, जय जय श्री भगवंता।
महावीर जिनदेव, गुण अनंत धारंता।।
घातिकर्म अरिनाश, केवलज्ञान उपायो।
अर्धनिमिष में धनपति, समवसरण सु रचायो।।२।।

इन्द्रभूति गुरू एक, चौदह विद्या ज्ञाता।
ब्राह्मण कुल अवतंस, गौतम गोत्र विख्याता।।
शास्त्र महोदधि तीर्ण, शिष्य पांच शत माने।
इन सम ही दो भ्रात, गर्वित शास्त्र बखाने।।३।।

छ्यासठ दिन पर्यंत, प्रभु की खिरी न वाणी।
सोधर्मेंद्र उपाय, कीनो अति सुखदानी।।
गौतमशाला माहिं, वृद्धरूप धर आके।
इंद्रभूति के पास, कहता है अकुलाके।।४।।

मेरे गुरू महावीर, आतम ध्यान लगाये।
भूल गया मैं अर्थ, जो श्लोक पढ़ाये।।
दो यदि अर्थ बताय, तो तुम शिष्य बनूं मैं।
नहिं तो होवो शिष्य, मुझ गुरू के ये चहूं मैं।।५।।

'त्रैकाल्यं' इत्यादि, जब श्लोक पढ़ा है।
अर्थबोध से हीन, मन आश्चर्य बढ़ा है।।
चलो गुरू के पास, मैं शास्त्रार्थ करूंगा।
तुम हो छात्र अजान, गुरु से अर्थ कहूंगा।।६।।

उभय भ्रात के साथ, सब शिष्यों को लेके।
चले इंद्र के साथ, समवसरण अवलोके।।
मानस्तंभ निहार, मान गलित हुआ सारा।
वचन 'जयति भगवान्' स्तुतिरूप उचारा।।७।।

निजमिथ्यात्व विनाश, जिनदीक्षा को लीना।
दिव्यध्वनि तत्काल, प्रगटी भवि सुखदीना।।
द्वादशांगमय ग्रन्थ, गौतम गुरू ने कीने।
गणधर पद के पाय, सब ऋद्धी धर लीने।।८।।

चरम तीर्थंकर देव, धर्मतीर्थ के कर्ता।
तुम पदपंकज सेव, करते भवि भवहर्ता।।
द्वादश सभा समूह, हाथ जोड़ कर बैठे।

पीते वचन पियूष, स्वात्मनिधी को लेते।।९।।
भरें सौख्य भंडार, जो जन स्तवन उचारते।
पावें नवनिधिसार, जो प्रभु पूजन करते।।
रोग शोक आतंक, मानस व्याधि नशावे।
पावें परमानंद, जो प्रभु के गुण गावें।।१०।
नमूं नमूं नत शीश, वीर प्रभु के चरणा।
मिले स्वात्म नवनीत, लिया आपकी शरणा।।
संयम लब्धि महान, पाऊं भवदुख नाशूं।
ज्ञानमती जगमान्य, मिले स्वात्म परकाशूं।।११।।

दोहा - महावीर प्रभु आपने, किया ज्ञान को पूर्ण।
कोटि कोटि प्रणमूं प्रभो ! करो हमें सुखपूर्ण।।१२।।

ॐ ह्रीं द्विशतमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं....
निर्वपामीति स्वाहा।
शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलि।

गीताछंद- जो विश्वशांती महावीर विधान भक्ती से करें।
सब आपदाएं दूरकर, सर्वत्र सुख शांती भरें।।
तीर्थेश प्रभु का मेरु पर, जन्माभिषेकोत्सव करें।
फिर स्वयं तीर्थंकर बनें, निज 'ज्ञानमती' संपत्ति भरें।।१।।
इत्याशीर्वादः।

पूजा नं. ५

स्थापना- गीताछंद

महावीर के गुणगान से, भविजन भवोदधि से तिरें।
मुनिगण तपोनिधि भी हृदय में, आप की भक्ती करें।।
हम भी करें आह्वान प्रभु का, भक्ति श्रद्धा से यहां।
सम्यक्त्व निधि मिल जाये स्वामिन् !, एक ही वांछा यहां।।१।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

अथ अष्टक-स्रग्विणी छंद

स्वात्म का साम्यरस नाथ ! दीजे मुझे।
नीर से पाद में तीन धारा करूं।।
तीन सौ मंत्र से वीर प्रभु को जजूं।
स्वात्मसिद्धी मिले एक ही याचना।।२।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.....

स्वात्मसौरभ मिले चित्त उसमें रमें।
गंध से आपके चरण चर्चन करूं।।
तीन सौ मंत्र से वीर प्रभु को जजूं।
स्वात्मसिद्धी मिले एक ही याचना।।३।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं.....

ज्ञान अक्षय बने नाथ ! कीजे कृपा।
शालि के पुंज से पूजहूं भक्ति से।।
तीन सौ मंत्र से वीर प्रभु को जजूं।
स्वात्मसिद्धी मिले एक ही याचना।।४।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं.....

सौख्यपीयूष पीऊं सुतृप्ती मिले।
पुष्पमंदारमाला चढ़ाऊं तुम्हें।।
तीन सौ मंत्र से वीर प्रभु को जजूं।
स्वात्मसिद्धी मिले एक ही याचना।।५।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....

भूख व्याधी मिटा दो प्रभो ! मूल से।
मैं चढ़ाऊं तुम्हें खीर लाडू अबे।।
तीन सौ मंत्र से वीर प्रभु को जजूं।
स्वात्मसिद्धी मिले एक ही याचना।।६।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....

मोह अंधेर में आत्मनिधि ना मिले।
आरती मैं करूँ ज्ञान ज्योती भरे।।
तीन सौ मंत्र से वीर प्रभु को जजूं।
स्वात्मसिद्धी मिले एक ही याचना।।७।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं.....

धूप खेऊं सुगंधी उड़े लोक में।
स्वात्म गुण गंध फैले, प्रभो ! शक्ति दो।।
तीन सौ मंत्र से वीर प्रभु को जजूं।
स्वात्मसिद्धी मिले एक ही याचना।।८।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....

स्वात्म की संपदा दीजिये हे प्रभो !
आम अंगूर फल को चढ़ाऊं तुम्हें।।
तीन सौ मंत्र से वीर प्रभु को जजूं।
स्वात्मसिद्धी मिले एक ही याचना।।९।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....

अर्घ्य अर्पण करूं स्वात्मपद के लिये।
नाथ पूरो हमारी सभी कामना।।

तीन सौ मंत्र से वीर प्रभु को जजूं।
स्वात्मसिद्धी मिले एक ही याचना।।१०।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....

सोरठा- **वीरप्रभू पादाब्ज, शांतीधारा मैं करूं।**
मिले स्वात्मसाम्राज, त्रिभुवन में भी शांति हो।१०।।

शांतये शांतिधारा।

बेला हरसिंगार, जिनपद कुसुमांजलि करूं।
मिले स्वात्म सुखसार, त्रिभुवन की सुखसंपदा।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ तीन सौ मंत्र अर्घ्य

सोरठा- जिनवर गुणमणितेज, सर्वलोक में व्यापता।
हो मुझ ज्ञान विशेष, पुष्पांजलि कर पूजहूं।।१।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(प्रत्येक अर्घ्य के साथ मंडल पर एक-एक रत्न चढ़ाना है।)

ॐ ह्रीं राज्यावस्थायां प्रजाभ्यः आयषष्ठभागकरयाचनाव्यवस्थापकाय स्वर्गमोक्षयाञ्चाफलप्रदाय नाथगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१।।

ॐ ह्रीं संसारदुःखतः सत्त्वरक्षणसमर्थाय पतिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२।।

ॐ ह्रीं विषयकषायेभ्यः सर्वजनरक्षकाय स्वगुणवर्धनसमर्थाय परिवृढगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३।।

ॐ ह्रीं स्वात्मशासनसमर्थाय स्वामिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४।।

ॐ ह्रीं स्व-परात्मपोषणसमर्थाय भर्तृगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानकिरणैः चराचरजगद्व्यापकाय विभुगुणसमन्विताय

श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६।।

ॐ ह्रीं जगद्भव्यजनतारणदक्षाय प्रभुगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७।।

ॐ ह्रीं समवसरणविभूतिधारकैश्वर्यप्राप्ताय ईश्वरगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।८।।

ॐ ह्रीं अज्ञानिजनसंबोधनसमर्थाय अधीश्वरगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।९।।

ॐ ह्रीं हरिहरहिरण्यगर्भादीनामीशाय अधीशगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१०।।

ॐ ह्रीं अज्ञानि-ज्ञानिसर्वजनानामीशत्वगुणप्राप्ताय अधीशानगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।११।।

ॐ ह्रीं मिथ्यादृष्टिगणशासनसमर्थाय अधीशितृगुणविभूषिताय श्रीमहावीर जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१२।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनजनतानां स्वामिपदप्राप्ताय ईशितृगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१३।।

ॐ ह्रीं शिष्ट-दुष्टानुग्रहनिग्रहसमर्थपदप्राप्ताय ईशगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१४।।

ॐ ह्रीं सर्वजनेषु सर्वसौख्यदानसमर्थाय अधिपतिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१५।।

ॐ ह्रीं अहमिन्द्राणां स्वामिपदप्राप्ताय ईशानगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१६।।

ॐ ह्रीं ध्यानेन योगिजनहृदयकमलस्थिताय इनगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१७।।

ॐ ह्रीं शक्रादीनामपि आराध्यपरमैश्वर्यप्राप्ताय इन्द्रगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१८।।

ॐ ह्रीं अधिकेन सर्वजीवरक्षकाय केवलज्ञानेन लोकालोकव्याप्ताय

अधिपगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१९।।

ॐ ह्रीं सर्वजनमंगल-ऋद्धि-सिद्धिविधात्रे त्रिजगन्नायकाय अधिभूगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२०।।

ॐ ह्रीं इन्द्रादिभिः पूजाप्राप्ताय महेश्वरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२१।।

ॐ ह्रीं महापुरुषस्वामिपदप्राप्ताय महेशानगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२२।।

ॐ ह्रीं महापूजायोग्यपद-समन्विताय महेशगुणधारकाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२३।।

ॐ ह्रीं प्रकृष्टानुशासनकर्तृसमर्थाय महेशितृगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२४।।

ॐ ह्रीं परमानन्दसुखानुभवकर्त्रे अधिदेवगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२५।।

ॐ ह्रीं महतामिन्द्रादीनामपि देवपदप्राप्ताय महादेवगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२६।।

ॐ ह्रीं दिव्यानन्दपदप्राप्ताय देवगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२७।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वमध्याधोलोकपूज्यपदप्राप्ताय त्रिभुवनेश्वरगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२८।।

ॐ ह्रीं अखिलजगतां पूज्याय विश्वेशगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२९।।

ॐ ह्रीं त्रिजगत्प्राणिगणपोषणसमर्थाय विश्वभूतेशगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३०।।

ॐ ह्रीं सकलभुवनजनस्तुताय विश्वेट्गुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३१।।

ॐ ह्रीं सकलभुवनप्राणीश्वरपदप्राप्ताय विश्वेश्वरगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३२।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनस्योपरि विराजिताय अधिराट्गुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-

जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३३।।

ॐ ह्रीं त्रिजगज्जीवस्वामिपदप्राप्ताय लोकेश्वरगुणधारकाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३४।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनस्थितप्राणिवर्गरक्षकाय लोकपतिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३५।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनजनसौख्यदायकाय लोकनाथगुणसहिताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३६।।

ॐ ह्रीं अखिलविश्वरक्षणदक्षाय जगत्पतिगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३७।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनजनतापोषणदक्षाय त्रैलोक्यनाथगुणसमन्विताय श्री महावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३८।।

ॐ ह्रीं त्रिजगत्स्वामिपदप्राप्ताय लोकेशगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३९।।

ॐ ह्रीं त्रिजगत्स्थितप्राणिनां दुर्गतिवारणसमर्थाय जगन्नाथगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४०।।

ॐ ह्रीं जगज्जीवानां पालनसमर्थाय जगत्प्रभुगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४१।।

ॐ ह्रीं जगज्जनानां दुर्गतिगमनात् पातीति जगत्पालनसमर्थाय पितृगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४२।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनप्राणिगणशिवपदस्थापनदक्षाय परतरगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।४३।।

ॐ ह्रीं श्रेष्ठजनानामपि श्रेष्ठाय परतरगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४४।।

ॐ ह्रीं कर्मशत्रुजयसमर्थाय जेतृगुणसमन्विताय श्री महावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४५।।

ॐ ह्रीं रागद्वेषमोहशत्रुविजयशीलाय जिष्णुगुणविभूषिताय श्रीमहावीर-

जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४६।।

ॐ ह्रीं भवदतिरिक्तसंसारे कश्चिदीश्वरगुणविरहिताय अनीश्वरगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४७।।

ॐ ह्रीं स्वानन्तदर्शन-ज्ञान-सुख-वीर्यकारकाय कर्तृगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४८।।

ॐ ह्रीं इन्द्र-धरणेन्द्र-नरेन्द्राणामपि प्रभुत्वप्राप्ताय प्रभूष्णुगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४९।।

ॐ ह्रीं कोटिकोटिचंद्रार्कादपि दीप्तिधारकाय भ्राजिष्णुगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५०।।

ॐ ह्रीं अनन्तशक्तिप्रभावसहिताय प्रभविष्णुगुणविभूषिताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५१।।

ॐ ह्रीं स्वयमात्मना सर्वगुणप्रकटनसमर्थाय स्वयंप्रभुगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५२।।

ॐ ह्रीं जीवाजीवादिपदार्थावलोकनस्थानलोकविजयकारिणे लोकजिद्गुण-विशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५३।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यविजयिने विश्वजिद्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।५४।।

ॐ ह्रीं विश्वविजयिमोहशत्रुजयसमर्थाय विश्वविजेतृगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५५।।

ॐ ह्रीं विश्वविजयियममल्लविजयदक्षाय विश्वजित्वरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५६।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनजयिज्ञानावरणादिकर्मशत्रुजयशीलाय जगज्जेतृत्वगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५७।।

ॐ ह्रीं सर्वमिथ्यादृष्टिजनसेवकभावकारकाय जगज्जैत्रगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५८।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजनभक्तिमार्गप्रतिपादनपराय जगज्जिष्णुगुणसमन्विताय

श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५६।।

ॐ ह्रीं जगद्विजयिने जगज्जयिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६०।।

ॐ ह्रीं सर्वभव्यानामग्रधर्मप्रतिपादनाय अग्रणीगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६१।।

ॐ ह्रीं सिद्धपदप्रापणसमर्थाय ग्रामणीगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६२।।

ॐ ह्रीं अहिंसालक्षणधर्मप्रतिपादकाय नेतृगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६३।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वमध्योधोलोकपोषणसमर्थाय भूर्भुवः-स्वरधीश्वरगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६४।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रयस्वरूपपरमधर्मनिरूपकाय धर्मनायकगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६५।।

ॐ ह्रीं बुद्धि-तपो-विक्रिया-औषधि-रस-बल-अक्षीणनामसप्तर्द्धिसहिताय ऋद्धीशगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६६।।

ॐ ह्रीं प्राणिगणरक्षणसमर्थाय भूतनाथगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६७।।

ॐ ह्रीं भूतभाविवर्तमानप्राणिगणपालनदक्षाय भूतभृद्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६८।।

ॐ ह्रीं ज्ञानगुणसहिताय गतिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६९।।

ॐ ह्रीं सर्वजनार्तिमथनसमर्थाय पातृगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७०।।

ॐ ह्रीं संसारे धर्मामृतवर्षणकराय वृषगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७१।।

ॐ ह्रीं मुक्तिलक्ष्मीवरणीयपदप्राप्ताय वर्यगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७२।।

ॐ ह्रीं द्वादशांगरूपश्रुतप्रतिपादकाय सर्वसिद्धिकारकमंत्रस्वरूपाय मंत्रकृद्गुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७३।।

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्रशुभलक्षणधारकाय शुभलक्षणगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७४।।

ॐ ह्रीं सर्वप्रजानां प्रत्यक्षीभूताय त्रिभुवनप्रत्यक्षीकरणसमर्थाय लोकाध्यक्ष-गुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७५।।

ॐ ह्रीं महत्कष्टेन पराभवयोग्यमोहराजभर्त्सनसमर्थाय दुराधर्षगुण-विभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७६।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रयधारणयोग्यभव्यानामुपकारकाय भव्यबन्धुगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७७।।

ॐ ह्रीं उत्सुकतादिदोषविवर्जितस्थिरप्रकृतिधारकाय निरुत्सुकगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७८।।

ॐ ह्रीं ध्येयार्थबुद्धिप्रेरिताय स्वभावेन बुद्धिप्रदाय धीरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७९।।

ॐ ह्रीं जगज्जनहितोपदेशकाय जगद्धितगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८०।।

ॐ ह्रीं काम-क्रोध-मोह-लोभादिभिरजय्यपदप्राप्ताय अजय्यगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८१।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनमान्यान्तरंग-बहिरंगलक्ष्मीप्रदायकाय त्रिजगत्परमेश्वरगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८२।।

ॐ ह्रीं लोकालोके केवलज्ञानापेक्षया स्थिताय विश्वासिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।८३।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यस्थितप्राणिगणप्रभवे सर्वलोकेशगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८४।।

ॐ ह्रीं • पंचपरिवर्तनभ्रमणरूपभवविगताय विभवगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८५।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनपूज्यपदप्रदानसमर्थाय भुवनेश्वरगुणसमन्विताय श्रीमहावीर जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८६।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनभव्यजनातिप्रियपदप्राप्ताय त्रिजगद्वल्लभगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।८७।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनस्थितभव्यजनपंचकल्याणमंगलप्रदाय त्रिजगन्मंगलोदयगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८८।।

ॐ ह्रीं मोहारिखंडनसमर्थधर्मचक्रायुधप्रवर्तनपदप्राप्ताय धर्मचक्रायुधनाम-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।८९।।

ॐ ह्रीं तत्काले स्वर्गात्प्रच्युत्य मातृगर्भागमकल्याणकप्राप्ताय सद्योजातगुण-विशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९०।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनभव्यजनसुखप्रदाय त्रैलोक्यमंगलगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९१।।

ॐ ह्रीं भव्यजनाभीप्सितस्वर्गमोक्षफलप्रदाय वरदगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९२।।

ॐ ह्रीं क्रोधादिविकारविवर्जिताय अप्रतिघगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९३।।

ॐ ह्रीं बाह्यान्तरंगशत्रुभिरबाधिताय अछेद्यगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९४।।

ॐ ह्रीं अतिशयबलशालिस्थिरपदप्राप्ताय दृढीयस्-गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९५।।

ॐ ह्रीं रौद्रक्रूरपरिणामविरहिताय अभयंकरपदप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९६।।

ॐ ह्रीं इन्द्रादिपूज्यपदप्राप्ताय महाभागगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९७।।

ॐ ह्रीं त्रिजगदुपमाव्यतीताय निरौपम्यगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९८।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्रवर्तित्वपदप्राप्ताय धर्मसाम्राज्यनायकगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९९।।

ॐ ह्रीं धर्मतीर्थप्रवर्तकपदप्राप्ताय धर्मतीर्थनायकगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१००।।

पूर्णार्घ्य - तर्ज - भक्तामरगीता.....

अंतिम तीर्थंकर सन्मति को, झुक झुक शीश नमाते हैं।
गुण अनंत के धारी प्रभु की, पूजा कर हर्षाते हैं।।१।।
जलगंधादिक अर्घ्य लिये, स्वर्णपुष्प बहु मिला लिये।
प्रभु को अर्घ्य चढ़ायेंगे, रत्नत्रयनिधि पायेंगे।।२।।
रत्नअनर्घ्य बहुत जग में, उनसे तृप्ति न हो मन में।
प्रभु पूजा अतिशयकारी, इस सम पुण्य न हो भारी ।।३।।
गणधर वंदित वीरप्रभू के, पावन गुण को गाते हैं।
ये ही गुण मुझमें प्रगटित हो, यही भावना भाते हैं।।४।।

ॐ ह्रीं नाथगुणादिधर्मतीर्थनायकगुणपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं....

शांतये शांतिधारा । दिव्यपुष्पांजलिः।।

ॐ ह्रीं शुक्लध्यानबलेन कर्मनिर्मूलनसमर्थाय योगिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०१।।

ॐ ह्रीं धर्मश्रवणमुखकमलविकसितबुद्धिप्रदाय प्रव्यक्तनिर्वेदगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०२।।

ॐ ह्रीं रागद्वेषविवर्जितसमताभावप्रापणकराय साम्यारोहणतत्परगुण-विशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०३।।

ॐ ह्रीं सर्वजीवसमपरिणामपरिणताय सामयिकिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०४।।

ॐ ह्रीं सर्वसावद्ययोगविरतिलक्षणैकचारित्रप्राप्ताय सामायिकगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०५।।

ॐ ह्रीं विकथाकषायेन्द्रियविषयादिप्रमादविरहिताय निःप्रमादगुण-विभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१०६।।

ॐ ह्रीं निश्चयप्रतिक्रमणरूपध्यानलीनपदप्रदाय अप्रतिक्रमगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१०७।।

ॐ ह्रीं सर्वसावद्ययोगविरहितपदप्रदाय यमगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१०८।।

ॐ ह्रीं मोक्षपदप्राप्तिसाधनभूतप्रमुखनियमानुष्ठानधारकाय प्रधाननियमगुण-विशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१०९।।

ॐ ह्रीं अतिशयाभ्यस्तपद्मासनधारकाय स्वभ्यस्तपरमासनगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।११०।।

ॐ ह्रीं कुंभक-पूरक-रेचकादिलक्षणवायुप्रचारप्रवीणाय प्राणायामचणगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१११।।

ॐ ह्रीं पंचेन्द्रियविषयव्यापारेभ्यो मनोव्यावृत्य ललाटे अर्हं बीजाक्षर-स्थापनविधिप्रतिपादकाय सिद्धप्रत्याहारगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।११२।।

ॐ ह्रीं पंचेन्द्रियविषयविरतस्वात्मतत्त्वतन्मयाय जितेन्द्रियगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।११३।।

ॐ ह्रीं पार्थिवी-आग्नेयी-मारुती-वारुणी-तात्त्विकीपंचविध धारणाधारक-योगिगणीश्वराय धारणाधीश्वरगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।११४।।

ॐ ह्रीं व्यवहारनिश्चयधर्मध्यानप्रतिपादकाय धर्मध्याननिष्ठगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।११५।।

ॐ ह्रीं शुक्लध्यानबलेन केवलज्ञानप्राप्ताय समाधिराट्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।११६।।

ॐ ह्रीं सर्वजीवशुद्धबुद्धस्वभावरूपसाम्यभावपरिणताय स्फुरत्समररसी-भावगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।११७।।

ॐ ह्रीं संकल्पविकल्पविरहितैकाद्वितीयात्मस्वरूपप्राप्ताय एकाकिगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।११८।।

ॐ ह्रीं पंचेन्द्रियमनोवशीकरणसमर्थाय अधःकरणापूर्वकरणा-निवृत्तिकरणपरिणामप्रापणविधिप्रतिपादनाय करणनायकगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।११९।।

ॐ ह्रीं पुलाक-वकुश-कुशील-निर्ग्रंथ-स्नातकनामपंचविधनिर्ग्रंथमुनीनां स्वामिने निर्ग्रंथनाथगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२०।।

ॐ ह्रीं सम्पूर्णपरिग्रहविरहितसाधुगणस्वामिने योगीन्द्रगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२१।।

ॐ ह्रीं चतुष्षष्टि-ऋद्धिसमन्विताय ऋषिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२२।।

ॐ ह्रीं मोक्षकारणभूतव्यवहाररत्नत्रयधर्मप्रतिपादकाय साधुगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२३।।

ॐ ह्रीं उभयविधोपशमक-क्षंपकश्रेण्यारोहणविधिप्रतिपादकाय यतिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२४।।

ॐ ह्रीं प्रत्यक्षज्ञानेन चराचरजगज्ज्ञात्रे मुनिगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२५।।

ॐ ह्रीं ऋद्धिसंपन्नर्षीणामपि प्रमुखपदप्राप्ताय महर्षिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.. .।।१२६।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रयधारिसाधुगणाग्रेसराय साधुधौरेयगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२७।।

ॐ ह्रीं निष्कषायानां स्वामिने यतिनाथगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२८।।

ॐ ह्रीं प्रत्यक्षज्ञानिनां स्वामिपदप्राप्ताय महामुनिगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१२९।।

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिबलेन दिव्यध्वनिवचनप्राप्ताय महामुनीश्वरगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३०।।

ॐ ह्रीं छद्मस्थावस्थायां वाचंयमधारकाय महामौनिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१३१।।

ॐ ह्रीं धर्म्यशुक्लध्यानबलेन कर्मेन्धननाशनसमर्थाय महाध्यानिगुण-विशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१३२।।

ॐ ह्रीं महापुरुषानुष्ठानयोग्यमहद्व्रतप्रतिपादकाय महाव्रतिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१३३।।

ॐ ह्रीं अन्यजनासाधारणक्षमागुणधारकाय महाक्षमगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१३४।।

ॐ ह्रीं अष्टादशोत्तरसहस्रभेदयुक्तब्रह्मचर्यप्राप्ताय महाशीलगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१३५।।

ॐ ह्रीं रागद्वेषमोहरूपकषायशांतकराय महाशान्तगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१३६।।

ॐ ह्रीं इन्द्रियदमन-तपःक्लेशसहिष्णुताबलेन स्वात्मपदप्राप्ताय महादमगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१३७।।

ॐ ह्रीं कर्ममलकलंकलेपविरहिताय निर्लेपगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१३८।।

ॐ ह्रीं संशय-विपर्यय-अनध्यवसायरहिताय निर्भ्रमस्वान्तगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१३९।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रयस्वरूपधर्म-अहिंसापरमधर्म-दशधर्माणामधिकारपूर्वक-प्रतिपादनदक्षाय धर्माध्यक्षगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१४०।।

ॐ ह्रीं करुणामार्गगमनसमर्थयोगिजनहृदयस्थिताय दयाध्वजगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१४१।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मशब्देनात्माज्ञानमोक्षचारित्राणामुत्पत्तिस्थानभूताय ब्रह्मयोनिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१४२।।

ॐ ह्रीं गुरुमन्तरेण निर्वेदप्राप्ताय स्वयंबुद्धगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१४३।।

ॐ ह्रीं स्वात्मतत्त्वज्ञात्रे ब्रह्मज्ञगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१४४।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मशब्देन मोक्ष-ज्ञान-तपश्चारित्रस्वरूपवेदिने ब्रह्मतत्त्वविद्नाम-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१४५।।

ॐ ह्रीं कर्ममलकलंकरहितपवित्रात्मने पूतात्मगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१४६।।

ॐ ह्रीं द्रव्यकर्म-भावकर्म-नोकर्मविरहिताय स्नातकगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१४७।।

ॐ ह्रीं अभयदानस्वभावाय दान्तगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१४८।।

ॐ ह्रीं इन्द्रचन्द्रधरणेन्द्रमुनीन्द्रादीनां पूज्यपर्यायप्राप्ताय भदन्तगुण-विशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१४९।।

ॐ ह्रीं शुभकर्मद्वेषकरभावविवर्जिताय वीतमत्सरगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१५०।।

ॐ ह्रीं स्वर्गमोक्षफलप्रदायक-कर्मशत्रुनिपातप्रहरणधारकाय धर्मवृक्षायुधगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१५१।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यक्षोभकारिवज्राग्निदिभिरपि चारित्राच्चालयितुमशक्य-शक्तिप्राप्ताय अक्षोभ्यगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१५२।।

ॐ ह्रीं भव्यजीवपवित्रकारणदक्षाय प्रपूंतात्मगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१५३।।

ॐ ह्रीं भव्यजीवानां मोक्षोत्पत्तिकारणसमर्थाय अमृतोद्भवगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१५४।।

ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणमित्याादिसप्ताक्षरमंत्रस्वरूपाय मंत्रमूर्तिगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१५५।।

ॐ ह्रीं स्वयमेव परमसमरसीभावस्वरूपाय स्वसौम्यात्मगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१५६।।

ॐ ह्रीं पराधीनशरीरविरहिताय स्वतंत्रगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१५७।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मस्वरूप-निश्चयचारित्रोत्पत्तिकारकाय ब्रह्मसंभवगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१५८।।

ॐ ह्रीं अतिशयप्रहसितवदन-स्वर्मोक्षदायकाय सुप्रसन्नगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१५९।।

ॐ ह्रीं अनन्तकेवलज्ञानदर्शनवीर्यसौख्यसम्यक्त्वास्तित्व-प्रमेयत्व-चैतन्याद्यनन्तगुणसमुद्राय गुणाम्भोधिनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।१६०।।

ॐ ह्रीं शुभाशुभास्रवनिरोधरूपपूर्णसंवरप्राप्ताय पुण्यापुण्यनिरोधकगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१६१।।

ॐ ह्रीं आत्मतत्त्वस्वरूपस्थितसंवरगुणपूर्णाय सुसंवृतनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१६२।।

ॐ ह्रीं स्वात्मस्थितसर्वप्रकारसुरक्षिताय सुगुप्तात्मनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१६३।।

ॐ ह्रीं कर्मांजनविरहितकृतकृत्याय सिद्धात्मपदप्राप्ताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१६४।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवनिवारकाय निरूपप्लवगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१६५।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मनिर्मोक्षजातानन्तकेवलज्ञानादिलक्षणोत्तरफलप्राप्ताय महोदर्कगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१६६।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रलक्षणमोक्षोपायप्रतिपादकाय महोपायगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१६७।।

ॐ ह्रीं अधोमध्योर्ध्वस्थितभव्यलोकैकाद्वितीयजनकस्वरूपपरमहित-कारकाय जगदेकपितामहगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१६८।।

ॐ ह्रीं सर्वजीवदयालक्षणधर्मोपदेशकाय परमकारुणिकगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१६९।।

ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षोत्तरगुणधारकाय गुण्यनामसमन्विताय

श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१७०।।

ॐ ह्रीं तपः संयमपरीषहसहनादिक्लेशलक्षणांकुशेन मनोमत्तगजोन्मार्ग-निरोधकाय महाक्लेशांकुशगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१७१।।

ॐ ह्रीं जन्मकालादेव मलमूत्रादिरहित-शुद्धबुद्धैकस्वभा-वरूपपरमपवित्रतीर्थाय शुचिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१७२।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशतिभेदभिन्नमोहमहाशत्रुविजयकराय अरिंजयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१७३।।

ॐ ह्रीं सर्वकालालब्धलाभलक्षणपरमशुक्लध्यानधारकाय सदायोगगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१७४।।

ॐ ह्रीं सर्वकालनिजशुद्धबुद्धैकस्वभावपरमात्मैकलोलीभावलक्षणपरमानंदा-मृतरसास्वादस्वभावभोगप्राप्ताय सदाभोगगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१७५।।

ॐ ह्रीं सर्वकालपरमधैर्यधारकाय सदाधृतिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१७६।।

ॐ ह्रीं शत्रु-मित्र-तृण-कांचनादिषु परममध्यस्थभावप्राप्ताय परमौदासितृ-गुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१७७।।

ॐ ह्रीं कवलाहाररहिताय शाश्वतकल्याणमार्गारूढाय अनाश्वान्-गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१७८।।

ॐ ह्रीं अभयदानरूपसफलाशीर्वादप्रदाय सत्याशीःगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१७९।।

ॐ ह्रीं रागद्वेषमोहशान्तकारिसाधुगणस्वामिने शान्तनायकगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१८०।।

ॐ ह्रीं जन्मप्रभृत्यपि व्याधितप्राणिनां नाममात्रेण सर्वव्याधिविनाशनसमर्थाय जन्मजरामरणभवरोगमूलादुन्मूलनकुशलाय अपूर्ववैद्यगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१८१।।

ॐ ह्रीं निर्विकल्पसमाधिलक्षणशुक्लध्यानध्यात्रे योगज्ञगुणसमन्विताय

श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१८२।।

ॐ ह्रीं परमचारित्रलक्षणस्वरूपाय धर्ममूर्तिगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१८३।।

ॐ ह्रीं हिंसादिलक्षणपापभस्मीकरणकुशलाय अधर्मधग्गुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१८४।।

ॐ ह्रीं स्वात्मज्ञाननिष्ठाय ब्रह्मेड्गुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१८५।।

ॐ ह्रीं पंचमकेवलज्ञानपतये महाब्रह्मपतिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१८६।।

ॐ ह्रीं संपूर्णीकृतसर्वात्मकार्याय कृतकृत्यगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१८७।।

ॐ ह्रीं इन्द्रादिभिः पूजाप्राप्ताय कृतक्रतुगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१८८।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानाद्यनन्तगुणोत्पत्तिस्थानाय गुणाकरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१८९।।

ॐ ह्रीं क्रोधादिविभावभावविनाशनाय गुणोच्छेदिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१९०।।

ॐ ह्रीं नेत्रमेषोन्मेषरहितदिव्यनेत्राय निर्मिमेषगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१९१।।

ॐ ह्रीं गृहपरिकराद्याश्रयविगताय निराश्रयगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१९२।।

ॐ ह्रीं सर्वोच्चबुद्धिजनकाय सूरिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१९३।।

ॐ ह्रीं स्यात्कारशब्दोपलक्षितसुनयमर्मप्रतिपादकाय सुनयतत्त्वज्ञगुण-विशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१९४।।

ॐ ह्रीं सर्वजीवजीवनबुद्धिप्रदायकाय महामैत्रीमयगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१९५।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मोपशामनविधिविधायकाय शमिगुणसमन्विताय

श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१९६।।

ॐ ह्रीं प्रकर्षरूपकर्मबंधविनष्टाय प्रक्षीणबन्धगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१९७।।

ॐ ह्रीं असहिष्णुभावोत्पन्नकलहविरहिताय निर्द्वन्द्वगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१९८।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानर्द्धिप्राप्ताय महर्षिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१९९।।

ॐ ह्रीं पुनरागमनविरहितमोक्षधामप्राप्ताय अनन्तगनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२००।।

पूर्णार्घ्य - गीताछंद -

हे वर्धमान जिनेंद्र!, वृद्धिंगत गुणों के नाथ हो।
सौ इन्द्र नितप्रति भक्ति श्रद्धा, से नमाते माथ को।।
निज आत्म का दर्शन कराया, पथ दिखाया विश्व को।
पूर्णार्घ्य से हम पूजते, निज आत्म संपति प्राप्त हो।।४०१।।

ॐ ह्रीं योगिगुणादिअनंतगगुणपर्यंतशतगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।।

ॐ ह्रीं वाणादिनानायुधविरहिताय निर्वाणगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२०१।।

ॐ ह्रीं अभ्युदयनिःश्रेयसलक्ष्म्यालिंगितकण्ठाय सागरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२०२।।

ॐ ह्रीं जिनकल्पिस्थविरकल्पिसाधुधर्मप्रतिपादकाय महासाधुगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२०३।।

ॐ ह्रीं कर्मकलंकविरहितशोभाप्राप्ताय विमलाभगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२०४।।

ॐ ह्रीं शुद्धाभारूपशुक्ललेश्याप्राप्ताय शुद्धाभगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२०५।।

ॐ ह्रीं समवसरणलक्ष्मी-केवलज्ञानादिलक्ष्मीधारकाय श्रीधरगुणविशिष्टाय

श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२०६।।

ॐ ह्रीं वाञ्छितफलप्रदायकाय दत्तगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२०७।।

ॐ ह्रीं पापमलविरहिताभासहिताय अमलाभगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२०८।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वस्थानस्थापनदक्षाय उद्धरगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२०९।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वं व्रज्यास्वभाव-त्रैलोक्याग्रपदप्राप्ताय अग्निगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२१०।।

ॐ ह्रीं यावज्जीवनपरमचारित्रधारकाय संयमगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२११।।

ॐ ह्रीं परमकल्याणरूपपंचकल्याणप्राप्ताय शिवगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२१२।।

ॐ ह्रीं इंद्रादिभिः कमलवदञ्जलिनमस्कारयोग्याय पुष्पांजलिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२१३।।

ॐ ह्रीं श्रेयस्करद्वादशगुणसहिताय शिवगणगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२१४।।

ॐ ह्रीं उत्कृष्टतया परीषहादिसहनदक्षाय उत्साहगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२१५।।

ॐ ह्रीं सर्वोत्कृष्टज्ञानप्रदाय ज्ञानगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२१६।।

ॐ ह्रीं परमविभूतिधारकाय परमेश्वरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२१७।।

ॐ ह्रीं व्रतेष्वनतिचारप्रतिपादकाय विमलेशगुणसहिताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२१८।।

ॐ ह्रीं पुण्यगुणकीर्तनयोग्यपदप्राप्ताय यशोधरनामसमन्विताय श्रीमहावीर जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२१९।।

ॐ ह्रीं घातिकर्मनिर्मूलघातनदक्षाय कृष्णगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-

जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२२०।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानबुद्धिप्राप्ताय ज्ञानमतिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२१।।

ॐ ह्रीं कर्मकलंकरहित-सकलविमलकेवलज्ञानप्राप्ताय शुद्धमतिगुण-विशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२२।।

ॐ ह्रीं अन्तरंग-बहिरंग लक्ष्मीप्राप्ताय श्रीभद्रगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२३।।

ॐ ह्रीं रागद्वेषरहितशान्तपदप्राप्ताय शान्तगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२४।।

ॐ ह्रीं वृषरूपाहिंसालक्षणधर्मेण शोभनशीलाय वृषभगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२५।।

ॐ ह्रीं काम-क्रोधादिशत्रुभिरजिताय अजितगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२६।।

ॐ ह्रीं समीचीनभवप्राप्ताय सुखप्रदायकाय संभवगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२७।।

ॐ ह्रीं निजरूपाद्यतिशयेन प्राज्ञानामानन्दोत्पादकाय अभिनंदनगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२८।।

ॐ ह्रीं लोकालोकप्रकाशकबुद्धिसहिताय सुमतिगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२२९।।

ॐ ह्रीं रक्तकमलवद्वर्णप्राप्ताय पद्मप्रभगुणविभूषिताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२३०।।

ॐ ह्रीं शोभनगुणप्रदायकाय सुपार्श्वगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२३१।।

ॐ ह्रीं कोटिचन्द्रप्रभाधारकाय चन्द्रप्रभगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२३२।।

ॐ ह्रीं कुंदकुसुमवदुज्ज्वलदंतसहिताय पुष्पदंतगुणसहिताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२३३।।

ॐ ह्रीं संसारतापनिवारकशीतलवचनसहितशांतमूर्तये शीतलगुण-

समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२३४।।

ॐ ह्रीं अतिशयप्रशस्यगुणधारकाय श्रेयान्गुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२३५।।

ॐ ह्रीं वासवपूजितपादकमलाय वासुपूज्यगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२३६।।

ॐ ह्रीं रागद्वेषादिभावकर्ममलविगताय विमलगुणविभूषिताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२३७।।

ॐ ह्रीं अनंतसंसारपारगाय अनन्तगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२३८।।

ॐ ह्रीं संसारसमुद्रनिमज्जद्जीवोद्धारकश्रेष्ठपदप्रापकाय धर्मगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२३९।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मक्षयकारकाय शान्तिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२४०।।

ॐ ह्रीं तपःकलेशशान्तिपूर्वकसहनकरणाय कुंथुगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२४१।।

ॐ ह्रीं एकसमयेन लोकालोकविलोकनाय अरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२४२।।

ॐ ह्रीं भव्यजीवमोक्षपदप्रापणदक्षाय मल्लिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२४३।।

ॐ ह्रीं मुक्तिपदहेतुभूतशोभनव्रतप्रदानकुशलाय मुनिसुव्रतगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२४४।।

ॐ ह्रीं इन्द्र-चन्द्र-मुनीन्द्रनमिताय नमिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२४५।।

ॐ ह्रीं स्वधर्मं प्रतिनेतुं समर्थाय नेमिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२४६।।

ॐ ह्रीं निजभक्तपार्श्वेऽदृश्यरूपेण तिष्ठतीति पार्श्वगुणविशिष्टाय

श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२४७।।

ॐ ह्रीं ज्ञानवैराग्यद्विविधलक्ष्मीभिर्वृद्धिंगत-परमातिशयप्राप्तज्ञानपूजा-समन्विताय वर्धमानगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२४८।।

ॐ ह्रीं मोहमल्लविनाशकाय महासुभटाय महावीरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२४९।।

ॐ ह्रीं निजभक्तानां विशिष्टलक्ष्मीप्रदायकाय सुवीरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२५०।।

ॐ ह्रीं समीचीनशाश्वतीबुद्धिधारकाय सन्मतिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२५१।।

ॐ ह्रीं मलपापहननकारक-अनेकसहस्रलक्षभटकोटीभट-विघटनपटु-स्वरूपाय महतिमहावीरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२५२।।

ॐ ह्रीं श्रीविहारकाले योजनैकप्रमाणसहस्रदलकमल-पंचविंशत्यधिकद्विशत-संख्याप्राप्ताय महापद्मगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२५३।।

ॐ ह्रीं कामदेवभटानां आराध्याय सूरदेवगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२५४।।

ॐ ह्रीं नेत्रप्रियचन्द्रार्ककोटिसमद्युतिमंडलधारकाय सुप्रभगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२५५।।

ॐ ह्रीं स्वयमात्मना प्रकर्षेण शोभनाय स्वयंप्रभगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२५६।।

ॐ ह्रीं कर्मशत्रुविध्वंसक-ध्यानाध्ययनसंयमतपश्चरणशस्त्रधारकाय सर्वायुधगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२५७।।

ॐ ह्रीं सर्वकालजयशीलस्वभावाय जयदेवगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२५८।।

ॐ ह्रीं निदानदोषरहित-तीर्थंकरनामोच्चगोत्रादिलक्षणपुण्यवंधचयेन स्वर्गादागत्य पुनरपि प्रजापालनादिपुण्योपार्जनोपचयेन पुनर्निर्वाणगमनचयोपचयेन च त्रिविधोदयसहिताय उदयदेवगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय

अर्घ्यं....।।२५९।।

ॐ ह्रीं कोटिचन्द्रसूर्यतेजःसहितसर्वज्ञवीतरागाय प्रभादेवगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२६०।।

ॐ ह्रीं मोहारिविजयिमुक्तिकान्तापतये उदंकगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२६१।।

ॐ ह्रीं गणधरदेवाद्यनुयोगे सति ध्वनिप्रवृत्ताय प्रश्नकीर्तिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२६२।।

ॐ ह्रीं मोहारिविध्वंसकाय जयगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२६३।।

ॐ ह्रीं लोकालोकप्रकाशिकाबुद्धिधारकाय पूर्णबुद्धिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२६४।।

ॐ ह्रीं कषादिपरीक्षोत्तीर्णासरस्वत्यागमनस्वभावाय निष्कषायगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२६५।।

ॐ ह्रीं घातिसंघातघाते तेजोमंडलस्वरूपाय विमलप्रभगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२६६।।

ॐ ह्रीं संयमभारोद्धरणे स्कंधदेशस्वरूपाय बहलगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२६७।।

ॐ ह्रीं मलमूत्रविरहिताय निर्ग्रन्थमुनिस्वामिने निर्मलगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२६८।।

ॐ ह्रीं आकाशवद्गुप्तालक्ष्यस्वरूपाय चित्रगुप्तगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२६९।।

ॐ ह्रीं उपर्गपरीषहादिविनिपातेऽपि धीरतया रत्नत्रयं परलोकपर्यन्तं निर्विघ्नंतया प्रतिपालनदक्षाय समाधिगुप्तगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२७०।।

ॐ ह्रीं स्वयमात्मना गुरुनिरपेक्षतया निर्वेदं प्राप्य लोकालोकस्वरूपज्ञात्रे स्वयंभूगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२७१।।

ॐ ह्रीं कं-सुखंप्राप्ताय अनंतसौख्यधारकाय कंदर्पगुणविशिष्टाय

श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२७२।।

ॐ ह्रीं आर्यखण्डे धर्मचक्राप्रतिहतगतिरूपप्रवर्तकाय जयनाथगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२७३।।

ॐ ह्रीं व्रतशीलातिचाररहित - बाह्याभ्यंतरलक्ष्मीसहिताय श्रीविमलगुण-विशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२७४।।

ॐ ह्रीं दिव्यपंचत्रिंशदक्षरमंत्रोपदेशकाय दिव्यवादगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२७५।।

ॐ ह्रीं कर्मशत्रुविनाशक-अविनश्वरपदप्राप्ताय अनंतवीरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२७६।।

ॐ ह्रीं इन्द्रादिगण-असंख्यदेवदेवीसेविताय पुरुदेवगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२७७।।

ॐ ह्रीं शोभनसृष्टिविधातृ-निरतिचारचारित्रधारकाय सुविधिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२७८।।

ॐ ह्रीं प्रज्ञापारगतमहापंडितजनप्रमाणिताय प्रत्यक्षपरोक्षप्रमाण-चतुरगणधरदेवगणसम्मानिताय प्रज्ञापारमितगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२७९।।

ॐ ह्रीं शुद्धस्वरूपविनाशविरहिताय अव्ययगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२८०।।

ॐ ह्रीं अनादिकालीनसर्वोत्कृष्टस्थानस्थिताय पुराणपुरूषगुणसमन्विताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२८१।।

ॐ ह्रीं अहिंसालक्षणसर्वोत्कृष्ट-धर्मप्रवर्तकाय धर्मसारथिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२८२।।

ॐ ह्रीं परमकल्याणदायकतीर्थंकरनामगोत्रकारकस्तुतिप्राप्ताय शिवकीर्तनगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२८३।।

ॐ ह्रीं लोकजीवनकारिक्रियोपदेशकाय विश्वकर्मगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२८४।।

ॐ ह्रीं आत्मन्येकलोलीभावरूपाच्यवनस्वरूपाय अक्षरगुणविभूषिताय

श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२८५।।

ॐ ह्रीं छद्म-ज्ञानावरणदर्शनावरणकर्मविघातकाय अच्छद्मगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२८६।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानापेक्षया विश्वव्याप्ताय विश्वभूगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२८७।।

ॐ ह्रीं सर्वजगति स्वधर्मव्याप्ताय विश्वनायकगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२८८।।

ॐ ह्रीं दिग्वस्त्रधारकाय पूर्णशीलगुणविभूषिताय दिगम्बरगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२८९।।

ॐ ह्रीं सद्यःप्राणहरव्याधिविनाशकाय निरातंकगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२९०।।

ॐ ह्रीं तत्त्वविषयकशंकाविरहितदृढनिश्चयधर्मप्रतिपादकाय निरारेकगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२९१।।

ॐ ह्रीं भक्तजनसंसारविनाशकाय भवान्तक़गुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२९२।।

ॐ ह्रीं निश्चलव्रत-दीक्षा-प्रतिज्ञास्वरूपाय दृढव्रतगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२९३।।

ॐ ह्रीं नैगमनयादिसर्वोत्तमनयप्रतिपादकाय नयोत्तुंगगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२९४।।

ॐ ह्रीं अपवादादिदोषविगताय निःकलंकगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२९५।।

ॐ ह्रीं संसारविरहित-विगतशरीराय चरमशरीराय अकलाधरगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२९६।।

ॐ ह्रीं शारीरिक-मानसागंतुकक्लेशविरहिताय सर्वक्लेशापहगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२९७।।

ॐ ह्रीं अजेयमोहराजेनापि क्षयप्राप्तिविरहिताय अक्षय्यगुणविभूषिताय

श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२९८।।

ॐ ह्रीं सर्वपरीषहोपसर्गसहनसमर्थोत्तमक्षमादिगुणसहिताय क्षान्तगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२९९।।

ॐ ह्रीं समवसरणे अशोकवृक्षचिन्होपलक्षिताय श्रीवृक्षलक्षणगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।३००।।

पूर्णार्घ्य - तर्ज - यह नंदन वन.....

यह मानवतन, अनमोल रतन, पा विषयों में मत फंस जाना।
भवसिंधु अगर तरना चाहो, जिनचरण शरण में आ जाना।।
तीर्थंकर आत्म साधना कर, समता पियूष का पान करें।
निजशुक्ला ध्यान के द्वारा ही, सब कर्मनाश शिवनारि वरें।।
इन भगवन्तों की पूजा कर, परमानंदामृत पा जाना।। यह मानव.।।१।।
नाना विध व्याधी से पीड़ित, या दरिद्रता से दुखी हुये।
महावीर की पूजा करते ही, सब दुख से जन जन मुक्त हुये।।
फिर भी ये परम वीतरागी, इनसे मन पावन कर जाना।।
यह मानव तन.....।।२।।

ॐ ह्रीं निर्वाणानामादि-श्रीवृक्षलक्षणनामपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....

शांतये शांतिधारा । दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य - ॐ ह्रीं अर्हं श्री महावीरजिनेंद्राय विश्वशांतिकराय सर्वसौख्यं कुरू कुरू ह्रीं नमः।

(सुगंधितपुष्प, लवंग या पीले चावल मिश्रित रत्नों से १०८ मंत्रों का जाप्य करें। पूजा के अनन्तर इन मंत्रित रत्नों को श्रद्धालुओं में वितरित कर दें।)

जयमाला

दोहा - सोलहकारण भावना, भाय हुये तीर्थेश।
नमूं नमूं महावीर को, हरो सर्वभव क्लेश।।१।।

चामरछंद - दर्श की विशुद्धि जो पचीस दोष शून्य है।

आठ अंग से प्रपूर्ण सप्तभीति शून्य है।।
दर्शज्ञान आदि तीन रत्न में विनीत जो।
साधुओं में नम्रवृत्ति धारता प्रवीण वो।।२।।
शील में व्रतादि में सदोषवृत्ति ना धरें।
विदूर अतीचार से तृतीय भावना धरें।।
ज्ञान के अभ्यास में सदैव लीनता धरें।
भावनाअभीक्ष्ण ज्ञान मोहध्वांत को हरें।।३।।
देहमानसादि दुःख से सदैव भीरुता।
भावना संवेग से समस्त मोह जीतता।।
चार संघ को चतुःप्रकार दान जो करें।
सर्व दुःख से छुटें सुज्ञान संपदा भरें।।४।।
शुद्ध तप करें समस्त कर्म को सुखावते।
साधु की समाधि में समस्त विघ्न टारते।।
रोग कष्ट आदि में गुरूजनों की सेव जो।
प्रासुकादि औषधी सुदेत पुण्यहेतु जो।।५।।
भक्ति अरीहंत सूरि बहुश्रुतों की भी करें।
प्रवचनों की भक्ति भावना से भवदधी तिरें।।
छै क्रिया अवश्यकरण योग्य काल में करें।
मार्ग की प्रभावना सुधर्म द्योत को करें।।६।।
वत्सलत्व प्रवचनों में धर्म वात्सल्य है।
रत्नत्रयधरों में सहज प्रीतिधर्मसार है।।
सोलहों सुभावना पुनीत भव्य को करें।
तीर्थनाथ संपदा सुदेय मुक्ति भी करें।।७।।
भक्ति महावीर की अनंत ज्ञान दायिनी।
सर्वदुःखनाशिनी अनंत सौख्यदायिनी।।
जन्ममृत्यु रोग को समूल से निवारिणी।
रत्न तीन देय के त्रिलोक रत्नदायिनी।।८।।
वंदना करूं पुनः पुनः करूं उपासना।
अर्चना करूं पुनः पुनः करूं सुसाधना।।

मैं अनंत दुःख से बचा चहूं प्रभो ! सदा।
ज्ञानमती संपदा मिले अनंत श्रीप्रदा।।९।।

दोहा- तीर्थंकर पद पद्म को, पूजूं भक्ति समेत।
मिले युक्ति मुक्तिप्रदा, जो भववारिधि सेतु।।१०।।

ॐ ह्रीं त्रिशतगुणमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं ....

शांतये शांतिधारा । दिव्य पुष्पांजलिः।।

गीताछंद - जो विश्वशांती महावीर, विधान भक्ती से करें।
सब आपदाएं दूर कर, सर्वत्र सुख शांती करें।।
तीर्थेश प्रभु का मेरु पर, जन्माभिषेकोत्सव करें।
फिर स्वयं तीर्थंकर बनें, निज ज्ञानमति सम्पत्ति भरें।।१।।

पूजा नं. ६

स्थापना - शंभुछंद

महावीर प्रभू की सभाभूमि, जिसकी धनपति रचना करते।
यह समवसरण अद्भुत सुंदर, मुनिगण भी नित स्तुति करते।।
यह वाह्य विभव त्रिभुवन मनहर, इंद्रों का भी मन हरता है।
वैभव अनंतगुण अंदर का, पूजन ही निजसुख भरता है।।१।।
अंतरंग बहिरंग श्री, संयुत प्रभु श्रीमान्।
आह्वानन कर मैं जजूं, महावीर भगवान्।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

अथ अष्टक - गीताछंद

क्षीराम्बुधी का सलिल उज्ज्वल, स्वर्णझारी में भरूं।
निज कर्म मल प्रक्षालने को, जिनचरण धारा करूं।।
त्रयशतक मंत्रों से यहां, श्रीवीरपद अर्चन करूं।
वर ज्ञान दर्शन सौख्यवीरज, गुण अनंतों को भरुं।।१।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.....

कर्पूर चंदन गंध सुरभित, स्वर्णद्रव सम लायके।
भवताप शीतल हेतु जिनवर, पाद चर्चूं आयके।।
त्रय शतक मंत्रों से यहां, श्रीवीरपद अर्चन करूं।
वर ज्ञानदर्शन सौख्य वीरज गुण अनंतों को भरूं।।२।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं.....

शशि रश्मि सम उज्जवल अखंडित, शुद्ध अक्षत लायके।
अक्षय सुपद के हेतु सन्मति, अग्र पुंज चढ़ाय के।।
त्रय शतक मंत्रों से यहां, श्रीवीरपद अर्चन करूं।

वरज्ञान दर्शन सौख्य वीरज, गुण अनन्तों को भरूं।।३।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं.....

मल्ली चमेली वकुल आदिक, पुष्प सुंदर लायके।
भवमल्ल विजयी जिनचरण में, हर्षयुक्त चढ़ायके।।
त्रयशतक मंत्रों से यहां, श्रीवीरपद अर्चन करूं।
वर ज्ञान दर्शन सौख्य वीरज, गुण अनन्तों को भरूं।।४।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....

मिष्टान्न पूरणपोलिका, लाडू इमरती लायके।
भव भव क्षुधा से दूर जिनवर, पाद अग्र चढ़ायके।।
त्रयशतक मंत्रों से यहां, श्रीवीरपद अर्चन करूं।
वर ज्ञान दर्शन सौख्य वीरज, गुण अनन्तों को भरूं।।५।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय क्षुंधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....

कर्पूर दीपक ज्योति जगमग, रत्नदीपक में दिपे।
जिन आरती से निज हृदय में, ज्ञान की ज्योती दिपे।।
त्रयशतक मंत्रों से यहां, श्रीवीरपद अर्चन करूं।
वर ज्ञानदर्शन सौख्य वीरज, गुण अनन्तों को भरूं।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं.....

दशगंध धूप सुगंध लेकर, अग्नि में खेऊं अबे।
सब अष्ट कर्म प्रजाल हेतू, वीरगुण सेवूं सबे।।
त्रयशतक मंत्रों से यहां, श्रीवीरपद अर्चन करूं।
वर ज्ञान दर्शन सौख्य वीरज, गुण अनन्तों को भरूं।।७।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदनाय धूपं.....

अंगूर अमृतफल श्रीफल, सरस अमृत सम लिया।
प्रभु मोक्षफल के हेतु तुम पद, अग्र में अर्पण किया।।
त्रयशतक मंत्रों से यहां, श्रीवीरपद अर्चन करूं।
वर ज्ञान दर्शन सौख्य वीरज, गुण अनन्तों को भरूं।।८।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....

जल गंध अक्षत पुष्प नेवज, दीप धूप फलादि ले।
अनुपम अनन्तानंत गुणयुत, वीर को अर्चूं भले।।
त्रयशतक मंत्रों से यहां, श्रीवीरपद अर्चन करूं।
वर ज्ञान दर्शन सौख्य वीरज, गुण अनन्तों को भरूं।।६।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....

दोहा - अचिन्त्य महिमा के धनी, परमानंद स्वरूप।
शान्तीधारा करत ही, मिले शांतिसुखरूप।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

कमल केतकी मल्लिका, पुष्प सुगंधित लाय।
तुम पद पुष्पांजलि करूं, सुख संपत्ति अधिकाय।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ तीन सौ मंत्र अर्घ्य

दोहा - कोटि सूर्यप्रभ से अधिक, अनुपम आतम तेज।
पुष्पांजलि कर पूजहूं, कर्मांजन हर हेतु।।१।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(मंडल पर प्रत्येक अर्घ्य के साथ एक-एक रत्न चढ़ाना है।)

ॐ ह्रीं केवलज्ञानादिगुणवृंहिताय ब्रह्मेतिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१।।

ॐ ह्रीं समवसरणे घातिसंघातनजातभगवत्परमौदारिकशरीरनैर्मल्यनिमित्त-चतुरास्यसहिताय चतुरनुयोगमुखैश्चतुःपुरुषार्थप्रतिपादकाय चतुर्मुखगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२।।

ॐ ह्रीं चतुर्गतिदुःखाद् जीवानुद्धृत्य मोक्षपदे स्थापिताय धातृगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मबादरादिसर्वजीवरक्षकाय विधातृगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४।।

ॐ ह्रीं समवसरणे कमलोपरिचतुरंगुलाधरविराजिताय कमलासनगुण-विशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।५।।

ॐ ह्रीं मातुरुदरेऽष्टदलकमलकर्णिकोपरिस्थितवृद्धिंगताय अब्जभूगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्रायअर्घ्यं.....।।६।।

ॐ ह्रीं निजशुद्धबुद्धैकस्वभावचिच्चमत्कारैकलक्षण परमब्रह्मैकस्वरूप-टंकोत्कीर्णस्फटिकमणिबिम्बसदृशनिवासस्थानप्राप्ताय आत्मभूगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७।।

ॐ ह्रीं असंख्यावसर्पिण्युत्सर्पिणीषू आदिकाले असिमषिकृष्यादिक्रिया प्रतिपादनधर्मशासकाय सृष्टेतिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।८।।

ॐ ह्रीं देवगणे श्रेष्ठमातृवद्हितैषिणे सुरज्येष्ठगुणधारकाय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।९।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यस्थितजनतास्वामिने प्रजापतिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१०।।

ॐ ह्रीं गर्भागमनकाले पंचदशमासपर्यंतं मातुर्गृहांगणे रत्नकनक-वृष्टिसंपादकाय हिरण्यगर्भविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।११।।

ॐ ह्रीं चतुरनुयोगस्वरूपवेदज्ञात्रे वेदज्ञगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१२।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानप्राप्त्युपायस्वरूपप्रतिपादकाय वेदांगगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१३।।

ॐ ह्रीं पंचविधज्ञानपारप्राप्तपदप्रतिपादकाय वेदपारगगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१४।।

ॐ ह्रीं पुनर्जन्मविरहिताय अजगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१५।।

ॐ ह्रीं वस्तुतत्त्वमननकारकाय मनुगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१६।।

ॐ ह्रीं असंख्यप्राणिगणसौख्यप्रदायकाय शतानन्दगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१७।।

ॐ ह्रीं परमात्मनि गमनस्वरूपाय सूर्यवदनीहितगमनस्वभावाय हंसयानगुण

समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१८।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रयेण निर्वृत्ताय त्रयीमयगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१९।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानेन विश्वव्यापकाय विष्णुगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२०।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्ये विशिष्टपरिपाटीप्रतिपादकाय त्रिविक्रमगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२१।।

ॐ ह्रीं कर्मशत्रुजयसमर्थाय शौरिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२२।।

ॐ ह्रीं अभ्युदयनिःश्रेयसलक्ष्मीप्राप्ताय श्रीपतिगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२३।।

ॐ ह्रीं त्रिषष्टिशलाकापुरुषश्रेष्ठाय पुरुषोत्तमगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२४।।

ॐ ह्रीं मातुः विकुण्ठा-दिक्कुमारीप्रश्नोत्तरकारकाय वैकुण्ठगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२५।।

ॐ ह्रीं प्रधानभूतात्मतत्त्वनिलीनाय पुण्डरीकाक्षगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२६।।

ॐ ह्रीं जितेन्द्रियाय हृषीकेशगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२७।।

ॐ ह्रीं पापहरणसमर्थाय हरिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२८।।

ॐ ह्रीं स्वात्मतत्त्वज्ञापकाय स्वभूगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२९।।

ॐ ह्रीं नरकादिदुर्गतिपतननिरोधकाय त्रैलोक्यपालनसमर्थाय विश्वंभरगुण समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३०।।

ॐ ह्रीं मोहराजयमराजविध्वंसकाय असुरध्वंसिगुणमंडिताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३१।।

ॐ ह्रीं समवसरणविभूति-केवलज्ञानादिलक्षणलक्ष्मीभर्त्रे माधवगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३२।।

ॐ ह्रीं बलवत्तरत्रैलोक्यक्षोभकरणकारण-तीर्थंकरनामोच्चैर्गोत्रप्रकृतिबंध-कारकाय बलिबंधनगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।३३।।

ॐ ह्रीं जितेन्द्रियदिगम्बरगुरूध्यानगम्यपदप्राप्ताय अधोक्षजगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४।।

ॐ ह्रीं मद्यमधुसेवनपापमूलकारणप्रतिपादकाय मधुद्वेषिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५।।

ॐ ह्रीं सर्वकालनीलवर्णकेशसहिताय आत्मस्वरूपप्राप्तिसमर्थ-महामुनिसेविताय केशवगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।३६।।

ॐ ह्रीं अंगबाह्य-अंगप्रविष्टश्रुतज्ञानमयश्रोत्रसहिताय विष्टरश्रवस्गुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३७।।

ॐ ह्रीं वक्षःश्रीचिन्हधारकाय श्रीवत्सलांछनगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३८।।

ॐ ह्रीं बहिरंगसमवसरणविभूति-अन्तरंगानन्तचतुष्टयलक्ष्मीसहिताय श्रीमद्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३९।।

ॐ ह्रीं सर्वकालपरमात्मनिष्ठाय अच्युतगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४०।।

ॐ ह्रीं नरकादिदुर्गतिनिवारणसमर्थाय नरकान्तकगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४१।।

ॐ ह्रीं समंतात् द्वादशगणस्वरूपसेनावेष्टिताय विष्वक्सेनगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४२।।

ॐ ह्रीं सुरेन्द्र-नागेन्द्र-नरेन्द्र-मुनीन्द्रगणोपदेशकाय चक्रपाणिगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४३।।

ॐ ह्रीं कमलवन्नाभिधारकाय पद्मनाभगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४४।।

ॐ ह्रीं मोक्षयाचकत्रिभुवनस्थितभव्यलोकोपदेशकाय-जनार्दनगुण-

समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४५।।

ॐ ह्रीं मुक्तिकन्यापरिणयसमर्थाय श्रीकण्ठगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४६।।

ॐ ह्रीं परमानंदलक्षणसुखकराय शंकरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४७।।

ॐ ह्रीं परमाल्हादलक्षणसुखप्रापकाय शंभुगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४८।।

ॐ ह्रीं सर्वजीवपालनविधिप्रतिपादकाय कपालिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४९।।

ॐ ह्रीं अहिंसालक्षणधर्मध्वजाधारकाय वृषकेतनगुणसमन्विताय श्रीमहावीर जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५०।।

ॐ ह्रीं आयुःकर्मस्वरूपयमराजविजयिने मृत्युंजयनामसार्थककराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५१।।

ॐ ह्रीं अमूर्तिकातीन्द्रियकेवलज्ञाननेत्रधारकाय विरूपाक्षगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५२।।

ॐ ह्रीं सुन्दराकारमनोहररूपधारकाय वामदेवगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५३।।

ॐ ह्रीं स्वर्ग-मर्त्य-पातालस्थितभव्यजीवनेत्रस्थानीयपदप्राप्ताय त्रिलोचन-गुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५४।।

ॐ ह्रीं कान्ति-कीर्तिपतये उमापतिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५५।।

ॐ ह्रीं कर्मबंधनबद्धसुर-नर-पशुगणपालकाय पशुपतिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५६।।

ॐ ह्रीं कामदेवविजयिपदप्राप्ताय स्मरारिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५७।।

ॐ ह्रीं जन्म-जरा-मरणलक्षणत्रिनगरविध्वंसकराय त्रिपुरान्तकगुण-विशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५८।।

ॐ ह्रीं घातिचतुष्टयरूपार्धकर्मशत्रुनाशकाय अर्धनारीश्वरपदसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५९।।

ॐ ह्रीं कर्मशत्रुभस्मसात्करणसमर्थाय रूद्रगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६०।।

ॐ ह्रीं भव्यजनस्वर्गमोक्षप्रापणसमर्थाय विश्वोत्पादनगुणसमन्विताय भवनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६१।।

ॐ ह्रीं ध्यानबलेन कामक्रोधादिभस्मसात्कराय भर्गगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६२।।

ॐ ह्रीं सर्वकालभव्यजनकल्याणकारकाय सदाशिवगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६३।।

ॐ ह्रीं लोकमर्यादाविधिप्रतिपादकाय जगत्कर्तृगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६४।।

ॐ ह्रीं मोहान्धकशत्रुमूलोन्मूलनकराय अन्धकारातिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६५।।

ॐ ह्रीं जन्म-मरणरहिताय अनादिनिधनगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६६।।

ॐ ह्रीं अनन्तभवोपार्जितपापहराय हरनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६७।।

ॐ ह्रीं द्वादशसभालक्षणसनासमन्विता महासेनगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।६८।।

ॐ ह्रीं संसारसमुद्रोत्तारकगणधरदेवाद्युपदेशकाय तारकजिद्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६९।।

ॐ ह्रीं भव्यगणस्वामिने सर्वजनैश्वर्यप्रदायकाय गणनाथगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७०।।

ॐ ह्रीं गणीन्द्र-सुरेन्द्र-नागेन्द्र-नरेन्द्र-विद्याधरादिसमन्वितत्रैलोक्यैकमात्र-स्वामिने स्वयंविगतनायकाय विनायकगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७१।।

ॐ ह्रीं क्षायिकसम्यक्त्वविभूषित-विगताभरणशोभिताय विरोचनगुण-मंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७२।।

ॐ ह्रीं मातृगृहे पंचदशमासपर्यंताकाशात्रत्नवृष्टिकारकाय निर्वाणलाभ समयतनुवातवलयोपरिसिद्धशिलाया अग्रभागस्थिताय वियद्रत्नगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७३।।

ॐ ह्रीं द्वादशगणप्राणस्वरूपाय द्वादशांगस्वरूपाय द्वादशात्मगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७४।।

ॐ ह्रीं अग्निवत्कर्मेधनभस्मकारि-सूर्यवन्मोहान्धकारविनाशकचन्द्रवत्संसार-दुःखसंतप्तप्राणिहेतु-अमृतवर्षणकारक-रूद्रवत्कर्मसृष्टिप्रलयंकारीतिनानार्थसार्थक-कराय विभावसुगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।७५।।

ॐ ह्रीं व्रतिकद्विजगणपूजाप्राप्ताय द्विजाराध्यगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।७६।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानकिरणापेक्षया लोकाकाशभागपर्यंतव्याप्ताय वृहद्भानुगुण-विशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७७।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यलोकचित्तचमत्कारकारिविचित्रकिरणैर्विश्वप्रकाशकाय चित्रभानुगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७८।।

ॐ ह्रीं अतुलबलशालिव्रतनियमोपवासान् कृत्वापि लोकमार्गदर्शनार्थं पारणां कुर्वन् सन् कायं न पातयतीति तनूनपात्नामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७९।।

ॐ ह्रीं विप्र-क्षत्रिय-वैश्यस्वामिने विजयाद्यनुत्तरविमानवासिद्विजन्म-शेषाहमिन्द्रस्वामिने द्विजराजगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।८०।।

ॐ ह्रीं अमृतवत्संसारसुखकारककिरणसहिताय सुधाशोचिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।८१।।

ॐ ह्रीं जन्मजरामरणनिवारणसमर्थसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रतपः स्वरूप-प्ररूपकाय औषधीशगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।८२।।

ॐ ह्रीं लोकप्रसिद्धद्वासप्ततिकलास्पदभूताय कलानिधिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।८३।।

ॐ ह्रीं नक्ष-ज्ञानत्राणसमर्थाय अश्विनीत्यादिनक्षत्रस्वामिने नक्षत्रनाथगुण-विशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८४।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानोज्ज्वलकिरणधारकाय निर्मलज्ञानर्द्धिसमन्विताय श्रीशुभ्रांशुगुणविशिष्टाय अर्घ्यं....।।८५।।

ॐ ह्रीं मेरूमस्तकोपरिदेवाभिषिक्ताय मुक्तिलक्ष्मीसमन्विताय सोमगुण-विशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८६।।

ॐ ह्रीं भव्यकैरवमोक्षप्रापकाय कुमुदबांधवगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८७।।

ॐ ह्रीं सर्वश्रेष्ठपदप्राप्ताय लेखर्षभगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८८।।

ॐ ह्रीं पृथिव्याधारविरहितगगनविहारिणे अनिलगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८९।।

ॐ ह्रीं पवित्रजनसेविताय पुण्यजनगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९०।।

ॐ ह्रीं पवित्रपुरुषस्वामिने पुण्यजनेश्वरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९१।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिधर्मप्रतिपादनपराय धर्मराजगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९२।।

ॐ ह्रीं नागेन्द्रचक्रवर्त्यादिपतये भोगिराजगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९३।।

ॐ ह्रीं सर्वजनदुःखदारिद्र्यनाशनकराय प्रचेतोगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।९४।।

ॐ ह्रीं अधोमध्योर्ध्वलोकस्थितप्राणिगणसमृद्धिप्रदाय भूमिनन्दनगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९५।।

ॐ ह्रीं इन्द्रादिवंद्यश्रेष्ठजननीपुत्राय सिंहिकातनयगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९६।।

ॐ ह्रीं अशोकतरुच्छायायां त्रैलोक्यजनानंदविधायकाय छायानंदनगुण-

विशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।९७।।

ॐ ह्रीं सुरेन्द्र-नरेन्द्र-मुनीन्द्रादिसेवितचरणकमलाय वृहतांपतिगुण-विशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।९८।।

ॐ ह्रीं असुरादिसंक्लेशपरिणामनिषेधकोपदेशकाय पूर्वदेवोपदेष्टृगुण-विशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।९९।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रयधारिशुद्धात्मस्वरूपोद्भवाय द्विगराजसमुद्भवगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१००।।

पूर्णार्घ्य - तर्ज- हे वीर तुम्हारे द्वारे पर.....

हे नाथ ! तुम्हारे चरणों में, हम शीश झुकाने आये हैं।
हे वीर ! आप गुण गा गाकर, हम अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।।
अर्हंत अवस्था में प्रभु के, पुष्पों की वर्षा आदि दिखें।
देवों द्वारा बहुविभव हुये, हम अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।।१।।
मानव जीवन में कष्ट घने, नाना विध रोग व शोक घने।
सब दुख से आप बचा सकते, इसलिये शरण में आये हैं।
हे नाथ ! तुम्हारे चरणों में, हम शीश झुकाने आये हैं।
हे वीर ! आप गुण गा गाकर, हम अर्घ्य चढ़ाने आए हैं।।२।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मादि-द्विजराज समुद्भवगुणपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....

शांतये शांतिधारा ।। दिव्य पुष्पांजलिः।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानलक्षणाबुद्धिसहिताय बुद्धगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१०१।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमामार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्य-लक्षणदशसामर्थ्येन शिवपदप्राप्ताय दशबलगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१०२।।

ॐ ह्रीं अनंतसुखज्ञानसमन्विताय शाक्यगुणविभूतिषिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१०३।।

ॐ ह्रीं जीवपुद्गलधर्माधर्माकाशकालरूपषड्द्रव्यज्ञायकाय षडभिज्ञगुण-

विभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०४।।

ॐ ह्रीं वस्तुस्वरूपज्ञायकाय तथागतगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०५।।

ॐ ह्रीं सर्वतो जगत्कल्याणकारकाय समन्तभद्रगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०६।।

ॐ ह्रीं पूर्णज्ञानप्राप्ताय सुगतगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०७।।

ॐ ह्रीं स्वर्गावतारपूर्वभूतलरत्नवृष्टिकारकाय श्रीघनगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०८।।

ॐ ह्रीं प्राणिगण-ज्ञानादिगुणवृद्धिकरोपदेशकाय भूतकोटिदिग्गुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०९।।

ॐ ह्रीं धर्मार्थकाममोक्षार्थसिद्धिकराय सिद्धार्थगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।११०।।

ॐ ह्रीं कामदेवविजयिने मारजिद्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१११।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्गोपायभूतसत्यधर्मोपदेशकाय शास्तृगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।११२।।

ॐ ह्रीं प्रतिसमयोत्पादव्ययध्रौव्यलक्षणद्रव्यस्वरूपप्रतिपादकाय क्षणिकैक-सुलक्षणगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।११३।।

ॐ ह्रीं भव्यजीवहितहेतुरत्नत्रयप्राप्त्युपायप्रदर्शकाय बोधिसत्त्वगुण-विभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।११४।।

ॐ ह्रीं निर्विकल्पस्वरूपस्वात्मतत्त्वदर्शनकराय निर्विकल्पदर्शनगुण-विशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।११५।।

ॐ ह्रीं शुद्धबुद्धैकात्मतत्त्वानुभवप्राप्ताय अद्वयवादिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।११६।।

ॐ ह्रीं प्राणिमात्रदयाधर्मोपदेशनकराय महाकृपालुगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।११७।।

ॐ ह्रीं पंचस्थावरजीवरक्षणधर्मप्रतिपादकाय नैरात्म्यवादिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।११८।।

ॐ ह्रीं अनादिसंतानस्वरूपजीवस्वभावोपदेशकाय संतानशासकगुण-विशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।११९।।

ॐ ह्रीं शुद्धनयापेक्षया सर्वजीवशुद्धबुद्धैकसामान्यलक्षणोपदेशनकराय सामान्यलक्षणचणगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१२०।।

ॐ ह्रीं शुद्धाशुद्धनयापेक्षासर्वजीवपंचस्कंधज्ञानमयाय पञ्चस्कंधमयात्म-दृग्गुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१२१।।

ॐ ह्रीं सत्यार्थभावनाबलेन सिद्धपदप्राप्ताय भूतार्थसाधनासिद्धगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१२२।।

ॐ ह्रीं नरकतिर्यग्मनुष्यदेवगतिलक्षणशासनप्रतिपादकाय चतुर्भूमिक-शासनगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१२३।।

ॐ ह्रीं मतिश्रुतावधिमनःपर्ययरूपचतुर्ज्ञानधारिगणधरदेवादिसत्य-धर्मोपदेशकाय चतुरार्यसत्यवक्तृगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१२४।।

ॐ ह्रीं रागद्वेषमोहविकल्पजालविरहितचिच्चेतनासमन्विताय निराश्रय-चिद्गुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१२५।।

ॐ ह्रीं सन्तानपरपरंयानादिनिधनाय अन्वयगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१२६।।

ॐ ह्रीं ध्यानरूपयोगप्राप्ताय योगगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१२७।।

ॐ ह्रीं अतीन्द्रियकेवलज्ञानविशेषसहिताय वैशेषिकगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१२८।।

ॐ ह्रीं शून्यस्वरूपनिषेधकाय भावान्तरस्वभावपदार्थप्रतिपादकाय तुच्छाभावभिद्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१२९।।

ॐ ह्रीं जीवपुद्गलधर्माधर्माकाशकालरूपषट्पदार्थोपदशेकाय षट्पदार्थ-दृग्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१३०।।

ॐ ह्रीं स्याद्वादरूपन्यायप्रयोक्त्रे नैयायिकगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१३१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरप्रकृतिबंधकारणभूतदर्शनविशुद्धिविनयसंपन्नतादिषोडश-भावनाप्रतिपादकाय षोडशार्थवादिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१३२।।

ॐ ह्रीं कुंदचन्द्रादिपंचवर्णशरीरधारितीथकरसमुदायोपदेशकाय पंचास्तिकाय प्रतिपादनपराय पंचार्थवर्णकगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१३३।।

ॐ ह्रीं चतुर्विधज्ञानान्तरप्रत्यक्षीभूतकेवलज्ञानविशिष्टाय ज्ञानान्तराध्यक्ष-बोधगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१३४।।

ॐ ह्रीं अपृथगाश्रयवशीभूतपदार्थपृथकग्ज्ञात्रे समवायवशार्थभिद् गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१३५।।

ॐ ह्रीं अनुभवसाध्यकर्मस्वभावप्रतिपादकाय भुक्तैकसाध्यकर्मान्तगुण-धारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१३६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरपरमदेवगणधरदेवादिघातिसंघातघातनसंजात-अनन्त ज्ञानादिगुणामृतधारकाय निर्विशेषगुणामृतनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१३७।।

ॐ ह्रीं गणनायां सत्यां आदिमध्यान्तव्याप्ताय सांख्यगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१३८।।

ॐ ह्रीं अन्यजनागोचरसमीचीनदर्शनयोग्याय समीक्ष्यगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१३९।।

ॐ ह्रीं विषयकषायगच्छत्चित्तात्मनि स्थापकाय तीर्थंकरपरमदेवाय कपिलगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१४०।।

ॐ ह्रीं पंचविंशतिभावनास्वरूपवेदकाय पंचविंशतितत्त्वविद्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१४१।।

ॐ ह्रीं संसारिमुक्तजीवज्ञात्रे व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१४२।।

ॐ ह्रीं पंचातिधज्ञानत्रिविधचेतनाभेदप्रदर्शकाय ज्ञानचैतन्यभेददृग्गुण-

विशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१४३।।

ॐ ह्रीं निर्विकल्पसमाधिसमय-रागद्वेषमोहादिविकल्पविरहितज्ञानप्रतिपादकाय अस्वसंविदितज्ञानवादिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१४४।।

ॐ ह्रीं समीचीनसंवरनिर्जरादिश्रेष्ठकार्यकरणोपदेशकाय सत्कार्यवादसात्-गुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१४५।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्गप्रमाणभूतसम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्ररूपत्रिरत्न-प्रतिपादकाय त्रिःप्रमाणगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१४६।।

ॐ ह्रीं शुद्धात्मतत्त्वप्रमाणस्वरूपप्रतिपादकाय अक्षप्रमाणगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१४७।।

ॐ ह्रीं प्रत्येकजनस्याद्वादप्रयोगकरणोपदेशकाय स्याद्वादहंकारिकाक्षदिग्गुण-विशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१४८।।

ॐ ह्रीं लोकालोकक्षेत्रज्ञानिने क्षेत्रज्ञगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१४९।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यस्वरूपज्ञायकाय ज्ञानस्वरूपाय आत्मगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१५०।।

ॐ ह्रीं इन्द्रादिपूजितपदे शयनाय पुरुषगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१५१।।

ॐ ह्रीं न्यायकारकाय कामदेवविकारविरहिताय नरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१५२।।

ॐ ह्रीं भव्यजीवमोक्षमार्गनेत्रे नृगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१५३।।

ॐ ह्रीं लोकालोकस्वरूपवेदकाय चेतनगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१५४।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनस्थितभव्यजनसमूहपवित्रीकृताय पुमानितिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१५५।।

ॐ ह्रीं पापानामकर्त्रे परमकल्याणकारकाय अकर्तृगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१५६।।

ॐ ह्रीं रागद्वेषाद्यशुद्धगुणविरहिताय निर्गुणनामधारकाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१५७।।

ॐ ह्रीं स्पर्शरसगंधवर्णस्वरूपविरहिताय अमूर्त्तगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१५८।।

ॐ ह्रीं परमानन्दसुखानुभवनकराय भोक्तृगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१५९।।

ॐ ह्रीं लोकपूरणसमुद्घातापेक्षया त्रैलोक्यव्यापकाय सर्वगतगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६०।।

ॐ ह्रीं मनवचनकायक्रियाविरहितनिश्चलाय अक्रियगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१६१।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानदृष्ट्या सर्वलोकालोकावलोकनाय दृष्ट्रगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६२।।

ॐ ह्रीं मोक्षनिकटस्थिताय तटस्थगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६३।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखराग्रस्थिताय कूटस्थगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६४।।

ॐ ह्रीं चराचरसर्वजगज्ज्ञात्रे ज्ञातृगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६५।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणाद्यष्टकर्मनिर्मुक्ताय निर्बंधनगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६६।।

ॐ ह्रीं संसाराभावकरणसमर्थाय अभवगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६७।।

ॐ ह्रीं बाह्यविकारविवर्जिताय बहिर्विकारगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६८।।

ॐ ह्रीं तद्भवमोक्षनिश्चिताय निर्मोक्षगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६९।।

ॐ ह्रीं एकाग्रतयात्मनि स्थितिविधायकाय प्रधानगुणसमन्विताय

श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७०।।

ॐ ह्रीं प्रचुरनिर्जराकारकपरमशुक्लध्यानधारकाय बहुधानकगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७१।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यलोकहितकारकतीर्थप्रवर्तनकराय प्रकृतिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७२।।

ॐ ह्रीं यथावत्तत्त्वस्वरूपनिरूपणकराय ख्यातिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७३।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनप्रसिद्धतीर्थकरनामकर्मप्रकृतिसमन्विताय आरूढप्रकृतिगुण-विभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७४।।

ॐ ह्रीं स्वभावतः सर्वजगत्प्रियाय प्रकृतिप्रियगुणविभूषिताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७५।।

ॐ ह्रीं आध्यात्मरसानुभवाय कवलाहारविरहिताय प्रधानभोज्यगुण-विशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७६।।

ॐ ह्रीं दुष्टत्रिषष्टिप्रकृतिक्षयकारिणे अघातिप्रकृतिदग्धरज्जुवदकिं चित्करधारिणे अप्रकृतिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७७।।

ॐ ह्रीं इन्द्रधरणेन्द्रादिभिरपि सुन्दरआत्मस्वरूपविशिष्टाय विरम्यगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७८।।

ॐ ह्रीं विशिष्टकर्मकारक-विगतकृतिकर्मणे विकृतिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१७९।।

ॐ ह्रीं निदानादिदोषविरहित-इन्द्रादिकृतपूजायोग्याय कृतिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८०।।

ॐ ह्रीं स्वसमय-परसमयकथितसमस्ततत्त्वमीमांसाकरणबुद्धिप्रदाय मीमांसकगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८१।।

ॐ ह्रीं चार्वाकादिसर्वज्ञंमन्यजनाहंकारनिराकरणसमर्थाय अस्तसर्वज्ञगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८२।।

ॐ ह्रीं दिव्यवाणीभिर्जगत्पवित्रीकृताय श्रुतिपूतगुणसमन्विताय श्रीमहावीर जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८३।।

ॐ ह्रीं सततपूजायोग्याय अध्ययनाध्यापनरूपकर्मक्षपणस्वरूपयज्ञकराय सदोत्सवगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८४।।

ॐ ह्रीं अतीन्द्रियज्ञानरूपस्वाभाविकगुणप्रतिपादकाय परोक्षज्ञानवादिगुण-विशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८५।।

ॐ ह्रीं पवित्रकारकपुरुषाभीष्टाय इष्टपावकगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८६।।

ॐ ह्रीं यथाख्यातचारित्रप्राप्तिरूपकर्तव्यसिद्धिकराय सिद्धकर्मकगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८७।।

ॐ ह्रीं विश्वज्ञायककेवलज्ञानप्राप्त-सर्वजगत्पापमलक्षालनसमर्थ-भव्यजीवानंददायकाय चार्वाकगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।१८८।।

ॐ ह्रीं समवसरणविभूतिरूपैश्वर्यसंपन्न-प्राणिगणज्ञानोत्पत्तिप्रतिपादकाय भौतिकज्ञानगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८९।।

ॐ ह्रीं भूत-जीवेषु चेतनाभिव्यक्तिप्रतिपादकाय भूताभिव्यक्तचेतनगुण-विशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९०।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानैकप्रमाणीभूताय प्रत्यक्षैकप्रमाणगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१९१।।

ॐ ह्रीं चूर्णीकृतजैनमतबहिर्भूतशासनाय पुनर्जन्मविरहिताय अस्तपरलोक-गुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१९२।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानसमानशास्त्रविशिष्टाय गुरुश्रुतिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९३।।

ॐ ह्रीं इन्द्रकृतकर्णवेधनसंस्कारसमन्विताय पुरन्दरविद्धकर्णगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९४।।

ॐ ह्रीं पूर्णज्ञानसमन्वित-त्रिवेदविरहितपदप्राप्ताय वेदान्तिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९५।।

ॐ ह्रीं अद्वितीयकेवलज्ञानधारकाय संविदद्वयिगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९६।।

ॐ ह्रीं सर्वपुद्गलशब्दशक्तिरूपाय शब्दाद्वैतिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-

जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१९७।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानप्रकटीकरणरूपशुद्धबुद्धात्मस्वभावाय स्फोटवादिगुण-विशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१९८।।

ॐ ह्रीं मिथ्यामतनाशनबुद्धिप्रदाय पाखण्डघ्नगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१९९।।

ॐ ह्रीं परस्परसापेक्षनयसमूहप्रवृत्तिप्रतिपादकाय नयौघयुग्गुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२००।।

पूर्णार्घ्य - तर्ज - करो कल्याण आतम का .....

नमन महावीर जिनवर को, जिन्होंने कर्म नाशे हैं।
नमन उस सिद्धभूमी को, जहाँ जिनवर विराजे हैं।।
करें जो नाथ की अर्चा, सदा प्रभु कीर्ति को गावें।
नहीं अपमृत्यु हो उनकी, वे ही सुख शांति पाते हैं।नमन..।।१।।
प्रभो ! मैं भी करूं पूजा, यही शक्ती मिले मुझको।
वीर की भक्ति से निश्चित,सभी जन इष्ट पाते हैं।नमन.।।२।।

ॐ ह्रीं बुद्धगुणादिनयौघयुग्गुणपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं.....

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।।

ॐ ह्रीं संसारावसानकराय अन्तकृद्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२०१।।

ॐ ह्रीं संसारसमुद्रपारकृताय पारकृद्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२०२।।

ॐ ह्रीं भवोदधितटप्राप्ताय तीरप्राप्तगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२०३।।

ॐ ह्रीं पापान्धकारस्थानविरहित-अष्टापद-सम्मेदगिरि-चंपापुरी-पावापुरी-ऊर्जयन्तादिसिद्धक्षेत्रस्थिताय पारेतमोगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२०४।।

ॐ ह्रीं मनोवाक्कायत्रियोगनिरोधकरणदक्षाय त्रिदण्डिगुणविशिष्टाय

श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२०५।।

ॐ ह्रीं असातावेदनीयादिशत्रुमृतसदृशकरणाय दण्डितारातिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२०६।।

ॐ ह्रीं आत्मज्ञान-यथाख्यातचारित्रलक्षणक्रियासमूहसमन्विताय ज्ञानकर्मसमुच्चयिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२०७।।

ॐ ह्रीं मोक्षगमनकालनिकटप्राप्तध्वनिसंकोचिताय संहतध्वनिगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२०८।।

ॐ ह्रीं आत्मप्रदेशचंचलकरणयोगविनाशाय उत्सन्नयोगगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२०९।।

ॐ ह्रीं निस्तब्धसमुद्रोपमाधारकाय सुप्तार्णवोपमगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२१०।।

ॐ ह्रीं मनोवचनकायरूपव्यापारानुरागनिवारणाय योगस्नेहापहागुण-विशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२११।।

ॐ ह्रीं आत्मप्रदेशसंश्लिष्टसूक्ष्मरजःकणनिवारणसमर्थाय योगकिट्टिनिर्लेपनोद्यतगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२१२।।

ॐ ह्रीं बादरपरमौदारिककाययोगनिवृत्ताय स्थितसूक्ष्मवपुर्योगगुण-विशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२१३।।

ॐ ह्रीं बादरवचनयोग-बादरमनोयोगकृशीकृताय गीर्मनोयोगकार्श्यक-गुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२१४।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मवाग्योग-सूक्ष्ममनोयोगावस्थिताय सूक्ष्मवाक्चित्तयोगस्थ-गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२१५।।

ॐ ह्रीं औदारिककाययोगसूक्ष्मीकृताय सूक्ष्मीकृतवपुःक्रियगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२१६।।

ॐ ह्रीं कियत्कालसूक्ष्मकाययोगस्थिताय सूक्ष्मकायक्रियास्थायिगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२१७।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मवचनमनोयोगविनाशाय सूक्ष्मवाक्चित्तयोगहागुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२१८।।

ॐ ह्रीं कियत्समयसूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिशुक्लध्यानरूपैककाययोगस्थिताय एकदण्डिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२१६।।

ॐ ह्रीं आत्मकर्ममध्यक्षीरनीरवत्पृथक्करणसमर्थाय परमहंसगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२०।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मास्रवनिरोधलक्षणसंवरप्राप्ताय परमसंवरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२१।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्माभावकारकाय नैःकर्म्यसिद्धगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२२।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मक्षयलक्षणनिर्जराप्राप्ताय वृद्धावस्थादिदोषविगताय परमनिर्जरगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२३।।

ॐ ह्रीं लोकालोकप्रकाशक-केवलज्ञानतेजोविशिष्टाय प्रज्वलत्प्रभगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२४।।

ॐ ह्रीं निष्फलीकृतकर्मसमूहाय मोघकर्मगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२५।।

ॐ ह्रीं कर्मपाशछेदनसमर्थाय त्रुट्यत्कर्मपाशगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२६।।

ॐ ह्रीं अष्टादशसहस्रसंख्यशीलस्वामिने शैलेश्यलंकृतगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२७।।

ॐ ह्रीं निजशुद्धबुद्धैकस्वभावज्ञानामृतरसानुभवनसमर्थाय एकाकार-रसास्वादिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२८।।

ॐ ह्रीं अनन्तसौख्योत्पत्तिव्यापारसमन्विताय विश्वाकाररसाकुलगुण-विभूषिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२२९।।

ॐ ह्रीं श्वासोच्छ्वासविरहितजीवनधारकाय अजीवन्गुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२३०।।

ॐ ह्रीं मरणविरहितजीवन्मुक्ताय अमृतगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२३१।।

ॐ ह्रीं योगनिद्रावस्थिताय अजाग्रद्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय

अर्घ्यं.....।।२३२।।

ॐ ह्रीं मोहनिद्राविरहितस्वात्मस्वरूपसावधानाय असुप्तगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२३३।।

ॐ ह्रीं मनोवचनकायव्यापारविरहिताय शून्यतामयगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२३४।।

ॐ ह्रीं सर्वजगदतिशयप्रियाय प्रेयान्गुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२३५।।

ॐ ह्रीं मनोवाक्कायपरिस्पन्दनविरहिताय अयोगिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२३६।।

ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षगुणान्विताय चतुरशीतिलक्षगुणनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२३७।।

ॐ ह्रीं रागद्वेषादिवैभाविकगुणविरहिताय अगुणनाममंडिताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२३८।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानान्तर्गतानंतपर्यायप्राप्ताय निःपीतानन्तपर्यायनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२३९।।

ॐ ह्रीं अनादिकालीनाज्ञानसंस्कारविनाशकाय अविद्यासंस्कारनाशकगुण-विशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२४०।।

ॐ ह्रीं समुद्घातापेक्षया लोकप्रमाणव्यापकाय वृद्धगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२४१।।

ॐ ह्रीं निर्वक्तुंशक्याय अपकीर्तिविरहिताय निर्वचनीयगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२४२।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिवचनप्राप्ताय अतिसूक्ष्मत्वाद्योगिनामगम्याय अणुनाम-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२४३।।

ॐ ह्रीं इन्द्रियागोचरामूर्त्ताय अणीयान्गुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२४४।।

ॐ ह्रीं क्षुद्रतारहित-महापुरुषबल्लभाय अनणुप्रियगुणधाकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२४५।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनस्थितेन्द्रचन्द्र-मुनीन्द्रप्रियाय प्रेष्ठगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२४६।।

ॐ ह्रीं प्रदेशस्पन्दनाभावादेकरूपस्थिरस्वभावाय स्थेयान्गुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२४७।।

ॐ ह्रीं सुमेरूवदचलस्वभावाय स्थिरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२४८।।

ॐ ह्रीं स्वध्येयतत्त्वस्थिताय निष्ठगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२४९।।

ॐ ह्रीं अत्यन्तप्रशंसायोग्यपदप्राप्ताय श्रेष्ठगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५०।।

ॐ ह्रीं ज्ञानापेक्षयात्यन्तवृद्धस्वरूपाय ज्येष्ठगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५१।।

ॐ ह्रीं योगनिरोधसमयस्वात्मस्थिताय सुनिष्ठितगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५२।।

ॐ ह्रीं कर्मसेनाप्रंध्वंसक-स्वात्मस्वरूपप्राप्तिरूपप्रयोजनपूर्णाय भूतार्थशूर-गुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५३।।

ॐ ह्रीं पंचेन्द्रियविषयभोगविरहिताय भूतार्थदूरगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५४।।

ॐ ह्रीं रागद्वेषादिवैभाविकभावविरहित-अनंतगुणपुंजस्वरूपाय परमनिर्गुणनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५५।।

ॐ ह्रीं संसारकार्ये मौनधारणाय व्यवहारसुषुप्तगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२५६।।

ॐ ह्रीं स्वात्मस्वरूपातिशयसावधानाय अतिजागरूकगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५७।।

ॐ ह्रीं स्वरूपेऽत्यन्तसुखरूपस्थिताय अतिसुस्थितगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५८।।

ॐ ह्रीं परमप्रकर्षमाहात्म्यप्राप्ताय उदितोदितमाहात्म्यगुणसमन्विताय

श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५९।।

ॐ ह्रीं सर्वपरिग्रह-मानसिकपीडा-धर्मोपदेशविहारादिकार्यविरहिताय निरुपाधिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२६०।।

ॐ ह्रीं स्वभावोपलब्धिसहिताय अकृत्रिमगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२६१।।

ॐ ह्रीं लोकालोकव्यापिप्रभावसमन्विताय अमेयमहिमागुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६२।।

ॐ ह्रीं भावकर्म-द्रव्यकर्म-नोकर्ममलविगताय अत्यन्तशुद्धगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६३।।

ॐ ह्रीं आत्मस्वरूपप्राप्तिरूपरमणीपरिणयाय सिद्धिस्वयंवरगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६४।।

ॐ ह्रीं अनन्तसिद्धानंतरसिद्धिपदप्राप्ताय सिद्धानुजगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६५।।

ॐ ह्रीं ईषत्प्राग्भारपृथिवीप्राप्ताय सिद्धपुरीपान्थगुणधारकाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६६।।

ॐ ह्रीं अनंतसिद्धसमूहप्राघूर्णकाय सिद्धगणातिथिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२६७।।

ॐ ह्रीं कर्मनिर्मुक्तजनसमागमोत्कंठिताय सिद्धसंगोन्मुखगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२६८।।

ॐ ह्रीं मुक्तिवल्लभाश्लेषोचितपदप्राप्ताय सिद्धालिंग्यगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६९।।

ॐ ह्रीं अनंतगुणोपबृंहकाय सिद्धोपगूहकगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२७०।।

ॐ ह्रीं सिद्धसदृशानंतज्ञानदर्शनसुखवीर्याद्यनन्तगुणबलान्विताय पुष्टगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२७१।।

ॐ ह्रीं शिवपुरी प्रापणसमर्थाष्टादशसहस्रशीलसमन्विताय अष्टादशसहस्र-शीलश्वगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२७२।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्गपाथेयप्राप्ताय पुण्यशंबलगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२७३।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रवाहनधारकाय वृत्ताग्रयुग्यगुणसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२७४।।

ॐ ह्रीं स्वात्मस्थितिस्वरूपपरमशुक्ललेश्याधारकाय परमशुक्ललेश्यगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२७५।।

ॐ ह्रीं घातिसंघातविध्वंसनसमर्थाय अपचारकृत्-गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२७६।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्याग्रविराजिताय क्षेपिष्ठगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२७७।।

ॐ ह्रीं अन्तिमनिर्वाणकल्याणकप्राप्ताय अन्त्यक्षणसखागुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२७८।।

ॐ ह्रीं आयोगिकेवलिगुणस्थानगत-अ इ उ ऋ लृ पंचलघ्वक्षरोच्चारण-प्रमाणकालस्थिताय पंचलघ्वक्षररस्थितिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२७९।।

ॐ ह्रीं चतुर्दशगुणस्थानद्विचरमसमयगताघातिकर्मद्वासप्ततिप्रकृति-विनाशकाय द्वासप्ततिप्रकृत्यासिनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२८०।।

ॐ ह्रीं अयोगकेवलि-अन्त्यसमयत्रयोदशप्रकृतिक्षपणाय त्रयोदशकलिप्रणुत्-गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२८१।।

ॐ ह्रीं स्त्रीपुंनपुंसकवेदविरहित-स्वात्मलिंगसमन्विताय अवेद-गुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२८२।।

ॐ ह्रीं योगनिरोधकालप्राप्तविहारधर्मोपदेशादिविरहिताय अयाजकगुण-विशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२८३।।

ॐ ह्रीं अलक्ष्यस्वरूपप्राप्ताय अयज्यगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२८४।।

ॐ ह्रीं अतीन्द्रियामूर्तस्वरूपाद्द्रव्यपूजाविरहिताय अयाज्यगुणसमन्विताय

श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२८५।।

ॐ ह्रीं गार्हपत्य-आहवनीय-दाक्षिणाग्निरूपहवनविधिविरहिताय अनग्नि-परिग्रहगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२८६।।

ॐ ह्रीं अग्निमन्तरेण कर्मरूपसमिधाभस्मसात्करणाय अनग्निहोत्री-गुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२८७।।

ॐ ह्रीं सर्वसंसारेच्छाविरहिताय परमनिःस्पृहगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२८८।।

ॐ ह्रीं यमराजविध्वंसनसमयकरुणाविरहिताय अत्यन्तनिर्दयगुण-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२८९।।

ॐ ह्रीं जन्मप्रभृतिमतिश्रुतावधिज्ञानसमन्विताय स्वयंप्रबोधगुणधारकाय अशिष्यनामविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२९०।।

ॐ ह्रीं योगनिरोधसमयशिष्योपदेशविरहिताय अशासकगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२९१।।

ॐ ह्रीं गुरुमन्तरेण स्वयंदीक्षाग्रहणपदप्राप्ताय अदीक्ष्यगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२९२।।

ॐ ह्रीं निष्क्रमणकल्याणसमयशिष्यजनदीक्षाविरहिताय अदीक्षक-गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२९३।।

ॐ ह्रीं स्वयंदीक्षाग्राहितीर्थंकरप्रकृतिधारकाय अदीक्षितगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२९४।।

ॐ ह्रीं इन्द्रियसाहाय्यरहित-स्वात्मस्वरूपक्षयरहिताय अक्षपदसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२९५।।

ॐ ह्रीं परमयोगिजनागोचराय अगम्यनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२९६।।

ॐ ह्रीं निजशुद्धात्मस्वरूपस्थिताय अगमकगुणविशिष्टाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२९७।।

ॐ ह्रीं संसारमध्यस्थितवस्तुरमणीयाभावाय अरम्यगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२९८।।

ॐ ह्रीं शुद्धबुद्धात्मस्वरूपविरहितान्यत्र रतिविगतय अरमकनाम-समन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२९९।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानेनाकण्ठममृतभृतसुवर्णघटसदृशपरिपूर्णाय ज्ञाननिर्भर-गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।३००।।

पूर्णार्घ्य - तर्ज - मेरे मन मंदिर में आन.....

वंदूं महावीर भगवान, करो मेरे कर्मों की हान।
वृद्धिंगत महिमा के धारी, प्रभु तुम गुण अनंत भंडारी।।
प्रभु का केवलज्ञान महान, करो मेरे कर्मों की हान।। वंदूं....१।।
नमूं नमूं मैं भक्ति भाव से, मेरा ज्ञान पूर्ण हो प्रगटे।।
सर्व सुखों के आप निदान, करो मेरे कर्मों की हान।। वंदूं....२।।
आप बुद्ध केवलज्ञानी हैं, पंचकल्याणक के स्वामी हैं।
नमूं चरण कमलों में आन, करो मेरे कर्मों की हान।।
वंदूं महावीर.....।।३।।

ॐ ह्रीं अंतकृदादिज्ञाननिर्भरगुणपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं....।।

शांतये शांतिधारा । दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य - ॐ ह्रीं अर्हं श्री महावीर जिनेंद्रायं विश्वशांतिकराय सर्वसौख्यं कुरू कुरू ह्रीं नमः।

(सुगंधित पुष्प, लवंग या पीले चावल मिश्रितरत्नों से १०८ मंत्रों का जाप्य करें तथा पूजा के अनंतर इन रत्नों को श्रद्धालुओं में वितरित कर दें।)

जयमाला

दोहा - लोकशिखर चूड़ामणी, महावीर जिनदेव।
कोटि कोटि तुमको नमूं, करुं भक्ति से सेव।।१।।

गीताछंद - जय जय जिनेश्वर वीर प्रभु, तीर्थेश जग विख्यात हो।
जय जय अखिलसंपत्ति के, भर्ता भविकजन नाथ हो।।
लोकांत में जा राजते, त्रैलोक्य के चूड़ामणी।

जय जय सकल जग में तुम्हीं, हो ख्यात प्रभु चिंतामणी।।२।।
एकेन्द्रियादिक योनियों में, नाथ ! मैं रूलता रहा।
चारों गती में ही अनादी, से प्रभो ! भ्रमता रहा।।
मैं द्रव्य क्षेत्र रू काल भव, औ भाव परिवर्तन किये।
इनमें भ्रमण से ही अनंतानंत काल बिता दिये।।३।।
बहुजन्म संचित पुण्य से, दुर्लभ मनुज योनी मिली।
तब बालपन में जड़ सदृश, सज्ज्ञान कलिका ना खिली।।
बहुपुण्य के संयोग से, प्रभु आपका दर्शन मिला।
बहिरातमा औ अन्तरात्मा, का स्वयं परिचय मिला।।४।।
तुम सकल परमात्मा बने, जब घातिया आहत हुये।
उत्तम अतीन्द्रिय सौख्य पा, प्रत्यक्ष ज्ञानी तब हुये।।
फिर शेष कर्म विनाश करके, निकल परमात्मा बने।
कल-देहवर्जित निकल अकल, स्वरूप शुद्धात्मा बने।।५।।
हे नाथ ! बहिरात्मा दशा, को छोड़ अन्तर आतमा।
होकर सतत् ध्याऊं तुम्हें, हो जाऊं मैं परमात्मा।।
संसार का संसरण तज, त्रिभुवन शिखर पर जा बसूं।
निज के अनंतानंत गुणमणि, पाय निज में ही बसूं।।६।।
जब तक न पाऊं सिद्धपद, तव चरण में मम मन रमे।
तब चरण मेरे हृदय में, स्थिर रहें अति चम चमें।।
मैं भक्ति से वंदन करूं, प्रणमन करूं शत शत नमूं।
निज ज्ञानमति कैवल्य हो, इस हेतु ही नितप्रति नमूं ।।७।।

दोहा - शरणागत के सर्वथा, तुम रक्षक भगवान।
त्रिभुवन की अविचल निधी, दे मुझ करो महान।।८।।

ॐ ह्रीं शतगुणमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं.... शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीताछंद - जो विश्वशांती महावीर, विधान भक्ती से करें।
सब आपदाएं दूर कर, सर्वत्र सुख शांती भरें।।
तीर्थेश प्रभु का मेरु पर, जन्माभिषेकोत्सव करें।
फिर स्वयं तीर्थंकर बनें, निज 'ज्ञानमति' संपति भरें।।१।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं ७

अथ स्थापना - गीताछंद

श्री महावीर जिनेंद्र इंद्र नरेन्द्र से पूजित सदा।
प्रभु नाथवंश दिनेश क्षत्रियवर्णपुगंव शर्मदा।।
सप्तर्द्धिभूषित गणधरों से पूज्य त्रिभुवन वंद्य है।
आह्वानकर पूजूं यहां मिट जायेगा भव फंद है।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक - नरेन्द्र छन्द

पद्मसरोवर का जल लेकर, कंचन झारी भरिये।
वर्धमान पद धारा देकर, जन्म मरण को हरिये।।
महावीर प्रभु चरण जजूं मैं, चारशतक मंत्रों से।
परमानंद सुखास्पद पाऊं, छूटूं भवभव दुख से।।१।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.....

मलयागिरि चंदन काश्मीरी केशर संग घिसाया।
जिनवर चरण सरोरूह चर्चत अतिशय पुण्य कमाया।। महावीर।।२।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं.....

मोतीसम तंदुल उज्जवल ले, धोकर थाल भराऊं।
जिनवर आगे पुंज चढ़ाकर, अक्षय सुख को पाऊं।महावीर।।३।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं....

चंपा हरसिंगार चमेली, माला गूंथ बनाई।
तीर्थंकर पदकमल चढ़ाकर, भव भय व्यथा नशायी।महावीर।।४।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....

फेनी गुझिया पूरणपोली, बरफी और समोसे।
प्रभु के सन्मुख अर्पण करते, क्षुधा वेदनी नाशे।। महावीर।।५।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....

रत्नदीप की ज्योती जगमग, करती तिमिर विनाशे।
प्रभु तुम सन्मुख आरति करते, ज्ञानज्योति परकाशे।।
महावीर प्रभु चरण जजूं मैं, चारशतक मंत्रों से।
परमानन्द सुखास्पद पाऊं, छूटूं भवभव दुख से।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं.....

धूप दशांगी धूप घटों में, खेवत उठे सुगंधी।
पापपुंज जलते इक क्षण में, फैले सुयश सुगंधी।।महावीर।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....

सेव अनार आम सीताफल, ताजे सरसफलों।
पूजूं चरण कमल सन्मति के, मिले मोक्षफल सुख से।। महावीर।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....

जल फल अर्घ्य सजाकर उसमें, चांदी पुष्प मिलाऊं।
वाद्य गीत संगीत नृत्यकर, प्रभु को अर्घ्य चढ़ाऊं।।महावीर।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....

सोरठा - नाथ ! पाद पंकज, जल से त्रयधार करूं।
त्रिभुवन शांती हेत, शांतीधारा विश्व में।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करुं।
मिले स्वात्मसुखलाभ, जिनपद पंकज पूजते।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ चार सो मंत्र अर्घ्य

दोहा- महावीर अतिवीर के, गुणमणि नंतानंत।
नाममंत्र उनके जजूं, पुष्पांजलि विकरंत।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।१।।

(मंडल पर प्रत्येक अर्घ्य के साथ एक-एक रत्न चढ़ाना है।)

ॐ ह्रीं अनंतानुबंधिक्रोधकषायविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१।।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबंधिमानकषायविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२।।

---

१. यहाँ कर्मप्रकृतियों के नष्ट होने का क्रम लिया है।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबंधिमायाकषायशातनाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।३।।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबंधिलोभकषायनिर्मूलनाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।४।।

ॐ ह्रीं मिथ्यात्वदर्शनमोहनीयविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।५।।

ॐ ह्रीं सम्यग्मिथ्यात्वदर्शनमोहनीयनिर्मूलकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।६।।

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वप्रकृतिनामदर्शनमोहनीयविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।७।।

ॐ ह्रीं नरकायुःकर्मविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।८।।

ॐ ह्रीं तिर्यगायुः कर्मविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।।९।।

ॐ ह्रीं देवायुःकर्मविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।१०।।

ॐ ह्रीं नरकगतिनामकर्मनिर्मूलनकराय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।११।।

ॐ ह्रीं नरकगत्यानुपूर्विनामकर्मनिवारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।१२।।

ॐ ह्रीं तिर्यग्गतिनामकर्मविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।१३।।

ॐ ह्रीं तिर्यग्गत्यानुपूर्विनामकर्मनिवारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।१४।।

ॐ ह्रीं एकेंद्रियजातिनामकर्मविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।१५।।

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रियजातिनामकर्मोच्छेदकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।१६।।

ॐ ह्रीं त्रीन्द्रियजातिनामकर्मोच्छेदकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।१७।।

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रियजातिनामकर्मनिर्मूलनकराय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।१८।।

ॐ ह्रीं निद्रानिद्रादर्शनावरणकर्मनाशकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।१९।।

ॐ ह्रीं प्रचलाप्रचलादर्शनावरणकर्मविघातकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२०।।

ॐ ह्रीं स्त्यानगृद्धिदर्शनावरणकर्मोच्छेदकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२१।।

ॐ ह्रीं आतपनामकर्मनिर्मूलनकराय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२२।।

ॐ ह्रीं उद्योतनामकर्मविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२३।।

ॐ ह्रीं साधारणनामकर्मनिवारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।।२४।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मनामकर्मोच्छेदकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२५।।

ॐ ह्रीं स्थावरनामकर्मोच्छेदनकराय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२६।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरण क्रोधकषायविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२७।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणमानकषायविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२८।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणमायाकषायनिवारणकराय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।२९।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणलोभकषायविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।३०।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणक्रोधकषायविरहिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।३१।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणमानकषायविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।३२।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणमायाकषायनिवारणाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।३३।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणलोभकषायनिर्मूलनकराय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।३४।।

ॐ ह्रीं नपुंसकवेदनोकषायविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।३५।।

ॐ ह्रीं स्त्रीवेदनोकषायविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।३६।।

ॐ ह्रीं हास्यनोकषायविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।३७।।

ॐ ह्रीं रतिनोकषायविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।३८।।

ॐ ह्रीं अरतिनोकषायविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।३९।।

ॐ ह्रीं शोकनोकषायशातनकराय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।४०।।

ॐ ह्रीं भयनोकषायनिर्मूलनकराय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।४१।।

ॐ ह्रीं जुगुप्सानोकषायविरहिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।४२।।

ॐ ह्रीं पुरुषवेदनोकषायविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।४३।।

ॐ ह्रीं संज्वलनक्रोधकषायनिवारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।४४।।

ॐ ह्रीं संज्वलनमानकषायविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।४५।।

ॐ ह्रीं संज्वलनमायाकषायविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।४६।।

ॐ ह्रीं संज्वलनलोभकषायविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय

अर्घ्यं....।।४७।।

ॐ ह्रीं निद्रादर्शनावरणकर्मनिवारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।४८।।

ॐ ह्रीं प्रचलादर्शनावरणकर्मनिवारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।४९।।

ॐ ह्रीं मतिज्ञानावरण कर्मविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।५०।।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानावरणकर्मविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।५१।।

ॐ ह्रीं अवधिज्ञानावरणकर्मविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।५२।।

ॐ ह्रीं मनःपर्ययज्ञानावरणकर्मविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।५३।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानवरणकर्मविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।५४।।

ॐ ह्रं चक्षुर्दर्शनावरणकर्मनिवारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।५५।।

ॐ ह्रीं अचक्षुर्दर्शनावरणकर्मविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।५६।।

ॐ ह्रीं अवधिदर्शनावरणकर्मनिर्मूलकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।५७।।

ॐ ह्रीं केवलदर्शनावरणकर्मनिर्मूलनकराय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।५८।।

ॐ ह्रीं दानान्तरायकर्मविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।५९।।

ॐ ह्रीं लाभान्तरायकर्मविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।६०।।

ॐ ह्रीं भोगान्तरायकर्मविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।।६१।।

ॐ ह्रीं उपभोगान्तरायकर्मविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।६२।।

ॐ ह्रीं वीर्यान्तरायकर्मविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।।६३।।

ॐ ह्रीं औदारिकशरीरनामकर्मविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।६४।।

ॐ ह्रीं वैक्रियिकशरीरनामकर्मोच्छेदकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६५।।

ॐ ह्रीं आहारकशरीरनामकर्मोच्छेदकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६६।।

ॐ ह्रीं तैजसशरीरनामकर्मोच्छेदकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६७।।

ॐ ह्रीं कार्मणशरीरनामकर्मोच्छेदकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६८।।

ॐ ह्रीं औदारिकबंधननामकर्मविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६९।।

ॐ ह्रीं वैक्रियिकबंधननामकर्मप्रणाशनाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७०।।

ॐ ह्रीं आहारकबंधननामकर्मविघाताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७१।।

ॐ ह्रीं तैजसबंधननामकर्मविघाताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७२।।

ॐ ह्रीं कार्मणबंधननामकर्मविघाताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७३।।

ॐ ह्रीं औदारिकसंघातनामकर्मविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७४।।

ॐ ह्रीं वैक्रियिकसंघातनामकर्मविघाताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७५।।

ॐ ह्रीं आहारकसंघातनामकर्मविघाताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७६।।

ॐ ह्रीं तैजससंघातनामकर्मविघाताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।७७।।

ॐ ह्रीं कार्मणसंघातनामकर्मविघाताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७८।।

ॐ ह्रीं वज्रर्षभनाराचसंहनननामकर्मविनाशनाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७९।।

ॐ ह्रीं वज्रनाराचसंहननामकर्मविनाशनाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८०।।

ॐ ह्रीं नाराचसंहननामकर्मविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८१।।

ॐ ह्रीं अर्द्धनाराचसंहननामकर्मविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८२।।

ॐ ह्रीं कीलकसंहननामकर्मविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८३।।

ॐ ह्रीं असंप्राप्तसृपाटिकासंहननामकर्मविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८४।।

ॐ ह्रीं औदारिकशरीरांगगोपांगनामकर्मविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।८५।।

ॐ ह्रीं वैक्रियिकशरीरांगोपांगनामकर्मनिवारणाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८६।।

ॐ ह्रीं आहारकशरीरांगोपांगनामकर्मनिवारणाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८७।।

ॐ ह्रीं समचतुरस्रसंस्थाननामकर्मविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८८।।

ॐ ह्रीं न्यग्रोधपरिमंडलसंस्थाननामकर्मनिवारणाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८९।।

ॐ ह्रीं कुब्जकसंस्थाननामकर्मप्रहाणाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९०।।

ॐ ह्रीं स्वातिसंस्थाननामकर्मप्रहाणाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९१।।

ॐ ह्रीं वामनसंस्थाननामकर्मविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९२।।

ॐ ह्रीं हुण्डकसंस्थाननामकर्मविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९३।।

ॐ ह्रीं कृष्णवर्णनामकर्मविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९४।।

ॐ ह्रीं नीलवर्णनामकर्मविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९५।।

ॐ ह्रीं रक्तवर्णनामकर्मविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९६।।

ॐ ह्रीं हरितवर्णनामकर्मविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९७।।

ॐ ह्रीं शुक्लवर्णनामकर्मविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९८।।

ॐ ह्रीं सुगंधनामकर्मविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९९।।

ॐ ह्रीं दुर्गन्धनामकर्मविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१००।।

ॐ ह्रीं तिक्तरसनामकर्मनिर्मूलनाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०१।।

ॐ ह्रीं कटुरसनामकर्मनिर्मूलनकराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०२।।

ॐ ह्रीं कषायरसनामकर्मनिर्मूलनकराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०३।।

ॐ ह्रीं अम्लरसनामकर्मनिर्मूलनकराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०४।।

ॐ ह्रीं मधुररसनामकर्मनिर्मूलनकराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०५।।

ॐ ह्रीं कर्कशस्पर्शनामकर्मनिर्मूलनकराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०६।।

ॐ ह्रीं मृदुस्पर्शनामकर्मनिर्मूलनकराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०७।।

ॐ ह्रीं गुरूस्पर्शनामकर्मनिर्मूलनकराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०८।।

ॐ ह्रीं लघुस्पर्शनामककर्मनिर्मूलनकराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०९।।

ॐ ह्रीं शीतस्पर्शनामकर्मनिर्मूलनकराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।११०।।

ॐ ह्रीं उष्णस्पर्शनामकर्मनिर्मूलनकराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१११।

ॐ ह्रीं स्निग्धस्पर्शनामकर्मनिर्मूलनकराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।११२।।

ॐ ह्रीं रूक्षस्पर्शनामकर्मचूर्णीकराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं..।।११३।।

ॐ ह्रीं स्थिरनामकर्मशातनकराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।११४।।

ॐ ह्रीं अस्थिरनामकर्मशातनकराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।११५।।

ॐ ह्रीं शुभनामकर्मविघातकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।११६।।

ॐ ह्रीं अशुभनामकर्मविघाताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।११७।।

ॐ ह्रीं सुस्वरनामकर्मविघाताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।११८।।

ॐ ह्रीं दुःस्वरनामकर्मविघाताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।११९।।

ॐ ह्रीं देवगतिनामकर्मोच्छेदकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२०।।

ॐ ह्रीं देवगत्यानुपूर्विनामकर्मोच्छेदकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२१।।

ॐ ह्रीं प्रशस्तविहायोगतिनामकर्मविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२२।।

ॐ ह्रीं अप्रशस्तविहायोगतिनामकर्मविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२३।।

ॐ ह्रीं दुर्भगनामकर्मविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२४।।

ॐ ह्रीं निर्माणनामकर्मविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२५।।

ॐ ह्रीं अयशस्कीर्तिनामकर्मविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२६।।

ॐ ह्रीं अनादेयनामकर्मविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२७।।

ॐ ह्रीं प्रत्येकनामकर्मविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२८।।

ॐ ह्रीं अपर्याप्तनामकर्मविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२९।।

ॐ ह्रीं अगुरूलघुनामकर्मविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३०।।

ॐ ह्रीं उपघातनामकर्मविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।१३१।।

ॐ ह्रीं परघातनामकर्मविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।१३२।।

ॐ ह्रीं उच्छ्वासनामकर्मविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३३।।

ॐ ह्रीं असातावेदनीयकर्मविनाशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३४।।

ॐ ह्रीं नीचगोत्रकर्मविनाशनाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३५।।

ॐ ह्रीं सातावेदनीयकर्मविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३६।।

ॐ ह्रीं मनुष्यगतिनामकर्मविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३७।।

ॐ ह्रीं पंचेन्द्रियजातिनामकर्मोच्छेदकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३८।।

ॐ ह्रीं सुभगनामकर्मोच्छेदकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३९।।

ॐ ह्रीं त्रसनामकर्मविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४०।।

ॐ ह्रीं बादरनामकर्मविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४१।।

ॐ ह्रीं पर्याप्तनामकर्मविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।१४२।।

ॐ ह्रीं आदेयनामकर्मविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४३।।

ॐ ह्रीं यशस्कीर्तिनामकर्मविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४४।।

ॐ ह्रीं मनुष्यगत्यानुपूर्विनामकर्मविध्वंसकायश्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४५।।

ॐ ह्रीं मनुष्यायुः कर्मविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।१४६।।

ॐ ह्रीं उच्चगोत्रकर्मविध्वंसकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरप्रकृतिनामकर्मफलप्राप्ताय तत्कर्मविरहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४८।।

ॐ ह्रीं असंख्यातलोकप्रमाणभेदसहितसर्वकर्मविनिर्मुक्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४९।।

ॐ ह्रीं अनन्तानन्तभेदभिन्नसर्वकर्मनिर्मूलनकराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१५०।।

पूर्णार्घ्य - शंभुछंद -

जो केवलज्ञान प्राप्त करके, त्रिभुवन को युगपत् जान रहे।
उत्पादनाश अरु ध्रौव्य सहित, प्रभुवीर परम आनंद लहें।।
भव कारण सब विध्वंस किया, हम उनकी पूजा करते हैं।
निज ज्ञानज्योति प्रकटित होवे, इस हेतू अर्चा करते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं अनंतानुबंधिक्रोधकषायविरहितादिअनंतानंतकर्मविरहितपंचाशदधिकशतमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं....

शांतये शांतिधारा। दिव्यपुष्पांजलिः।

ॐ ह्रीं सद्दर्शनसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१५१।।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।१५२।।

ॐ ह्रीं सच्चारित्रसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१५३।।

ॐ ह्रीं सत्तपःसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१५४।।

ॐ ह्रीं वीर्यचतुष्कसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१५५।।

ॐ ह्रीं अष्टमातृकाप्रवेशसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१५६।।

ॐ ह्रीं अष्टशुद्धिसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१५७।।

ॐ ह्रीं परीषहजयसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१५८।।

ॐ ह्रीं त्रियोगासंयमच्युतिशीलसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ...।।१५९।।

ॐ ह्रीं त्रिकरणासंयमारतिसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६०।।

ॐ ह्रीं दशासंयमोपरमसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६१।।

ॐ ह्रीं अक्षनिर्जयसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१६२।।

ॐ ह्रीं संज्ञानिग्रहसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६३।।

ॐ ह्रीं दशधर्मधृतिसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं..।।१६४।।

ॐ ह्रीं अष्टादशशीलसहस्रसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६५।।

ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षगुणसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६६।।

ॐ ह्रीं विशिष्टधर्मध्यानसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६७।।

ॐ ह्रीं अतिशय संस्कार प्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं..।।१६८।।

ॐ ह्रीं अप्रमत्तसंयमसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं..।।१६९।।

ॐ ह्रीं दृढश्रुततेजो ऽकंप्रकरणश्रेण्यारोहणसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१७०।।

ॐ ह्रीं अनंतगुणशुद्धिसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७१।।

ॐ ह्रीं अथाप्रवृत्तकरणसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१७२।।

ॐ ह्रीं पृथकत्ववितर्कवीचारध्यानसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७३।।

ॐ ह्रीं अपूर्वकरणसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।१७४।।

ॐ ह्रीं अनिवृत्तिकरणसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७५।।

ॐ ह्रीं बादरकषायकृष्टिकरणसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७६।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मकषायकृष्टिकरणसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७७।।

ॐ ह्रीं बादरकषायनिर्लेपनसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७८।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मकषायकृष्टिनिर्लेपनसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१७९।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मकषायक्षरणसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१८०।।

ॐ ह्रीं प्रक्षीणमोहत्वसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८१।।

ॐ ह्रीं यथाख्यातचारित्रसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८२।।

ॐ ह्रीं एकत्ववितर्कावीचारध्यानसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१८३।।

ॐ ह्रीं घातिघातनसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१८४।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानदर्शनोद्गमसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१८५।।

ॐ ह्रीं तीर्थप्रवर्तनसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१८६।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मक्रियाध्यानसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१८७।।

ॐ ह्रीं शैलेशीकरणसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१८८।।

ॐ ह्रीं परमसंवरवर्तिसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१८९।।

ॐ ह्रीं योगकृष्टिकरणसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१९०।।

ॐ ह्रीं योगकृष्टिनिर्लेपनसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१९१।।

ॐ ह्रीं समुच्छिन्नक्रियसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१९२।।

ॐ ह्रीं परमनिर्जराश्रयणसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१९३।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मक्षयसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१९४।।

ॐ ह्रीं अनादिभवपर्ययविनाशसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१९५।।

ॐ ह्रीं अनन्तसिद्धत्वादिगतिसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१९६।।

ॐ ह्रीं अदेहसहजज्ञानोपयोगैश्वर्यसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१९७।।

ॐ ह्रीं अदेहसहजदर्शनोपयोगैश्वरसंस्कारप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१९८।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानरूपसाकारोपयोगसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१९९।।

ॐ ह्रीं केवलदर्शनस्वरूपनिराकारोपयोगसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२००।।

पूर्णार्घ्य-नरेन्द्रछंद -

केवलज्ञान सकल विमल है, युगपत् तिंहुजग देखे।
कर्मावरण रहित वीर प्रभु को, जजत निजातम देखें।।
निजशुद्धातम अनुभव हेतू महावीर प्रभू को ध्याऊं।
परमानन्द सुखामृत पीकर, भव भव व्याधि नशाऊं।।१।।

ॐ ह्रीं सद्दर्शनसंस्कारादि केवलर्शनोपयोगपर्यंत पंचाशद्मंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं....

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।।

ॐ ह्रीं मिथ्यात्वगुणस्थाननिवारणबुद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२०१।।

ॐ ह्रीं सासादनगुणस्थाननिवारणबुद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२०२।।

ॐ ह्रीं सम्यङ्मिथ्यात्वगुणस्थाननिवारणबुद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२०३।।

ॐ ह्रीं अविरतगुणस्थाननिवारणबुद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२०४।।

ॐ ह्रीं देशविरतगुणस्थानप्रापणबुद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२०५।।

ॐ ह्रीं प्रमत्तगुणस्थानप्रापणबुद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२०६।।

ॐ ह्रीं अप्रमत्तविरतगुणस्थानप्रापणबुद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय

अर्घ्यं.....।।२०७।।

ॐ ह्रीं अपूर्वकरणगुणस्थानप्राप्तकरणबुद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२०८।।

ॐ ह्रीं अनिवृत्तिकरणगुणस्थानविशुद्धिप्राप्तकराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२०९।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मसांपरायगुणस्थानविशुद्धिप्रापणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२१०।।

ॐ ह्रीं उपशांतकषायगुणस्थानविशुद्धिप्राप्तकराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२११।।

ॐ ह्रीं क्षीणकषायगुणस्थानप्राप्तकराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२१२।।

ॐ ह्रीं सयोगिकेवलिगुणस्थानप्रापणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२१३।।

ॐ ह्रीं अयोगिकेवलिगुणस्थानप्रापणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२१४।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मैकेन्द्रियापर्याप्तजीवसमासमध्यगमननिवारणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२१५।।

ॐ ह्रीं बादरैकेन्द्रियापर्याप्तजीवसमासमध्यगमननिवारणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२१६।।

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रियापर्याप्तजीवसमासमध्यगमननिवारणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२१७।।

ॐ ह्रीं त्रीन्द्रियापर्याप्तजीवसमासमध्यगमननिवारणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२१८।।

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रियापर्याप्तजीवसमासमध्यगमननिवारणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२१९।।

ॐ ह्रीं असंज्ञिपंचेंन्द्रियापर्याप्तजीवसमासमध्यगमननिवारणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२२०।।

ॐ ह्रीं संज्ञिपंचेंन्द्रियापर्याप्तजीवसमासमध्यगमननिवारणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२२१।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मैकेन्द्रियपर्याप्तजीवसमासमध्यगमननिवा़रणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२२२।।

ॐ ह्रीं बादरैकेन्द्रियपर्याप्तजीवसमासमध्यगमननिवारणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२२३।।

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रियपर्याप्तजीवसमासमध्यगमननिवारणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२२४।।

ॐ ह्रीं त्रीन्द्रियपर्याप्तजीवसमासमध्यगमननिवारणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२२५।।

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रियपर्याप्तजीवसमासमध्यगमननिवारणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२२६।।

ॐ ह्रीं असंज्ञिपंचेंन्द्रियजीवसमासमध्यगमननिवारणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२२७।।

ॐ ह्रीं संज्ञिपंचेन्द्रियजीवसमासप्राप्तिसफलकरणबुद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२२८।।

ॐ ह्रीं आहारपर्याप्तिविरहितपदप्रदानसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२२९।।

ॐ ह्रीं शरीरपर्याप्तिविरहितपदप्रदानसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२३०।।

ॐ ह्रीं इन्द्रियपर्याप्तिविरहितपदप्रदानसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२३१।।

ॐ ह्रीं श्वासोच्छ्वासपर्याप्तिविरहितपदप्रदानसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२३२।।

ॐ ह्रीं भाषापर्याप्तिविरहितपदप्रदानसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२३३।।

ॐ ह्रीं मनःपर्याप्तिविरहितपदप्रदानसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२३४।।

ॐ ह्रीं स्पर्शनेन्द्रियप्राणविरहितचैतन्यप्राणसमन्वितपदप्रापकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२३५।।

ॐ ह्रीं रसनेन्द्रियप्राणविरहितचिच्चैतन्यप्राणसमन्वितपदप्रापकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२३६।।

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रियप्राणविरहित-चिच्चैतन्यप्राणसमन्वितपदप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२३७।।

ॐ ह्रीं चक्षुरिन्द्रियप्राणविरहितचिच्चैतन्यप्राणसमन्वितपदप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२३८।।

ॐ ह्रीं श्रोत्रेन्द्रियप्राणविरहित-चिच्चैतन्यप्राणसमन्वितपदप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२३९।।

ॐ ह्रीं मनोबलप्राणविरहित-चिच्चैतन्यप्राणसमन्वितपदप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२४०।।

ॐ ह्रीं वचनबलप्राणविरहितचिच्चैतन्यप्राणसमन्वितपदप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२४१।।

ॐ ह्रीं कायबलप्राणविरहित-चिच्चैतन्यप्राणसमन्वितपदप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२४२।।

ॐ ह्रीं आयुःप्राणविरहित-चिच्चैतन्यप्राणसमन्वितपदप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२४३।।

ॐ ह्रीं श्वासोच्छ्वासप्राणविरहित-चिच्चैतन्यप्राणसमन्वितपदप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२४४।।

ॐ ह्रीं आहारसंज्ञानिवारणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं..।।२४५।।

ॐ ह्रीं भयसंज्ञानिवारणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२४६।।

ॐ ह्रीं मैथुनसंज्ञानिवारणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।२४७।।

ॐ ह्रीं परिग्रहसंज्ञानिवारणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं..।।२४८।।

ॐ ह्रीं नरकगतिगमननिवारणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२४९।।

ॐ ह्रीं तिर्यग्गतिगमननिवारणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय

अर्घ्यं...।।२५०।।

ॐ ह्रीं मनुष्यगतिसफलकरणबुद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५१।।

ॐ ह्रीं देवगतिसफलकरणबुद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५२।।

ॐ ह्रीं स्पर्शनेन्द्रियनिवारणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं..।।२५३।।

ॐ ह्रीं रसनेन्द्रियनिवारणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।२५४।।

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रियनिवारणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।२५५।।

ॐ ह्रीं चक्षुरिन्द्रियनिवारणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं..।।२५६।।

ॐ ह्रीं श्रोत्रेन्द्रियनिवारणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं..।।२५७।।

ॐ ह्रीं पृथ्वीकायिकगमननिवारणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५८।।

ॐ ह्रीं जलकायिकगमननिवारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं..।।२५९।।

ॐ ह्रीं अग्निकायिकगमननिवारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६०।।

ॐ ह्रीं वायुकायिकगमननिवारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं..।।२६१।।

ॐ ह्रीं वनस्पितिकायिकगमननिवारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६२।।

ॐ ह्रीं त्रसकायिकगमननिवारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२६३।।

ॐ ह्रीं सत्यमनोयोगप्रापणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं..।।२६४।।

ॐ ह्रीं असत्यमनोयोगनिवारणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६५।।

ॐ ह्रीं उभयमनोयोगनिवारणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६६।।

ॐ ह्रीं अनुभयमनोयोगप्रापणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६७।।

ॐ ह्रीं सत्यवचनयोगप्रापकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२६८।।

ॐ ह्रीं असत्यवचनयोगनिवारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२६९।।

ॐ ह्रीं उभयवचनयोगनिवारणसमर्थाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२७०।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिस्वरूपानुभयवचनयोगप्रापकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२७१।।

ॐ ह्रीं औदारिकयोगविरहितपदप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२७२।।

ॐ ह्रीं औदारिकमिश्रयोगविरहितपदप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२७३।।

ॐ ह्रीं वैक्रियिकयोगविरहितपदप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२७४।।

ॐ ह्रीं वैक्रियिकमिश्रयोगविरहितपदप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२७५।।

ॐ ह्रीं आहारकयोगविरहितसिद्धपदप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२७६।।

ॐ ह्रीं आहारकमिश्रयोगविरहितशुद्धपदप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२७७।।

ॐ ह्रीं कार्मणयोगविरहितशुद्धबुद्धपदप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२७८।।

ॐ ह्रीं स्त्रीवेदविरहितचिच्चैतन्यपदप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२७९।।

ॐ ह्रीं पुरुषवेदविरहितचिच्चैतन्यपदप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२८०।।

ॐ ह्रीं नपुंसकवेदविरहितचिच्चैतन्यपदप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं. ..।।२८१।।

ॐ ह्रीं अनंतानुबंधिक्रोधकषायशमनबुद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२८२।।

ॐ ह्रीं अनंतानुबंधिमानकषायशमनबुद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२८३।।

ॐ ह्रीं अनंतानुबंधिमायाकषायशमनबुद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२८४।।

ॐ ह्रीं अनंतानुबंधिलोभकषायशमनबुद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२८५।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानक्रोधकषायोपशांतिकारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२८६।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानमानकषायोपशांतिकारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२८७।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानमायाकषायोपशांतिकारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२८८।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानलोभकषायोपशांतिकराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२८९।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानक्रोधकषायविनाशनोपायदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२९०।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानमानकषायविनाशनोपायदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२९१।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानमायाकषायविनाशनोपायदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२९२।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानलोभकषायविनाशनोपायदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२९३।।

ॐ ह्रीं संज्वलनक्रोधकषायनाशनबुद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२९४।।

ॐ ह्रीं संज्वलनमानकषायनाशनबुद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२९५।।

ॐ ह्रीं संज्वलनमायाकषायनाशनबुद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२९६।।

ॐ ह्रीं संज्वलनलोभकषायनाशनबुद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२९७।।

ॐ ह्रीं हास्यनोकषायनाशनयुक्तिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२९८।।

ॐ ह्रीं रतिनोकषायनाशनयुक्तिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२९९।।

ॐ ह्रीं अरतिनोकषायनाशनयुक्तिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३००।।

ॐ ह्रीं शोकनोकषायनाशनयुक्तिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३०१।।

ॐ ह्रीं भयनोकषायनाशनयुक्तिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३०२।।

ॐ ह्रीं जुगुप्सानोकषायनाशनयुक्तिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३०३।।

ॐ ह्रीं नानाभेदसमन्विताय मतिज्ञानप्रदाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।३०४।।

ॐ ह्रीं नानाभेदभिन्नश्रुतज्ञानप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं..।।३०५।।

ॐ ह्रीं अनेकभेदभिन्नावधिज्ञानप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३०६।।

ॐ ह्रीं विविधभेदयुक्तमनःपर्ययज्ञानप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३०७।।

ॐ ह्रीं असहायातीन्द्रियकेवलज्ञानप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३०८।।

ॐ ह्रीं कुमतिज्ञानविनाशनयुक्तिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३०९।।

ॐ ह्रीं कुश्रुतज्ञानविनाशनयुक्तिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३१०।।

ॐ ह्रीं विभंगावधिज्ञानविनाशनयुक्तिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३११।।

ॐ ह्रीं सामायिकसंयमप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३१२।।

ॐ ह्रीं छेदोपस्थापनासंयमप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३१३।।

ॐ ह्रीं परिहारविशुद्धिसंयमप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३१४।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मसांपरायशुद्धिसंयमप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३१५।।

ॐ ह्रीं यथाख्यातशुद्धिसंयमप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३१६।।

ॐ ह्रीं संयमासंयमपूर्णकराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३१७।।

ॐ ह्रीं असंयमनिराकरणयुक्तिप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३१८।।

ॐ ह्रीं चक्षुर्दर्शनसार्थककराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३१९।।

ॐ ह्रीं अचक्षुर्दर्शनसार्थककराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३२०।।

ॐ ह्रीं अवधिदर्शनसार्थककराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३२१।।

ॐ ह्रीं केवलदर्शनप्रापणयुक्तिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३२२।।

ॐ ह्रीं कृष्णलेश्याविध्वंसनबुद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३२३।।

ॐ ह्रीं नीललेश्याविध्वंसनबुद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३२४।।

ॐ ह्रीं कापोतलेश्याविध्वंसनबुद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३२५।।

ॐ ह्रीं पीतलेश्यासार्थककरणयुक्तिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३२६।।

ॐ ह्रीं पद्मलेश्यासार्थककरणयुक्तिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३२७।।

ॐ ह्रीं शुक्ललेश्यासार्थककरणयुक्तिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३२८।।

ॐ ह्रीं भव्यमार्गणाविरहितपदप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३२९।।

ॐ ह्रीं अभव्यमार्गणाविरहितपदप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३०।।

ॐ ह्रीं औपशमिकसम्यक्त्वप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३१।।

ॐ ह्रीं क्षायिकसम्यक्त्वप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३२।।

ॐ ह्रीं क्षायोपशमिकसम्यक्त्वप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।३३३।।

ॐ ह्रीं मिथ्यात्वशत्रुविनाशनयुक्तिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३४।।

ॐ ह्रीं सासादनसम्यक्त्वविनाशनयुक्तिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३५।।

ॐ ह्रीं मिश्रसम्यक्त्वविनाशनयुक्तिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३६।।

ॐ ह्रीं संज्ञिमार्गणासदुपयोगकरणबुद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३७।।

ॐ ह्रीं असंज्ञिमार्गणाविनाशनयुक्तिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३८।।

ॐ ह्रीं आहारकमार्गणाविरहितपदप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३९।।

ॐ ह्रीं अनाहारकमार्गणाविरहितपदप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४०।।

पूर्णार्घ्य- स्रग्विणी छंद-

कर्म मिथ्यात्व से आत्म श्रद्धा न हो, नाश के आप ही शुद्ध आत्मा हुये।
नाथ! सम्यक्त्व दीजे मुझे आज ही, मैं जजूं भक्ति से एक ही स्वार्थ है।।
मोहनी कर्म को नाश के सिद्धि हो, दोष से शून्य हो वीतरागी तुम्हीं।
नाथ! मेरे सभी दोष को नाशिये, मैं जजूं भक्ति से एक ही स्वार्थ है।।

ॐ ह्रीं मिथ्यात्वनिवारणबुद्धि-आदि-अनाहारकविरहितगुणपर्यंतचत्वारिंशदधिकशतमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

ॐ ह्रीं आज्ञासम्यक्त्वप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४१।।
ॐ ह्रीं मार्गसम्यक्त्वप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४२।।
ॐ ह्रीं उपदेशसम्यक्त्वप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४३।।
ॐ ह्रीं सूत्रसम्यक्त्वप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४४।।
ॐ ह्रीं बीजसम्यक्त्वप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४५।।
ॐ ह्रीं संक्षेपसम्यक्त्वप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४६।।
ॐ ह्रीं विस्तारसम्यक्त्वप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।३४७।।
ॐ ह्रीं अर्थसम्यक्त्वप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४८।।
ॐ ह्रीं अवगाढसम्यक्त्वप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं..।।३४९।।
ॐ ह्रीं परमावगाढसम्यक्त्वप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५०।।
ॐ ह्रीं अनन्तप्राणिगणाभयदानदायकाहिंसामहाव्रतविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५१।।
ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिकारणस्वरूपसत्यमहाव्रतविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५२।।
ॐ ह्रीं अनन्तचतुष्टयकारणस्वरूपाचौर्यमहाव्रतविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५३।।
ॐ ह्रीं सिद्धिकन्यामुखावलोकनकारणब्रह्मचर्यमहाव्रतविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५४।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसाम्राज्यकारणस्वरूपापरिग्रहमहाव्रतविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५५।।

ॐ ह्रीं सावधानचर्याविधायक-ईर्यासमितिप्रतिपादकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५६।।

ॐ ह्रीं सर्वजनाल्हादनकारिभाषासमितिप्रतिपादकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५७।।

ॐ ह्रीं उभयपिंडशुद्धिसमन्वितैषणासमितिप्रतिपादकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५८।।

ॐ ह्रीं जीवरक्षाकरणसमर्थादाननिक्षेपणसमितिप्रतिपादकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५९।।

ॐ ह्रीं शरीरशुद्धिकारणोत्सर्गसमितिप्रतिपादकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३६०।।

ॐ ह्रीं संसारसमुद्रतारणसमर्थस्पर्शनेंद्रियनिरोधव्रतप्रतिपादकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३६१।।

ॐ ह्रीं अतीन्द्रियपदप्रदानसमर्थरसनेन्द्रियनिरोधव्रतप्रतिपादकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३६२।।

ॐ ह्रीं स्वात्मसुगंधिप्रदघ्राणेन्द्रियनिरोधव्रतप्रतिपादकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३६३।।

ॐ ह्रीं शुद्धबुद्धनिजात्मावलोकनकारणचक्षुरिन्द्रियनिरोधव्रतप्रतिपादकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३६४।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजनतोपदेशकारणश्रोत्रेन्द्रियनिरोधव्रतप्रतिपादकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३६५।।

ॐ ह्रीं सर्वजनमैत्रीभावस्वरूपसमतावश्यकक्रियोपदेशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३६६।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्ययशःप्रसरणकारणस्तवावश्यकक्रियोपदेशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३६७।।

ॐ ह्रीं जगद्वंद्यकारणभूतवंदनावश्यकक्रियोपदेशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय

अर्घ्यं.....।।३६८।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषनिराकरणहेतुभूतप्रतिक्रमणावश्यकक्रियोपदेशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३६९।।

ॐ ह्रीं सर्वसावद्ययोगत्यजनकारणभूतप्रत्याख्यानावश्यकक्रियोपदेशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३७०।।

ॐ ह्रीं परिपूर्णदेहममत्वत्यजनस्वरूपकायोत्सर्गावश्यकक्रियोपदेशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३७१।।

ॐ ह्रीं दशविधमुण्डनकारणभूतकेशलोचमूलगुणप्रतिपादनपराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३७२।।

ॐ ह्रीं जन्मजातरूपनिर्विकारमुद्राधारकाचेलक्यमूलगुणप्रतिपादनपराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३७३।।

ॐ ह्रीं परमशुचिकारणभूतास्नानव्रतोपदेशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३७४।।

ॐ ह्रीं परममोक्षधामविश्रामकारणक्षितिशयनव्रतोपदेशकाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३७५।।

ॐ ह्रीं परमसौंदर्यकारणस्वरूपादन्तधावनव्रतोपदेशकाय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३७६।।

ॐ ह्रीं स्वात्मामृतास्वादनकारणस्थितिभोजनव्रतोपदेशनपराय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३७७।।

ॐ ह्रीं आहारविहारनीहारविरहितपरमानंदैकपदकारणैक- भक्तव्रतो-पदेशनपराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३७८।।

ॐ ह्रीं शत्रुभावनिवारणसमर्थोत्तमक्षमाधर्मपरिणताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३७९।।

ॐ ह्रीं सर्वाहंकारविनाशनसमर्थोत्तममार्दवधर्मोपदेशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३८०।।

ॐ ह्रीं तिर्यग्योनिगमनकरणमायादोषविरहितोत्तमार्जवधर्मोपदेशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३८१।।

ॐ ह्रीं परमपवित्रतानिमित्तोत्तमशौचधर्मोपदेशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय

अर्घ्यं.....।।३८२।।

ॐ ह्रीं सर्वजनवशीकरणभूतोत्तमसत्यधर्मोपदेशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३८३।।

ॐ ह्रीं सर्वासंयमनिवारणसमर्थोत्तमसंयमधर्मोपदेशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३८४।।

ॐ ह्रीं अनन्तसंसारपतननिवारणसमर्थोत्तमतपोधर्मोपदेशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३८५।।

ॐ ह्रीं स्वात्मसौख्यप्रदायकोत्तमत्यागधर्मोपदेशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३८६।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यपदप्रदायकोत्तमाकिंचन्यधर्मोपदेशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३८७।।

ॐ ह्रीं परमनिराकुलसुखकारणभूतोत्तमब्रह्मचर्यधर्मोपदेशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३८८।।

ॐ ह्रीं स्वात्मसुधास्वादनकारणानशनतपःप्रतिपादकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३८९।।

ॐ ह्रीं स्वात्मपुष्टिकरणावमौदर्यतपःप्रतिपादकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३९०।।

ॐ ह्रीं नानाविधसंकल्परूपात्मतुष्टिकारकवृत्तपरिसंख्यानतपःप्रतिपादकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३९१।।

ॐ ह्रीं नानाविधर्द्धिप्रदायकरसपरित्यागतपःप्रतिपादकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३९२।।

ॐ ह्रीं स्वात्मरमणकारणविविक्तशयनासनतपःप्रतिपादकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३९३।।

ॐ ह्रीं आत्मपुष्टिकरणकायक्लेशतपः प्रतिपादकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३९४।।

ॐ ह्रीं असंख्यातलोकप्रमाणापराधशुद्धिकरणप्रायश्चित्ततपःप्ररूपकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३९५।।

ॐ ह्रीं मुक्तिमहलद्वारस्वरूपनानाविधविनयतपःप्ररूपकाय

श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३९६।।

ॐ ह्रीं नानाविधतपश्चरणप्राणस्वरूपवैयावृत्यतपःप्ररूपकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३९७।।

ॐ ह्रीं स्वात्माध्ययनकारणभूतसर्वश्रेष्ठस्वाध्यायतपःप्ररूपकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३९८।।

ॐ ह्रीं कर्मक्षपणकारणभूतव्युत्सर्गतपःप्ररूपकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३९९।।

ॐ ह्रीं सिद्धशिलोपरिप्रापणकरणसमर्थनानाविधध्यानतपःप्ररूपकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४००।।

पूर्णार्घ्य-शंभुछंद-

जो नाना मंत्र समन्वित तनु, सन्मति प्रभु अतिशय बुद्धि धरें।
आनन्त्य ज्ञानदर्शन सुखमय, बनकर शिवधाम निवास करें।।
ऐसे महावीर वीर अतिवीर, प्रभु का वंदन करते हैं।
उनके गुणमणि की प्राप्ति हेतु, हम अर्घ्य समर्पण करते हैं।।

ॐ ह्रीं आज्ञासम्यक्त्वगुणादि ध्यानतपोगुणपर्यंतषष्टिमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य- ॐ ह्रीं अर्हं श्री महावीरजिनेंद्राय विश्वशांतिकराय सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः

(सुगंधित पुष्प, लवंग या पीले चावल मिश्रित रत्नों से १०८ मंत्र जाप्य करें तथा पूजा के अनंतर मंत्रित रत्नों को श्रद्धालुओं में वितरित करें।)

जयमाला

तर्ज - चंदन सा बदन.....

त्रिशला नंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
कर जोड़ खड़े, तव चरण पड़े हम शीश झुकाते चरणों में।।
प्रभु कुंडपुरी में जन्म लिया, सिद्धार्थ पिता को धन्य किया।
यौवन में ही वैराग्य लिया, शिवललना हेतु प्रयत्न किया।।

लौकांतिक सुर संस्तव करके पुष्पांजलि की तव चरणों में
त्रिशला नंदन.....।।१।।

प्रभु नग्न दिगंबर मुनी बने, ध्यानामृत पी आनंद लिया।
कैवल्य सूर्य उगते धनपति-ने समवसरण भी अधर किया।।
तब इन्द्रभूति द्विज मुनि बनकर गणधर हो नमते चरणों में।
त्रिशला नंदन.....।।२।।

गौतम आदि ग्यारह गणधर, चौदह हजार मुनिराज वहां।
चंदनबाला गणिनी प्रमुखा, छत्तीस हजार आर्यिका वहां।।
इक लाख सुश्रावक तीन लाख श्राविका नमें तव चरणों में।
त्रिशला नंदन.....।।३।।

मातंगयक्ष सिद्धायिनि यक्षी शासन देव व देवी हैं।
आयू बाहत्तर वर्ष कही प्रभु, सात हाथ स्वर्णिम तनु है।।
द्वादशगण के सब भव्य वहां, शत शत वंदे तव चरणों में।
त्रिशला नंदन.....।।४।।

प्रभु समवसरण में कमलासन पर, चतुरंगुल से अधर रहें।
चउदिश में प्रभु का मुख दीखे, अतएव चतुर्मुख ब्रह्म कहें।।
सौ इंद्र मिले पूजा करते, नित नमन करें तव चरणों में।
त्रिशला नंदन.....।।५।।

प्रभु के विहार में चरण कमल तल, स्वर्ण कमल खिलते जाते।
बहु कोसों तक दुर्भिक्ष टले, षट् ऋतुज फूल फल खिल जाते।।
छयालिसगुण अतिशययुत प्रभु के, सब प्रणमन करते चरणों में।
त्रिशला नंदन.....।।६।।

तरुवर अशोक था शोक हरे, सिंहासन रत्न खचित सुंदर।
छत्रत्रय मुक्ताफल लंबित, भामंडल भवदर्शी मनहर।।
निज सात भवों को देख भव्य, प्रणमन करते तव चरणों में।
त्रिशला नंदन.....।।७।।

सुरदुंदुभि बाजे बाज रहे, ढुरते हैं चौंसठ श्वेत चंवर।

सुर पुष्पवृष्टि नभ से करते, दिव्यध्वनि फैले योजन भर।।
राजा श्रेणिक आदि नरपति, अतिभक्ति लीन तव चरणों में।
त्रिशला नंदन.....।।८।।

मातंगयक्ष सिद्धायिनियक्षी, शासन देव व देवी हैं।
प्रभु समवसरण में पास रहें, कहते यतिवृषभ महापति हैं।।
जिनशासनरक्षक सम्यक्त्वी, ये नमन करें तव चरणों में।
त्रिशला नंदन.....।।९।।

हे महावीर ! तुम बाह्य और अभ्यंतर लक्ष्मी के पति हो।
दो मुझे अनंतचतुष्टय श्री जो 'ज्ञानमती' सिद्धिप्रिय हो।।
इसलिये अनंतों बार नमें, हम शीश झुकाते चरणों में।
त्रिशला नंदन.....।।१०।।

सोरठा - वर्द्धमान पद पद्म, जो पूजें नित भक्ति से।
मिले निजातम सद्म, फेर न हो जग में भ्रमण।।११।।

ॐ ह्रीं चतुःशतमंत्रसमन्विताय श्री महावीरजिनेंद्राय जयमाला अर्घ्यं.....।।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीताछंद- **जो विश्वशान्ती महावीर, विधान भक्ती से करें।**
सब आपदाएं दूर कर, सर्वत्र सुख शांती भरें।।
तीर्थेश प्रभु का मेरु पर, जन्माभिषेकोत्सव करें।
फिर स्वयं तीर्थंकर बनें, निज 'ज्ञानमती' संपति भें।।१।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं. ८

अथ स्थापना

तर्ज- करो कल्याण आतम का.....

नमन श्री वीर जिनवर को जिन्होंने आत्मनिधि पायी।
तजा संसार का वैभव मुक्ति कन्या हृदय भायी।।
करूं आह्वान हे भगवन् ! पधारो मुझ मनोम्बुज में।
करूं मैं अर्चना रूचि से, अहो उत्तम घड़ी आयी।।१।।

नमन श्री वीर जिनवर को.....

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

अथ अष्टक

तर्ज- हे मां तेरी सूरत से अगल.....

हे वर्द्धमान ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आये हैं।
भगवान-भगवान पाँच सौ मंत्रों से, हम पूजा करने आये हैं।
भव भव में नीर पिया, नहिं प्यास बुझा पाये।
तुम पद धारा देने, पद्माकर जल लाये।।
निज का अघमल धोने के लिये, जलधारा करने आये हैं।

भगवान.....

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं।।१।।
हे वर्धमान ! तुम भक्ती से, निजशक्ति बढ़ाने आये हैं।
भगवान-भगवान पाँच सौ मंत्रों से, हम पूजा करने आये हैं।।
चंदन चंदा किरणें, नहिं शीतल कर सकते ।
तुम पद अर्चा करने, केशर चंदन घिसके।।
तनु ताप शांति हेतू चंदन, चरणों में चढ़ाने आये हैं। भगवान .

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं....।।२।।
हे वर्धमान ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आए हैं।
भगवान-भगवान पांच सौ मंत्रों से, हम पूजा करने आए हैं।।
निज सुख के खंड हुए, नहिं अक्षयपद पाये।
सित अक्षत ले करके, तुम पास प्रभो ! आये।।
अविनश्वर सुख पाने के लिये, सित पुंज चढ़ाने आये हैं।
भगवान.....

ॐ ह्रीं महावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताये अक्षतं.....।।३।।
हे वर्द्धमान ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आए हैं।
भगवान-भगवान पांच सौ मंत्रों से, हम पूजा करने आए हैं।।
हे नाथ ! कामरिपु ने, त्रिभुवन को वश्य किया।
इससे बचने हेतू, बहु सुरभित पुष्प लिया।।
निज आत्म गुणों की सुरभि हेतु, ये पुष्प चढ़ाने आये हैं।
भगवान.....

ॐ ह्रीं महावीरजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।।४।।
हे वर्द्धमान ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आए हैं।
भगवान-भगवान पांच सौ मंत्रों से, हम पूजा करने आये हैं।।
बहुविध पकवान चखे, नहिं भूख मिटा पाये।
इस हेतू चरु लेकर, तुम निकट प्रभो ! आये।।
निज आत्मा की तृप्ती के लिये, नैवेद्य चढ़ाने आये हैं।
भगवान.....

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।।५।।
हे वर्धमान ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आए हैं।
भगवान-भगवान पांच सौ मंत्रों से, हम पूजा करने आए हैं।।
निज मन में अंधेरा है, अज्ञान तिमिर छाया।
इस हेतू दीपक ले, प्रभुं पास अभी आया।।
निज ज्ञानज्योति पाने के लिये, हम आरति करने आये हैं।
भगवान.....

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेंद्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं..।।६।।
हे वर्द्धमान ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आए हैं।
भगवान-भगवान पांच सौ मंत्रों से, हम पूजा करने आए हैं।।
कर्मों ने दुःख दिया, तुम कर्म रहित स्वामी।
अतएव धूप लेके, हम आये जगनामी।।
सब अशुभकर्म के भस्म हेतु, हम धूप जलाने आये हैं।
भगवान.....

ॐ ह्रीं महावीरजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं....।।७।।
हे वर्द्धमान ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आए हैं।
भगवान-भगवान पांच सौ मंत्रों से, हम पूजा करने आए हैं।।
बहुविध के फल खाये, नहिं रसना तृप्त हुई।
ताजे फल ले करके, प्रभु पूजूं बृद्धि हुई।।
इच्छाओं की पूर्ती के लिये, फल अर्पण करने आये हैं।
भगवान.....

ॐ ह्रीं महावीरजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्ताये फलं.....।।८।।
हे वर्धमान ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आए हैं।
भगवान-भगवान पांच सौ मंत्रों से, हम पूजा करने आए हैं।।
प्रभु तुम गुण की अर्चा, भवतारन हारी है।
भवदधि में डूबे को, अवलंबनकारी है।।
निजरत्नत्रय प्राप्ती के लिये, हम अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।
भगवान.....

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।।९।।

शेरछंद- यमुना नदी का नीर स्वर्णभृंग में भरूं।
श्री महावीर प्रभु चरण में धार मैं करूं।।
चउसंघ में सब लोक में भी शांति कीजिये।
बस ये ही एक याचना प्रभु पूर्ण कीजिये।।1।।

शांतये शांतिधारा।

हे महावीर ! आप चिन्ह सिंह शोभता।
ये पुष्प काममल्लजयी पद में शोभता।।
अतएव सुरभि पुष्प ले पुष्पांजली करूं।
सब रोग शोक दूर हों निज संपदा भरूं ।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ पाँच सौ मंत्रों अर्घ्य

दोहा- परमचिंदबर चित्पुरूष, चिदानंद भगवान्।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले सौख्य अमलान।।१।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(मंडल पर प्रत्येक अर्घ्य के साथ एक-एक रत्न चढ़ाना है।)

ॐ ह्रीं जिनानां स्वामिस्वरूपजिनेंद्रगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१।।

ॐ ह्रीं जिनधौरेयगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२।।
ॐ ह्रीं जिनस्वामिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३।।
ॐ ह्रीं जिनाग्रणीगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४।।
ॐ ह्रीं जिनेशगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५।।
ॐ ह्रीं जिनशार्दूलगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६।।
ॐ ह्रीं जिनाधीशगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।७।।
ॐ ह्रीं जिनोत्तमगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।८।।
ॐ ह्रीं जिनराजगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।९।।
ॐ ह्रीं जिनज्येष्ठगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१०।।
ॐ ह्रीं जिनेशिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।११।।
ॐ ह्रीं जिनपालकगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१२।।
ॐ ह्रीं जिननाथगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१३।।
ॐ ह्रीं जिनश्रेष्ठगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१४।।
ॐ ह्रीं जिनमल्लगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१५।।
ॐ ह्रीं जिनोन्नतगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१६।।

ॐ ह्रीं जिननेतृगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७।।
ॐ ह्रीं जिनस्रष्टृगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८।।
ॐ ह्रीं जिनेड्गुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९।।
ॐ ह्रीं जिनपतिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२०।।
ॐ ह्रीं कर्मशत्रुविजयिजिननामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२१।।
ॐ ह्रीं जिनदेवगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२।।
ॐ ह्रीं जिनादित्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२३।।
ॐ ह्रीं जिनेशितृगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२४।।
ॐ ह्रीं जिनेश्वरगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५।।
ॐ ह्रीं जिनवर्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६।।
ॐ ह्रीं जिनाराध्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२७।।
ॐ ह्रीं जिनार्च्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२८।।
ॐ ह्रीं जिनपुंगवगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२९।।
ॐ ह्रीं जिनाधिपगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३०।।
ॐ ह्रीं जिनध्येयगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३१।।
ॐ ह्रीं जिनमुख्यगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३२।।
ॐ ह्रीं जिनेडितगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३।।
ॐ ह्रीं जिनसिंहगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४।।
ॐ ह्रीं जिनप्रेक्षगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५।।
ॐ ह्रीं जिनवृद्धगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३६।।
ॐ ह्रीं जिनोत्तरगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३७।।
ॐ ह्रीं जिनमान्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३८।।
ॐ ह्रीं जिनस्तुत्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३९।।
ॐ ह्रीं जिनप्रभुगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४०।।
ॐ ह्रीं जिनोद्वहगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४१।।
ॐ ह्रीं जिनपूज्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४२।।

ॐ ह्रीं जिनाकांक्षिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४३।।
ॐ ह्रीं जिनेन्दुगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४४।।
ॐ ह्रीं जिनसत्तमगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४५।।
ॐ ह्रीं जिनाकारगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४६।।
ॐ ह्रीं जिनोत्तुंगगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४७।।
ॐ ह्रीं जिनपगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४८।।
ॐ ह्रीं जिनकुंजरगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४९।।
ॐ ह्रीं जिनभर्तृगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५०।।
ॐ ह्रीं जिनाग्रस्थगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५१।।
ॐ ह्रीं जिनभृत्गुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५२।।
ॐ ह्रीं जिनचक्रभाग्गुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५३।।
ॐ ह्रीं जिनचक्रिगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५४।।
ॐ ह्रीं जिनाद्याद्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५५।।
ॐ ह्रीं जिनसेव्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५६।।
ॐ ह्रीं जिनाधिपगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५७।।
ॐ ह्रीं जिनकान्तगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५८।।
ॐ ह्रीं जिनप्रीतगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५९।।
ॐ ह्रीं जिनाधिराट्गुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६०।।
ॐ ह्रीं जिनप्रियगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६१।।
ॐ ह्रीं जिनधुर्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६२।।
ॐ ह्रीं जिनार्चांघ्रिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६३।।
ॐ ह्रीं जिनाग्रिमगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६४।।
ॐ ह्रीं जिनस्तुतगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६५।।
ॐ ह्रीं जिनहंसगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६६।।
ॐ ह्रीं जिनत्रातृगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६७।।
ॐ ह्रीं जिनर्षभगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६८।।
ॐ ह्रीं जिनाग्रगगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।६९।।

ॐ ह्रीं जिनधृद्गुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७०।।
ॐ ह्रीं जिनचक्रेशगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७१।।
ॐ ह्रीं जिनदातृगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७२।।
ॐ ह्रीं जितात्मकगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७३।।
ॐ ह्रीं जिनाधिकगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७४।।
ॐ ह्रीं जिनालक्षगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७५।।
ॐ ह्रीं जिनशांतगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७६।।
ॐ ह्रीं जिनोत्कटगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७७।।
ॐ ह्रीं जिनाश्रितगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७८।।
ॐ ह्रीं जिनाल्हादिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७९।।
ॐ ह्रीं जिनातर्क्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८०।।
ॐ ह्रीं जिनान्वितगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८१।।
ॐ ह्रीं शमदमशासनोपदेशकजैनगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८२।।
ॐ ह्रीं जैनवरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८३।।
ॐ ह्रीं जैनस्वामिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८४।।
ॐ ह्रीं जैनपितामहगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८५।।
ॐ ह्रीं जैनेड्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८६।।
ॐ ह्रीं जैनसंघार्च्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८७।।
ॐ ह्रीं जैनभृद्गुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८८।।
ॐ ह्रीं जैनपालकगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८९।।
ॐ ह्रीं जैनकृद्गुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९०।।
ॐ ह्रीं जैनधौरेयगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९१।।
ॐ ह्रीं जैनेशगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९२।।
ॐ ह्रीं जैनभूपतिगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९३।।
ॐ ह्रीं जैनेड्गुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९४।।
ॐ ह्रीं जैनाग्रिमगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९५।।

ॐ ह्रीं जैनपितृगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।९६।।
ॐ ह्रीं जैनहितंकरगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।९७।।
ॐ ह्रीं जैननेतृगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।९८।।
ॐ ह्रीं जैनाढ्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।९९।।
ॐ ह्रीं जैनधृद्गुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१००।।

पूर्णार्घ्य-स्रग्विणीछंद-

कर्म के भेद ये जो अनंते कहे। नाश के ही जिनेंद्रादि पद पा लिया।
मैं अनंतों गुणों को स्वयं ही वरूं। शक्ति ऐसी मिले आपकी भक्ति से।१।।
परम आनंद धर्मा गुणांभोधि हो। स्वात्म आनंद पाऊं प्रभो भक्ति से।।
कल्पतरु आपसे याचना मैं करूं। दीजिये तीन ही रत्न पूजूं तुम्हें।।२।।

ॐ ह्रीं जिनेंद्रादिजैनधृद्गुणपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

ॐ ह्रीं जैनदेवराड्गुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१०१।।
ॐ ह्रीं जैनाधिपगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१०२।।
ॐ ह्रीं जैनात्मगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१०३।।
ॐ ह्रीं जैनेक्ष्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१०४।।
ॐ ह्रीं जैनचक्रभृद्गुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१०५।।
ॐ ह्रीं जिताक्षगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१०६।।
ॐ ह्रीं जितकंदर्पगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१०७।।
ॐ ह्रीं जितकामगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१०८।।
ॐ ह्रीं जिताशयगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१०९।।
ॐ ह्रीं जितैनस्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।११०।।
ॐ ह्रीं जितकर्मारिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।१११।।
ॐ ह्रीं जितेन्द्रियगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।११२।।
ॐ ह्रीं जिताखिलगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।११३।।
ॐ ह्रीं जितशत्रुगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।११४।।

ॐ ह्रीं आशासमूहविजयिजिताशौघगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।११५।।

ॐ ह्रीं जितजेयगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।११६।।

ॐ ह्रीं जितात्मभाग्गुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।११७।।

ॐ ह्रीं जितलोभगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।११८।।

ॐ ह्रीं जितक्रोधगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।११९।।

ॐ ह्रीं जितमानगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२०।।

ॐ ह्रीं जितान्तकगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२१।।

ॐ ह्रीं जितरागगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२२।।

ॐ ह्रीं जितद्वेषगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२३।।

ॐ ह्रीं जितमोहगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२४।।

ॐ ह्रीं जिनेश्वरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२५।।

ॐ ह्रीं जिताजय्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२६।।

ॐ ह्रीं जिताशेषगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२७।।

ॐ ह्रीं जितेशगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२८।।

ॐ ह्रीं जितदुर्मतगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२९।।

ॐ ह्रीं जितवादिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३०।।

ॐ ह्रीं जितक्लेशगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३१।।

ॐ ह्रीं जितमुंडगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३२।।

ॐ ह्रीं जिताव्रतगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३३।।

ॐ ह्रीं जितदेवगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३४।।

ॐ ह्रीं जितशान्तिगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३५।।

ॐ ह्रीं जितखेदगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३६।।

ॐ ह्रीं जितारतिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३७।।

ॐ ह्रीं यतीडितगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३८।।

ॐ ह्रीं यतीशार्च्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३९।।

ॐ ह्रीं यतीशगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४०।।

ॐ ह्रीं यतिनायकगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४१।।
ॐ ह्रीं यतिमुखगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४२।।
ॐ ह्रीं यतिप्रेक्ष्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४३।।
ॐ ह्रीं यतिस्वामिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४४।।
ॐ ह्रीं यतीश्वरगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४५।।
ॐ ह्रीं मोक्षप्राप्तिकारणप्रतिपादकाय यतिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४६।।
ॐ ह्रीं यतिवरगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४७।।
ॐ ह्रीं यत्याराध्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४८।।
ॐ ह्रीं यतिगुणस्तुतगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४९।।
ॐ ह्रीं यतिश्रेष्ठगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१५०।।
ॐ ह्रीं यतिज्येष्ठगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१५१।।
ॐ ह्रीं यतिभर्तृगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१५२।।
ॐ ह्रीं यतीहितगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१५३।।
ॐ ह्रीं यतिधुर्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१५४।।
ॐ ह्रीं यतिसृष्टृगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१५५।।
ॐ ह्रीं यतिनाथगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१५६।।
ॐ ह्रीं यतिप्रभुगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१५७।।
ॐ ह्रीं यत्याकारगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१५८।।
ॐ ह्रीं यतित्रातृगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१५९।।
ॐ ह्रीं यतिबंधुगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६०।।
ॐ ह्रीं यतिप्रियगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६१।।
ॐ ह्रीं योगीन्द्रगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६२।।
ॐ ह्रीं योगिराड्गुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६३।।
ॐ ह्रीं योगिपतिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६४।।
ॐ ह्रीं योगिविनायकगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६५।।
ॐ ह्रीं योगीश्वरगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६६।।

ॐ ह्रीं योगीशगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६७।।
ॐ ह्रीं योगिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६८।।
ॐ ह्रीं योगपरायणगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६९।।
ॐ ह्रीं योगिपूज्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७०।।
ॐ ह्रीं योगांशगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७१।।
ॐ ह्रीं योगवद्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७२।।
ॐ ह्रीं योगपारगगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७३।।
ॐ ह्रीं योगधृद्गुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७४।।
ॐ ह्रीं योगरूपात्मगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७५।।
ॐ ह्रीं योगभाग्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७६।।
ॐ ह्रीं योगभूषितगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७७।।
ॐ ह्रीं योग्यन्तगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७८।।
ॐ ह्रीं योगिकल्पांगगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७९।।
ॐ ह्रीं योगिकृद्गुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८०।।
ॐ ह्रीं योगिमुख्यार्च्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८१।।
ॐ ह्रीं योगिभूगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८२।।
ॐ ह्रीं योगिभूपतिगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८३।।
ॐ ह्रीं सर्वज्ञगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८४।।
ॐ ह्रीं सर्वलोकज्ञगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८५।।
ॐ ह्रीं सर्वदृग्गुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१८६।।
ॐ ह्रीं सर्वतत्त्वविद्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८७।।
ॐ ह्रीं सर्वक्लेशसहगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८८।।
ॐ ह्रीं सार्वगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८९।।
ॐ ह्रीं सर्वचक्षुर्गुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९०।।
ॐ ह्रीं सर्वराड्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९१।।
ॐ ह्रीं सर्वाग्रिमगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९२।।
ॐ ह्रीं सर्वात्मगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९३।।

ॐ ह्रीं सर्वेशगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९४।।
ॐ ह्रीं सर्वदर्शनगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९५।।
ॐ ह्रीं सर्वेज्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९६।।
ॐ ह्रीं सर्वधर्मांगगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९७।।
ॐ ह्रीं सर्वजीवदयावहगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९८।।
ॐ ह्रीं सर्वज्येष्ठगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९९।।
ॐ ह्रीं सर्वाधिकगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२००।।

पूर्णार्घ्य-शंभुछंद-

निजआत्मा की उपलब्धि किया, संतत रत रहते उसमें ही।
मैं निज से निज में रम जाऊं, इसलिये नमूं तुमको नित ही।।
महावीर प्रभू की पूजा से, "सोऽहं" यह भाव प्रगट होता।
फिर पुनर्भवों से छूटें जन, निज आत्मा का अनुभव होता।।१।।

ॐ ह्रीं जैनदेवराड्गुणादिसर्वाधिकगुणपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

ॐ ह्रीं सर्वत्रिजगद्हितगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२०१।।
ॐ ह्रीं सर्वधर्ममयगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२०२।।
ॐ ह्रीं सर्वस्वामिगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२०३।।
ॐ ह्रीं सर्वगुणाश्रितगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२०४।।
ॐ ह्रीं विश्वविद्गुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२०५।।
ॐ ह्रीं विश्वनाथार्च्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२०६।।
ॐ ह्रीं विश्वेड्यगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२०७।।
ॐ ह्रीं विश्वबांधवगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२०८।।
ॐ ह्रीं विश्वनाथगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२०९।।
ॐ ह्रीं विश्वार्हगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२१०।।
ॐ ह्रीं विश्वात्मगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२११।।
ॐ ह्रीं विश्वकारकगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२१२।।

ॐ ह्रीं विश्वेड्गुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२१३।।
ॐ ह्रीं विश्वपितृगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२१४।।
ॐ ह्रीं विश्वधरगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२१५।।
ॐ ह्रीं विश्वाभयंकरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२१६।।
ॐ ह्रीं विश्वव्यापिगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२१७।।
ॐ ह्रीं विश्वेशिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२१८।।
ॐ ह्रीं विश्वधृद्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२१९।।
ॐ ह्रीं विश्वभूमिपगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२०।।
ॐ ह्रीं विश्वधीगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२१।।
ॐ ह्रीं विश्वकल्याणगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२२।।
ॐ ह्रीं विश्वकृद्गुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२३।।
ॐ ह्रीं विश्वपारगगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२४।।
ॐ ह्रीं विश्ववृद्धगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२५।।
ॐ ह्रीं विश्वांगिरक्षकगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं..।।२२६।।
ॐ ह्रीं विश्वपोषकगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२७।।
ॐ ह्रीं जगत्कर्तृगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२८।।
ॐ ह्रीं जगद्भर्तृगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२९।।
ॐ ह्रीं जगत्त्रातृगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२३०।।
ॐ ह्रीं जगज्जयिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२३१।।
ॐ ह्रीं जगन्मान्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२३२।।
ॐ ह्रीं जगज्जयेष्ठगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२३३।।
ॐ ह्रीं जगच्छ्रेष्ठगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२३४।।
ॐ ह्रीं जगत्पतिगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२३५।।
ॐ ह्रीं जगद्धृतगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२३६।।
ॐ ह्रीं जगन्नाथगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२३७।।
ॐ ह्रीं जगद्ध्येयगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२३८।।
ॐ ह्रीं जगत्स्तुतगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२३९।।

ॐ ह्रीं जगत्पातृगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२४०।।
ॐ ह्रीं जगद्धातृगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२४१।।
ॐ ह्रीं जगत्सेव्यगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२४२।।
ॐ ह्रीं जगच्छ्रुतगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२४३।।
ॐ ह्रीं जगत्स्वामिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२४४।।
ॐ ह्रीं जगत्पूज्यगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२४५।।
ॐ ह्रीं जगत्सार्थगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२४६।।
ॐ ह्रीं जगद्हितगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२४७।।
ॐ ह्रीं जगद्वेत्तृगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२४८।।
ॐ ह्रीं जगच्चक्षुर्गुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२४९।।
ॐ ह्रीं जगद्दर्शिगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५०।।
ॐ ह्रीं जगत्पितृगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५१।।
ॐ ह्रीं जगत्कांतगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५२।।
ॐ ह्रीं जगद्दांतगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५३।।
ॐ ह्रीं जगद्ज्ञातृगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५४।।
ॐ ह्रीं जगज्जितगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५५।।
ॐ ह्रीं जगद्धीरगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५६।।
ॐ ह्रीं जगद्वीरगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५७।।
ॐ ह्रीं जगत्प्रान्तगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५८।।
ॐ ह्रीं जगत्प्रियगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५९।।
ॐ ह्रीं महाज्ञानिगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६०।।
ॐ ह्रीं महाध्यानिगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६१।।
ॐ ह्रीं महाकृतिगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६२।।
ॐ ह्रीं महाव्रतिगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६३।।
ॐ ह्रीं महाराजगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६४।।
ॐ ह्रीं महार्थज्ञगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६५।।
ॐ ह्रीं महातेजोगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६६।।

ॐ ह्रीं महातपोगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६७।।
ॐ ह्रीं महाजेतृगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६८।।
ॐ ह्रीं महाजय्यगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६९।।
ॐ ह्रीं महाक्षान्तगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२७०।।
ॐ ह्रीं महादमगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२७१।।
ॐ ह्रीं महादान्तगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२७२।।
ॐ ह्रीं महाशांतगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२७३।।
ॐ ह्रीं महाकान्तगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२७४।।
ॐ ह्रीं महाबलिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२७५।।
ॐ ह्रीं महादेवगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२७६।।
ॐ ह्रीं महापूतगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२७७।।
ॐ ह्रीं महायोगिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२७८।।
ॐ ह्रीं महाधनिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२७९।।
ॐ ह्रीं महाकामिगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२८०।।
ॐ ह्रीं महाशूरगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२८१।।
ॐ ह्रीं महाभटगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२८२।।
ॐ ह्रीं महायशोगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२८३।।
ॐ ह्रीं महानादगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२८४।।
ॐ ह्रीं महास्तुत्यगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२८५।।
ॐ ह्रीं महामहपतिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२८६।।
ॐ ह्रीं सर्वोत्तममहागुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।२८७।।
ॐ ह्रीं महाधीरगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२८८।।
ॐ ह्रीं महावीरगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२८९।।
ॐ ह्रीं महाबंधुगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२९०।।
ॐ ह्रीं महाश्रमगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२९१।।
ॐ ह्रीं महाधारगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२९२।।
ॐ ह्रीं महाकारगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२९३।।

ॐ ह्रीं महाशर्मगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२९४।।
ॐ ह्रीं महाश्रयगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२९५।।
ॐ ह्रीं महायोगिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२९६।।
ॐ ह्रीं महाभोगिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२९७।।
ॐ ह्रीं महाब्रह्मगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२९८।।
ॐ ह्रीं महीधरगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२९९।।
ॐ ह्रीं महाधुर्यगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३००।।

पूर्णार्घ्य-तर्ज-खिलता है जिंदगी का.....

मिलता है प्रभु भक्ति का अवसर कभी-कभी।
यह पुण्य का कमल तो खिलता है कभी कभी।।
जो ब्रह्मज्ञान उत्तम वह आपमें रहा।
निजज्ञान पूर्ण हेतू पूजूं अभी अभी।। मिलता.....।।१।।
लक्ष्मी प्रकृष्ट पाकर परमात्मा हुए।
पूजूं तुम्हें जिनेश्वर रूचि से अभी अभी।। मिलता.....।।२।।

ॐ ह्रीं सर्वत्रिजगद्हितगुणादिमहाधुर्यगुणपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

ॐ ह्रीं महावीर्यगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३०१।।
ॐ ह्रीं महादर्शिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३०२।।
ॐ ह्रीं महार्थविद्गुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३०३।।
ॐ ह्रीं महाभर्तृगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३०४।।
ॐ ह्रीं महाकर्तृगुणान्तिवाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३०५।।
ॐ ह्रीं महाशीलगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३०६।।
ॐ ह्रीं महागुणिनामालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३०७।।
ॐ ह्रीं महाधर्मगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३०८।।
ॐ ह्रीं महामौनिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३०९।।
ॐ ह्रीं महाभरगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३१०।।

ॐ ह्रीं महाग्रिमगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३११।।
ॐ ह्रीं महास्रष्टृगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३१२।।
ॐ ह्रीं महातीर्थगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३१३।।
ॐ ह्रीं महाख्यातगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३१४।।
ॐ ह्रीं महाहितगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३१५।।
ॐ ह्रीं महाधन्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३१६।।
ॐ ह्रीं महाधीशगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३१७।।
ॐ ह्रीं महारूपिगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३१८।।
ॐ ह्रीं महामुनिगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३१९।।
ॐ ह्रीं महाविभुगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३२०।।
ॐ ह्रीं महाकीर्तिगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३२१।।
ॐ ह्रीं महादातृगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३२२।।
ॐ ह्रीं महारतगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३२३।।
ॐ ह्रीं महाकृपगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३२४।।
ॐ ह्रीं महाराध्यगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३२५।।
ॐ ह्रीं महाश्रेष्ठगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३२६।।
ॐ ह्रीं महायतिगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३२७।।
ॐ ह्रीं महाक्षान्तिगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३२८।।
ॐ ह्रीं महालोकगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३२९।।
ॐ ह्रीं महानेत्रगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३०।।
ॐ ह्रीं महार्घकृद्गुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३१।।
ॐ ह्रीं महाश्रमिगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३२।।
ॐ ह्रीं महायोग्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३३।।
ॐ ह्रीं महाशमिगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३४।।
ॐ ह्रीं महादमिगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३५।।
ॐ ह्रीं महेशेशगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३६।।
ॐ ह्रीं महेशात्मगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३७।।

ॐ ह्रीं महेशार्च्यगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३८।।
ॐ ह्रीं महेशराड्गुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३९।।
ॐ ह्रीं महानन्तगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४०।।
ॐ ह्रीं महातृप्तगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४१।।
ॐ ह्रीं महाहरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४२।।
ॐ ह्रीं महावरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४३।।
ॐ ह्रीं महर्षीशगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४४।।
ॐ ह्रीं महाभागगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४५।।
ॐ ह्रीं महास्थानगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४६।।
ॐ ह्रीं महान्तकगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४७।।
ॐ ह्रीं महौदर्यगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४८।।
ॐ ह्रीं महाकार्यगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४९।।
ॐ ह्रीं महाकेवललब्धिगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५०।।
ॐ ह्रीं महाशिष्टगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५१।।
ॐ ह्रीं महानिष्टगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५२।।
ॐ ह्रीं महादक्षगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५३।।
ॐ ह्रीं महाबलगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५४।।
ॐ ह्रीं महालक्षगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५५।।
ॐ ह्रीं महार्थज्ञगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५६।।
ॐ ह्रीं महाविद्वद्गुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५७।।
ॐ ह्रीं महात्मकगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५८।।
ॐ ह्रीं महेज्यार्हगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५९।।
ॐ ह्रीं महानाथगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३६०।।
ॐ ह्रीं महानेतृगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३६१।।
ॐ ह्रीं महापितृगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३६२।।
ॐ ह्रीं महामनोगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३६३।।
ॐ ह्रीं महाचिन्त्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३६४।।

ॐ ह्रीं महासारगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३६५।।
ॐ ह्रीं महायमिगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३६६।।
ॐ ह्रीं महेन्द्रार्च्यगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३६७।।
ॐ ह्रीं महावंद्यगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३६८।।
ॐ ह्रीं महावादिगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३६९।।
ॐ ह्रीं महानुतगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३७०।।
ॐ ह्रीं परमात्मगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३७१।।
ॐ ह्रीं परात्मज्ञगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३७२।।
ॐ ह्रीं परंज्योतिर्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३७३।।
ॐ ह्रीं परार्थकृद्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३७४।।
ॐ ह्रीं परब्रह्मगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३७५।।
ॐ ह्रीं परब्रह्मरूपगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३७६।।
ॐ ह्रीं परतरगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३७७।।
ॐ ह्रीं परनामगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३७८।।
ॐ ह्रीं परमेशगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३७९।।
ॐ ह्रीं परेज्यार्हगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३८०।।
ॐ ह्रीं परार्थिगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३८१।।
ॐ ह्रीं परकार्यधृद्गुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३८२।।
ॐ ह्रीं परस्वामिगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३८३।।
ॐ ह्रीं परज्ञानिगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३८४।।
ॐ ॐ ह्रीं पराधीशगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३८५।।
ॐ ह्रीं परेहकगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३८६।।
ॐ ह्रीं सत्यवादिगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३८७।।
ॐ ह्रीं सत्यात्मगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३८८।।
ॐ ह्रीं सत्यांगगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३८९।।
ॐ ह्रीं सत्यशासनगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३९०।।
ॐ ह्रीं सत्यार्थगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३९१।।

ॐ ह्रीं सत्यवागीशगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३९२।।
ॐ ह्रीं सत्याधारगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३९३।।
ॐ ह्रीं अतिसत्यवाग्गुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३९४।।
ॐ ह्रीं सत्यायगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३९५।।
ॐ ह्रीं सत्यविद्येशगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३९६।।
ॐ ह्रीं सत्यधर्मिगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३९७।।
ॐ ह्रीं सत्यवाग्गुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३९८।।
ॐ ह्रीं सत्याशयगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३९९।।
ॐ ह्रीं अतिसत्योक्तमतगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।४००।।

पूर्णार्घ्य-चौबोलछंद-

अष्टद्रव्य से थाल सजाकर, भक्ति भाव से लाये हैं।
चित् चिंतामणि वीर प्रभू की, पूजा करने आये हैं।
।। जय जय जिनवरं...।।

महासाधु बन बहुविध तप कर, नाना ऋद्धी प्राप्त किया।
भक्त जनों के कष्ट दूर कर, स्वात्मा की उपलब्धि किया।।
भव भव के सब कष्ट दूर हों, यही भावना लाएँ हैं।।
।। जय जय.....।।

मोक्षधाम को प्राप्त किया प्रभु, शुद्ध विशुद्ध अनंत गुणी।
सौख्य अतीन्द्रिय ज्ञान अतीन्द्रिय, नित गुण गाते यती मुनी।।
परमपिता परमेश्वर प्रभु को, शीश झुकाने आये हैं।
चित् चिंता.....।। जय.....।।

ॐ ह्रीं महावीर्यगुणादिअतिसत्योक्तमतगुणपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

ॐ ह्रीं सत्यहितंकरगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४०१।।
ॐ ह्रीं सत्यतीर्थगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४०२।।
ॐ ह्रीं अतिसत्याढ्यगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४०३।।

ॐ ह्रीं सत्यात्तगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४०४।।
ॐ ह्रीं सत्यतीर्थकृद्गुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४०५।।
ॐ ह्रीं सत्यसीमाधरगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४०६।।
ॐ ह्रीं सत्यधर्मतीर्थप्रवर्तकगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४०७।।
ॐ ह्रीं लोकेशगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४०८।।
ॐ ह्रीं लोकनाथार्च्यगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।४०९।।
ॐ ह्रीं लोकालोकविलोकनगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४१०।।
ॐ ह्रीं लोकविद्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४११।।
ॐ ह्रीं लोकमूर्द्धस्थगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४१२।।
ॐ ह्रीं लोकनाथगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४१३।।
ॐ ह्रीं अलोकविद्गुणनायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४१४।।
ॐ ह्रीं लोकदृष्टक्गुणस्वामिने श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।४१५।।
ॐ ह्रीं लोककार्यार्थिगुणनायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४१६।।
ॐ ह्रीं लोकज्ञगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४१७।।
ॐ ह्रीं लोकपालकगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४१८।।
ॐ ह्रीं लोकेड्यगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४१९।।
ॐ ह्रीं लोकमांगल्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४२०।।
ॐ ह्रीं लोकोत्तमगुणनायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४२१।।
ॐ ह्रीं लोकराड्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४२२।।
ॐ ह्रीं तीर्थकृद्गुणस्वामिने श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४२३।।
ॐ ह्रीं तीर्थभूतात्मगुणस्वामिने श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४२४।।
ॐ ह्रीं तीर्थेशगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४२५।।
ॐ ह्रीं तीर्थकारकगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४२६।।
ॐ ह्रीं तीर्थभृद्गुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४२७।।
ॐ ह्रीं तीर्थकर्तृगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४२८।।

ॐ ह्रीं तीर्थप्रणेतृगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४२९।।
ॐ ह्रीं सुतीर्थभाग्गुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४३०।।
ॐ ह्रीं तीर्थाधीशगुणनायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४३१।।
ॐ ह्रीं तीर्थात्मगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४३२।।
ॐ ह्रीं तीर्थज्ञगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४३३।।
ॐ ह्रीं तीर्थनायकगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४३४।।
ॐ ह्रीं तीर्थाढ्यगुणनायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४३५।।
ॐ ह्रीं तीर्थसद्राजगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४३६।।
ॐ ह्रीं तीर्थधृद्गुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४३७।।
ॐ ह्रीं तीर्थधृद्गुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४३८।।
ॐ ह्रीं तीर्थवर्तकगुणास्पप्दाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४३९।।
ॐ ह्रीं तीर्थंकरगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४४०।।
ॐ ह्रीं तीर्थेशिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४४१।।
ॐ ह्रीं तीर्थोह्यगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४४२।।
ॐ ह्रीं तीर्थपालकगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४४३।।
ॐ ह्रीं तीर्थसृष्टृगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४४४।।
ॐ ह्रीं तीर्थद्धिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४४५।।
ॐ ह्रीं तीर्थाग्रगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४४६।।
ॐ ह्रीं तीर्थदेशकगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४४७।।
ॐ ह्रीं निःकर्मगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४४८।।
ॐ ह्रीं निर्मलगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४४९।।
ॐ ह्रीं नित्यगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४५०।।
ॐ ह्रीं निराबाधगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४५१।।
ॐ ह्रीं निरामयगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४५२।।
ॐ ह्रीं निस्तमस्कगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४५३।।
ॐ ह्रीं निरौपम्यगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४५४।।
ॐ ह्रीं निःकलंकगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४५५।।

ॐ ह्रीं निरायुधगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४५६।।
ॐ ह्रीं निर्लेपगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४५७।।
ॐ ह्रीं निष्कलगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४५८।।
ॐ ह्रीं अत्यन्तनिर्दोषगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं..।।४५९।।
ॐ ह्रीं निर्जराग्रणीगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४६०।।
ॐ ह्रीं निःस्वप्नगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४६१।।
ॐ ह्रीं निर्भयगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४६२।।
ॐ ह्रीं अतीवनिःप्रमादगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४६३।।
ॐ ह्रीं निराश्रयगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४६४।।
ॐ ह्रीं निरंबरगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४६५।।
ॐ ह्रीं निरातंकगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४६६।।
ॐ ह्रीं निर्भूषगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४६७।।
ॐ ह्रीं निर्मलाशयगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४६८।।
ॐ ह्रीं निर्मदगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४६९।।
ॐ ह्रीं निरतीचारगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४७०।।
ॐ ह्रीं निर्मोहगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४७१।।
ॐ ह्रीं निरुपद्रवगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४७२।।
ॐ ह्रीं निर्विकारगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४७३।।
ॐ ह्रीं निराधारगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४७४।।
ॐ ह्रीं निरीहगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४७५।।
ॐ ह्रीं निर्मलांगभाग्गुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४७६।।
ॐ ह्रीं निर्जरगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४७७।।
ॐ ह्रीं निरजस्कगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४७८।।
ॐ ह्रीं निराशगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४७९।।
ॐ ह्रीं निर्विशेषविद्गुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४८०।।
ॐ ह्रीं निर्मिमेषगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४८१।।
ॐ ह्रीं निराकारगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४८२।।
ॐ ह्रीं निरतगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४८३।।
ॐ ह्रीं निरतिक्रमगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४८४।।

ॐ ह्रीं निर्वेदगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४८५।।
ॐ ह्रीं निष्कषायात्मगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।४८६।।
ॐ ह्रीं निर्बंधगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४८७।।
ॐ ह्रीं निस्पृहाग्रगनामविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४८८।।
ॐ ह्रीं विरजोगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४८९।।
ॐ ह्रीं विमलात्मज्ञगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४९०।।
ॐ ह्रीं विमलगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४९१।।
ॐ ह्रीं विमलान्तरगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।४९२।।
ॐ ह्रीं विरतगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४९३।।
ॐ ह्रीं विरताधीशगुणसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४९४।।
ॐ ह्रीं विरागगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४९५।।
ॐ ह्रीं वीतमत्सरगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४९६।।
ॐ ह्रीं विभवगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४९७।।
ॐ ह्रीं विभवान्तस्थगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४९८।।
ॐ ह्रीं विचारकृद्गुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४९९।।
ॐ ह्रीं वीतरागगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५००।।

पूर्णार्घ्य-तर्ज-आओ बच्चो तुम्हें.....

हे भगवन् ! अब कृपा कीजिये, शरण लिया मैं आपकी।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाऊं, कृपासिंधु हैं आप ही।।
वंदे वीरजिनं-४

मिथ्याअविरति कषाय योगों, से ही कर्म बंध होते।
बहिरात्मा जब अंतर आत्मा, होता कर्म नष्ट होते।।
कर का अवलंबन दे तारो, त्रिभुवन के गुरु आप ही।
भक्ति...। वंदे वीरजिनं-४

चिन्मय परमहंस परमात्मा, इनकी भक्ती सुख देती।
जो जन चरण कमल को पूजें, उनके सब दुख हर लेती।।
इसीलिये मैं भक्ति करूं नित, हरो व्यथा भव व्याधि की।
भक्ति... । वंदे वीर जिनं-४

ॐ ह्रीं सत्यहितंकरादि-वीतरागगुणपर्यंशतमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं.....

शांतये शांतिधारा। दिव्यपुष्पांजलिः।

जाप्य- ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमहावीरजिनेंद्राय विश्वशांतिकराय सर्वसौख्यं कुरू कुरू ह्रीं नमः।

(सुगंधित पुष्प, लवंग या पीले चावल मिश्रित रत्नों से १०८ बार मंत्र जपें तथा पूजा के अनन्तर मंत्रित रत्नों को श्रद्धालुओं में वितरित कर दें।)

जयमाला

दोहा- घातिचतुष्टय घातकर, प्रभु तुम हुये कृतार्थ।
नवकेवल लब्धी रमा, रमणी किया सनाथ।।१।।

शेरछंद- प्रभु दर्श मोहनीय को निर्मूल किया है।
सम्यक्त्व क्षायिकनाम को परिपूर्ण किया है।।
चारित्र मोहनीय का विनाश जब किया।
क्षायिक चरित्र नाम यथाख्यात पा लिया।।२।।

संपूर्ण ज्ञानावर्ण का जब आप क्षय किया।
कैवल्यज्ञान से त्रिलोक जान सब लिया।।
प्रभुदर्शनावरण के क्षय से दर्श अनंता।
सब लोक औ अलोक देखते हो तुरंता।।३।।

दानांतराय नाश के अनंत प्राणिको।
देते अभय उपदेश तुम शिवपथ का दान जो।।
लाभांतराय का समस्त नाश जब किया।
क्षायिक अनंतलाभ का तब लाभ प्रभु लिया।।४।।

जिससे परमशुभ सूक्ष्म दिव्यनंत वर्गणा।
पुद्गलमयी प्रत्येक समय पावते घना।
जिससे न कवलाहार हो फिर भी तनू रहे।
शिवप्राप्त होने तक शरीर भी टिका रहे।।५।।

भोगांतराय नाश के अतिशय सुभोग हैं।
सुरपुष्पवृष्टि गंध उदक वृष्टि शोभ हैं।।
पग के तले वरपद्म रचें देवगण सदा।
सौगंध्य शीतल पवन आदि सौख्य शर्मदा।।६।।

उपभोग अंतराय का क्षय हो गया जभी।
प्रभु सातिशय उपभोग को भी पा लिया तभी।।
सिंहासनादि छत्र चंवर तरू अशोक हैं।
सुरदुंदुभी भाचक्र दिव्यध्वनि मनोज्ञ हैं।।७।।

वीर्यांतराय नाश से आनंत्य वीर्य हैं।
होते न कभी श्रांत आप धीर वीर हैं।।

प्रभु चार घाति नाश के नवलब्धि पा लिया।
आनन्त्यज्ञान आदि चतुष्टय प्रमुख किया।।८।।
प्रभु आप नाम मंत्र सर्वविघ्न को हरे।
प्रभु आप नाम मंत्र सर्व संपदा भरे।।
प्रभु आप नाम मंत्र स्वर्ण रत्न को देवे।
प्रभु आप नाम मंत्र श्रेष्ठ नव निधी देवे।।९।।
व्यंतर पिशाच भूत डाकिनी पिशाचिनी।
प्रभु मंत्र के प्रभाव से बाधा नशें घनी।।
कोई भी सुर असुर कभी ना कष्ट दे सकें।
प्रभु मंत्र के प्रभाव शत्रु मित्र बन सकें।।१०।।
प्रभु मंत्र के प्रभाव पुत्र पौत्र संतती।
कुलवंश वृद्धि हो मिले कुलांगना सती।।
सज्जाति आदि सात परमस्थान प्राप्त हों।
स्वर्गों के दिव्य सुख मिलें फिर मोक्ष प्राप्त हो।।११।।
प्रभुनाम मंत्र भक्ति से जो चित्त में धरें।
कुष्ठादि महारोग दूर हों व्यथा टरें।
अविलंब स्वास्थ्य लाभ हो संपूर्ण सौख्य हो।
प्रभु मंत्र के प्रभाव से इष्टार्थ सिद्ध हों।।१२।।
प्रभु आप सर्व शक्तिमान् कीर्ति को सुना।
इस हेतु से ही आज यहां मैं दिया धरना।।
अब तारिये न तारिये यह आपकी मरजी।
बस ज्ञानमती पूरिये यदि मानिये अरजी।।१३।।

दोहा- तुम पद आश्रय जो लिया, सो पहुँचे शिवधाम।
इसीलिये तुम चरण में, करूं अनंत प्रणाम।।१४।।

ॐ ह्रीं पंचशतमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। दिव्यपुष्पांजलिः।

गीताछंद - जो विश्वशांती महावीर, विधान भक्ती से करें।
सब आपदायें दूर कर, सर्वत्र सुख शांती करें।।
तीर्थेश प्रभु का मेरु पर, जन्माभिषेकोत्सव करें।
फिर स्वयं तीर्थंकर बनें, निज 'ज्ञानमति' संपति भरें।।१।।

इत्याशीर्वादः

पूजा नं. ६

स्थापना- तर्ज- यह नंदन वन.....

श्री वीर प्रभू, महावीर प्रभू, हम पूजा करने आये हैं।
मिल जाय मुझे सम्यक्त्वनिधी, बस यही भावना लाये हैं।।
आह्वानन संस्थापन करके सन्निधीकरण विधि करते हैं।
निज हृदयाम्बुज में धारण कर अज्ञानतिमिर को हरते हैं।।
गणधर मुनगण से नितवंदित की अर्चा करने आये हैं।
श्री वीर प्रभू, महावीर प्रभू, हम पूजा करने आये हैं।।१।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

अथ अष्टक- तर्ज मेरे देश की धरती.....

प्रभु वीर की अर्चा, सकल विश्व में शांति सुधा बरसाये।
प्रभु वीर की.....
भव भव में जी भर नीर पिया, नहिं अब तक प्यास बुझा पाये।
इसलिये आपकी पूजा को, कंचन झारी में जल लाये।।
प्रभु पद में धारा करते ही, समरस सुख अमृत पायें।
प्रभु वीर की.....।।१।।
ये क्रोध मान माया व लोभ, चारों कषाय दुःखदायी हैं।
नतने मेरी संयम निधि को, लूटा भव भ्रमण कराती हैं।
हम इनका नाश करें भगवन्, सम्यक्त्व रतन पा जायें।।
प्रभु वीर की.....।।२।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.....।।१।।

प्रभु वीर की अर्चा, सकल विश्व में शांतिसुधा बरसाये।
प्रभु वीर की अर्चा .....
मानस शारीरिक आगंतुक, भव भव में बहु दुख पाये हैं।
इसलिये आपकी पूजा को, चंदन केशर घिस लाये हैं।।

प्रभु पद में चर्चन करते ही, तन मन शीतल हो जाये।
प्रभु वीर की.....।।१।।
ज्वर कैंसर कुष्ठ कामलादी, व्याधी तन को दुख देती हैं।
प्रभु भक्ती परम रसायन है, काया कंचन कर देती हैं।।
गंधोदक तन में लगते ही, सब रोग शोक नश जायें।
प्रभु वीर की.....।।२।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं.....।।२।।

प्रभु वीर की अर्चा, सकल विश्व में शांतिसुधा बरसाये।
प्रभु वीर की.....
इंद्रिय सुख पाने की इच्छा, से दुःख अनंत उठाये हैं।
इच्छित सुख नहिं मिल सका किंतु, भवदधि में गोते खाये हैं।।
इसलिये धौता सित अक्षत ले..... हम पुंज चढ़ाने आये हैं।
प्रभु वीर की अर्चा.....
यह आत्मा शुद्ध अखंडित है, निजज्ञान किरण से जगव्यापी,।
जग में कर्मों के संबंधित, भवव्याधी रग रग में व्यापी।।
अक्षय पद पाने हेतु प्रभो.... तुम चरणों शीश नमायें।
प्रभु वीर.....

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं.....।।३।।

प्रभुवीर की अर्चा, सकल विश्व में शांतिसुधा बरसाये।
प्रभु वीर.....
कामदेव ने तीनों जग में, निजशर से सबको वश्य किया।
प्रभु के चरणाम्बुज में आकर, वह तो क्षणभर में वश्य हुआ।।
निष्काम तुम्हारे चरणों में, हम पुष्प चढ़ा सुख पाये।
प्रभु.....।।१।।
समता पीयूष पिये मुनिगण, स्वात्मा का अनुभव करते हैं।
फिर शुक्लध्यान में तन्मय हो, कैवल्यरमा को वरते हैं।।
निज साम्यसुधारस पीने को, प्रभु चरण कमल को ध्यायें।
प्रभु वीर की.....।।२।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।।४।।

प्रभु वीर की अर्चा, सकल विश्व में शांतिसुधा बरसाये।
प्रभु वीर की.....

यह क्षुधा रोग दुख देता नित, हम कैसे छुटकारा पायें।
प्रभु परमानंदामृत पीते, इसलिये आप शरणे आयें।।
नैवेद्य चढ़ाकर तुम सन्मुख, हम परम तृप्ति को पायें।प्रभु.।।१।।
जो आकिंचन भी तपोधनी, ज्ञानामृत भोजन करते हैं।
सर्दी में धैर्यमयी कंबल, ओढ़े गर्मी भी सहते हैं।।
ऐसे मुनि भी तुम वंदन कर, हर्षित मन ध्यान लगायें। प्रभु.।२।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।।५।।

प्रभुवीर की अर्चा, सकल विश्व में शांतिसुधा बरसाये।
प्रभु वीर की.....

मिथ्यात्व अंधेरे में हमने, नहिं किंचित निज को पहचाना।
प्रभु तुम हो केवलज्ञान सूर्य, इसलिये उचित समझा आना।।
दीपक से तुम आरति करते, मन का अंधेर मिटायें।प्रभु.।।१।।
परिवार महल धन संपत्ति को, मेरा मेरा कह दुख पाया।
मैं नित्य अकेला ही निश्चित, अब तुम प्रसाद से मन आया।।
प्रभु वंदन अर्चन कर कर के, निज ज्ञान ज्योति चमकायें।। प्रभु.।।२।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं.....।।६।।

प्रभु वीर की अर्चा, सकल विश्व में शांतिसुधा बरसाये।। प्रभु.।।
शाश्वत जिनभवनों में असंख्य भी, धूप घड़ों में अग्नि जले।
नित सुरगण सुरभि धूप खेते, तब धूम दशों दिश में फैले।।
हम धूपायन में धूप खेय, निज के सब कर्म जलायें।। प्रभु.।।१।।
यद्यपि पूजन में आरंभी हिंसा किंचित् हो जाती है।
फिर भी समुद्र में विषकणवत् वह हानि नहीं कर पाती है।
इस कारण पूजा भक्तों के अतिशायी पुण्य बढ़ाये।। प्रभु.।।२।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं.....।।७।।

प्रभुवीर की अर्चा, सकल विश्व में शांतिसुधारस बरसाये।
प्रभु वीर की.....
दाड़िम केला अंगूर सेव फल सरस मधुर ले आये हैं।
वर मोक्ष महा फल पाने को, तुम निकट चढ़ाने आये हैं।।
फल से पूजा करके भगवन्, रत्नत्रय निधि पा जायें।। प्रभु।।१।।
शत इंद्र सभी सुरतरु के फल, ला लाकर पूजा करते हैं।
जिनवर पूजा का ही महात्म्य, वे इच्छित फल लभते हैं।।
निज परमानन्द सुफल पाने, हम शरण आपकी आये।। प्रभु।।२।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।।८।।

प्रभुवीर की अर्चा, सकल विश्व में शांतिसुधा बरसाये ।प्रभु.।।
जल गंधादिक वसु द्रव्य लिये, उसमें नवरत्न मिलाये हैं।
निजभाव अपूर्व अपूर्व मिले, यह आशा लेकर आये हैं।।
चरणों में अर्घ्य चढ़ा करके, नवगुण लब्धी पा जायें।। प्रभु।।१।।
सज्जाति सद्गार्हस्थ्य प्रव्रज्या, इंद्र सौख्य साम्राज्य कहें।
आर्हन्त्य परमनिर्वाण सात ये, परमस्थान प्रधान रहें।।
प्रभु पूजा से इनको पावें, हम यही भावना भायें।। प्रभु।।२।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।।९।।

स्रग्विणी छंद-

नाथ पदकंज में शांतिधारा करें। विश्व में शांति होवे यही कामना।।

आधि सब दूर हों चित्त में शांति हो। भक्ति से प्राप्त हो शांति आत्यंतिकी।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

नाथ के गुणसुमन आज चुन कर लिये। विश्व में गुण सुरभि फैलती है प्रभो।
पुष्प अंजलि समर्पण करूं प्रेम से। पुण्यसंपत्ति पाऊं सुयश वृद्धि हो।।११।।

दिव्यपुष्पांजलिः।

अथ छह सौ मंत्र अर्घ्य

(मंडल पर प्रत्येक अर्घ्य के साथ एक-एक रत्न चढ़ाना है।)

दोहा - छह सौ मंत्र महान् से, महावीर जग वंद्य।
पुष्पांजलि से पूजहूं, पाऊं सौख्य अनिंद्य।।१।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं विश्वासिगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१।।
ॐ ह्रीं विगताबाधगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२।।
ॐ ह्रीं विचारज्ञगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३।।
ॐ ह्रीं विशारदगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४।।
ॐ ह्रीं विवेकिगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५।।
ॐ ह्रीं विगतग्रन्थगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६।।
ॐ ह्रीं विविक्तगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७।।
ॐ ह्रीं अव्यक्तसंस्थितिगुणधारकाय श्री महावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८।।
ॐ ह्रीं विजयिगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९।।
ॐ ह्रीं विजयारातिगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०।।
ॐ ह्रीं विनष्टारिगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।११।।
ॐ ह्रीं वियच्छ्रितगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२।।
ॐ ह्रीं त्रिरत्नेशगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३।।
ॐ ह्रीं त्रिपीठस्थगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४।।
ॐ ह्रीं त्रिलोकज्ञगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१५।।
ॐ ह्रीं त्रिकालविद्गुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६।।
ॐ ह्रीं त्रिदण्डघ्नगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७।।
ॐ ह्रीं त्रिलोकेशगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८।।
ॐ ह्रीं त्रिछत्रांकगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९।।
ॐ ह्रीं त्रिभूमिपगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२०।।
ॐ ह्रीं त्रिशल्यारिगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२१।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकार्च्यगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२२।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकपतिसेवितगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२३।।

ॐ ह्रीं त्रियोगिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२४।।

ॐ ह्रीं त्रिकसंवेगगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२५।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्याढ्यगुणपूरिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२६।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकराड्गुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२७।।

ॐ ह्रीं अनन्तगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२८।।

ॐ ह्रीं अनंतसौख्याक्षिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.:।।२९।।

ॐ ह्रीं अनंतकेवलेक्षणगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।३०।।

ॐ ह्रीं अनंतविक्रमगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३१।।

ॐ ह्रीं अनंतवीर्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३२।।

ॐ ह्रीं अनंतगुणाकरंगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।३३।।

ॐ ह्रीं अनंतविक्रमनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३४।।

ॐ ह्रीं अनंतस्ववेत्तृगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३५।।

ॐ ह्रीं अनंतशक्तिमद्गुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।३६।।

ॐ ह्रीं अनंतमहिमारूढगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३७।।

ॐ ह्रीं अनंतज्ञगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३८।।

ॐ ह्रीं अनंतशर्मदगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३९।।

ॐ ह्रीं सिद्धपदप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४०।।

ॐ ह्रीं बुद्धगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४१।।

ॐ ह्रीं प्रसिद्धात्मगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४२।।

ॐ ह्रीं स्वयंबुद्धगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४३।।

ॐ ह्रीं अतिबुद्धिमद्गुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४४।।

ॐ ह्रीं सिद्धिदगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४५।।
ॐ ह्रीं सिद्धमार्गस्थगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४६।।
ॐ ह्रीं सिद्धार्थगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४७।।
ॐ ह्रीं सिद्धसाधनगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४८।।
ॐ ह्रीं सिद्धसाध्यगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।४९।।
ॐ ह्रीं अतिशुद्धात्मगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।५०।।
ॐ ह्रीं सिद्धिकृद्गुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५१।।
ॐ ह्रीं सिद्धिशासनगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५२।।
ॐ ह्रीं सुसिद्धान्तविशुद्धाढ्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५३।।
ॐ ह्रीं सिद्धगामिगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५४।।
ॐ ह्रीं बुधाधिपगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५५।।
ॐ ह्रीं अच्युतगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५६।।
ॐ ह्रीं अच्युतनाथेशगुणाधिपाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।५७।।
ॐ ह्रीं अचलचित्तगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५८।।
ॐ ह्रीं अचलस्थितिगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५९।।
ॐ ह्रीं अतिप्रभगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६०।।
ॐ ह्रीं अतिसौम्यात्मगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।६१।।
ॐ ह्रीं सोमरूपगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६२।।
ॐ ह्रीं अतिकान्तिमद्गुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।६३।।
ॐ ह्रीं वरिष्ठगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६४।।
ॐ ह्रीं स्थविरगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६५।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६६।।
ॐ ह्रीं गरिष्ठगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६७।।
ॐ ह्रीं अनिष्टदूरगगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६८।।
ॐ ह्रीं द्रष्टृगुणपूरिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६९।।
ॐ ह्रीं पुष्टगुणपूरित्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७०।।

ॐ ह्रीं विशिष्टात्मगुणपूरिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७१।।

ॐ ह्रीं स्रष्टृगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७२।।

ॐ ह्रीं धातृगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७३।।

ॐ ह्रीं प्रजापतिगुणपूरिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७४।।

ॐ ह्रीं पद्मासनगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७५।।

ॐ ह्रीं सपद्मांकगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।७६।।

ॐ ह्रीं पद्मयानगुणपूरिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७७।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुखगुणपूरिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७८।।

ॐ ह्रीं श्रीपतिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।७९।।

ॐ ह्रीं श्रीनिवासगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८०।।

ॐ ह्रीं विजेतृगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८१।।

ॐ ह्रीं पुरुषोत्तमगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८२।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्रधरगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं..।।८३।।

ॐ ह्रीं धर्मिगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८४।।

ॐ ह्रीं धर्मतीर्थप्रवर्तकगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८५।।

ॐ ह्रीं धर्मराजगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८६।।

ॐ ह्रीं अतिधर्मात्मगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८७।।

ॐ ह्रीं धर्माधारगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८८।।

ॐ ह्रीं सुधर्मदगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।८९।।

ॐ ह्रीं धर्ममूर्तिगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९०।।

ॐ ह्रीं अधर्मघ्नगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९१।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्रिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९२।।

ॐ ह्रीं सुधर्मधीगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९३।।

ॐ ह्रीं धर्मकृद्गुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९४।।

ॐ ह्रीं धर्मभृद्गुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९५।।

ॐ ह्रीं धर्मशीलगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।९६।।

ॐ ह्रीं धर्माधिनायकगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।६७।।
ॐ ह्रीं मंत्रमूर्तिगुणपूरिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६८।।
ॐ ह्रीं सुमंत्रज्ञगुणपूरिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६६।।
ॐ ह्रीं मंत्रमयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१००।।

पूर्णार्घ्य- तर्ज- आवो बंधु तुम्हें दिखायें.....

आवो हम सब करें वंदना, महावीर भगवान की।
त्रिशलानंदन को जजते ही, मिले राह निर्वाण की।।
वंदे वीरजिनं वंदे वीरजिनं, वंदे वीरजिनं वंदे वीरजिनं।
निजस्वरूप में तन्मय होकर, तीन गुप्ति से रक्षित हैं।
परमानन्द सुखामृत पीकर, सिद्ध बने गुण मंडित हैं।
अर्घ्य चढ़ाकर करें अर्चना, इन गुणवंत प्रधान की।।
त्रिशलानंदन को जजते ही, मिले राह निर्वाण की।। वंदे.....

ॐ ह्रीं विश्वासिगुणादि-मंत्रमयगुणपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं....

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः

ॐ ह्रीं तेजस्विगुणद्योतकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०१।।
ॐ ह्रीं विक्रमिगुप्पप्रभावकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०२।।
ॐ ह्रीं स्वामिगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०३।।
ॐ ह्रीं तपस्विगुणद्योतकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०४।।
ॐ ह्रीं संयमिगुणपूरिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०५।।
ॐ ह्रीं यमिगुणप्रभावकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०६।।
ॐ ह्रीं कृतिगुणपूरकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०७।।
ॐ ह्रीं व्रतिगुणगौद्योतकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१०८।।
ॐ ह्रीं कृतार्थात्मगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१०९।।
ॐ ह्रीं कृतकृत्यगुणपरिपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।११०।।
ॐ ह्रीं कृताविधिगुणपरिपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१११।।
ॐ ह्रीं प्रभुगुणप्रभावकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।११२।।

ॐ ह्रीं विभुगुणविभाविताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।११३।।
ॐ ह्रीं गुरूगुणपरिपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।११४।।
ॐ ह्रीं योगिगुणसंयुक्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।११५।।
ॐ ह्रीं गरीयान्गुणबृंहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।११६।।
ॐ ह्रीं गुरूकार्यकृद्गुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।११७।।
ॐ ह्रीं वृषभगुणबृंहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।११८।।
ॐ ह्रीं वृषभाधीशगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।११९।।
ॐ ह्रीं वृषचिन्हगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२०।।
ॐ ह्रीं वृषाश्रयगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२१।।
ॐ ह्रीं वृषकेतुगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२२।।
ॐ ह्रीं वृषाधारगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२३।।
ॐ ह्रीं वृषभेन्द्रगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२४।।
ॐ ह्रीं वृषप्रदगुणपरिपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२५।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मात्मगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२६।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मनिष्ठात्मगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।१२७।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मगुणबृंहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२८।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मपदेश्वरगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१२९।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मज्ञगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३०।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मभूतात्मगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३१।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३२।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मपालकगुणपरिपूरिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।१३२।।
ॐ ह्रीं अद्भुतगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३३।।
ॐ ह्रीं पूज्यगुणपूजिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३४।।
ॐ ह्रीं अर्हन्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३५।।
ॐ ह्रीं भगवन्नामसार्थककराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३६।।
ॐ ह्रीं स्तुत्यगुणविराजिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३७।।
ॐ ह्रीं स्तवनार्हगुणवंदिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३८।।

ॐ ह्रीं स्तुतीश्वरगुणपूरिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१३६।।
ॐ ह्रीं वंद्यगुणपरिपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४०।।
ॐ ह्रीं नमस्कृतिगुणपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।१४१।।
ॐ ह्रीं अत्यन्तप्रणामयोग्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४२।।
ॐ ह्रीं ऊर्जितगुणपूजिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४३।।
ॐ ह्रीं गुणिगुणनंदिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४४।।
ॐ ह्रीं गुणाकरनामसार्थककराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।१४५।।
ॐ ह्रीं अनंतगुणाब्धिनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं..।।१४६।।
ॐ ह्रीं गुणभूषणनामसार्थककराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं..।।१४७।।
ॐ ह्रीं गुणादरिनामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४८।।
ॐ ह्रीं गुणग्रामनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१४९।।
ॐ ह्रीं गुणार्थिनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१५०।।
ॐ ह्रीं गुणपारगनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१५१।।
ॐ ह्रीं गुणरूपनाममंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१५२।।
ॐ ह्रीं गुणातीतनामनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१५३।।
ॐ ह्रीं गुणदनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१५४।।
ॐ ह्रीं गुणवेष्टितनामनंदिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१५५।।
ॐ ह्रीं गुणाश्रयनामपरिपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ...।।१५६।।
ॐ ह्रीं गुणात्माक्तनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं..।।१५७।।
ॐ ह्रीं गुणासक्तनामविराजिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१५८।।
ॐ ह्रीं अगुणान्तकृद्गुणपूरिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं..।।१५९।।
ॐ ह्रीं गुणाधिपनामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६०।।
ॐ ह्रीं गुणान्तःस्थनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।।१६१।।
ॐ ह्रीं गुणश्रृद्नामविराजिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६२।।
ॐ ह्रीं गुणपोषकनाममंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६३।।
ॐ ह्रीं गुणाराध्यनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।१६४।।

ॐ ह्रीं गुणज्येष्ठपदप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६५।।
ॐ ह्रीं गुणाधारपदास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६६।।
ॐ ह्रीं गुणाग्रगनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६७।।
ॐ ह्रीं पवित्रगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६८।।
ॐ ह्रीं पूतसर्वांगगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१६९।।
ॐ ह्रीं पूतवाग्गुणपवित्रिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७०।।
ॐ ह्रीं पूतशासनगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७१।।
ॐ ह्रीं पूतकर्मगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७२।।
ॐ ह्रीं अतिपूतात्मगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७३।।
ॐ ह्रीं शुचिगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७४।।
ॐ ह्रीं शौचात्मकगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७५।।
ॐ ह्रीं अमलगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७६।।
ॐ ह्रीं कर्मारिगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७७।।
ॐ ह्रीं कर्मशत्रुघ्नगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७८।।
ॐ ह्रीं कर्मारातिनिकंदनगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१७९।।
ॐ ह्रीं कर्मविध्वंसकगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८०।।
ॐ ह्रीं कर्मोच्छेदिगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८१।।
ॐ ह्रीं कर्मांगनाशकगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।१८२।।
ॐ ह्रीं सुसंवृत्तगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८३।।
ॐ ह्रीं त्रिगुप्तात्मगुणविराजिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।१८४।।
ॐ ह्रीं निरास्रवगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८५।।
ॐ ह्रीं त्रिगुप्तिवद्गुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।१८६।।
ॐ ह्रीं विद्यामयगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१८७।।
ॐ ह्रीं अतिविद्यात्मगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं..।।१८८।।
ॐ ह्रीं सर्वविद्येशगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।१८९।।
ॐ ह्रीं आत्मवद्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९०।।
ॐ ह्रीं आत्मस्थितिगुणधारकमुनिगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय

अर्घ्यं....।।१९१।।

ॐ ह्रीं श्रेण्यारोहणफलप्राप्तयतिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९२।।

ॐ ह्रीं अनागारगुणविराजिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९३।।

ॐ ह्रीं पुराणपुरुषगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९४।।

ॐ ह्रीं अव्ययगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९५।।

ॐ ह्रीं सर्वप्राणिरक्षक-पितृगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९६।।

ॐ ह्रीं पितामहगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९७।।

ॐ ह्रीं भर्तृगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९८।।

ॐ ह्रीं मोक्षसुखकर्तृगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।१९९।।

ॐ ह्रीं पंचेंन्द्रियविजयिने दान्तगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२००।।

पूर्णार्घ्य - शंभुछंद -

व्यवहार रत्नत्रयपालन कर, निश्चय रत्नत्रय प्राप्त किया।
फिर निर्विकल्प ध्यानी बनकर, निज आत्म सुधारस प्राप्त किया।।
केवलज्ञानी हो श्री विहार, करके भव्यों को पार किया।
त्रैलोक्यशिखर पर जा तिष्ठे, हम पूजत परमानंद लिया।।१।।

ॐ ह्रीं तेजस्विगुणादि दांतगुण पर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्री महावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

ॐ ह्रीं मोक्षसौख्यसाधनसमर्थक्षमगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२०१।।

ॐ ह्रीं सर्वकल्याणकर-शिवनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।२०२।।

ॐ ह्रीं ईश्वरगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२०३।।

ॐ ह्रीं शंकरगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२०४।।
ॐ ह्रीं धीमद्गुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२०५।।
ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२०६।।
ॐ ह्रीं सनातनगुणसमन्विताय श्री महावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२०७।।
ॐ ह्रीं दक्षगुणविराजिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२०८।।
ॐ ह्रीं ज्ञानिगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२०९।।
ॐ ह्रीं शमिगुणविधायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२१०।।
ॐ ह्रीं ध्यानिगुणविधायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२११।।
ॐ ह्रीं सुशीलगुणप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२१२।।
ॐ ह्रीं शीलसागरगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२१३।।
ॐ ह्रीं सर्वर्द्धिप्राप्त-ऋषिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२१४।
ॐ ह्रीं सर्वविद्यामय-कविगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२१५।।
ॐ ह्रीं कवीन्द्राद्यगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२१६।।
ॐ ह्रीं ऋषीन्द्रगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२१७।।
ॐ ह्रीं ऋषिनायकगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।२१८।।
ॐ ह्रीं वेदांगगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२१९।।
ॐ ह्रीं वेदविद्गुणप्रकाशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२०।।
ॐ ह्रीं वेद्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२१।।
ॐ ह्रीं स्वसंवेद्यगुणविकासाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२२।।
ॐ ह्रीं अमलस्थितिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२३।।
ॐ ह्रीं अष्टादशोत्तरसहस्रशीलगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२२४।।
ॐ ह्रीं दिग्वासस्गुणविराजिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।२२५।।
ॐ ह्रीं जातरूपगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२६।।
ॐ ह्रीं विदांवरगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२७।।

ॐ ह्रीं निर्ग्रन्थगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२८।।
ॐ ह्रीं ग्रन्थदूरस्थगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२२९।।
ॐ ह्रीं निःसंगगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२३०।।
ॐ ह्रीं निःपरिग्रहगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२३१।।
ॐ ह्रीं धीरगुणविवर्द्धकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२३२।।
ॐ ह्रीं वीरगुणविवर्द्धकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२३३।।
ॐ ह्रीं प्रशान्तात्मगुणविराजिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।२३४।।
ॐ ह्रीं धैर्यशालिगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२३५।।
ॐ ह्रीं सुलक्षणगुणलक्षिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२३६।।
ॐ ह्रीं शान्तगुणप्रकाशिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२३७।।
ॐ ह्रीं गंभीरगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२३८।।
ॐ ह्रीं आत्मज्ञगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२३९।।
ॐ ह्रीं कलामूर्तिगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२४०।।
ॐ ह्रीं कलाधरगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२४१।।
ॐ ह्रीं युगादिपुरुषगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं..।।२४२।।
ॐ ह्रीं अव्यक्तगुणप्रकटिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२४३।।
ॐ ह्रीं व्यक्तवाग्गुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२४४।।
ॐ ह्रीं व्यक्तशासनगुणविराजिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२४५।।
ॐ ह्रीं अनादिनिधनगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।२४६।।
ॐ ह्रीं दिव्यगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२४७।।
ॐ ह्रीं दिव्यांगगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२४८।।
ॐ ह्रीं दिव्यधीधनगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२४९।।
ॐ ह्रीं तपोधनगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५०।।
ॐ ह्रीं वियद्गामिगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।२५१।।
ॐ ह्रीं जागरूकगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५२।।
ॐ ह्रीं अतीन्द्रियगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।२५३।।

ॐ ह्रीं अनन्तर्द्धिगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५४।।

ॐ ह्रीं अचिन्त्यर्द्धिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५५।।

ॐ ह्रीं अमेयर्द्धिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५६।।

ॐ ह्रीं परार्द्ध्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५७।।

ॐ ह्रीं मौनिगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५८।।

ॐ ह्रीं धुर्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२५९।।

ॐ ह्रीं भटगुणप्रकटिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६०।।

ॐ ह्रीं शूरगुणविवर्द्धकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।२६१।।

ॐ ह्रीं सार्थवाहगुणविधायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६२।।

ॐ ह्रीं शिवाध्वगगुणविधायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६३।।

ॐ ह्रीं मोक्षसाधनोपायप्रदर्शक-साधुगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६४।।

ॐ ह्रीं द्वादशगणवेष्टित-गणिगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६५।।

ॐ ह्रीं सुताधारगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६६।।

ॐ ह्रीं पाठकगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६७।।

ॐ ह्रीं अतीन्द्रियार्थदृग्गुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६८।।

ॐ ह्रीं आदीशगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२६९।।

ॐ ह्रीं आदिभूभर्तृगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२७०।।

ॐ ह्रीं आदिमगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२७१।।

ॐ ह्रीं आदिजिनेश्वरगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२७२।।

ॐ ह्रीं आदितीर्थंकरगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२७३।।

ॐ ह्रीं आदिसृष्टिकृद्गुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।२७४।।

ॐ ह्रीं आदिदेशकगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय

अर्घ्यं....।।२७५।।

ॐ ह्रीं आदिब्रह्मगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२७६।।

ॐ ह्रीं आदिनाथगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२७७।।

ॐ ह्रीं अर्च्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२७८।।

ॐ ह्रीं आदिषट्कर्मदेशकगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२७९।।

ॐ ह्रीं आदिधर्मविधातृगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२८०।।

ॐ ह्रीं आदिधर्मराजगुणप्रकटिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२८१।।

ॐ ह्रीं अग्रजगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२८२।।

ॐ ह्रीं अग्रिमगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२८३।।

ॐ ह्रीं श्रेयान्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२८४।।

ॐ ह्रीं श्रेयस्करगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२८५।।

ॐ ह्रीं श्रेयोगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२८६।।

ॐ ह्रीं श्रेयोऽग्रणीगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२८७।।

ॐ ह्रीं सुखावहगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२८८।।

ॐ ह्रीं श्रेयोदगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२८९।।

ॐ ह्रीं श्रेयवाराशिगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२९०।।

ॐ ह्रीं श्रेयवान्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२९१।।

ॐ ह्रीं श्रेयसंभवगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२९२।।

ॐ ह्रीं अजितगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२९३।।

ॐ ह्रीं जितसंसारगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२९४।।

ॐ ह्रीं सन्मतिगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२९५।।

ॐ ह्रीं सन्मतिप्रियगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२९६।।

ॐ ह्रीं संस्कृतगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२९७।।

ॐ ह्रीं प्राकृतगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२९८।।

ॐ ह्रीं प्राज्ञगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।२९९।।
ॐ ह्रीं ज्ञानमूर्तिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३००।।

पूर्णार्घ्य- तर्ज- तुमसे लागी लगन.....

नाथ ! त्रिभुवनपती, पाई पंचमगती, इंद्र आये।
भक्ति से आपको शिर झुकायें।।
मोह शत्रू को तुमने विनाशा, सर्वगुण को स्वयं में प्रकाशा।
मारा यमराज को, पाया शिवराज को, भव मिटाये।
इन्द्र सब मिलके उत्सव मनायें।नाथ.....।।१।।
आप अतिशय गुणों से भरे हैं, स्वयं मुक्तीरमा को वरे हैं।
आप वंदन करें, पापखंडन करें, सौख्य पायें।।
दुःख संकट तुरत ही भगायें।। नाथ.....।।२।।
नाम मंत्रों को रुचे से जपूं मैं, आपके पाद पंकज जजूं हैं।
गणधरादी नमें, आप गुण में रमें, कीर्ति गायें।।
कर्मबंधन कटें मुक्ति पायें।नाथ.....।।३।।

ॐ ह्रीं क्षमगुणादि-ज्ञानमूर्तिगुणपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

ॐ ह्रीं च्युतोपमगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।३०१।।
ॐ ह्रीं नाभेयगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३०२।।
ॐ ह्रीं आदियोगीन्द्रगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३०३।।
ॐ ह्रीं उत्तमगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३०४।।
ॐ ह्रीं सुव्रतगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३०५।।
ॐ ह्रीं मनुगुणप्रधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३०६।।
ॐ ह्रीं शत्रुञ्जयगुणप्रधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३०७।।
ॐ ह्रीं सुमेधाविगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३०८।।
ॐ ह्रीं नाथगुणसनाथाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३०९।।
ॐ ह्रीं आद्यगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३१०।।
ॐ ह्रीं अखिलार्थविद्गुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।३११।।
ॐ ह्रीं क्षेमिगुणविधायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३१२।।
ॐ ह्रीं कुलकरगुणसनाथाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३१३।।

---

१. उपमारहित

ॐ ह्रीं कामगुणसुकान्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३१४।।
ॐ ह्रीं देवदेवगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३१५।।
ॐ ह्रीं निरुत्सुकगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३१६।।
ॐ ह्रीं क्षेमगुणविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३१७।।
ॐ ह्रीं क्षेमंकरगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३१८।।
ॐ ह्रीं अग्राह्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३१९।।
ॐ ह्रीं ज्ञानगम्यगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३२०।।
ॐ ह्रीं निरुत्तरगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३२१।।
ॐ ह्रीं स्थेयान्गुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३२२।।
ॐ ह्रीं तृप्तगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३२३।।
ॐ ह्रीं सदाचारिगुणविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३२४।।
ॐ ह्रीं सुघोषगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३२५।।
ॐ ह्रीं सन्मुखगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३२६।।
ॐ ह्रीं सुखीगुणपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३२७।।
ॐ ह्रीं वाग्मिगुणपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३२८।।
ॐ ह्रीं वागीश्वरगुणपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३२९।।
ॐ ह्रीं वाचस्पतिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३०।।
ॐ ह्रीं सद्बुद्धिगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३१।।
ॐ ह्रीं उन्नतगुणपरिपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३२।।
ॐ ह्रीं उदारगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३३।।
ॐ ह्रीं मोक्षगामिगुणविधायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३४।।
ॐ ह्रीं मुक्तगुणपरिपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३५।।
ॐ ह्रीं मुक्तिप्ररूपकगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३६।।
ॐ ह्रीं भव्यसार्थाधिपगुणपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३७।।
ॐ ह्रीं देवगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३८।।
ॐ ह्रीं मनीषीगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३३९।।
ॐ ह्रीं सुहितगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४०।।

ॐ ह्रीं सुहद्गुणपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४१।।
ॐ ह्रीं मुक्तिभर्तृगुणपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४२।।
ॐ ह्रीं अप्रतर्क्यात्मगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं..।।३४३।।
ॐ ह्रीं दिव्यदेहगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४४।।
ॐ ह्रीं प्रभास्वरगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४५।।
ॐ ह्रीं मनःप्रियगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४६।।
ॐ ह्रीं मनोहारिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४७।।
ॐ ह्रीं मनोज्ञांगगुणपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४८।।
ॐ ह्रीं मनोहरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३४९।।
ॐ ह्रीं स्वस्थगुणविधायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५०।।
ॐ ह्रीं भूतपतिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५१।।
ॐ ह्रीं पूर्वगुणपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५२।।
ॐ ह्रीं पुराणपुरुषगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५३।।
ॐ ह्रीं अक्षयगुणपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५४।।
ॐ ह्रीं शरण्यगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५५।।
ॐ ह्रीं पंचकल्याणपूजार्हगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३५६।।
ॐ ह्रीं अबंधुबांधवगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।३५७।।
ॐ ह्रीं कल्याणात्मगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं..।।३५८।।
ॐ ह्रीं सुकल्याणगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।३५९।।
ॐ ह्रीं कल्याणगुणविधायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३६०।।
ॐ ह्रीं प्रकृतिगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३६१।।
ॐ ह्रीं प्रियगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३६२।।
ॐ ह्रीं सुभगगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३६३।।
ॐ ह्रीं कांतिमद्गुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३६४।।
ॐ ह्रीं दीप्रगुणदीपिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।३६५।।
ॐ ह्रीं गूढात्मगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३६६।।

ॐ ह्रीं गूढगोचरगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३६७।।
ॐ ह्रीं जगच्चूड़ामणिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।३६८।।
ॐ ह्रीं तुंगगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३६९।।
ॐ ह्रीं दिव्यभामंडलगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।३७०।।
ॐ ह्रीं सुधीगुणप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३७१।।
ॐ ह्रीं महौजस्गुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३७२।।
ॐ ह्रीं अतिस्फुरत्कांतिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं..।।३७३।।
ॐ ह्रीं सूर्यकोट्यधिकप्रभगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३७४।।
ॐ ह्रीं निष्टप्तकनकच्छायगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३७५।।
ॐ ह्रीं हेमवर्णगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३७६।।
ॐ ह्रीं स्फुरद्द्युतिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३७७।।
ॐ ह्रीं प्रतापिगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३७८।।
ॐ ह्रीं प्रबलगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३७९।।
ॐ ह्रीं पूर्णगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३८०।।
ॐ ह्रीं तेजोराशिगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३८१।।
ॐ ह्रीं गतोपमगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३८२।।
ॐ ह्रीं शांतेशगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३८३।।
ॐ ह्रीं शांतकर्मारिगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३८४।।
ॐ ह्रीं शांतिकृद्गुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३८५।।
ॐ ह्रीं शांतिकारकगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३८६।।
ॐ ह्रीं भुक्तिदगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३८७।।
ॐ ह्रीं मुक्तिदगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३८८।।
ॐ ह्रीं दातृगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३८९।।
ॐ ह्रीं ज्ञानाब्धिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३९०।।
ॐ ह्रीं शीलसागरगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३९१।।
ॐ ह्रीं स्पष्टवाग्गुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।३९२।।

ॐ ह्रीं पुष्टिदगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३९३।।
ॐ ह्रीं पुष्टगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३९४।।
ॐ ह्रीं शिष्टेष्टगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३९५।।
ॐ ह्रीं शिष्टसेवितगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३९६।।
ॐ ह्रीं स्पष्टाक्षरगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३९७।।
ॐ ह्रीं विशिष्टांगगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३९८।।
ॐ ह्रीं स्पष्टवृत्तगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।३९९।।
ॐ ह्रीं विशुद्धिगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४००।।

पूर्णार्घ्य- तर्ज-आवो बच्चों तुम्हें दिखायें.....

स्वर्णथाल में अर्घ्य सजाकर, भक्तिभाव से लाये हैं।
कल्पतरू सम वीरप्रभू की, पूजा करने आये हैं।।
वंदे जिनवरं, वंदे जिनवरं, वंदे जिनवरं, वंदे जिनवरं।
त्रिभुवन अग्रशिखर पर राजित, अंतिम तनु से किंचित् कम।
पुरुषाकार कहाये फिर भी, निराकार आकृति उत्तम।।
इंद्रिय विषयों से विरहित प्रभु, सौख्य अतीन्द्रिय प्राप्त किया।
परमानंदामृत अनुभवरत, पूर्ण अतीन्द्रिय ज्ञान लिया।।
वर्ण गंध रस रहित अमूर्तिक, आप शरण में आये हैं।
कल्पतरू सम.....।।१।।
त्रिभुवन में बहु घूम चुका प्रभु, नहिं किंचित् सुख प्राप्त किया।
निश्चयनय से आप सदृश मैं, यह निश्चय कर शरण लिया।।
आप भक्ति से शक्ति प्रगट हो, मुक्ति मार्ग में अचल रहूँ।
केवल ज्ञानमती प्रगटित हो, शिव प्राप्ती तक यही चहूँ।।
नाथ ! आपकी कृपा दृष्टि की, आश लगाकर आये हैं।
कल्पतरू सम वीरप्रभू की, पूजा करने आये हैं।।।।२।।
वंदे जिनवरं - ४

ॐ ह्रीं च्युतोपमगुणादिविशुद्धिगुणपर्यंत शतमंत्रसमन्विताय श्री महावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

ॐ ह्रीं निष्किंचनगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४०१।।
ॐ ह्रीं निरालंबगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४०२।।
ॐ ह्रीं निपुणगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४०३।।
ॐ ह्रीं निपुणाश्रितगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।४०४।।
ॐ ह्रीं निर्ममगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४०५।।
ॐ ह्रीं निरहंकारगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४०६।।
ॐ ह्रीं प्रशस्तगुणपूरिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४०७।।
ॐ ह्रीं जैनवत्सलगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४०८।।
ॐ ह्रीं तेजोमयगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४०९।।
ॐ ह्रीं अमितज्योतिर्गुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं..।।४१०।।
ॐ ह्रीं शुभ्रमूर्तिगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४११।।
ॐ ह्रीं तमोपहगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४१२।।
ॐ ह्रीं पुण्यदगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४१३।।
ॐ ह्रीं पुण्यहेत्वात्मगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।४१४।।
ॐ ह्रीं पुण्यवद्गुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४१५।।
ॐ ह्रीं पुण्यकर्मकृद्गुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४१६।।
ॐ ह्रीं पुण्यमूर्तिगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४१७।।
ॐ ह्रीं महापुण्यगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४१८।।
ॐ ह्रीं पुण्यवाग्गुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४१९।।
ॐ ह्रीं पुण्यशासनगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४२०।।
ॐ ह्रीं पुण्यभोक्तृगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४२१।।
ॐ ह्रीं अतिपुण्यात्मगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४२२।।
ॐ ह्रीं पुण्यशालिगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४२३।।
ॐ ह्रीं शुभाशयगुणविधायकाय श्रीमहावीरज़िनेंद्राय अर्घ्यं....।।४२४।।
ॐ ह्रीं अनिद्रालुगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४२५।।
ॐ ह्रीं अतंद्रालुगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४२६।।

ॐ ह्रीं मुमुक्षुगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४२७।।

ॐ ह्रीं मुक्तिबल्लभगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४२८।।

ॐ ह्रीं मुक्तिप्रियगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४२९।।

ॐ ह्रीं प्रजाबंधुगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४३०।।

ॐ ह्रीं प्रजाकरगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४३१।।

ॐ ह्रीं प्रजाहितगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४३२।।

ॐ ह्रीं श्रीशगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४३३।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रितपादाब्जगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४३४।।

ॐ ह्रीं श्रीविरागगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४३५।।

ॐ ह्रीं विरक्तधीगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४३६।।

ॐ ह्रीं ज्ञानवद्गुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४३७।।

ॐ ह्रीं बंधमोक्षज्ञगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४३८।।

ॐ ह्रीं बंधघ्नगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४३९।।

ॐ ह्रीं बंधदूरगगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४४०।।

ॐ ह्रीं वनवासिगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४४१।।

ॐ ह्रीं जटाधारिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४४२।।

ॐ ह्रीं क्लेशातीतगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४४३।।

ॐ ह्रीं अतिसौख्यवद्गुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।४४४।।

ॐ ह्रीं आप्तगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४४५।।

ॐ ह्रीं अमूर्तगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४४६।।

ॐ ह्रीं कनत्कायगुणविधायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।४४७।।

ॐ ह्रीं शक्तगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४४८।।

ॐ ह्रीं शक्तिप्रदगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४४९।।

ॐ ह्रीं बुधगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४५०।।

ॐ ह्रीं हताक्षगुणविधायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४५१।।

ॐ ह्रीं हतकर्मारिगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४५२।।

ॐ ह्रीं हतमोहगुणप्राप्ताय श्री महावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४५३।।

ॐ ह्रीं हिताश्रितगुणधारकाय श्री महावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४५४।।

ॐ ह्रीं हतमिथ्यात्वगुणप्रदायकाय श्री महावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४५५।।

ॐ ह्रीं आत्मस्थगुणनिधानाय श्री महावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४५६।।

ॐ ह्रीं सुरूपगुणविधायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४५७।।

ॐ ह्रीं हतदुर्नयगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४५८।।

ॐ ह्रीं स्याद्वादिगुणनायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४५९।।

ॐ ह्रीं नयप्रोक्तृगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४६०।।

ॐ ह्रीं हितवादिगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४६१।।

ॐ ह्रीं हितध्वनिगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४६२।।

ॐ ह्रीं भव्यचूड़ामणिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।४६३।।

ॐ ह्रीं भव्यगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४६४।।

ॐ ह्रीं असमगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४६५।।

ॐ ह्रीं असमगुणाश्रयनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४६६।।

ॐ ह्रीं निर्विघ्नगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४६७।।

ॐ ह्रीं निश्चलगुणविराजिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४६८।।

ॐ ह्रीं लोकवत्सलगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४६९।।

ॐ ह्रीं लोकलोचनगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४७०।।

ॐ ह्रीं आदेयादिमगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४७१।।

ॐ ह्रीं आदेयगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४७२।।

ॐ ह्रीं हेयादेयप्ररूपकगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४७३।।

ॐ ह्रीं भद्रगुणमंडिताय श्री महावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।४७४।।

ॐ ह्रीं भद्राशयगुणविराजिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४७५।।

ॐ ह्रीं भद्रशासनगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४७६।।

ॐ ह्रीं भद्रवाग्गुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४७७।।

ॐ ह्रीं भद्रकृतिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।४७८।।

ॐ ह्रीं भद्रकृद्गुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४७९।।

ॐ ह्रीं भद्रभव्याढ्यगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।४८०।।

ॐ ह्रीं भद्रबंधुगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४८१।।

ॐ ह्रीं अनामयगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४८२।।

ॐ ह्रीं केवलिगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४८३।।

ॐ ह्रीं केवलगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४८४।।

ॐ ह्रीं केवलालोकगुणविराजिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।।४८५।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानलोचनधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।४८६।।

ॐ ह्रीं केवलेशगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४८७।।

ॐ ह्रीं महर्द्धीशगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४८८।।

ॐ ह्रीं अच्छेद्यगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।४८९।।

ॐ ह्रीं अभेद्यगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४९०।।

ॐ ह्रीं अतिसूक्ष्मवद्गुणनिधानाय श्री महावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं..।।४९१।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मदर्शिगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४९२।।

ॐ ह्रीं कृपामूर्तिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४९३।।

ॐ ह्रीं कृपालुगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४९४।।

ॐ ह्रीं कृपावहगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४९५।।

ॐ ह्रीं कृपाम्बुधिगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४९६।।

ॐ ह्रीं कृपावाक्यगुणाम्बुदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४९७।।

ॐ ह्रीं कृपोपदेशतत्परगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४९८।।

ॐ ह्रीं दयानिधिगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।४९९।।

ॐ ह्रीं दयादर्शिगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५००।।

पूर्णार्घ्य- तर्ज- यह नंदन वन.....

मानव का जनम, मिलना है कठिन,जब मिल ही गया कुछ कर जाना।
यदि कर्मों से छुटना चाहो, तो पूजन करने आ जाना।।
आर्हन्त्य महालक्ष्मी पाकर, जिनका प्रकाश फैला जग में।
ऐसे सन्मति की पूजा से, मनवांछित फल मिलता क्षण में।।
यदि समरस सुख पाना चाहो, तो प्रभु की शरण में आ जाना।
मानव का जनम.....।।१।।
संपूर्ण अनंत गुणों में गुण, बस एक ज्ञान महिमाशाली।
सब गुण का ज्ञान कराता यह, यह सूर्य सदृश गुणमणिमाली।।
केवलज्ञानी की पूजा कर, निज में केवलरवि प्रगटाना।।
मानव का जनम.....।।२।।

ॐ ह्रीं निष्किंचनगुणादि-दयादर्शिगुणपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्री महावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानबुद्ध्यर्द्धिविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५०१।।

ॐ ह्रीं मनःपर्ययबुद्ध्यर्द्धिविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५०२।।

ॐ ह्रीं अवधिज्ञानबुद्ध्यर्द्धिविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५०३।।

ॐ ह्रीं बीजबुद्ध्यर्द्धिप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५०४।।

ॐ ह्रीं कोष्ठबुद्ध्यर्द्धिप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।५०५।।

ॐ ह्रीं पदानुसारित्वबुद्ध्यर्द्धिप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५०६।।

ॐ ह्रीं संभिन्नश्रोतृत्वबुद्ध्यर्द्धिप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५०७।।

ॐ ह्रीं दूरास्वादनबुद्ध्यर्द्धिप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५०८।।

ॐ ह्रीं दूरस्पर्शनबुद्ध्यर्द्धिप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५०९।।

ॐ ह्रीं दूरदर्शनबुद्ध्यर्द्धिप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५१०।।

ॐ ह्रीं दूराघ्राणबुद्ध्यर्द्धिप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५११।।

ॐ ह्रीं दूरश्रवणत्वबुद्ध्यर्द्धिप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५१२।।

ॐ ह्रीं दशपूर्वित्वबुद्ध्यर्द्धिप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५१३।।

ॐ ह्रीं चतुर्दशपूर्वित्वबुद्ध्यर्द्धिप्रदायकाय श्री महावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५१४।।

ॐ ह्रीं अष्टांगमहानिमित्तकुशलत्वबुद्ध्यर्द्धिकप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५१५।।

ॐ ह्रीं प्रज्ञाश्रमणत्वबुद्धयर्द्धिप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५१६।।

ॐ ह्रीं प्रत्येकबुद्धबुद्ध्यर्द्धिप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।५१७।।

ॐ ह्रीं वादित्वबुद्ध्यर्द्धिप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५१८।।

ॐ ह्रीं जंघाचारणक्रियर्द्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५१९।।

ॐ ह्रीं श्रेणिचारणक्रियर्द्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।५२०।।

ॐ ह्रीं अग्निशिखाचारणक्रियर्द्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५२१।।

ॐ ह्रीं जलचारणक्रियर्द्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५२२।।

ॐ ह्रीं पत्रचारणक्रियर्द्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५२३।।

ॐ ह्रीं फलचारणक्रियर्द्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५२४।।

ॐ ह्रीं पुष्पचारणक्रियर्द्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५२५।।

ॐ ह्रीं बीजचारणक्रियद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।५२६।।

ॐ ह्रीं तंतुचारणक्रियर्द्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५२७।।

ॐ ह्रीं आकाशगामित्वक्रियर्द्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।५२८।।

ॐ ह्रीं अणिमाविक्रियर्द्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५२९।।

ॐ ह्रीं महिमाविक्रियर्द्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५३०।।

ॐ ह्रीं लघिमाविक्रियर्द्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५३१।।

ॐ ह्रीं गरिमाविक्रियर्द्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५३२।।

ॐ ह्रीं प्राप्तिविक्रियर्द्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५३३।।

ॐ ह्रीं प्राकाम्यविक्रियर्द्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५३४।।

ॐ ह्रीं ईशित्वविक्रियर्द्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५३५।।

ॐ ह्रीं वशित्वविक्रियर्द्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५३६।।

ॐ ह्रीं अप्रतिघातविक्रियर्द्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५३७।।

ॐ ह्रीं अन्तर्धानविक्रियर्द्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।५३८।।

ॐ ह्रीं कामरूपित्वविक्रियर्द्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५३९।।

ॐ ह्रीं उग्रोग्रतपःऋद्धिपरिणताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५४०।।

ॐ ह्रीं अवस्थितोग्रतपःऋद्धिपरिणताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५४१।।

ॐ ह्रीं दीप्ततपः ऋद्धिपरिणताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५४२।।

ॐ ह्रीं तप्ततपःऋद्धिस्वरूपाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५४३।।

ॐ ह्रीं महातपःऋद्धिस्वरूपाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५४४।।

ॐ ह्रीं घोरतपःऋद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५४५।।

ॐ ह्रीं घोरपराक्रमतपःऋद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५४६।।

ॐ ह्रीं घोरगुणब्रह्मचारित्वतपःऋद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५४७।।

ॐ ह्रीं मनोबलर्द्धिधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५४८।।

ॐ ह्रीं वचनबलर्द्धिधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५४९।।

ॐ ह्रीं कायबलर्द्धिधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५५०।।

ॐ ह्रीं आमर्शौषधिऋद्धिस्वरूपाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५५१।।

ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधिऋद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५५२।।

ॐ ह्रीं जल्लौषधिऋद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५५३।।

ॐ ह्रीं मलौषधिऋद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५५४।।

ॐ ह्रीं विडौषधिऋद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५५५।।

ॐ ह्रीं सर्वौषधिऋद्धिपरिणताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५५६।।

ॐ ह्रीं आस्याविषौषधिऋद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५५७।।

ॐ ह्रीं दृष्ट्याविषौषधिऋद्धिप्रदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५५८।।

ॐ ह्रीं क्षीरास्राविरसर्द्धिस्वरूपपरिणताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५५९।।

ॐ ह्रीं मध्वास्राविरसर्द्धिस्वरूपपरिणताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५६०।।

ॐ ह्रीं सर्पिरास्राविरसर्द्धिस्वरूपपरिणताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५६१।।

ॐ ह्रीं अमृतास्राविरसर्द्धिस्वरूपपरिणताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५६२।।

ॐ ह्रीं अक्षीणमहानसर्द्धिसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५६३।।

ॐ ह्रीं अक्षीणमहालयर्द्धिसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५६४।।

ॐ ह्रीं आचारांगश्रुतज्ञानविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५६५।।

ॐ ह्रीं सूत्रकृतांगश्रुतज्ञानविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५६६।।

ॐ ह्रीं स्थानांगश्रुतज्ञानविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५६७।।

ॐ ह्रीं समवायांगश्रुतज्ञानविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५६८।।

ॐ ह्रीं व्याख्याप्रज्ञप्ति-अंगश्रुतज्ञानविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५६९।।

ॐ ह्रीं ज्ञातृधर्मकथांगश्रुतज्ञानविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५७०।।

ॐ ह्रीं उपासकाध्ययनांगश्रुतज्ञानविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५७१।।

ॐ ह्रीं अंतकृत्दशांगश्रुतज्ञानविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५७२।।

ॐ ह्रीं अनुत्तरौपपादिकदशांगश्रुतज्ञानविधात्रे श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।।५७३।।

ॐ ह्रीं प्रश्नव्याकरणांगश्रुतज्ञानविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५७४।।

ॐ ह्रीं विपाकसूत्रांगश्रुतज्ञानविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५७५।।

ॐ ह्रीं उत्पादपूर्वश्रुतज्ञानविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५७६।।

ॐ ह्रीं अग्रायणीयपूर्वश्रुतज्ञानविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५७७।।

ॐ ह्रीं वीर्यानुप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।।५७८।।

ॐ ह्रीं अस्तिनास्तिप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५७९।।

ॐ ह्रीं ज्ञानप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५८०।।

ॐ ह्रीं सत्यप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५८१।।

ॐ ह्रीं आत्मप्रवादश्रुतज्ञानविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५८२।।

ॐ ह्रीं कर्मप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५८३।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानपूर्वश्रुतज्ञानविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५८४।।

ॐ ह्रीं विद्यानुप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५८५।।

ॐ ह्रीं कल्याणप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५८६।।

ॐ ह्रीं प्राणावायप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५८७।।

ॐ ह्रीं क्रियाविशालपूर्वश्रुतज्ञानविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५८८।।

ॐ ह्रीं लोकबिंदुसारपूर्वश्रुतज्ञानविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५८९।।

ॐ ह्रीं चिच्चैतन्यचिंतामणिस्वरूपाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५९०।।

ॐ ह्रीं चिच्चैतन्यकल्पवृक्षस्वरूपाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५९१।।

ॐ ह्रीं चिन्मयज्योतिःस्वरूपाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५९२।।

ॐ ह्रीं गणधरदेवादिस्वामिने महायोगीश्वरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५६३।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मनिर्मुक्तसाक्षात्सिद्धपदप्राप्ताय द्रव्यसिद्धगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५६४।।

ॐ ह्रीं परमौदारिकतैजसकार्मणत्रयदेहविरहिताय अदेहगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५६५।।

ॐ ह्रीं संसारमध्यपुनरागमनविरहिताय अपुनर्भवगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५६६।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमयीचेतनागुणविशिष्टाय ज्ञानैकचिद्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५६७।।

ॐ ह्रीं अन्यसंश्लेषरहितस्वात्मनिष्पन्नजीवमयाय जीवघनगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५६८।।

ॐ ह्रीं स्वात्मोपलब्धिरूपपदप्राप्ताय सिद्धनामसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अर्घ्यं....।।५६९।।

ॐ ह्रीं तनुवातवलयस्थितसिद्धशिलोपरिगमनस्वभावाय लोकाग्रगामुक-गुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।।६००।।

पूर्णार्घ्य- शंभुछंद -

महावीर प्रभू के मुख से खिरी, अनअक्षर दिव्यध्वनी भाषा।
बारहगण भव्यों को हितकर, परिणामी सर्वजगत् भाषा।।
गौतम गुरु ने जिनध्वनि सुनकर, बारह अंगों में रचना की।
उन महावीर के चरणों में, पूर्णार्घ्य समर्पण करूं अभी।।7।।

ॐ ह्रीं षट्शतगुणमंत्रसमन्विताय श्री महावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं..।
शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमहावीरजिनेंद्राय विश्वशांतिकराय सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः।

(सुगंधित पुष्प, लवंग या पीले चावल मिश्रित रत्नों से १०८ मंत्रों का जाप्य करें। तथा पूजा के अनन्तर इन मंत्रित रत्नों को श्रृद्धालुओं में वितरित कर दें।)

जयमाला

दोहा- पुण्यराशि औ पुण्यफल, तीर्थंकर भगवान।
तुम गुणमाला गाय के, बन जाऊं गुणवान्।।१।।

शेरछंद- जय जय श्री महावीर वीर सन्मती प्रभो!।
जय वर्द्धमान अन्तिम तीर्थेश जिन विभो!।।
जय जय अनंत सौख्य के भंडार आप हो।
जय जय अनंत गुणमणी सर्वस्व आप हो।।२।।
तनु भी पवित्र आपका सुद्रव्य कहाया।
शुभ ही सभी परमाणुओं से प्रकृति बनाया।
तुम देह के आकार वर्ण गंध आदि की।
पूजा करें वे धन्य मनुज जन्म धरें भी।।३।।
प्रभु देहरहित आप निराकार कहाए।
वर्णादि रहित नाथ ज्ञानदेह धराए।।
परिपूर्ण शुद्धबुद्ध सिद्ध परम आतमा।
मैं आपभक्ति से ही बनूं शुद्ध आतमा।।४।।
जो भव्य शक्ति से तुम्हें निजशीश नावते।
वे शिरोरोग नाश स्मृति शक्ति पावते।।
जो एकटक हो नेत्र से प्रभु आप को निरखें।
उन मोतिबिंदु आदि नेत्र व्याधियां नशे।।५।।
जो कान से अतिप्रीत से तुम वाणि को सुनें।
उन के समस्त कर्ण रोग भागते क्षण में।।
जो मुख से आपकी सदैव संस्तुती करें।
मुख मंद जिह्व तालु रोग शीघ्र परिहरें।।६।।
जो कंठ में प्रभु आपकी गुणमाल पहनते।
उनके समस्त कंठ ग्रीवा रोग विनशते।।
श्वासोच्छ्वास से जो आप मंत्र को जपते।
सब श्वास नासिकादि रोग उनके विनशते।।७।।

जो निज हृदय कमल में आप ध्यान करे हैं।
वे सर्व हृदय रोग आदि क्षण में हरे हैं।।
जो नाभिकमल में तुम्हें नित ध्यावते मुदा।
नश जातीं उनकी सर्व उदर व्याधियां व्यथा।।८।।
जो पग से जिन भवन में आके नृत्य करे हैं।
वे घुटने पाद रोग सर्व नष्ट करे हैं।।
पंचांग से प्रणाम करें आपको सदा।
उनके समस्त देह रोग क्षण में हों विदा।।९।।
जो आप भक्ति नदी में अवगाहना करें।
ज्वर रोग, कुष्ठ रक्तचाप रोग परिहरें।।
जो मन में आप के गुणों का स्मरण करें।
वे मानसिक व्यथा समस्त ही हरण करें।।१०।।
हे नाथ ! आप ही अपूर्व वैद्य जगत में।
तन रोग क्या भव रोग भी प्रभु नाशते क्षण में।।
ये तो कुछेक फल प्रभो ! तुम भक्ति किये से।
फल तो अचिन्त्य है न कोई कह सके उसे।।११।।
तुम भक्ति अकेली समस्त कर्म हर सके।
तुम भक्ति अकेली अनंतगुण भी भर सके।।
तुम भक्ति भक्त को स्वयं भगवान बनाती।
फिर कौन सी वो वस्तु जिसे ये न दिलाती।।१२।।
अतएव नाथ ! आप चरण की शरण लिया।
संपूर्ण व्यथा मेट दीजिये अरज किया।।
अन्यत्र नहीं जाऊं मैं ये ही परण किया।
बस 'ज्ञानमती' पूरिये धरना यहीं दिया।।१३।।

दोहा - प्रभो ! आप गुणरत्न को, गिनत न पावें पार।
तीन रत्न के हेतु मैं, नमूं अनंतों बार।।१४।।

ॐ ह्रीं षट्शतगुणमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय जयमाला

पूर्णार्घ्यं.....

शांतये शांतिधारा। दिव्यपुष्पांजलिः

गीताछंद- जो विश्वशांती महावीर, विधान भक्ती से करें।
सब आपदायें दूर कर, सर्वत्र सुखशान्ती करें।।
तीर्थेश प्रभु का मेरु पर, जन्माभिषेकोत्सव करें।
फिर स्वयं तीर्थंकर बनें, निज ज्ञानमति संपत्ति भरें।।

इत्याशीर्वादः।

बड़ी जयमाला

जय जय श्री महावीर भगवन्!, जय वर्द्धमान जयवीर प्रभो!
जय जय सन्मति अतिवीर प्रभो! जय जय महतीमहावीर विभो!
जय जय सिद्धार्थ तनय जिनवर, जय त्रिशलानंदन वीर प्रभो!
जय जय त्रिभुवन के चूड़ामणि, जय जगत्पिता महावीर प्रभो।।1।।

जय मोक्षमार्ग के नेता प्रभु, त्रिभुवन के हित उपदेष्टा हो।
जय कर्मशत्रुओं के भेत्ता, सब राग द्वेष के जेता हो।।
जय विश्व तत्त्व के ज्ञाता प्रभु, त्रिभुवन को युगपत् जान रहे।
जय जय जिनवर जय तीर्थंकर, जिनधर्म अनादि अनंत रहे।। २।।

जो कर्म शत्रु पर जय करते, वे ही " जिनवर " कहलाते हैं।
उन कथित धर्म 'जिनधर्म' कहा, इस आश्रित 'जैन'कहाते हैं।।
जिनधर्म शरण लें 'जिन' बनते, जिन से जिनधर्म प्रगट जानो।
जिनराज अनादी अनिधन हैं, जिनधर्म 'अनादिनिधन' मानो।।३।।

ज्यों बीज से वृक्ष बने जग में, औ वृक्ष से ही बीज बनते।
त्यों ही जिनवर से जैनधर्म, जिनधर्म से ही जिनवर बनते।।
यह परम्परा शाश्वत मानी, यह शाश्वत धर्म सौख्यकारी।
यह सार्वभौम जिनशासन है, इसकी महिमा जग में न्यारी।।४।।

जो तीर्थ चलाते 'तीर्थंकर",यह 'तीर्थ' धर्म ही माना है।
यह धर्म 'रत्नत्रय' मय माना, 'दशधर्मरूप' भी माना है।।
यह धर्म 'अहिंसा परमधर्म', 'वस्तू स्वभाव' भी कहते हैं।
यह चउविध 'धर्मतीर्थ' उत्तम, इससे भव वारिधि तरते हैं।।५।।

जो भवदधि से तारे सबको, सब जन को पूर्ण पवित्र करे।
सब कर्म मैल को धो करके, आत्मा को पावन शुद्ध करे।।
बस वही तीर्थ सच्चा जग में, इसके कर्ता 'तीर्थंकर' हैं।
इनके आश्रय से सब भविजन, भववारिधि तिरते सुखकर हैं।।६।।

पुरुरवा भील को सागरसेन, महामुनि से जब धर्म मिला।
तब स्वर्ग प्राप्त कर ऋषभदेव का, पौत्र 'मरीची' हुआ भला।।
प्रभु सह दीक्षा ले मुनी बना, फिर भी शिवपथ से भटक गया।

तब असंख्यात वर्षों तक लाख, चौरासियोनि में अटक गया।।७।।
जब सिंहयोनि में भी मुनिवर से, जैनधर्म को ग्रहण किया।
दश भव तक देव मनुज योनी, फिर तीर्थंकर पद प्राप्त किया।।
इस भरतक्षेत्र के विदेह देश में, कुंडपुरी जगवंद्य हुई।
नृपवर सिद्धार्थ भी धन्य हुए, त्रिशला रानी सुरवंद्य हुईं।।८।।
गर्भागम के छह माह पूर्व से, रत्नवृष्टि धनपति ने की।
माता के आँगन में पन्द्रह, महिने तक प्रतिदिन धनवृष्टी।।
साढ़े बारह कोटी प्रमाण, नानाविध रत्नों की धारा।
पितु ने जन जन को बाँटा था, जिससे दारिद्र नशा सारा।।९।।
जब प्रभु ने जन्म लिया भूपर, इंद्रो के आसन डोल उठे।
ऐरावत हाथी पर चढ़कर, सौधर्म इन्द्र आ गए तबे।।
इस हाथी के बत्तिस मुख थे, प्रति मुख में आठ आठ दंता।
प्रति दाँतो पर एक एक सरोवर,जो जल भरे अती स्वच्छा।। १०।।
प्रति सरवर में एक्रेक कमलिनी, कमलिनियों में बत्तिस दल थे।
प्रति दल पर अप्सरियाँ नर्तन, करती थीं भक्तिभाव भर सें।।
अप्सरियाँ सत्ताईस करोड़, नर्तन करतीं जन्मोत्सव में।
इंद्रों का वैभव अतुलित था,प्रभु का जन्माभिषेकविधि में।११।।
सुरपति जिनशिशु को ले करके, ऐरावत हाथी पर चढ़कर।
ले गए सुमेरू पर्वत पर, जहाँ पांडुक शिला बनी सुन्दर।।
वहाँ एक हजार आठ महाकुंभो से प्रभु का अभिषेक किया।
प्रभु के मस्तक पर बड़े बड़े, कुंभों के जल से न्हवन किया।।१२।।
प्रभु जन्मकल्याणक का सीधा, संबंध सुमेरू पर्वत से।
महावीर विधान का मंडल सुमेरू, पर्वत है इस हेतू से।।
तेईसों तीर्थंकर के प्रथम - आहार में पंचाश्चर्य हुए।
पर महावीर के सब आहारों, में ही पंचाश्चर्य हुए।। १३।।
पंचाश्चर्यों में पुष्पादिक - सह रत्नवृष्टि हुई अधिकाधिक।
साढ़े बारह करोड़ उत्तम, कम से कम लाख सार्द्ध द्वादश।।
जब जिनवर श्रीविहार करते, तब धनकुबेर कहता मुद से।
आवो आवो सब भव्यजनों!,धन प्राप्त करो इच्छितरुचि से।।१४।।

प्रभु के आगे आगे रत्नों - को बरसा कर सब को तर्पें।
यह महिमा है धन त्यागी की, आकिंचन प्रभु भी सब कुछ दें।।
पंद्रह महिने तक रत्नवृष्टि, प्रत्येक आहार में रत्नवृष्टि।
केवली विहार में रत्नवृष्टि, नवनिधि देतीं सब ऋद्धि सिद्धि।।१५।।
इस हेतू मैंने इस विधान में, रत्न चढ़ाना इष्ट किया।
रत्नों से मंत्रों को जपकर, सब भक्तों को संतुष्ट किया।।
प्रभु महावीर को जन्म लिए, पच्चीस सौ निन्यानवे वर्ष हुए।
छब्बीस सौवाँ यह जन्म महोत्सव, आया है अति हर्ष लिए।।१६।।
इस हेतू मैंने छब्बीस सौ, मंत्रों के अर्घ्य बनाए हैं।
प्रभु के चरणों में श्रद्धा से, भक्ती के रत्न चढ़ाए हैं।।
तीर्थंकर प्रभु के छ्यालिस गुण, जो मुख्यरूप से माने हैं।
फिर भी अनंतगुण हैं उनमें, ये शास्त्रकथित मुनि माने हैं।।१७।।
मलरहित पसीनारहित क्षीर - सम रुधिर रूप अतिशय सुन्दर।
उत्तम संहनन श्रेष्ठ आकृति, शक्ती अनंत सुरभित तनुधर।।
इक सहस आठ लक्षणधारी, प्रियहित वचनामृत मन हरते।
दस अतिशय जन्म समय से ही, तीर्थंकर के अद्भुत प्रगटे।।१८।।
चउ सौ कासों तक हो सुभिक्ष, आकाश गमन नहिं प्राणीवध।
नहिं भोजन नहिं उपसर्ग तुम्हें, सब विद्या के ईश्वर चउमुख।।
नहिं छाया नहिं टिमकार नेत्र, नखकेश नहीं बढ़ते प्रभु के।
घाती के क्षय से दश अतिशय, केवलज्ञानी प्रभु के प्रगटे।।१९।।
वर अर्धमागधी भाषा हो, आपस में मैत्री भाव धरें।
सब ऋतु के फल अरु फूल खिलें, भू रत्नमयी सौन्दर्य धरें।।
सुरभित अनुकूल हवा चलती, सब जन परमानंदित होते।
वायूकुमार सौगंध्य वायु से, भू को धूलि रहित करते।। २०।।
गंधोदक वर्षा मेघदेव, करते हरियाले खेत खिलें।
प्रभु के विहार में स्वर्ण कमल, सौगंधित जिनपद तले खिलें।।
ऋतु शरदसदृश आकाश विमल, अतिस्वच्छ दिशाएँ शोभ रहीं।
सुरपति आज्ञा से देव परस्पर - आह्वनन कर रहें सही।।२१।।
यक्षेन्द्रों के मस्तक ऊपर, वर धर्मचक्र अतिशय चमके।

महावीर प्रभू के आगे आगे, हजार आरों से चमके।।
तरुवर अशोक सिंहासन छत्रत्रय भामंडल सुरदुंदुभि।
चौंसठ चामर सुरपुष्पवृष्टि, दिव्यध्वनि फैले योजन तक।।२२।।
देवोपनीत चौदह अतिशय, अठ प्रातिहार्य महिमाशाली।
दर्शन व ज्ञान सुख वीर्य चार, आनन्त्य चतुष्टय गुणशाली।।
ये छ्यालिस गुण महावीर प्रभू के, घाती क्षय से हुए अहो !
जब सिद्ध हुए अठकर्म नाश, उत्कृष्ट आठगुण लिए अहो!।२३।
इस विश्वशांति महावीर विधान में, नव पूजाएँ सुन्दर हैं।
पहली पूजा नंतर मंडल - पूजा आठों में अर्घ्य कहें।।
सौ मंत्र पुनः दो सौ दो सौ, फिर त्रयशत त्रयशत चउशत हैं।
फिर पाँच शतक छहशतक मंत्र - के अर्घ्य महापूजाएँ हैं।।२४।।
पूजा प्रत्येक में विश्वशांति - कारी महावीर मंत्र उत्तम।
इनके जपने से सर्व विश्व में, सुख शांती होगी उत्तम।।
सम्यग्दर्शन सुज्ञान चरित ये, तीन रत्न सर्वोत्तम हैं।
बस तीन रत्न के हेतु नाथ !, मेरा सर्वस्व समर्पण है।।२५।।
व्यवहार रत्नत्रय को पाकर, निश्चय रत्नत्रय प्राप्त करूँ।
निश्चयनय से निज को ध्याकर, निजआत्मसुधारस पान करूँ।।
चिंतित फलदाता चिंतामणि, वांछित फलदाता कल्पतरू।
कैवल्य "ज्ञानमति" से उत्तम, परमानंदामृत पान करूँ।।२६।।

दोहा - गुण रत्नाकर वीर प्रभु, नमूं नमूं नतमाथ।
तीन रत्न देकर प्रभो ! मुझ को करो सनाथ।। २७।।

ॐ ह्रीं षड्विंशतिशतकमंत्रसमन्विताय श्री महावीरजिनेंद्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं.....

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः

गीताछंद- जो विश्वशान्ती महावीर, विधान भक्ती से करें।
सब आपदाएं दूर कर, सर्वत्र सुख शांती भरें।।
तीर्थेश प्रभु का मेरु पर, जन्माभिषेकोत्सव करें।
फिर स्वयं तीर्थंकर बनें, निज 'ज्ञानमती' संपति भें।।१।।

इत्याशीर्वादः।

विश्वशान्ति महावीर विधान की प्रशस्ति

शंभु छन्द-
श्री ऋषभदेव को वन्दन कर, महावीर प्रभू के गुण गाऊँ।
तीर्थंकर प्रथम व अन्तिम के संग चौबीसों जिनवर ध्याऊँ।।
उन जिनवर के लघुनन्दन मुनिवर, के चरणों में सिर नाऊँ।
जिनवर कन्या सम सभी आर्यिका, माताओं में रम जाऊँ।।१।।

नहिं वर्तमान में जिनवर हैं, उनकी प्रतिकृति बस गुरुवर हैं।
महावीर प्रभू की परम्परा में, आज भी सच्चे मुनिवर हैं।।
उन मुनियों में बीसवीं सदी के, प्रथम शान्तिसागर गुरु थे।
उनके दर्शन जिसने पाए, हो गए धन्य वे सचमुच थे।।२।।

उन प्रथमाचार्य का दर्शन करने, वाली ज्ञानमती माता।
इस वर्तमान को दरशातीं, मानो वे हैं ब्राह्मी माता।।
कलियुग में क्वांरी कन्याओं के, त्यागमार्ग की जननी हैं।
धरती का वे गौरव हैं लेकिन, अवधप्रान्त में जन्मी हैं।।३।।

नगरी का नाम टिकैतनगर, जहाँ सन् उन्निस सौ चौंतिस में।
बाइस अक्टूबर शरदपूर्णिमा, सवा नौ बजे रात्री में।।
श्री छोटेलाल जैन श्रावक की, धर्मपत्नी मोहिनि जी ने।
पहली सन्तान को जन्म दिया, जिसे मैना नाम मिला घर में।। ४।।

इस जन्म में कुछ संस्कार, पूर्व जन्मों का कुछ उपहार मिला।
अल्पायू में असिधारा व्रत से, जीवन उपवन लया खिला।।
सन् उन्निस सौ बावन की शुभतिथि, शरदपूर्णिमा ही आई।
जब बालब्रह्मचारिणी एक, वैरागिन बनकर तुम आईं।। ५।।

उन्निस सौ त्रेपन चैत्र सुदी, एकम को तुम क्षुल्लिका बनीं।
श्रीमहावीरजी में दीक्षा ले, कहलाईं तुम वीरमती।।
फिर शांतिसागराचार्य गुरू की, आज्ञा शिरोधार्य करके।
श्री शान्तिसिन्धु के शिष्य वीरसागराचार्य ढिग जा करके।। ६।।

वैशाख कृष्ण दुतिया के शुभ दिन, सन् उन्निस सौ छप्पन में।
बन गईं आर्यिका ज्ञानमती, श्रीवीरसिन्धु से दीक्षा ले।।
वह राजस्थान प्रान्त की धन्य, धरा है माधोराजपुरा।
जहाँ से माता श्री ज्ञानमती का, पावन है इतिहास जुड़ा।। ७।।

उपसंहार

नरेन्द्रछंद - ऋषभदेव का तपकल्याणक, केवलज्ञान कल्याणक।
इनसे पूत प्रयाग तीर्थ यह, नूतन हुआ विनिर्मित।।
तीर्थंकर श्री ऋषभदेव की, तपःस्थली यह पावन।
आज हमारा संघ सहित हुआ, मंगल यहाँ आगमन।। १।।
वीर अब्द पच्चीस शतक, सत्ताइस पौष सुदी में।
षष्ठी तिथि दिन सिद्धियोग में, पूर्ण विधान किया मैं।।
ईस्वी सन् की नई सहस्राब्दी का प्रथम दिवस है।
एक जनवरी दो हजार एक, नूतन दिन अभिमत है।।२।।
प्रथमाचार्य शान्तिसागर गुरु, उनके प्रथम पट्टधर।
वीरसागराचार्य महामुनि, मेरे दीक्षा गुरुवर।।
विश्वशान्ति महावीर विधान, रचा मैंने भक्ती से।
गणिनी ज्ञानमती की रचना, अमर रहे धरती पर।। ३।।

इति मंगलं भूयात्।

गुरु से इक लघु शिक्षा पाकर, जीवन में सार्थक कर डाला।
निज नाम का ध्यान सदा रखना, इस गुरुआज्ञा को ही पाला।।
जिनआगम ग्रन्थों का अध्यन, अध्यापन केवल लक्ष्य बना।
बस इसीलिए श्री ज्ञानमती, माताजी का है नाम बड़ा।। ८।।
कितने ही शिष्य तथा शिष्याओं, को आगम निष्णात किया।
उनको आचार्य, मुनी एवं, आर्यिका का पद भी दिला दिया।।
मुनियों को भी अध्ययन कराकर, सदा नम्रता भाव रहा।
नहिं कभी गुरू से पढ़ा किन्तु, बस पढ़ा पढ़ाकर ज्ञान लहा।। ९।।
कातन्त्ररूपमाला संस्कृत, व्याकरण ज्ञान की नींव बनी।
फिर उसके ऊपर बनीं सैकड़ों, मंजिल आगम लेखन की।।
जिनसहस्रनाम के मंत्रों से, लेखनी शुरू हुई माता की।
सन् उन्निस सौ चौवन की वह कृति, सचमुच चमत्कारमय थी।। १०।।
फिर अध्यापन के संग संस्कृत, स्तुति रचनाक्रम बना रहा।
उन्निस सौ उन्हत्तर सत्तर में, इक न्यायग्रन्थ अनुवाद किया।।
है न्याय का वह सर्वोच्च ग्रन्थ, जिसे अष्टसहस्री कहते हैं।
उसके अनुवाद ने दिखा दिया, नारीशक्ती किसे कहते हैं।। ११।।
उस रचना से पहचान बनी, श्री ज्ञानमती माताजी की।
फिर जम्बूद्वीप की रचना से, हस्तिनापुरी की शान बनीं।।
इन्द्रध्वज, कपद्रुम आदिक, पूजा विधान जब रचे गए।
गणिनी माता श्री ज्ञानमती से, परिचित देश विदेश हुए।। १२।।
इनकी कर्मठता का सूरज , जो पूर्व दिशा में उदित हुआ।
उसने सम्पूर्ण धरातल तक, जाने का शुभ संकल्प लिया।।
बस इसीलिए तो आज जहाँ, देखो भक्ती की लहरें हैं।
हो रहे कहीं पूजा विधान, कहिं समवसरण की जय जय है।। १३।।
इक ज्ञानज्योति रथ चलवाया, दूजा फिर समवसरण आया।
ऐरावत हाथी ने पुभु का, जन्मोत्सव स्मृत करवाया।।
पहले तीर्थंकर ऋषभदेव से, सबको परिचित करवाया।
पुरुषार्थ प्रबल करके उनको, संसार क्षितिज तक पहुँचाया।। १४।।
दो सौ से अधिक हैं ग्रन्थ रचे, संस्कृत अरु हिन्दी भाषा में।
विद्वान, युवा, बालक सबके ही, योग्य अलग परिभाषा में।।
संस्कृत के टीका ग्रन्थों में, पूर्वाचार्यों की छवि देखी।
श्री नियमसार षट्खण्डागम में, मौलिक टीका है इनकी।। १५।।

है सृष्टि अनादि अनिधन इसका, अन्त कभी नहिं हो सकता।
केवल भरतैरावत क्षेत्रों, प्रलयकाल आया करता।।
पौराणिक जम्बूद्वीप के अन्दर, भरतक्षेत्र इक रचना है।
हम सब दुनियां वालों का समझो, जन्मक्षेत्र वह अपना है।। १६।।

है वर्तमान में यह दुनिया, छह महाद्वीप में बंटी हुई।
उसके इक हिस्से में ही है, भारत की दुनिया बसी हुई।।
सृष्टी परिवर्तन के क्रम में यहाँ, पंचमकाल का कलियुग है।
उस कलियुग में दरशाते साधू, साध्वी ही कुछ सतयुग हैं।।१७।।

महावीरप्रभू की स्मृति में, संवत्सर एक यहाँ चलता।
पच्चिस सौ सत्ताईस वर्ष, प्राचीन कथानक यह कहता।।
इस संवत् की तिथि पौष सुदी, छठ को विधान यह पूर्ण हुआ।
श्री ज्ञानमती माताजी ने, लिखकर इसको परिपूर्ण किया।। १८।।

व्यवहार में प्रचलित नई सहस्राब्दी के नव संवत्सर में।
महावीर प्रभू के छब्बिस सौवें, जन्मजयन्ती उत्सव में।।
सम्पूर्ण राष्ट्र के अन्दर फैले, महावीर की गुण गाथा।
इस हेतू ही यह विश्वशांति महावीर विधान बना अच्छा।। १९।।

छब्बिस सौ मंत्रों को रचकर, इसका अतिशय दरशाया है।
प्रत्येक दृष्टि से महावीर का, जीवन इसमें आया है।।
एकेक मंत्र में सार भरा, सन्मति का गुण भंडार भरा।
उनके पहले पश्चात् के भी, तीर्थंकर का इतिहास भरा।। २०।।

छब्बिस सौ अर्घ्य मंत्र के संग, छब्बिस सौ रत्न चढ़े इसमें।
रत्नों के द्वारा जाप्यमंत्र कर, वितरण किए रत्न सबमें।।
कलिकाल में इक्कीसवीं सदी की, यह महान उपलब्धी है।
रत्नों से पूजा करने की यह, आई नई पद्धती है।। २१।।

प्राचीन कथानक मनोवती की, दर्शन कथा सुनी मैंने।
गजमोती चढ़ा प्रभू दर्शन, करने का नियम लिया उसने।।
अब उसी तरह पूजन में रत्न, चढ़ाने की यह प्रथा चली।
महावीर जयन्ती के प्रतीक में, रत्नमयी होगी धरती।। २२।।

इस युग के अन्तिम तीर्थंकर, महावीर भले ही कहलाते।
भावी भगवन्तों के कारण, नहिं अन्तिम श्रेणी में आते।।
महावीर तो पहले ऋषभदेव के, पौत्ररूप में जन्मे थे।
फिर क्रम क्रम से वे जीवन के, उत्थानशिखर पर पहुँचे थे।२३।

महावीर जयन्ती से पहले, हो चुका ऋषभप्रभु का उत्सव।
अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव, का आयोजन हुआ सफल।।
माताजी की प्रेरणा मिली, जिनधर्म का रहस्य बताना है।
चौबीसों तीर्थंकर भगवन्तों, का अस्तित्व दिखाना है।। २४।।

सन् दो हजार में उद्घाटित, उत्सव का हुआ समापन है।
श्री ऋषभदेव की तपस्थली, तीरथ का हुआ उद्घाटन है।।
निर्वाण महोत्सव वर्ष की चिर, उपलब्धी है यह भारत में।
भूले बिसरे तीरथ प्रयाग में, बना नया अक्षयवट है।। २५।।

इस नव तीरथ पर नए दिवस का, प्रथम दिवस वह स्वर्णिम था।
जब ज्ञानमती माताजी ने, इस कृति का किया समर्पण था।।
नववधू के मुख अवलोकन पर, जैसे कुछ भेंट उसे देते।
माताजी ने तीरथ पर पहली, भेंट चढ़ाई है वैसे।। २६।।

प्रभु चरणों में अर्पित उनका, उपहार जगत वरदान बना।
हम सबने वीर जयंती तक, उसे छपवाने का भाव किया।।
महावीर के गुण गाने में अब, महावीर विधान बना माध्यम।
सर्वत्र रचाया जाएगा, इसका सुन्दर मेरू मण्डल।। २७।।

जिस मेरु शिखर की पांडुशिला पर, प्रभु का जन्म न्हवन होता।
वृषभादि वीर तक चौबीसों, जिनवर का जन्मोत्सव होता।।
उस ही सुमेरु पर्वत को मंडल, का आकार मिला इसमें।
इसमें छब्बिस सौ अर्घ्य चढ़ा, वन्दन का भाव करो मन में।। २८।।

साक्षात् मेरुपर्वत का जब तक, दर्श न तुमको मिलता है।
तब तक विधान के द्वारा उसका, पुण्य लिया जा सकता है।।
हस्तिनापुरी में जम्बूद्वीप के, मध्य सुमेरूपर्वत है।
सोलह चैत्यालय सहित मेरु का, दर्शन वन्दन सुखकर है।। २९।।

मैंने आँखों से ज्ञानमती, माताजी का तप देखा है।
उनकी दृढ़ता उनका लेखन, इस युग के लिए अनोखा है।।
इनको गुरुरूप में पाकर के, मैंने निज भाग्य सराहा है।
इनसे निजजीवन में दृढ़ता का, भाव सदा अपनाया है।। ३०।।

श्री ज्ञानमती माताजी की, पहचान प्रमुख तुम यह जानो।
आगम के प्रति दृढ़ता रखकर, करतीं प्रभावना ये मानो।।
भौतिक उपलब्धी के खातिर, सिद्धान्त कभी न छोड़ती हैं।
वात्सल्यमयी निजवाणी से, सबको निजसंग जोड़ती हैं।। ३१।।

निज ज्ञान के मोती चुन चुनकर, माता ने माला गूंथी है।
ये साहित्यिक कृतियाँ ही तो, इनके जीवन की पूंजी हैं।।
इस विश्वशांति महावीर विधान को, समझो अतिशयकारी है।
सारी धरती के लिए शांतिदाता अरु मंगलकारी है।। ३२।।

जब तक धरती पर मेरु रहे, महावीर प्रभू का नाम रहे।
तब तक जग में जयशील विश्वशांती महावीर विधान रहे।।
जब तक स्वर गूंजेंगे विधान, ण्वं मंत्रों के भारत में।
तब तक माता श्री ज्ञानमती का , नाम रहे अवनीतल में ।। ३३।।

मुझको महावीर विधान प्रशस्ती, लिखने का सौभाग्य मिला।
अपनी गुरु ज्ञानमती माता की, कृति पढ़ मुझ मन कमल खिला।।
सन् दो हजार इक में दस मार्च को, चैत्रवदी एकम तिथि में।
यह शुभ प्रशस्ति लिखकर अपना, मनवांछित पूर्ण किया मैंने।। ३४।।

जब तपस्थली पर माता की, दीक्षा क्षुल्लिका तिथी आई।
आष्टान्हिक पर्व समापन पर, भक्तों की भीड़ उमड़ आई।।
उत्साह सभी में होली का, माताजी के प्रति भक्ती का।
श्रीसिद्धचक्र मण्डल विधान, पूजन का भव्य समापन था।। ३५।।

कैलाशगुफा के ऋषभदेव एवं गुरुछाया में बैठी।
इस प्रशस्ति को लिखते लिखते, मन में भावों की लहर उठी।।
जयशील रहे यह विश्वशांति महावीर विधान सौख्यकारी।
जयशील रहें गणिनी माता श्री ज्ञानमती जगहितकारी।। ३६।।

पूजन करने व कराने वालों, का होवे कल्याण सदा।
धन धान्य समृद्धी वृद्धी हो, आरोग्य सहित हो स्वास्थ्य सदा।।
"चन्दनामती" अवनीतल के, अंचल पर प्रभु की कृपा रहे।
श्री ज्ञानमती माता का आशीर्वाद सभी पर बना रहे।। ३७।।

दोहा - वीर महति महावीर प्रभु, सन्मति दें सद्बुद्धि।
वर्धमान पदकमल में, होवे आत्मविशुद्धि।। ३८।।

भजन

रचयित्री - **प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती**

तर्ज - ऐसी लागी लगन .....

ऐसी लागी लगन, भक्ति में हो मगन, भक्त महावीर के गीत गाने लगे।
ले के श्रद्धा सुमन, करके प्रभु को नमन, विश्वशांती विधान रचाने लगे। ऐसी.।।

आया महावीर का जन्म उत्सव महा।
ज्ञानमति मात ने पाठ यह रच दिया।।
उनके उपदेश भक्तों को भाने लगे।। ऐसी.।।१।।

पूरे छब्बीस सौ मंत्र हैं पाठ में।
अर्घ्य अर्पण करें हम सभी ठाठ से।।
फिर तो अतिशय चमत्कार आने लगे। ऐसी.।।२।।

अर्घ्य के साथ सुन्दर रतन मिल गए।
फिर तो भव्यों के पुण्य कमल खिल गए।।
प्रभु के सम्मुख रतन सब चढ़ाने लगे। ऐसी.।३।।

हमने गजमोती की इक कथा थी सुनी।
पुनः अब रत्न चढ़ने की बातें सुनीं।।
हम तो माँज्ञानमति गुण को गाने लगे। ऐसी.।।४।।

जाप्य का मंत्र भी रत्नों से जप लिया।
रत्न अनमोल फिर सबको वितरित किया।।
रत्नवृष्टी से घर जगमगाने लगे।। ऐसी. ।। ५।।

जो करें इस विधान को श्रद्धा सहित।
वे लहें भुक्ति अरु मुक्ति के सुख सभी।।
"चन्दनामति" खुशी सब मनाने लगे। ऐसी.।।६।।

आरती

रचयित्री - **प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती**

तर्ज - तन डोले .....

जय वीर प्रभो, महावीर प्रभो की मंगल दीप प्रजाल के,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।
सुदी छट्ठ आषाढ़ प्रभू जी, त्रिशला के उर आए।
पन्द्रह महिने तक कुबेर ने,बहुत रत्न बरसाए।प्रभूजी.
कुण्डलपुर की, जनता हरषी, तेरे गर्भागम कल्याण पे,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।१।।
धन्य हुई कुण्डलपुर नगरी, जन्म जहाँ प्रभु लीना।
चैत्र सुदी तेरस के दिन वहाँ, जन्ममहोत्सव कीना।प्रभूजी.
काश्यप कुल के, भूषण तुम थे, बस एकमात्र अवतार थे,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।२।।
यौवन में दीक्षा धारण कर, राज-पाट सब त्यागा।
मगसिर असित मनोहर दशमी, मोहअंधेरा भागा।। प्रभजी..
बन बालयती, त्रैलोक्यपती, चल दिए मुक्ति के द्वार पे,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।३।।
शुक्ल दशमि वैशाख में तुमको, केवलज्ञान हुआ था।
गौतमगणधर ने आ तुमको, गुरु स्वीकार किया था प्रभूजी.
तब दिव्यध्वनि, सब जग ने सुनी, तुमको माना भगवान है,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।४।।
पावापुरि सरवर में आकर, योग निरोध किया था।
कार्तिकक्रृष्णअमावस के दिन, मोक्ष प्रवेश किया था।प्रभूजी.
निर्वाण हुआ, कल्याण हुआ, दीपोत्सव हुआ संसार में,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।५।।
वर्द्धमान, सन्मति, अतिवीरा, मुझको ऐसा वर दो।
कहें "चन्दनामती" हृदय में, ज्ञान की ज्योती भर दो।प्रभूजी.....
अतिशयकारी, मंगलकारी, ये कल्पवृक्ष भगवान हैं,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।६।।

भजन

रचयित्री - **प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती**

तर्ज - कभी राम बन के.....

मुनिराज बनके, जिनराज बनके, चले आए महावीर चले आए।।
कौशाम्बी की है एक घटना।
जहाँ बेड़ियों में जकड़ी थी चन्दना।।
उद्धार करने, संकट टालने उसके, चले आए महावीर चले आए।।१।।
देखा चन्दना ने जब महावीर को।
आंसू भरकर पुकारा उसने वीर को।।
आवाज सुनके,बन्धन काटने उसके,चले आए महावीर चले आए।।२।।
टूटी बेड़ियाँ चन्दना की तत्क्षण।
ज्यों ही हुआ महावीर का दर्शन।।
वीतराग बनके, उसका भाग्य बनके,चले आए महावीर चले आए।।३।।
श्रद्धा भक्ती से पड़गाया प्रभु को।
दिया चन्दना ने आहार प्रभु को।।
चमत्कार करने, आहार करने, चले आए महावीर चले आए।। ४।।
गणिनी ज्ञानमती माता ने बताया।
इसी इतिहास को दर्शाया।।
चिरस्थाई बनके, तीरथ धन्य करने,चले आए महावीर चले आए।।५।।
जिला कौशाम्बी में तीर्थ प्यारा।
"चन्दनामति" प्रभासगिरि न्यारा।।
उसकी कीर्ति बनके,नूतनतीर्थ बनके,चले आए महावीर चले आए।।६।।

भजन

रचयित्री - **प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती**

तर्ज - जहाँ डाल डाल पर.....

महावीर का छब्बिस सौवाँ जन्मजयन्ती उत्सव आया,
जिनधर्म का ध्वज लहराया-२।। टेक.।।
है पुण्यवान यह भारत भू, जहाँ तीर्थंकर जन्में हैं।
जिस धरती पर प्रभुमहावीर के,चिन्ह अभी मिलते हैं। चिन्ह...
उस कुण्डलपुर की पावन रज नमने का अवसर आया,
जिनधर्म का ध्वज लहराया - २।। १।।
महावीर के संग सिद्धार्थ और, त्रिशला का नाम जुड़ा है।
उन त्रिशलानन्दन से हम सबका,गौरव सदा बढ़ा है।गौरव.....
जग भर ने अहिंसा का पावन, सन्देश वीर से पाया,
जिनधर्म का ध्वज लहराया -२।। २।।
जीवन्त रहेगी युग युग तक, जिनशासन की ये निशानी।
सन्तों के संग में ज्ञानमती,माँ की पुरुषार्थ कहानी।। माँ की.....
जिनकी काया के रोम रोम में, जिनवर नाम समाया,
जिनधर्म का ध्वज लहराया -२।। ३।।
अब पुनः जरूरत है युग को, महावीर का युग बतलाना।
"चन्दना" उजड़ते भारत में,फिर से उपवन महकाना।। फिर..
महावीर से पहले ऋषभ महोत्सव मिलकर सबने मनाया,
जिनधर्म का ध्वज लहराया-२।। ४ ।।

भजन

रचयित्री - **प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती**

(गंधोदक की महिमा)

तर्ज- सुनो रे.....

सुनो रे सुनो गंधोदक की महिमा-२
जिनके न्हवन से पावन हुआ जल मन्दिर में है प्रतिमा।। सुनो रे.।। टेक।।
मैनासुन्दरि ने गंधोदक, से पतिकुष्ट मिटाया।
अन्य सात सौ राजाओं को, रोगमुक्त करवाया।।
गुरुमुख से जानी थी उसने, सिद्धचक्र की गरिमा।। सुनो रे.।।१।।
एक धनन्जय नामक कवि ने, गंधोदक का फल पाया।
अपने सुत पर चढ़े सर्प विष, को भी दूर भगाया।।
उन्होंने कर डाली तब, विषापहार स्तोत्र की रचना।। सुनो रे.।।२।।
ज्ञानमती माताजी ने, बाल्यावस्था में था दर्शाया।
अपने दो भ्राताओं को चेचक, महामारी से बचवाया।।
गन्धोदक ही लगाकर उन्होंने, बतलाई उसकी महिमा।। सुनो रे.।। ३।।
एक नहीं कितनी ही कथाएँ, ग्रन्थों में बतलाई हैं।
तन मन पावन करने की, महिमा इसमें दर्शाई है।।
इसीलिए "चन्दनामती" तुम, जानो उसकी महिमा।। सुनो रे.।। ४।।

भजन

रचयित्री - **प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती**

तर्ज - फूलों सा चेहरा तेरा.....

इस युग की माँ शारदे, तू धर्म की प्राण है।
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।

महावीर प्रभु के शासन में अब तक,
कोई भी नारी न ऐसी हुई।
साहित्य लेखन करने की शक्ती,
तुझमें ही जाने कैसे हुई।।
शास्त्र पुराणों में, भक्ति विधानों में, तेरा प्रथम नाम है विश्व में-२
कलियुग की माँ भारती, पूनो का तू चाँद है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।। इस युग०..।।१।।

तीर्थंकरों की जन्मभूमि का,
उत्थान माता तुमने किया।
हस्तिनापुरी में जम्बूद्वीप को,
साकार माता तुमने किया।।
तीर्थ अयोध्या की, कीर्ति प्रसारित की,मस्तकाभिषेक आदिनाथ का हुआ-२
तू जग की वागीश्वरी, धरती का सम्मान है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है,चारित्र परिधान है।। इस युग०...।।२।।

गणिनी शिरोमणि तेरी तपस्या,
का लाभ इस वसुधा को मिला।
चारित्र चक्री गुरु के सदृश ही,
"चन्दना" इक पुष्प जग में खिला।।
पुष्प महकता है, चाँद चमकता है, ज्ञानमती माता के रूप में-२
युग युग तू जीती रहे, हम सबके अरमान हैं,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है,चारित्र परिधान है।। इस युग०...।।३।।

पूज्य गणिनीप्रमुख
श्री ज्ञानमती माताजी की पूजन

रचयित्री- आर्यिका चन्दनामती

स्थापना

पूजन करो जी,
श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की पूजन करो जी।
जिनकी पूजन करने से अज्ञान तिमिर नश जाता है।
जिनकी दिव्य देशना से शुभ ज्ञान हृदय वश जाता है।।
उनके श्री चरणों में आह्वानन स्थापन करते हैं।
सन्निधिकरण विधीपूर्वक पुष्पांजलि अर्पित करते हैं।।

पुष्पांजलि.....

पूजन करो जी,
श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की पूजन करो जी।।१।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीरकणं।

अष्टक

ज्ञानमती जी नाम तुम्हारा, ज्ञान सरित अवगाहन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।
मुझ अज्ञानी ने मां जब से, तेरी छाया पाई है।
तब से दुनियां की कोई छवि मुझको लुभा न पाई है।।
ज्ञानामृत जल पीने हेतू, तव पद में मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।१।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्रीज्ञानमतीमात्रे जनमजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन और सुगंधित गंधों, की वसुधा पर कमी नहीं।
लेकिन तेरी ज्ञान सुगन्धी, से सुरभित है आज मही।।
उसी ज्ञान की सौरभ लेने को, आतुर मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।२।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्रीज्ञानमतीमात्रे संसारतापविनाशनाय चंदनं

जग के नश्वर वैभव से, मैंने शाश्वत सुख था चाहा।
पर तेरे उपदेशों से, वैराग्य हृदय मेरे भाया।।
अक्षय सुख के लिए मुझे, तेरा प्रवचन ही साधन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।३३।।

ॐ ह्री गणिनीप्रमुख श्रीज्ञानमतीमात्रे अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं ....

कामदेव ने निज बाणों से, जब युग को था ग्रसित किया।
तुमने अपनी कोमलकाया, लघुवय में ही तपा दिया।।
इसीलिए तव पद में आकर, शान्त हुआ मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।४।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्रीज्ञानमतीमात्रे कामबाणविनाशनाय पुष्पं...

मानव सुन्दर पकवानों से, अपनी क्षुधा मिटाते हैं।
लेकिन उनके द्वारा भी नहिं, भूख मिटा वे पाते हैं।।
आत्मा की संतृप्ति हेतु, तव वाणी मेरा भोजन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।५।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्रीज्ञानमतीमात्रे क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...

विद्युत के दीपों से जग ने, गृह अन्धेर मिटाया है।
ज्ञान का दीपक लेकर तुमने, अन्तरंग चमकाया है।।
घृत का दीपक लेकर माता, हम करते तव प्रणमन हैं।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।६।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्रीज्ञानमतीमात्रे मोहान्धकारविनाशनाय दीपं

कर्मों ने ही अब तक मुझको, यह भव भ्रमण कराया है।
तुमने उन कर्मों से लड़कर, त्याग मार्ग अपनाया है।।
धूप जलाकर तेरे सम्मुख, हम करते तव पूजन हैं।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।७।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्रीज्ञानमतीमात्रे अष्टकर्मदहनाय धूपं ....

कितने खट्टे मीठे फल को, मैंने अब तक खाया है।
तुमने मां जिनवाणी का, अनमोल ज्ञानफल खाया है।।
तव पूजन फल ज्ञाननिधी, मिल जावे यह मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।८।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्रीज्ञानमतीमात्रे मोक्षफलप्राप्तये फलं.....

पिच्छी कमण्डलुधारी माता, नमन तुम्हें हम करते हैं।
अष्टद्रव्य का थाल सजाकर, अर्घ्य समर्पण करते हैं।।
युग की पहली ज्ञानमती के, चरणों में अभिवन्दन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।९।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्रीज्ञानमतीमात्रे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ...

शेर छंद

हे मां तू ज्ञान गंग की पवित्र धार है।
तेरे समक्ष गंगा की लहरें बेकार हैं।।
उस धार की कुछ बूंदों से जलधार मैं करूं।
वह ज्ञान नीर मैं हृदय के पात्र में भरूं।।

शांतये शांतिधारा.....

स्याद्वाद अनेकान्त के उद्यान में माता।
बहुविध के पुष्प खिले तेरे ज्ञान में माता।।
कतिपय उन्हीं पुष्पों से मैं पुष्पांजली करूं।
उन ज्ञानवाटिका में ज्ञान की कली बनूँ।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्.....

जयमाला

दोहा - ज्ञानमती को नित नमूँ, ज्ञान कली खिल जाय।
ज्ञानज्योति की चमक में, जीवन मम मिल जाय।।

धुन - नागिन - मेरा मन डोले.....

हे बालसती, मां ज्ञानमती, हम आए तेरे द्वारे पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।
शरद पूर्णिमा दिन था सुन्दर, तुम धरती पर आईं।
उन्निस सौ चौंतिस सन् माता, मोहिनी जी हर्षाईं।। माता.....
थे पिता धन्य, नगरी भी धन्य, मैना के इस अवतार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।१।।

बाल्यकाल से ही मैना के, मन वैराग्य समाया।
तोड़ जगत के बन्धन सारे, छोड़ी ममता माया।। माता.....
गुरु संग मिला, अवलम्ब मिला, पग बढ़े मुक्ति के द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।२।।
शान्तिसिन्धु की प्रथम शिष्यता, वीर सिन्धु ने पाई।
उनकी शिष्या ज्ञानमती जी ने, ज्ञान की ज्योति जलाई।।माता...
शिवरागी की, वैरागी की, ले दीप सुमन का थाल रे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।३।।
माता तुम आशीर्वाद से, जम्बूद्वीप बना है।
हस्तिनापुर की पुण्यधरा पर, कैसा अलख जगा है।। माता.....
ज्ञानज्योति चली, जगभ्रमण करी, तेरे ही ज्ञान आधार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।४।।
तीर्थ अयोध्या, मांगीतुंगी , का उद्धार कराया।
फिर प्रयाग में ऋषभदेव का, नूतन तीर्थ बनाया।।माता.....
प्रभु समवसरण, रथ हुआ भ्रमण, प्रभु ऋषभदेव के नाम का,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।५।।
यथा नाम गुण भी हैं वैसे, तुम हो ज्ञान की दाता।
तुम चरणों में आकर के हर, जनमानस हर्षाता।। माता.....
साहित्य सृजन, श्रुत में ही रमण, कर चलीं स्वात्म विश्राम पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।६।।
गणिनी माता के चरणों में, यही याचना करते।
कहे "चन्दनामती" ज्ञान की, सरिता मुझमें भर दे।। माता....
ज्ञानदाता की, जगमाता की, वन्दना करूं शतबार मैं,
शुभ अर्घ्यं संजोकर लाए हैं।।७।।

दोहा

लोहे को सोना करे, पारस जग विख्यात।
तुम जग को पारस करो, स्वयं ज्ञानमति मात।।८।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्रीज्ञानमतीमात्रे जयमाला पूर्णार्घ्यं .....

ब्राह्मी माता के सदृश, ज्ञानमती जी मात।
सदी बीसवीं की प्रथम, क्वांरी कन्या आप।।

इत्याशीर्वादः

छब्बीस सौ मत्रों के अन्तर्गत

पूजा नं : २ के सौ मंत्रों के अर्थ

सम्यग्दर्शन की शुद्धि को प्राप्त कराने वाले, 'दर्शनविशुद्धि भावना' के बल से तीर्थंकर पद को प्राप्त श्री महावीर स्वामी को अर्ध्य समर्पित करता हूँ.....।।१।।

चार प्रकार के विनय गुण प्राप्त कराने में समर्थ, 'विनय संपन्नता भावना' के बल से तीर्थंकर पद को प्राप्त श्री महावीर स्वामी को अर्ध्यं चढ़ाता हूँ.....।।२।।

निरतिचार व्रत शीलादि के पालन करने की बुद्धि को देने वाली, 'शीलव्रतेष्वनतिचारभावना' के बल से तीर्थंकर पद को प्राप्त.....।।३।।

हमेशा ज्ञानाभ्यास करने में समर्थ, 'अक्षीक्ष्णज्ञानोपयोग' भावना के बल से तीर्थंकर पद प्राप्त.....।।४।।

संसार, शरीर और भोगों से वैराग्य करने की बुद्धि को देने वाली 'संवेगभावना' के बल से तीर्थंकर पद प्राप्त.....।।५।।

रत्नत्रयधारण करने की बुद्धि करने में समर्थ, 'शक्तितस्त्याग भावना' के बल से तीर्थंकर पद प्राप्त.....।।६।।

अनेक प्रकार के तपश्चरण करने वाली शक्ति को देने वाले, 'शक्तितस्तपो भावना' के बल से तीर्थंकर पद प्राप्त.....।।७।।

धर्म्य - शुक्ल ध्यान में लीन ऐसे साधुगणों की भक्ति करने की शक्ति को प्राप्त कराने वाले, 'साधुसमाधि भावना' के बल से तीर्थंकर पद प्राप्त.....।।८।।

गुरुओं की सेवा करने की शक्ति को प्रदान करने वाले, 'वैय्या वृत्यकरण भावना' के बल से तीर्थंकर पद प्राप्त.....।।९।।

मनोवांछित फल देने में समर्थ, 'अर्हद्भक्तिभावना' के बल से तीर्थंकर पद प्राप्त.....।।१०।।

सम्यक् चारित्र को धारण करने की शक्ति को देने में समर्थ, 'आचार्य-भक्ति भावना' के बल से तीर्थंकर पद प्राप्त....।।११।।

श्रुतज्ञान को पूर्ण करने में समर्थ, 'बहुश्रुत भक्ति भावना' के बल से तीर्थंकर पद प्राप्त.....१२।।

चतुर्विध संघ के प्रति भक्तिभावना को वृद्धिगंत करने वाली, 'प्रवचन भक्ति भावना' के बल से तीर्थंकर पद प्राप्त.....।।१३।।

छह आवश्यक क्रियाओं को करने की शक्ति प्रदान करने वाली, 'आवश्यक-अपरिहाणि भावना' के बल से तीर्थंकर पद प्राप्त.....।।१४।।

जिन धर्म की प्रभावना करने की बुद्धि को वृद्धिंगत करने वाली, 'मार्ग प्रभावना' के बल से तीर्थंकर पद प्राप्त.....।।१५।।

सहधर्मियों के प्रति वात्सल्य बुद्धि को करने में समर्थ, 'प्रवचन-वत्सलत्व भावना' के बल से तीर्थंकर पद प्राप्त.....।।१६।।

तीनों लोकों में उत्तम पद को धारण करने वाले ऐसे पुत्र जन्म के फल की सूचना देने वाले, माता को 'ऐरावत हाथी' रूप शुभ स्वप्न को दिखलाने वाले श्री महावीर स्वामी को अर्घ्यं समर्पित करता हूँ.....।।१७।।

संपूर्ण लोक में ज्येष्ठ पद के धारण करने से पुत्र जन्म की सूचना देने वाले, माता को 'उत्तम बैल' शुभ स्वप्न दिखलाने वाले श्री महावीर को.....।।१८।।

अनन्तबलशाली पुत्र जन्म के फल को सूचित करने वाले माता को 'सिंह' शुभ स्वप्न प्रदर्शित करने वाले श्री महावीर स्वामी को.....।।१९।।

सद्धर्म तीर्थं को प्रवर्तित करने वाले ऐसे पुत्र जन्म के फल के सूचक माता को 'मालायुक्त' शुभ स्वप्न दिखाने वाले श्री महावीर.....।।२०।।

इंद्रों द्वारा सुमेरुपर्वत पर जन्माभिषेक प्राप्तकारी पुत्र जन्म के फल को सूचित करने वाले 'माता को हाथी द्वारा अभिषेक प्राप्त 'लक्ष्मी' शुभ स्वप्न दिखाने वाले श्रीमहावीर.....।।२१।।

सर्वजनों के लिए आल्हादनकारी पुत्र जन्म की सूचना देने वाले माता को 'पूर्ण चन्द्र' शुभ स्वप्न दिखाने वाले श्री महावीर.....।।२२।।

तेजस्वी कांति धारक पुत्र जन्म के फल को सूचित करने वाले, माता को 'उगते हुये सूर्य' शुभ स्वप्न को प्रदर्शित करने वाले श्री.....।।२३।।

नवनिधियों के स्वामी ऐसे पुत्र जन्म के फल को सूचित करने वाले माता को 'कुंभयुगल' शुभ स्वप्न प्रदर्शित करने वाले श्री .....।।२४।।

अतिशय सौख्य को धारण करने वाले ऐसे पुत्र जन्म के फल की सूचना देने वाले माता को 'मछली युगल' शुभ स्वप्न प्रदर्शक श्री महावीर.....।।२५।।

एक हजार आठ लक्षणों के धारी पुत्र जन्म के फल की सूचना देने वाले माता को 'सुंदर सरोवर' शुभ स्वप्न दिखाने वाले श्री.....।।२६।।

केवलज्ञान को प्राप्त करने वाले ऐसे पुत्र जन्म के सूचक माता को 'लहराते हुये समुद्र' शुभ स्वप्न दिखाने वाले श्री.....।।२७।।

जगद् गुरु के साम्राज्य को प्राप्त करने वाले ऐसे पुत्र जन्म के फल की सूचना देने वाले, माता को 'श्रेष्ठ सिंहासन' शुभ स्वप्न के प्रदर्शक श्री महावीर.....।।२८।।

स्वर्ग से अवतार लेने वाले पुत्र जन्म के फल के सूचक 'देवविमान' शुभ स्वप्न को दिखाने वाले श्री महावीर.....।।२९।।

अवधिज्ञान रूपी नेत्र के धारक पुत्र जन्म की सूचना देने वाले माता को 'धरणेन्द्र भवन' शुभ स्वप्न दिखाने वाले श्री महावीर.....।।३०।।

गुणों का खानस्वरूप पुत्र जन्म के फल की सूचना देने वाले माता को 'चमकती हुई रत्नो की राशि' शुभ स्वप्न दिखाने वाले श्री.....।।३१।।

कर्मरूपी ईधन को जलाने में कुशल पुत्र जन्म की सूचना देने वाले, माता को 'निर्धूम अग्नि' शुभ स्वप्न प्रदर्शित करने वाले श्री.....।।३२।।

शारीरिक स्वास्थ्य प्रदायक, 'पसीनारहित' जन्म से ही सहज अतिशय गुण से मंडित श्रीमहावीर भगवान को अर्घ्य चढ़ाता हूँ.....।।३३।।

आत्मा की विशुद्धि को देने वाले 'मल रहित' सहज अतिशय गुण से मंडित श्री.....।।३४।।

सुख-दुःख में परमसमतारस भाव के दाता 'दूध के समान श्वेत-रुधिर' स्वरूप सहज अतिशय गुण से मंडित श्री.....।।३५।।

निजात्मा की शक्ति को बढ़ाने के लिए, 'वज्रवृषभनारच संहनन' स्वरूप सहज अतिशय गुण से मंडित श्री.....।।३६।।

स्वात्म सौख्य के दाता, 'समचतुरस्र संस्थान' नाम के सहज अतिशय गुण से मंडित श्री महावीर.....।।३७।।

इन्द्र, नरेन्द्र, धरणेन्द्र और विद्याधर इंद्र, इन सबके नेत्र और मन को हरण करने वाले ऐसे 'सौंदर्य' नाम के सहज अतिशय गुण से मंडित श्री महावीर.....।।३८।।

अपनी आत्मा के यश को विस्तृत करने के लिये, 'सौगंध्य' नाम के सहज अतिशय गुण से मंडित श्री.....।।३९।।

अशुभ कर्मों को दूर करने के लिये, 'एक हजार आठ शुभ लक्षण' नाम के सहज जातिशय गुण से मंडित श्री.....।।४०।।

अपनी आत्मा की शक्ति को बढ़ाने के लिये, 'अनंत बलवीर्य' नाम के सहज अतिशय गुण से मंडित श्री.....।।४१।।

कंठ को अकुंठित करने स्वरूप फल को देने वाले, 'प्रियहित-मधुर वचन' नाम के सहज अतिशय गुण से मंडित श्री.....।।४२।।

सर्वत्र क्षेम करने वाले 'चार सौ कोशों तक सुभिक्षता' नाम के बल ज्ञान के प्रकट होने पर होने वाले अतिशय गुण से मंडित श्री.....।।४३।।

उत्तम गति के प्रदाता, 'आकाश में गमन करना' इस केवल-ज्ञानातिशयगुण से मंडित श्री महावीर.....।।४४।।

दया गुण को विकसित करने के लिये, 'प्राणिवधाभाव' ग्रास का आहार नहीं लेना ऐसे के केवलज्ञानातिशय गुण से मंडित श्री.....।।४६।।

सर्व उपद्रव के निवारण में समर्थ 'उपसर्गाभाव' नाम के केवलज्ञानातिशय गुण से मंडित श्री महावीर.....।।४७।।

सर्वजन के मन का हरण करने वाले, 'चतुर्मुखत्व' नाम के केवलज्ञानातिशय गुण से मंडित श्री महावीर.....।।४८।।

भगवान की छत्र छाया को प्राप्त करने वाले, 'छायारहित' केवलज्ञानातिशय गुण से मंडित श्री महावीर.....।।४९।।

ज्ञाननेत्र को प्रदान करने वाले, नेत्रों के पलक टिमकार रहित केवल ज्ञानातिशय गुण से मंडित श्री महावीर.....!।५०।।

स्वात्मतत्त्व के ज्ञान को प्राप्त कराने वाले 'सर्व विद्या के ईश्वरत्व' नाम के केवलज्ञानातिशय गुण से विभूषित श्री.....।।५१।।

सर्वजन समूह को अभयदान देने वाले 'नखकेश वृद्धि रहित' केवलज्ञानातिशय गुण से विभूषित श्री महावीर.....।।५२

श्रुतज्ञान की प्राप्ति करने वाले 'अक्षर-अनक्षरात्मक सर्वभाषामय दिव्यध्वनि' रूप केवल ज्ञानातिशय गुण से विभूषित श्री.....।।५३।।

सर्वजन के मनकमल को विकसित करने वाले, 'सर्वऋतु के फल-फूल आदि से शोभित वृक्षों के परिणाम रूप' देवों द्वारा कृत अतिशय गुण से विभूषित श्री.....।।५४।।

उष्ण-पित्त आदि रोग को निवारण करने वाले, 'वायु कुमार के द्वारा धूलि-कांटे आदि रूप' देवों द्वारा कृत अतिशय गुण से विभूषित श्री महावीर.....।।५५।।

सर्वजन के विरोध को दूर करने वाले, 'सर्वजन मैत्री भाव' नामक देवों द्वारा कृत अतिशय गुण से विभूषित श्री.....५६।।

सर्वकष्ट को निवारण करने वाले 'दर्पणसदृश रत्नमयी पृथिवी स्वरूप' देवों द्वारा कृत अतिशय गुण से विभूषित श्री.....।।५७।।

रक्तपित्ति विस्फोटक फोड़े-फुंसी आदि नाना व्याधि निवारण करने वाले 'मेघकुमार कृत सुगंधित जलवृष्टि स्वरूप' देवों द्वारा कृत अतिशय गुण से विभूषित श्री.....।।५८।।

सर्वोत्तम फल प्रदान करने में समर्थ, 'फल के भार से झुके हुये धान्यों के खेत रूप' देवों द्वारा कृत अतिशय गुण से विभूषित श्री.....।।५९।।

परम सौख्य को देने वाले, सर्वजन में 'परमानंददायक' देवों द्वारा कृत अतिशय गुण से विभूषित श्री महावीर.....।।६०।।

प्रतिकूल जनों को दूर करने वाले, 'अनुकूल चलती हुई वायु स्वरूप' देवों द्वारा कृत अतिशय गुण से विभूषित श्री.....।।६१।।

स्वात्म सुधारस को प्रदान करने वाले, 'निर्मल जल से पूर्ण कुंये सरोवर आदि स्वरूप' देवों द्वारा कृत अतिशय गुण से विभूषित श्री महावीर.....।।६२।।

चारों दिशाओं में यश के विस्तारक, 'शरत्काल के समान निर्मल आकाश स्वरूप' देवों द्वारा कृत अतिशय गुण से विभूषित श्री.....।।६३।।

परम स्वास्थ्य को करने वाले, 'सर्वजन के रोग-शोक-बाधा से रहित' देवों द्वारा कृत अतिशय गुण से विभूषित श्री.....।।६४।।

सद्धर्म की बुद्धि को बढ़ाने वाले, 'यक्षेन्द्रों के मस्तक पर स्थित चार धर्मचक्र स्वरूप 'देवों द्वारा कृत अतिशय गुण से विभूषित श्री.....।।६५।।

चार गतियों के भ्रमण को निवारण करने में समर्थ, 'तीर्थंकर देव के चरण कमलों के नीचे स्वर्णकाल रचना स्वरूप', देवों द्वारा कृत अतिशय गुण से विभूषित श्री....६६।।

संपूर्ण शोक को दूर करने में समर्थ, 'अशोकवृक्ष' महा प्रातिहार्य गुण से मंडित श्री.....।।६७।।

त्रिभुवन सौख्य के लिये साधन स्वरूप, 'तीन छत्र' नाम के महाप्रातिहार्य गुण से मंडित श्री महावीर.....।।६८।।

सर्वजन से पूज्य पद को देने में समर्थ, 'सिंहासन' महाप्रातिहार्य गुण से मंडित श्री.....।।६९।।

असंख्य प्राणी गणों के ऊपर अनुग्रहकारी, 'द्वादशगण से वेष्टिते' नाम के महाप्रातिहार्य गुण से मंडित श्री.....।।७०।।

जिन धर्म की प्रभावना करने वाले 'देवदुंदुभि' महाप्रातिहार्य गुण से मंडित श्री.....।।७१।।

गुणों की सुगंधि को प्रसारित करने में समर्थ 'सुर पुष्पवृष्टि' महाप्रातिहार्य गुण से मंडित श्री महावीर.....।।७२।।

स्वात्मा की प्रभा को विस्तृत करने वाले, 'भामंडल' महाप्रातिहार्य गुण से मंडित श्री.....।।७३।।

सभी जन के मन को प्रिय लगने वाले, 'चौंसठ चँवर' महाप्रातिहार्य गुण से मंडित श्री.....।।७४।।

ज्ञानावरण कर्म के नष्ट करने रूप युक्ति प्रदान करने वाले, 'अनंत-ज्ञान' से विभूषित श्री महावीर.....।।७५।।

दर्शनिवारण कर्म के नष्ट करने के युक्ति को देने में समर्थ, 'अनंत दर्शन' गुण से विभूषित श्री महावीर.....।।७६।।

मोहनीय कर्म को नष्ट करने की बुद्धि को देने वाले, 'अनंतसौख्य' गुण से विभूषित श्री महावीर.....।।७७।।

अन्तराय कर्म के नष्ट करने की बुद्धि को देने वाले, ''अनंतवीर्य' गुण से विभूषित श्री.....।।७८।।

स्वात्मा में सतुष्टि को कराने वाले 'क्षुधा' महादोष से विरहित श्री महावीर स्वामी को मैं अर्ध्य चढ़ाता हूँ।।७९।।

संसार के संताप को दूर करने वाले 'तृषा' महादोष से विरहित श्री महावीर.....।।८०।।

सात भयों से रहित निर्दोष सम्यक्त्व को देने वाले 'भय' महादोष से विरहित श्री.....।।८१।।

क्षमाभाव के प्रदाता 'क्रोध' महादोष से रहित श्री.....।।८२।।

स्वात्मचिंतन बुद्धि के प्रदाता, 'चिंता' महादोष विरहित श्री.....।।८३।।

परमौदारिक दिव्य देह के प्रदाता, 'जरा' महादोष से विरहित श्री महावीर.....।।८४।।

सराग-वीतराग से सम्यक्त्व के प्रदाता, 'राग' महादोष से विरहित श्री.....।।८५।।

बहिरात्मा बुद्धि के निवारण कर्ता 'मोह' महादोष से विरहित श्री महावीर.....।।८६।।

नाना व्याधि को निवारण करने में समर्थ 'रोग' महादोष से विरहित श्री महावीर.....।।८७।।

यमराज को जीतने की बुद्धि प्रदान करने वाले 'मृत्यु' महादोष से विरहित श्री.....।।८८।।

शरीर श्रम को दूर करने की युक्ति देने वाले 'स्वेद' महादोष से विरहित श्री.....।।८९।।

परमाल्हादक सौख्य प्रदायक 'विषाद' महादोष विरहित श्री.....।।९०।।

आठ प्रकार के मद को दूर करने की बुद्धि के प्रदाता, 'मद' महादोष विरहित श्री.....।।९१।।

स्वात्मा में रमण करने की बुद्धि के प्रदाता 'रति' महादोष विरहित श्री.....।।९२।।

परमाश्चर्य स्वरूप सिद्धि पद को प्रदान करने में निमित्त भूत 'विस्मय' महादोष से विरहित श्री महावीर.....।।९३।।

मुक्तिपद के साधन में आलस्य को दूर करने वाले 'निद्रा' महादोष विरहित श्री.....।।९४।।

पुनः पुनः जन्म लेने को दूर करने में समर्थ 'जन्म' महादोष विरहित श्री.....।।९५।।

द्वेष बुद्धि को नष्ट करने की युक्ति देने वाले 'अरति' महादोष विरहित ही.....।।९६।।

सुमेरु पर्वत के ऊपर जन्माभिषेक के अनंतर इन्द्र द्वारा रखे गये 'बुद्धिमान' नाम से अलंकृत श्री महावीर.....।।९७।।

बाल्यकाल में ही संजय-विजय नाम के दो चारण भक्ति धारक महामुनियों की शंका आपको देखते ही दूर हो गई तभी उन्होंने 'सन्मति' नाम प्रदान किया ऐसे श्री महावीर स्वामी को मैं अर्ध्यं चढ़ाता हूँ।। ९८।।

देव बालकों के साथ खेलते समय 'संगम' नामक देव ने महाफण सहित भयंकर सर्प का रूप

---

१. तिलोयपण्णत्ति के आधार से।

लेकर वृक्ष को लपेट लिया आप उसके फण पर पैर रखकर उतर आये और उसके साथ क्रीड़ा करते रहे तब उसने 'महावीर' इस नाम से विभूषित किया ऐसे श्री.....।।९९।।

उज्जयिनी में अति मुक्तक वन में ध्यान लीन आप पर रुद्र ने घोर उपसर्ग किया किंतु आप विचलित नहीं हुये तब रुद्र ने -महादेव ने आपका 'महति महावीर' नाम रखा ऐसे श्री महावीर स्वामी को मैं अर्ध्य चढ़ाता हूँ।।१००।।

पूजा नं. ३ के दो सौ मंत्रों के अर्थ

अनेक भवों में विषम महाकष्टों को प्राप्त कराने में कारण ऐसे कर्म शत्रुओं को जीतने वाले 'जिन' नाम के धारक श्री महावीर स्वामी को मैं अर्ध्य चढ़ाता हूँ.....।।१।।

सभ्यग्दृष्टि से लेकर बारहवें गुण स्थान तक मनुष्य जिन हैं, उनके स्वामी जिनेंद्र कहलाते हैं ऐसे जिनेन्द्र पद को प्राप्त कराने में समर्थ 'जिनेंद्र' नाम के धारक श्री.....।।२।।

जिन सदृश महिमा को प्रदान करने वाले 'जिनराट्' नाम के धारक श्रीमहावीर.....।।३।।

जिनों में प्रधान पद को प्राप्त करनें में समर्थ 'जिन पृष्ठ' नाम के धारक श्री.....।।४।।

कर्म शत्रुओं को विध्वंस करने वाले 'जिनोत्तम, नाम के धारक श्री महावीर.....।।५।।

भक्तों के संसार भ्रमण के कारण कर्म शत्रुओं का मर्दन करने वाले 'जिनाधिप' नाम धारक श्री महावीर.....।।६।।

पूजकों को लिये जिन पद की लक्ष्मी को देने वाले 'जिनाधीश' नाम को प्राप्त श्री.....।।७।।

भव्यों के मोक्ष मार्ग में आने वाले विघ्नों को नष्ट करने में समर्थ 'जिनस्वामी' नाम को प्राप्त श्री महावीर.....।।८।।

भव्यों को कर्म शत्रुओं के नष्ट करने की शक्ति प्रदाता 'जिनेश्वर' नाम को प्राप्त श्री.....।।९।।

पूजकों के लिये सर्वसौख्य प्रदान करने में समर्थ 'जिननाथ' नाम को प्राप्त श्री.....।।१०।।

संपूर्ण जगत में पूज्य पद को देने वाले 'जिनपति' नाम को प्राप्त श्री महावीर.....।।११।।

अनंतानुबंधी आदि सम्यक्त्व विघाती सात प्रकृतियों के घात करने की 'शक्ति प्रदान करने वाले 'जिनराज' नाम से अलंकृत श्रीमहावीर.....।।१२।।

अप्रत्याख्यानावरण आदि कर्मों को नष्ट करने की शक्ति प्रदान करने वाले 'जिनप्रभु' नाम से विभूषित श्री.....।।१३।।

प्रत्याख्यानावरण आदि कर्मों को नष्ट करने की शक्ति प्रदान करने वाले 'जिनविभु' नाम से विभूषित श्री.....।।१४।।

संज्वलन क्रोधमान, माया, लोभ रूप चार कर्मों को निर्मूलन करने की शक्ति को देने वाले 'जिनविभु' नाम से मंडित श्री.....।।१५।।

हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद और नपुंसक वेद इन नव नोकषाय प्रकृतियों के विध्वंसन करने की शक्ति को देने वाले 'जिनभर्तृ' नाम से समन्वित श्री.....।।१६।।

संपूर्ण मोहनीय कर्म को नष्ट करने की शक्ति देने में समर्थ 'जिनाधिभू' नाम से अलंकृत श्री महावीर.....।।१७।।

मोक्षमार्ग को प्राप्त कराने में समर्थ 'जिननेता' नाम से समन्वित श्री महावीर.....।।१८।।

शिवपथ के प्रदर्शक 'जिनेशान' नाम से मंडित श्री.....।।१९।।

सम्यग्दृष्टि आदि भव्यों को मोक्षमार्ग के प्रदर्शक 'जिनेन' नाम से विभूषित श्री.....।।२०।।

भव्यजीवों को शरण देने वाले 'जिननायक' नाम से मंडित श्री महावीर.....।।२१।।

धर्मरूपी पर्वत को भेदन करने की शक्ति प्रदान करने वाले 'जिनेट्' नाम के धारक श्री.....।।२२।।

मतिज्ञानावरण आदि कर्मों को चूर्ण करने की शक्ति प्रदान करने वाले 'जिनपरिबृढ' नाम से अलंकृत श्री.....।।२३।।

श्रुतज्ञानावरण आदि कर्मों को विध्वंसन करने की शक्ति प्रदान करने वाले 'जिनदेव' नाम स अलंकृत श्री.....।।२४।।

अवधि ज्ञानावरण कर्म को निर्मूलन करने की शक्ति के प्रदाता 'जिनेशिता' नाम से विभूषित श्री महावीर.....।।२५।।

मनः पर्यय ज्ञानावरण कर्म को नष्ट करने की शक्ति को बढ़ाने वाले 'जिनाधिराज' नाम से विभूषित श्री.....।।२६।।

केवलज्ञानावरण कर्म विध्वंसन करने की शक्ति को बढ़ाने वाले 'जिनप' नाम से विभूषित श्री महावीर.....।।२७।।

ज्ञानावरण कर्म को चूर्ण करने की शक्ति के दाता 'जिनेशी' नाम स अलंकृत श्री.....।।२८।।

पूजकों की रक्षा करने में दक्ष 'जिनशासिता' नाम के धारक श्री महावीर.....।।२९।।

भक्तजनों को पालन करने में समर्थ 'जिनाधिनाथ' नाम को प्राप्त श्री महावीर.....।।३०।।

शरण में आये भव्यजनों के रक्षक 'जिनाधिपति' नाम को प्राप्त श्री महावीर.....।।३१।।

पूजा करने वालों को सब तरह से पालन करने वाले 'जिनपालक' नाम से सहित श्री.....।।३२।।

भक्तों को सद्वचनों से आल्हादित करने वाले 'जिनचंद्र' नाम के धारक श्री.....।।३३।।

भव्यजीवों के अज्ञानांधकार को नष्ट करने वाले 'जिनादित्य' नाम को प्राप्त श्री.....।।३४।।

स्तुति करने वालों के मोहांधकार को नष्ट करने वाले 'जिनार्क' नाम को प्राप्त श्री.....।।३५।।

तीन जगत में प्रधान पद के धारक 'जिनकुंजर' नाम से अलंकृत श्री महावीर स्वामी को.....३६।।

चन्द्रमा के समान कांति के प्रदाता 'जिनेंदु' नाम से विभूषित श्री महावीर स्वामी को.....।।३७।।

सत्यपथ के आचरण की शक्ति प्रदान करने वाले 'जिनधौरेय' नाम से मंडित श्री.....।।३८।।

मुक्तिपथ के प्रदर्शक 'जिनधुर्य' नाम से अलंकृत श्री.....।।३९।।

सर्वोकृष्ट मार्ग को दिखलाने वाले 'जिनोत्तर' नाम के धारक श्री महावीर.....।।४०।।

सर्वश्रेष्ठ गुणों के प्रदाता 'जिनवर्य' नाम से विभूषित श्री.....।।४१।।

भक्तों को सर्वोत्तम गुण प्रदान करने वाले 'जिनसिंह' नाम धारक श्री महावीर.....।।४२।।

सर्वजनता के लिये मुख्य धर्म के प्ररूपक 'जिनवर' नाम से अलंकृत श्री महावीर.....।।४३।।

जिन धर्म का उद्धार करने में समर्थ 'जिनोद्वह' नाम से विभूषित श्री महावीर.....।।४४।।

त्रिभुवन के श्रेष्ठपद को प्रदान करने वाले 'जिनऋषभ' नाम के धारक श्री महावीर.....।।४५।।

तीन भुवन के जीवों को उत्तम गुणों के दाता 'जिनवृष' नाम के धारक श्री महावीर.....।।४६।।

तीनों लोकों के जीवों में रत्न के समान पद को देने वाले 'जिनरत्न' नाम से अलंकृत श्री महावीर.....।।४७।।

भक्तजनों को पुत्र के समान पालन करने में समर्थ 'जिनोरस' नाम से विभूषित श्री.....।।४८।।

सर्वजन में ईश्वरत्व पद को देने वाले 'जिनेश' नाम से विभूषित श्री महावीर.....।।४९।।

तीनों जगत् में प्रधान पद के प्रदाता 'जिनशार्दूल' नाम से विभूषित श्री महावीर.....।।५०।।

कर्मशत्रु को जीतने में हेतु ऐसे मार्ग के दिखलाने वाले 'जिनाग्रय' नाम से विभूषित श्रीमहावीर स्वामी को मैं अर्ध्य चढ़ाता हूँ.....।।५१।।

सम्यग्दृष्टि से लेकर बारहवें गुण स्थान वर्ति जीवों तक सभी का नेतृत्व करने वाले 'जिनपुंगव' नाम से विभूषित श्री.....।।५२।।

भव्यजनों को प्रधानपद देने वाले 'जिनहंस' नाम से विभूषित श्री महावीर.....।।५३।।

संसार में उत्कृष्ट यश को प्राप्त कराने वाले 'जिनोत्तंस' नाम से विभूषित श्री.....।।५४।।

सभी जनों को सर्वोत्कृष्ट महिमा प्रदान करने वाले 'जिननाग' नाम से विभूषित श्री.....।।५५।।

भव्यजनों में प्रधानत्व गुण प्रकट करने वाले 'जिनाग्रणी' नाम से विभूषित श्री महावीर.....।।५६।।

भक्तगणों को उत्कृष्ट बुद्धि देने वाले 'जिनप्रवेक' नाम से विभूषित श्री महावीर.....।।५७।।

भक्तों को सिद्ध पद प्राप्त कराने मे समर्थ 'जिनग्रामणी' नाम से विभूषित श्री.....।।५८।।

भव्यजनों को उत्तम गुणों के प्रदायक 'जिनसत्तम' नाम से विभूषित श्री महावीर.....।।५९।।

जिनस्वरूप मुख्यपद को देने में समर्थ 'जिनप्रवर्ह' नाम से विभूषित श्री महावीर.....।।६०।।

कर्मशत्रु को नष्ट करने में समर्थ पद को देने वाले 'परमजिन' नाम से विभूषित श्री.....।।६१।।

कर्म शत्रु को विजय करने में कारण जो सर्वोत्तम मार्ग को प्रदर्शित करने वाले 'जिनपुरोगम' नाम से विभूषित श्री.....।।६२।।

जिनमत को बुद्धि के प्रदाता 'जिनश्रेष्ठ' नाम से विभूषित श्री महावीर.....।।६३।।

धर्म के प्रभाव से ज्येष्ठ पद को प्राप्त करने की बुद्धि के प्रदाता 'जिनश्रेष्ठ' नाम से विभूषित श्री महावीर.....।।६४।।

सर्वजनों में मुख्य पद के दाता 'जिनमुख्य' नाम से अलंकृत श्री महावीर.....।।६५।।

संसार में अग्रिस पद को प्रदान करने में समर्थ जिनाग्रिम पद से विभूषित पद के दाता 'जिनमुख्य' नाम से अलंकृत श्री.....।।६६।।

अंतरंग लक्ष्मी -अनंत चतुष्टय एवं बहिरंग लक्ष्मी-समवसरण विभूति को प्रदान करने वाले 'श्रीजिन' नाम से विभूषित श्री.....।।६७।।

सर्वोत्तम महिमाशाली पद को प्राप्त कराने में समर्थ 'उत्तमजिन' नाम से विभूषित श्री.....।।६८।।

संसार भ्रमण के कारण जो कर्मशत्रु उन पर विजय कारक पद के प्रदाता 'जिनवृंदारक' नाम से अलंकृत श्री.....।।६९।।

मोह शत्रु पर विजय प्राप्त करने की बुद्धि के दाता 'अरिजित्' नाम से विभूषित श्री.....।।७०।।

मोक्षमार्ग के विघ्न को दूर करने वाले 'निर्विघ्न' नाम से अलंकृत श्री महावीर.....।।७१।।

---

१. रैद अर्थात् कुबेर – रेन्धन को देने वाला रैद कुबेर होता है।

२. पति + ईठित = एजित त्र पतीडित।

ज्ञानावरण - दर्शनावरण रूप रज को विनष्ट करने की बुद्धि के प्रदाता 'विरज' नाम से विभूषित श्री महावीर.....।।७२।।

कर्म मल कलंक से रहित पद को देने वाले 'शुद्ध' नाम से अलंकृत श्री महावीर.....।।७३।।

अज्ञानांधकार को नष्ट करने में समर्थ 'निस्तमस्क' नाम से धारक श्री महावीर.....।।७४।।

द्रव्यकर्म - ज्ञानावरणादि, भावकर्म - रागद्वेषादि और नोकम-शरीर आदि इन त्रिविध कर्मरूपी अंजन को नष्ट करने की बुद्धि के प्रदाता 'निरंजन' नाम को प्राप्त श्री.....।।७५।।

मोहनीय, ज्ञानावरणादि, दर्शनावरण और अंतराय इन चार घातिया कर्मों के विघातक 'घातिकर्मान्तक' नाम से मंडित श्री.....।।७६।।

भव्यों के कर्मों को मूल से नष्ट करने की बुद्धि के प्रदाता 'कर्ममर्मावित्' नाम को प्राप्त श्री महावीर.....।।७७।।

पाप त्याग करने की बुद्धि प्रदाता 'अनघ' नाम से विभूषित श्री महावीर.....।।७८।।

राग पर विजय प्राप्त करने की बुद्धि के प्रदाता 'वीतराग' नाम से अलंकृत श्री.....।।७९।।

क्षुधा तृषा आदि बाधा के निवारक, क्षुधा महादोष से रहित 'अक्षुत्' नाम के धारक श्री.....।।८०।।

शत्रुओं के प्रति भी विद्वेष भाव से रहित बुद्धि के प्रदाता 'अद्वेष' नाम के धारक श्री.....।।८१।।

निर्ममता बुद्धि के प्रदर्शक 'निर्मोहन' नाम को प्राप्त श्री.....।।८२।।

आठ प्रकार के अहंकार को नष्ट करने की बुद्धि को देने वाले 'निर्मद' नाम से अलंकृत श्री महावीर.....।।८३।।

नानाविध व्याधि के विनाशन में समर्थ 'अगद' नाम के धारक श्री महावीर.....।।८४।।

विषयों की अभिलाषा को नष्ट करने वाले और मोक्ष की अभिलाषा को प्रकट करने में समर्थ 'वितृष्ण' नाम को प्राप्त श्री.....।।८५।।

ममकार भाव के विनाशक, प्रत्यक्ष-परोक्ष प्रमाण ज्ञान के दाता 'निर्मम' नाम के धारक श्री महावीर.....।।८६।।

भावार्थ -मम का अर्थ ममता है उसके विनाशक निर्मम हैं पुनः मम का अर्थ ज्ञान है उस ज्ञान को नितरां अतिशय रूप से प्राप्त निर्मम शब्द का अर्थ होता है।

परिग्रह को त्याग करने की बुद्धि के प्रदाता 'अंसग' नाम के धारक श्री महावीर.....।।८७।।

भक्तों के सात प्रकार के भयों को दूर करने में समर्थ एवं केवल ज्ञान ज्योति से समन्वित 'निर्भय' नाम को प्राप्त श्री.....।।८८।।

यहां 'या' ज्योति का वाचक है ऐसी अतिशय ज्योति केवल ज्ञान ही है कर्म निषाद आदि दोषों को दूर करने में समर्थ 'विस्मय' नाम को प्राप्त श्री महावीर.....।।८९।।

स्वप्न-निद्रादि दोष को दूर करने में समर्थ अप्रमत्त अवस्था रूप सप्तम गुण स्थान को प्राप्त कराने वाले 'अस्वप्न' नाम के धारक श्री.....।।९०।।

श्रम, खेद से विवर्जित, बाह्य-अभ्यंतर तपों को आचरण करने की बुद्धि के प्रदाता 'निःश्रम' नाम को प्राप्त श्री.....।।९१।।

गर्भवास के दुःख को निवारण करने में समर्थ 'अजन्मा' नाम के ारक श्री.....।।९२।।

पसीना आदि दोषरहित और स्व -धन निःखेद -वांछित धन को देने वाले ऐसे 'निःखेद' नाम को प्राप्त श्री.....।।९३।।

वृद्धत्वादि दोष को निवारण करने में समर्थ 'निर्जर' नाम के धारक श्री महावीर.....।।९४।।

मृत्यु के भय को दूर करने को - मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की बुद्धि के प्रदाता मृत्युंजय पद को प्राप्त 'अमर' नाम से विभूषित श्री.....।।९५।।

अरुचिभाव से विरहित शुभराग के प्रदाता 'अरत्यतीत' नाम से विभूषित श्री.....।।९६।।

कामचिंता, मोहचिंता और परचिंता से विरहित बुद्धि के प्रदाता, स्वात्मचिंतन रूप मति के प्रदाता 'निश्चिंत' नाम से मंडित श्री.....।।९७।।

पश्चात्ताप आदि दुर्भाव को विध्वंसक 'निर्विषाद' नाम से अंलकृत श्री महावीर.....।।९८।।

शुक्ल ध्यान के अवलंबन के बल से त्रेसठ प्रकृति को नष्ट करने वाले 'त्रिषष्टिजित्' नाम से विभूषित महावीर स्वामी को मैं अर्ध्य चढ़ाता हूँ।।९९।।

तीन लोक और तीन काल में होने वाले संपूर्ण द्रव्य और पर्यायरूप वस्तु स्वरूप के ज्ञाता 'सर्वज्ञ' नाम को प्राप्त श्रीमहावीर स्वामी को मैं अर्ध्य चढ़ाता हूँ.....।।१००।।

संपूर्ण चराचर जगत् के जानने वाले ऐसे ज्ञान के प्रदाता 'सर्ववित्' नाम के धारक श्री.....।।१०१।।

तीनों भुवन को देखने में समर्थ ऐसे दर्शन को प्राप्त कराने वाले 'सर्वदर्शी' नाम के धारक श्री महावीर.....।।१०२।।

तीनों लोकों को देखने में समर्थ ऐसे नेत्र से सहित 'सर्वावलोकन' नाम को प्राप्त श्री.....।।१०३।।

मोक्ष मार्ग के लिये आचरण करने की शक्ति के प्रदाता अनवधि पराक्रम-सहित 'अनंतविक्रम' नाम से विभूषित श्री.....।।१०४।।

अनंतबल को देने में समर्थ 'अनंतवीर्य' नाम से अलंकृत श्री.....।।१०५।।

अनवधि -असीम सुख को प्रदान करने वाले 'अनंतसुखात्मक' नाम के धारक श्री.....।।१०६।।

अतीन्द्रिय सुख को प्राप्त करने की शक्ति प्रदान करने वाले 'अनंतसौख्य' नाम के धारक श्री महावीर.....।।१०७।।

समस्त विश्व को जानने की शक्ति को करने वाले 'विश्वज्ञ' नाम के धारक श्री.....।।१०८।।

अखिल जगत् को अवलोकन करने में समर्थ ऐसी युक्ति को देने वाले 'विश्वदृश्वा' नाम को प्राप्त श्री महावीर.....।।१०९।।

समस्त पदार्थों को अवलोकन करने की दृष्टि के धारक 'अखिलार्थदृक्' नाम से विभूषित श्री महावीर.....।।११०।।

इन्द्रियों की सहायता के बिना सर्व लोक और अलोक का अवलोकन करने में समर्थ 'न्यक्षदृक्' नाम के धारक श्री.....।।१११।।

केवलज्ञान और केवलदर्शन रूपी चक्षु के द्वारा संपूर्ण विश्व को अवलोकित करने में समर्थ 'विश्वतश्चक्षु' नाम के धारक श्री.....।।११२।।

सर्व जगत् को अवलोकन करने में समर्थ ऐसे दर्शन के प्रदाता 'विश्वचक्षु' नाम के धारक श्री महावीर.....।।११३।।

संपूर्ण लोक और अलोक के ज्ञाता 'अशेषवित्' नाम के धारक श्री महावीर.....।।११४।।

अतीन्द्रिय सौख्य सागर में निमग्न 'आनंद' नाम से समन्वित श्री महावीर.....।।११५।।

परम उत्कृष्ट सौख्य को प्रदान करने में समर्थ 'परमानन्द' नाम से विभूषित श्री.....।।११६।।

सर्व काल उदय और अस्त से रहित ऐसे सौख्य से मंडित 'सदानंद' नाम से विभूषित श्री महावीर.....।।११७।।

उत्कृष्ट अभ्युदय - नानाविध सांसारिक सुखों को प्रदान करने में समर्थ 'सदोदय' नाम से विभूषित श्री.....।।११८।।

शाश्वत सौख्य के प्रदाता 'नित्यानंद' नाम से सहित श्री.....।।११९।।

भक्तों को चरण पूजा के द्वारा महान् आनंद के प्रदाता 'महानंद' नाम से सहित श्री.....।।१२०।।

भक्तों को चरण पूजा के द्वारा उत्कृष्ट आनंद के प्रदाता होने से 'परमानंद' नाम से सहित श्री महावीर.....।।१२१।।

परमोत्कृष्ट ज्ञान के उदय को देने वाले 'परोदय' नाम से अलंकृत श्री महावीर.....।।१२२।।

अतिशयकारी उत्साह के प्रदाता 'परमोज' नाम के धारक श्री.....।।१२३।।

उत्कृष्ट सूर्य के प्रकाश से समन्वित 'परंतेज' नाम के धारक श्री महावीर.....।।१२४।।

उत्कृष्ट स्थान को प्राप्त करने में समर्थ 'परंधाम' नाम को प्राप्त श्री महावीर.....।।१२५।।

परमतेज स्वरूप से समन्वित 'परंमह' नाम से सहित श्री.....।।१२६।।

करोड़ों सूर्यों की प्रभा को लज्जित करने वाले ऐसे भामंडल रूप वैभव के धारक 'प्रत्यग्ज्योति' नाम के धारक श्री.....।।१२७।।

लोक और अलोक को देखने में उत्कृष्ट नेत्र से समन्वित 'परंज्योति' नाम के धारक श्री महावीर.....।।१२८।।

पंचमज्ञान स्वरूप 'परंब्रह्म' नाम के धारक श्री.....।।१२९।।

रहस्मयी आत्मतत्त्व का उपदेशक करने वाले 'परंरह' नाम के धारक श्री महावीर.....।।१३०।।

उत्कृष्ट बुद्धि के प्रदाता 'प्रत्यगात्मा' नाम के धारक श्री.....।।१३१।।

केवल ज्ञान को प्राप्त कराने में समर्थ 'प्रबुद्धात्मा' नाम के धाक श्री महावीर.....।।१३२।।

केवल ज्ञानरूपी तेज के द्वारा लोक -अलोक में व्याप्त 'महात्मा' नाम से विभूषित श्री.....।।१३३।।

तीर्थंकर नाम कर्म के उदय से प्राप्त वैभव से समन्वित 'आत्ममहोदय' नाम के धारक श्री महावीर.....।।१३४।।

उत्कृष्ट केवलज्ञान के प्रदाता 'परमात्मा' नाम से समन्वित श्री महावीर.....।।१३५।।

घाति कर्म को क्षय करने की बुद्धि के प्रदाता 'प्रशान्तात्मा' नाम के धारक श्री.....।।१३६।।

केवलज्ञान से सहित 'परात्मा' नाम के धारक श्री.....।।१३७।।

शरीर स्वरूप पर निवास से विरहित, आत्मगृह में निवास करने की बुद्धि के प्रदाता 'आत्मा निकेतन' नाम से विभूषित श्री.....।।१३८।।

इन्द्र, धरणेन्द्र, नरेन्द्र और गणीन्द्र-गणधर देव आदि से वंदित ऐसे पद में स्थित 'परमेष्ठी' नाम के धारक श्री.....।।१३९।।

अतिशायी आत्मस्वरूप से समन्वित, अष्टमी भूमि में स्थित 'महिष्ठात्मा' नाम के धारक श्री महावीर.....।।१४०।।

अतिप्रशस्त जो केवलज्ञान, उसकी अपेक्षा सर्वलोक में व्यापक 'श्रेष्ठात्मा' नाम के धारक श्री महावीर.....।।१४१।।

निज शुद्ध बुद्ध एक स्वरूप आत्मा में स्थित 'स्वात्मनिष्ठित' नाम के धारक श्री.....।।१४२।।

केवल ज्ञानमयी-ब्रह्मस्वरूप आत्मा में स्थित 'ब्रह्मनिष्ठ' नाम के धारक श्री.....।।१४३।।

सर्वोकृष्ट यथाख्यात चारित्र में स्थित 'महानिष्ठ' नाम के धारक श्री महावीर.....।।१४४।।

तीनों जगत् में प्रसिद्ध आत्मा स्वरूप को प्राप्त 'निरूढात्मा' नाम के धारक श्री.....।।१४५।।

निश्चल स्वरूप अनंत बल से सहित, सत्तामात्र अवलोकन में समर्थ दृष्टि से समन्वित 'दृढ़ात्मदृक्' नाम के धारक श्री.....।।१४६।।

एक -अद्वितीय केवलज्ञान लक्षण से उपलक्षित जो विद्या, उससे समन्वित 'एकविद्य' नाम के धारक श्री.....।।१४७।।

महती केवलज्ञान विद्या के प्रदायक 'महाविद्य' नाम से विभूषित श्री महावीर.....।।१४८।।

महाब्रह्मरूप जो मोक्ष पद है उसके स्वामी 'महाब्रह्मपदेश्वर' नाम को प्राप्त श्री.....।।१४९।।

पांच प्रकार के ज्ञान के प्रदाता, पांच परमेष्ठी गुणों से विभूषित 'पंचब्रह्ममय' नम के धारक श्री महावीर.....।।१५०।।

सर्व प्राणिमात्र के हितैषी 'सार्व' नाम से विभूषित श्री.....।।१५१।।

सर्व विद्याओं के स्वामी संपूर्ण विद्याओं के प्रदाता 'सर्वविद्येश्वर' नाम को प्राप्त श्री.....।।१५२।।

समवसरण लक्षण सभामंडप को 'स्वभू' नाम से विभूषित श्री.....।।१५३।।

मोक्षमार्ग में बुद्धि को स्थिर करने वाले 'अनंतधी' नाम के धारक श्री महावीर.....।।१५४।।

अनंत जो केवलज्ञान उससे उपलक्षित,'अनंतात्मा' नाम के धारक श्री महावीर.....।।१५५।।

अनंत शक्ति के प्रदाता 'अनंतात्मा' नाम के धारक श्री.....।।१५६।।

केवलदर्शन को प्राप्त करने की बुद्धि के प्रदाता 'अनंतदृक्' नाम के धारक श्री.....।।१५७।।

अवधि रहित बुद्धि और शक्ति के प्रदाता 'अनंतानंनधी शक्ति' नाम के धारक श्री.....।।१५८।।

केवलज्ञानमयी चिच्चैतय ज्योति के प्रदाता 'अनंतचित्' नाम के धारक श्री.....।।१५९।।

अवधिरहित सुख को देने वाले 'अनंतमुक्त' नाम के धारक श्री महावीर.....।।१६०।।

अखंड प्रकाश पुंज के प्रदाता 'सदाप्रकाश' नाम के धारक श्री महावीर.....।।१६१।।

संपूर्ण द्रव्य, गुण और पर्याय को प्रत्यक्ष करने की शक्ति को देने वाले 'सर्वार्थसाक्षात्कारी' नाम के धारक श्री.....।।१६२।।

समस्त ज्ञेय - जानने योग्य पदार्थ प्रमाण बुद्धि को धारण करने में समर्थ 'समग्रधी' नाम के धारक श्री.....।।१६३।।

पुण्य-पापरूप कर्मों के ज्ञाता 'कर्मसाक्षी नाम के धारक श्री महावीर.....।।१६४।।

तीनों भुवन में स्थित प्राणियों के नेत्र सदृश ज्ञाता 'जगत्चक्षु' नाम के धारक श्री.....।।१६५।।

छद्मस्थ मुनियों के लिये दृढदृश्यस्वरूप -दृष्टिगोचर न होने वाले, 'अलक्ष्यात्मा' नाम के धारक श्री महावीर.....।।१६६।।

हम जैसे भव्यों के लिये दृढचारित्र के प्रदाता एवं निश्चल स्थान करे प्राप्त 'अचलस्थिति' नाम के धारक श्री.....।।१६७।।

सर्वबाधा से विरहित पद को देने वाले 'निराबाध' नाम के धारक श्री महावीर.....।।१६८।।

छद्मस्थ जनों के चिंतन से विरहित 'अप्रतर्क्यात्मा' नाम के धारक श्री महावीर.....।।१६९।।

एक हजार आरों से देदीप्यमान संपूर्ण जगत् के जीवों के संताप को दूर करने में समर्थ ऐसे धर्मचक्र को प्राप्त 'धर्मचक्री' नाम से सन्वित श्री महावीर.....।।१७०।।

सर्व विद्वानों में श्रेष्ठ पद के प्रदाता 'विदांवर' नाम से विभूषित श्री महावीर.....।।१७१।।

लोक और अलोक स्वरूप के ज्ञाता 'भूतात्मा' नाम के धारक श्री महावीर.....।।१७२।।

स्वाभाविक ज्ञान ज्योति को प्रदान करने वाले 'सहजज्योति' नाम के धारक श्री.....।।१७३।।

लोक और अलोक को प्रकाशित करने वाली ऐसी ज्योति के प्रदाता 'विश्वज्योति' नाम को प्राप्त श्री महावीर.....।।१७४।।

इन्द्रिय और मन से विरहित ज्ञान के प्रदाता 'अतीन्द्रिय' नाम को प्राप्त श्री महावीर.....।।१७५।।

केवलज्ञान को प्राप्त कराने वाले 'केवली' नाम से समन्वित श्री महावीर.....।।१७६।।

अतीन्द्रिय ज्ञानरूप प्रकाश के प्रदाता 'केवलालोक' नाम से विभूषित श्री महावीर.....।।१७७।।

लोकाकाश और अलोककाश को प्रकाशित करने वाले ऐसे ज्ञान के प्रदाता 'लोकालोकविलोकन' नाम से विभूषित श्री.....।।१७८।।

सर्व विषयों से पृथग्भूत 'विविक्त' नाम से विभूषित श्री.....।।१७९।।

असहाय ज्ञान के प्रदाता 'केवल' नाम के धारक श्री.....।।१८०।।

इन्द्रिय और मन के अगोचर पद को देने वाले 'अव्यक्त' नाम के धारक श्री.....।।१८१।।

अर्ति-पीड़ा को नष्ट करने में समर्थ, सर्वजन को शरण देने वाले 'शरण्य' नाम के धारक श्री महावीर.....।।१८२।।

साधारण जनों के मन के अगोचर ऐसे वैभव को देने वाले 'अचिन्त्यवैभव' नाम के धारक श्री महावीर.....।।१८३।।

अखिलविश्व की जनता के पोषण करने में समर्थ 'विश्वभृत्' नाम को प्राप्त श्री.....।।१८४।।

ज्ञानरूपकिरणों से तीनों लोकों को व्याप्त करने वाले 'विश्वरूपात्मा' नाम के धारक श्री महावीर.....।।१८५।।

विश्व में स्थित प्राणिगण को अपने सदृश अवलोकन करने में कुशल 'विश्वात्मा' नाम से समन्वित श्री महावीर.....।।१८६।।

केवलज्ञान के द्वारा लोक-अलोक व्याप्त करने वाले 'विश्वतोमुख' नाम को प्राप्त श्री.....।।१८७।।

लोकपूरण समुद्घात के समय आत्मप्रदेशों के द्वारा विश्व को व्याप्त करने वाले 'विश्वव्यापी' नाम के धारक श्री.....।।१८८।।

आत्मज्योति स्वरूप एक अद्वितीय सूर्य के समान 'स्वयंज्योति' नाम से समन्वित श्री.....।।१८९।।

वचन और मन के अगोचर ऐसे स्वरूप के प्रदाता 'अचिन्त्यात्मा' नाम के धारक श्री.....।।१९०।।

करोड़ों सूर्य और करोड़ों चन्द्रमा के समान शरीर के तेज से समन्वित 'अमितप्रभ' नाम के धारक श्री.....।।१९१।।

वांछित फल को प्रदायक जो दान शक्ति उससे समन्वित 'महौदाय' नाम के धारक श्री.....।।१९२।।

रत्नत्रय की प्राप्ति बोधि के प्रदाता 'महाबोधि' नाम के धारक श्री महावीर.....।।१९३।।

नव केवल लब्धि स्वरूप लाभ को देने वाले 'महालाभ' नाम के धारक श्री महावीर.....।।१९४।।

तीर्थंकर नाम कर्म के उदय से सहित 'महोदय' नाम से समन्वित श्री महावीर.....।।१९५।।

छत्र त्रय, चंवर, सिंहासन, अशोक वृक्ष प्रमुख पुनः पुनः भोगने योग्य समवसरण आदि लक्षण वाले वैभव से सहित 'महोपभोग' नाम के धारक श्री महावीर.....।।१९६।।

शोभन बुद्धिमय के बलज्ञान स्वरूप 'सुगति' नाम के धारक श्री ाहावीर.....।।१९७।।

गंधोदक वृष्टि, पुष्पवृष्टि, शीतल मृदु सुगंध वायु आदि लक्षण भोगने योग्य वस्तु से समन्वित 'महाभोग' नाम के धारक श्री.....।।१९८।।

समस्त वस्तु को जानने लक्षण अनंतवीर्य से सहित 'महाबल' नाम के धारक श्री महावीर स्वामी को मैं अर्घ्य चढ़ाता हूँ।।१९९।।

पूजा नं. ४ के दो सौ मंत्रों के अर्थ

अर्थ –

इन्द्र, धरणेन्द्र और चक्रवर्ती आदि कृत, अन्य देवों में असंभव नहीं पायी जाने वाली ऐसी पूजा के योग्य 'यज्ञार्ह' गुण से समन्वित श्री महावीर स्वामी को मैं अर्घ्य चढ़ाता हूँ.....।।१।।

'भग' शब्द के अनेक अर्थ हैं -ज्ञान, परिपूर्ण ऐश्वर्य, तप, लक्ष्मी, वैराग्य एवं मोक्ष इन सभी अर्थों से सहित ऐसे भगवान् गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२।।

चार ज्ञानों से सहित जो गणधर देव आदि, इनसे की गयी और अन्य से असाधारण ऐसी वंदना को प्राप्त 'अर्हंत' गुण में समन्वित श्री.....।।३।।

तीनों लोकों में प्रतिष्ठित-श्रेष्ठ जनों से महती प्रशंसा को प्राप्त 'महार्ह' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।४।।

इन्द्रादिको से पूजित पद को प्राप्त 'मघवार्चित' नाम से समन्वित श्री महावीर.....।।५।।

सत्य अर्थ युक्त - सत्यार्थ यज्ञ योग्य पद को प्रदान करने में समर्थ 'भूतार्थयज्ञपुरुष' गुण से समन्वित श्री.....।।६।।

सत्यार्थ यज्ञ के योग्य पद के धारक 'भूतार्थ क्रतुपुरुष' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।७।।

जगत् में पूज्य पद को प्राप्त 'पूज्य' गुण से समन्वित श्री.....।।८।।

स्याद्वाद की परीक्षा के लिये विद्वानों को प्रेरणा प्रदान करने वाले 'भहारक' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।९।।

पूज्यों में भी पूज्यपद के धारक 'तत्र भवान्' नाम के सार्थक गुण से युक्त श्री.....।।१०।।

त्रिभुवन में पूज्यपद को प्राप्त 'अत्र भवान' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।११।।

तीन लोक के मस्तक पर स्थित सर्वजनों में श्रेष्ठ ऐसे पद को प्राप्त 'महान्' नाम से अन्वर्थ गुण से समन्वित श्री.....।।१२।।

महती पूजा के योग्य 'महामहार्ह' गुण से समन्वित श्री.....।।१३।।

तीनों लोकों में शाश्वत आयु के धारक 'तत्रायु' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१४।।

अनन्तानन्तकाल तक रहने वाले तथा पुनरागमन से विरहित 'दीर्घायु' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१५।।

त्रिभुवन जन में पूज्य ऐसी दिव्य ध्वनि रूप वचन को प्राप्त 'अर्घ्यवाक्' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१६।।

सर्वजन से आराधना के योग्य पद को प्राप्त 'आराध्य' गुण से समन्वित श्री.....।।१७।।

त्रिभुवन जन में असाधारण ऐसी पूजा के योग्य 'परमाराध्य' गुण से समन्वित श्री.....।।१८।।

गर्भावतार, जन्माभिषेक, निष्क्रमण, केवलज्ञान और निर्वाण नाम के पांच कल्याणक को प्राप्त 'पंचकल्याणक पूजित' गुण से समन्वित श्री.....।।१९।।

सम्यग्दर्शन की विशुद्धि से युक्त और बारह गुणों में प्रमुख 'दृग्विशुद्धिगणोदग्र' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२०।।

रत्न सुवर्ण आदि धनवृष्टि के द्वारा माता के महल के आंगन को पूजित कराने वाले 'वसुधारार्चितास्पद' गुण से समन्वित श्री.....।।२१।।

गर्भावतार से पूर्व माता को सोलह स्वप्न दिखाने वाले 'सुस्वप्नदर्शि' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२२।।

मनुष्यों में असाधारण तेज और बल के धारक 'दिव्यौज' गुण से समन्वित श्री.....।।२३।।

अपनी माता के चरणकमलों को शची-इन्द्राणी द्वारा पूजित कराने वाले 'शची सेवित मातृक' गुण से समन्वित श्री.....।।२४।।

गर्भावतार के समय पंद्रह महीने पर्यंत, रत्नवृष्टि से सहित ऐसे तीर्थंकर पद को प्राप्त 'रत्नगर्भ' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२५।।

श्री, ही, धृति, कीर्ति, बुद्धि, लक्ष्मी, शांति और पुष्टि देवियों द्वारा पवित्र किये गये गर्भ में वास को प्राप्त 'श्रीपूतगर्भ' गुण से समन्वित श्री.....।।२६।।

देवेंद्र आदि के द्वारा किये गये गर्भ कल्याणक महोत्सव से समुन्नत 'गर्भोत्सवोच्छ्रित' गुण से समन्वित श्री.....।।२७।।

दिव्य देवोपतीत पूजा के द्वारा पुष्टि को प्राप्त 'दिव्योपचारोपचित' गुण से समन्वित श्री.....।।२८।।

तीर्थंकर पुण्य प्रकृति के प्रभाव से माता के गर्भाशय में कमल कर्णिका रूप सिंहासन पर गर्भवास करने वाले 'पद्मभू' नाम के सार्थक गुण से समन्वित श्री.....।।२९।।

काल की कला को उलंघन करने वाले 'निष्कल' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।३०।।

अपने आप स्वयं उत्पन्न होने वाले जन्म के धारक 'स्वज' गुण से समन्वित श्री.....।।३१।।

सर्वजन के लिये हितकर ऐसे जन्म के धारक 'सर्वीयजन्म' गुण से समन्वित श्री.....।।३२।।

पुण्य के उपार्जन के लिये कारण भूत ऐसे शरीर के धारक 'पुण्यांग' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।३३।।

करोड़ों चंद्रमा और सूर्यों से अधिक तेज के धारक 'भास्वत्' गुण से समन्वित श्री.....।।३४।।

सर्वोत्कृष्ट पुण्य के धारक 'उद्भूतदैवत' गुण से समन्वित श्री.....।।३५।।

तीनों लोकों की जनता को सूचित होने वाले ऐसे जन्म के धारक 'विश्व विज्ञात संभूति' गुण से समन्वित श्री.....।।३६।।

भवनवासी, वान व्यंतर, ज्योतिषी और कल्पवासी देवों के आगमन से संपूर्ण विश्व में आश्चर्य कराने वाले 'विश्वदेवागमाद्भुत' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।३७।।

शची के द्वारा किये गये मायामयी बालक के स्वरूप को प्रदर्शित करने वाले 'शची सृष्ट प्रतिच्छंद' गुण से समन्वित श्री.....।।३८।।

सौधमेंद्र के नेत्रों को आनंदकारक 'सहस्त्राक्षदृगुत्सव' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।३९।।

जन्माभिषेक करने के लिये गमन के समय नृत्य करते हुये ऐरावत हाथी के ऊपर बैठे हुये 'नृत्यदैरावतासीन' नाम के धारक श्री.....।।४०।।

सौ इंद्रों से वंद्य पद को प्राप्त 'सर्वशक्रनमस्कृत' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।४१।।

आनंद से उत्सुकता को प्राप्त श्रेष्ठ धर्मानुराम से सहित देवगण, विद्याधर गणों में वंदित 'हर्षाकुलाभरखग' नाम को प्राप्त श्री.....।।४२।।

चारण ऋद्धियों से सहित मुनिगणों से अभीष्ट ऐसे जन्माभिषेक कल्याणक को प्राप्त 'चारणर्षिमतोत्सव' नाम के धारक श्री.....४३।।

संपूर्ण प्राणिवर्ग की विशेष रक्षा करने वाले 'व्योम' नाम से समन्वित श्री महावीर.....।।४४।।

विष्णु-प्राणिवर्ग के गुणस्थान और मार्गणास्थानरूप पदों के रक्षक परम कारुणिक पद को प्राप्त 'विष्णु पदारक्ष' नाम से समन्वित श्री.....।।४५।।

आपके जन्माभिषेक के लिये सुमेरुपर्वत चौकी -जलोट या अभिषेक पात्र के समान है ऐसे आप जन्मस्थान के लिये मेरूपर्वत रूप चौकी को प्राप्त 'स्नान पीठायिताद्रिराट्' नाम से समन्वित श्री.....।।४६।।

क्षीर समुद्र अपने द्वारा आपका जलाभिषेक किये जाने के कारण अपने को तीथेश - जलाशयों का स्वामी मानता है इसीलिये तीर्थ स्वरूप जलाशय के स्वामी का मानने वाले ऐसे क्षीर समुद्र को पवित्र करने वाले 'तीर्थेशंमन्य दुग्धाब्धि' नाम से समन्वित श्री.....।।४७।।

आपके स्नान के जल से सर्ववासुव -इन्द्रेण स्नान करते हैं इसलिये स्नान के जल से इंद्रों के शरीर को प्रक्षालित करने वाले 'स्नानाम्बुस्नातवासव' नाम को प्राप्त श्री.....।।४८।।

जन्माभिषेक के समय ऐशानेन्द्र के द्वारा सर्व ओर छिड़के गये गंधोदक से त्रैलोक्य पवित्र हुआ था। इसलिये जन्माभिषेक के जल से तीनों लोकों को पवित्र करने वाले 'गंधाम्बुपूत-त्रैलोक्य' गुण से समन्वित श्री.....।।४९।।

यद्यपि भगवान के दोनों कान स्वभाव से ही छिद्र सहित होते हैं फिर इंद्र वज्र की सुई से कर्ण वेधन करता है। इसलिये स्वभाव से छिद्र सहित प्रभु आप कर्ण में इंद्रराज द्वारा वज्र की सुई से 'कर्ण वेध' विधि को प्राप्त 'वज्रसूयीशुचिश्रवा' नाम से समन्वित श्री.....।।५०।।

प्रथम शची - इन्द्राणी को ही प्राप्त होता तब वह महादेवी अपने हाथों को सफल मानकर अपने जन्म की सराहना करती हैं इसलिए सौधमेंद्र की शची -महादेवी के हस्त को सफल करने वाले 'कृतार्थितशचीहस्त' नाम से समन्वित श्री.....।।५१।।

इन्द्र के द्वारा सर्वमानित नाम की घोषणा को प्राप्त 'शक्रोद्घुष्टेष्ट' नाम गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।५२।।

मेरु पर्वत के ऊपर जन्माभिषेक के अनंतर इन्द्र के द्वारा किये गये 'आनंद नाम के नृत्य को प्राप्त 'शक्रारब्धानन्दनृत्य' गुण से समन्वित श्री.....।।५३।।

शची इंद्राणी प्रभु का वैभव प्रदर्शित कर जिनमाता को आश्चर्यान्वित करती है इसीलिए शची के द्वारा प्रभु के वैभव को दिखलाकर जिनमाता को आश्चर्य उत्पन्न कराने वाले 'शचीविस्थापितांबिक' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।५४।।

जन्माभिषेक के अनंतर पिता के समक्ष आकर इन्द्र पुनः आनंद नाम का नृत्य करता है इसलिये जन्माभिषेकानन्तर इन्द्रकृतपिता समक्ष नर्तन को कराने वाले 'इन्द्रनृत्यन्तपितृक' गुण से समन्वित श्री.....।।५५।।

सौघर्मेन्द्र की आज्ञा से कुवंर द्वारा जगत् के जीवों के मनोरथ को पूर्ण कराने वाले 'रैदंपूर्ण मनोरथ' गुण से समन्वित श्री.....।।५६।।

आपकी आज्ञा को पालन करने वाले सौ धर्मेन्द्र संतत आपकी सेवा भक्ति में तत्पर रहते हैं इसलिये आज्ञा पालन में किंकरता को प्राप्त ऐसे सौधर्मेंद्र द्वारा की गई सेवा-भक्ति से युक्त 'आज्ञार्थीन्द्रकृतासेव' गुण से समन्वित श्री.....।।५७।।

लौकांतिक देवों द्वारा स्तुति को प्राप्त मोक्ष के लिये दीक्षा के लिये उद्यम करने में तत्पर 'देवर्षीष्टशिवोद्यम' गुण से समन्वित श्री.....।।५८।।

जैनेश्वरी दीक्षा के समय समस्त जगत् में क्षोभ उत्पन्न करने वाले 'दीक्षाक्षणक्षुब्धजगत' नाम से अलंकृत श्री.....।।५९।।

'भू' अर्थात् अघोलोक, 'भुवः' अर्थात् मध्यलोक और 'स्वः' अर्थात् ऊर्ध्वलोक इन अधोलोक, मध्यलोक और ऊर्ध्वलोक से स्वामीगणों से पूजित 'भूर्भुवः स्वः पतीडित' गुण से समन्वित श्री.....।।६०।।

कुबेर के द्वारा रचित समवसरण की महिमा से पंडित 'कुवेरनिर्मितास्थान' गुण के धारक श्री महावीर.....।।६१।।

नवनिधि लक्षण बहिरंग लक्ष्मी अभ्युदय कहलाती है और अनंत चतुष्टय रूप अनंतरंग लक्ष्मी निःश्रेयस कहलाती है इन बर्हिरंग, अनंतरंग लक्ष्मी को प्रदान करने में समर्थ 'श्रीयुक्' गुण से समन्वित श्री.....।।६२।।

यम, नियम, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि लक्षण अष्ट योग सहित जो योगी गण उनके भी ईश्वर गणधर देवादि उनसे आपके चरणकमल पूजित हैं अथवा लोक में 'महादेव' को भी योगीश्वर कहा है जब भगवान महावीर महामुनि अवस्था में उज्जयिनी के शमशान में ध्यान लीन थे तब महादेव ने आकर उनके ध्यान की परीक्षा करने के लिये नाना प्रकार के घोर उपसर्ग किये, परंतु जब भगवान को चल-विचल नहीं कर सके तब उसने अपनी पत्नी पार्वती के साथ प्रभु की बहुत प्रकार से स्तुति भक्ति करके प्रभु का 'महति महावीर' नाम रखकर चला गया। अतः प्रभु 'योगीश्वरार्चित' गुण से समन्वित श्री.....।।६३।।

ब्रह्म अर्थात् अहमिन्द्रों के द्वारा स्तुति को प्राप्त 'ब्रह्मेड्य' गुण से समन्वित श्री.....।।६४।।

आत्मस्वरूप के ज्ञाता 'ब्रह्मविद्' गुण से समन्वित श्री.....।।६५।।

योगियों के ज्ञान के द्वारा जानने योग्य 'वेद्य' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।६६।।

पूजा योग्य पद को प्राप्त 'याज्य' गुण से समन्वित श्री.....।।६७।।

यज्ञ - महापूजा के स्वामी 'यज्ञपति' गुण से समन्वित श्री.....।।६८।।

योगियों के द्वारा ध्यानावस्था प्रगट किये जाने से 'क्रतु' नाम से समन्वित श्री.....।।६९।।

आपके बिना कोई भी जीव पूज्य नहीं बन सकता अतः आप यज्ञांग हैं अथवा यज्ञ - पूजा के अंग - उपाय को - विधि को प्रदर्शित करने वाले 'यज्ञांग' गुण से समन्वित श्री.....।।७०।।

मृत्यु विजयी पद को प्राप्त 'अमृत' गुण से समन्वित श्री.....।।७१।।

सर्वजगत् में पूजा के योग्य श्रेष्ठ पद को प्राप्त 'यज्ञ' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।७२।।

अपनी आत्मा के स्वरूप में कर्मरूपी ईंधन की आहुति देने में समर्थ 'हवि' नाम से समन्वित श्री महावीर.....।।७३।।

इन्द्र, नागेन्द्र, चक्रवर्ती और गणधर देव आदि के द्वारा स्तुति के योग्य 'स्तुत्य' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।७४।।

संपूर्ण जगत के प्राणियों द्वारा स्तुति को प्राप्त 'स्तुतीश्वर' गुण से समन्वित श्री.....।।७५।।

'भाव' शब्द के अनेक अर्थ हैं - सत्ता, आत्मा, वस्तु, स्वभाव आदि। भगवान सदा सत्स्वरूप हैं, आत्म स्वभाव को प्राप्त हैं, समवसरण विभूति मंडित हैं इत्यादि। इसीलिये आत्म स्वरूप की उपलब्धि स्वरूप तथा समवसरण की विभूति से समन्वित 'भाव' नाम से संयुक्त श्री.....।।७६।।

महामह नाम से महती कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र इन्द्रध्वज आदि पूजा को प्राप्त 'महामहपति' गुण से समन्वित श्री.....।।७७।।

घातिकर्मरूपी ईंधन का होम करने रूप लक्षण से सहित 'महायज्ञ' गुण से विभूषित श्री.....।।७८।।

याजकों-कर्मभस्मरूपी महायज्ञ करने वालों में प्रमुख होने से अथवा दीक्षा के समय लोकाग्रपर विराजमान सिद्धों के नाम स्मरणरूप याजक - पूजा कारक होने से 'अग्रयाजक' गुण से समन्वित श्री.....।।७९।।

सर्व प्राणियों पर दया करना ही यज्ञ है इस करुणा स्वरूप याम-पूजा को प्राप्त 'दयायाग' गुण से समन्वित श्री.....।।८०।।

तीनों लोकों के भव्यजीवों द्वारा पूज्य ऐसे पद को प्राप्त 'जगत्पूज्य' गुण से समन्वित श्री.....।।८१।।

अष्ट द्रव्य से की जाने वाली पूजा के योग्य होने से 'पूजार्ह' गुण से समन्वित श्री.....।।८२।।

त्रैलोक्य में स्थित भव्य गणों से पूजित 'जगदर्चित' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।८३।।

इन्द्रादिकों में भी श्रेष्ठ पद को प्राप्त 'देवाधिदेव' गुणे से समन्वित श्री महावीर.....।।८४।।

बत्तीस इंद्रों से पूजित 'शक्रार्च्य' गुण से समन्वित श्री.....।।८५।।

देवो के भी देव -परमदेव पद को प्राप्त 'देवदेव' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।८६।।

जगत में स्थित प्राणिवर्ग के लिये पिता तुल्य हित का उपदेश देने वाले 'जगद्गुरु' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।८७।।

सौधर्मेन्द्र को आज्ञा से बुलाये गये चार प्रकार के देवों द्वारा पूजित ''संहूतदेव संधार्च्य' गुण से समन्वित श्री.....।।८८।।

देवों द्वारा रचे गये स्वर्णिम कमलों के ऊपर चरण कमल रखने वाले 'पदम्यान' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।८९।।

प्रभु के समवसरण में और विहार काल में जगद् विजय की सूचना देने वाली ध्वजा पताकायें फहराती हैं अतः मोहशत्रु को जीतने पर फहराती हुई ध्वजा से सहित 'जयध्वजी' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।९०।।

करोड़ों सूर्यों के समान तेज मंडल से सहित 'भामंडली' गुण से समन्वित अथवा कांति से पूर्ण भामंडल नाम से प्रातिहार्य से समन्वित 'भामंडली' गुण से समन्वित श्री.....।।९१।।

बत्तीस यक्ष युगलों द्वारा चौंसठ चंवर ढुराये जाने से 'चतुःषष्टिचामर' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।९२।।

साढ़े बारह करोड़ प्रमाण देवों द्वारा किये बाजों के उद्घोष की महिमा को प्राप्त 'देवदुंदुभि' नाम से समन्वित श्री.....।।९३।।

तालु, ओंठ आदि के स्पर्श से रहित ऐसी दिव्य ध्वनि को प्राप्त 'वागस्पृष्टासन' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।९४।।

तीन छत्रों की विभूति के धारक 'छत्रत्रयराट्' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।९५।।

ऊपर को खिले हुये मुख एवं नीचे डंठल करके बारह योजन पर्यंत बरसते हुये पुष्पवृष्टि की महिमा को प्राप्त 'पुष्पवृष्टिभाक्' नाम से समन्वित श्री महावीर.....।।९६।।

दिव्य मनुष्यों में असंभव, जो महामंडप उसके ऊपर स्थित एक योजन (चार कोश) प्रमाण विस्तृत मणिमय अशोक वृक्ष की महिमा को प्राप्त 'दिव्याशोक' नाम से अलंकृत श्री.....।।९७।।

दूर से भी दर्शन मात्र से मिथ्या दृष्टियों के अहंकार के सौ-सौ खंड करने में समर्थ चारों दिशाओं में एक-एक ऐसे चार मानस्तंभ रूप वैभव को प्राप्त 'मानमर्दी' नाम से समन्वित श्री.....।।९८।।

गीत, नृत्य, वादित्र, सहित नाटयशालाओं में नर्तन करती हुयी देवांगनाओं के वैभव को धारक करने वाले 'संगीतार्ह' नाम से समन्वित श्री.....।।९९।।

प्रतिप्रतोलि - प्रत्येक - चारों गलियों में श्रृंगार-झारी, ताल, कलश, ध्वजा, स्वास्तिक, छत्र, दर्पण और चंवर इन आठ मंगल द्रव्य रूप वैभव के धारक 'अष्टमंगल' नाम से समन्वित श्रीमहावीर स्वामी को मैं अर्ध्य चढ़ाता हूँ.....।।१००।।

संसार सागर से पार करने में समर्थ, द्वादशांग शास्त्रमय जो धर्म तीर्थ उसके करने में कुशल 'तीर्थकृत्' गुण से समन्वित श्री.....।।१०१।।

अपने चरण स्पर्श के मात्र से भूमि, पर्वत आदि स्थल को तीर्थ बनाने में समर्थ 'तीर्थसृद्' नाम से समन्वित श्री.....।।१०२।।

संसार समुद्र से पार करने में समर्थ ऐसे रत्नत्रय रूप भाव तीर्थ को सर्जन करने वाले 'तीर्थकर' गुण से समन्वित श्री.....।।१०३।।

पंच कल्याणक रूप विभव को करने वाले तीर्थकर नाम कर्म को प्रकृति के बंध को प्राप्त 'तीर्थकर्ता' गुण से समन्वित श्री.....।।१०४।।

क्षायिक सम्यक्त्व को प्राप्त 'सुदृक्' गुण से समन्वित श्री.....।।१०५।।

धर्मचक्र के प्रवर्तन में समर्थ 'तीर्थकर्ता' गुण से समन्वित श्री.....।।१०६।।

धर्मतीर्थ के पोषण करने वाले 'तीर्थभर्ता' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१०७।।

तीर्थ के स्वामी पद को प्राप्त 'तीर्थेश' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१०८।।

अनंत भव्य प्राणियों को मोक्ष मार्ग में ले जाने में समर्थ 'तीर्थनायक' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१०९।।

उत्तम क्षमादि दशधर्म रूपी तीर्थ का प्रवर्तन करने वाले 'धर्मतीर्थकर' वैभव से समन्वित श्री महावीर.....।।११०।।

'अहिंसा परमो धर्मः' लक्षण तीर्थ प्रणयन करने में कुशल 'तीर्थप्रणेता' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१११।।

वस्तु स्वभाव लक्षण तीर्थ के प्रवर्तन करने वाले 'तीर्थकारक' गुण से समन्वित श्री.....।।११२।।

जीव दया लक्षण धर्म के प्रवर्तक 'तीर्थ प्रवर्तक' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।११३।।

सम्यक् चारित्र लक्षण सद्धर्म तीर्थ का सृजन करने वाले 'तीर्थवेधा' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।११४।।

अखिल विश्व में सर्वोत्तम सुख को प्राप्त करने वाले ऐसे धर्म तीर्थरूप सृष्टि के कर्ता 'तीर्थ विधायक' गुण से समन्वित श्री.....।।११५।।

शाश्वत सुख को देने वाले शिवपथ के प्रदर्शक एवं सत्यतीर्थ के प्रवर्तक 'सत्यतीर्थकर' गुण से समन्वित श्री.....।।११६।।

तीर्थभूत महापुरुषों से सेवित हैं चरण कमल जिनके ऐसे 'तीर्थसेव्य' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।११७।।

पुण्यक्षेत्र कैलाश पर्वत, चंपापुरी, पावापुरी, गिरनार, सम्मेदशिखर आदि यात्राओं के कर्ताजनों को तारने वाले 'तैर्थिकतारक' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।११८।।

सत्यवचन बोलने वाले दिगंबर महर्षियों के स्वामी 'सत्यवाक्याधिप' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।११९।।

जिसमें पूर्वापर - आगे-पीछे परस्पर में कोई विरोध वाक्य नहीं हैं ऐसे सच्चे शास्त्रों के कर्ता 'सत्यशासन' गुण में समन्वित श्री महावीर.....।।१२०।।

अनंतसुख और अनंतवीर्य से सहित, मिथ्यामतवालों से जिनका शासन अखंडित है - खंडित नहीं हो सकता ऐसे 'अप्रतिशासन' नाम से समन्वित श्री महावीर.....।।१२१।।

'स्यात्' पद पूर्व में है जिसके ऐसे स्याद्वाद रूप अमोधशस्त्र के द्वारा एकान्तवाद को निराकरण करने मे समर्थ 'स्याद्वादी' गुण से समन्वित श्री.....।।१२२।।

मानुषी प्रकृति - साधारण मनुष्यों के स्वभाव से विरहित सर्वभाषामयी वाणी से सहित 'दिव्यगी' गुण से समन्वित श्री.....।।१२३।।

देव, मनुष्य, पशु और पक्षी सभी के लिये उन-उन की भाषा से परिणत होने वाली 'दिव्यध्वनि' गुण से समन्वित श्री.....।।१२४।।

प्राणीमात्र के धारा से विरहित वाणी को धारण करने वाले 'अव्याहतार्थवाक्' नाम से समन्वित श्री महावीर.....।।१२५।।

स्वर्गादि सुख को देने वाली ऐसे पुण्य के उपार्जन में कारण भूत वाणी को प्राप्त 'पुण्यवाक्' गुण से समन्वित.....।।१२६।।

गणधर देव, चक्रवर्ती, इन्द्र आदि के द्वारा प्रार्थना करने पर प्रभु की दिव्य ध्वनि असमय में भी खिर जाती है। अतः प्रभु 'अर्थ्यवाक्' गुण से समन्वित श्री.....।।१२७।।

भगवान की वाणी का अर्धभाग मगधदेश की भाषा रूप है और अर्धभाग सर्वदेशों की भाषारूप है इसलिये सर्वदेशों के मनुष्य उसे सहज ही समझ लेते हैं। अथवा अन्य ग्रंथों में इसका अर्थ इस प्रकार किया गया है कि भगवान की वाणी तो एक योजन तक सुनायी देती है पुनः मागध जाति के देव उसे अपनी विक्रिया शक्ति के द्वारा बारह योजन तक (४८ कोशों तक) फैला देते हैं अतः प्रभु की वाणी अर्धमागधी कहलाती है। इसलिये आधी मगध देश की भाषा और आधी सर्वभाषामयी ऐसी दिव्य भाषा से सहित 'अर्धमागधीयोक्ति' गुण से समन्वित श्री.....।।१२८।।

प्रभु की वाणी बहरे भी सुन लेते हैं अर्थात् उनके कर्णरोग ठीक हो जाते हैं। ऐसी परम अतिशयकारी वचनों के धारक 'इद्धवाक' गुण से समन्वित श्री.....।।१२९।।

अनेक धर्मस्वरूप वस्तु धर्मों का उपदेश करने वाले 'अनेकांतदिक्' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१३०।।

जीव नित्य ही है या अनित्य ही है इत्यादिरूप एकांत अंधकार को भेदन करने में समर्थ 'एकान्तध्वान्तभित्' गुण से समन्वित श्री.....।।१३१।।

एकांतवादियों द्वारा कथित दुर्नयो को विध्वंस करने म समर्थ 'दुर्णयान्तकृत' गुण से विभूषित श्री महावीर.....।।१३२।।

जीव-अजीव आदि पदार्थों का प्रतिपादन करने में समर्थ तथा अभ्युदय एवं निःश्रेयस लक्ष्मी के प्रदायक, अन्वर्थ वचन के धारक 'साथवाक्' गुण से विभूषित श्री.....।।१३३।।

भव्यजीवों के पुण्य से प्रेरित दिव्यध्वनि से सहित 'अप्रयत्नोक्ति' गुण से समन्वित श्री.....।।१३४।।

मिथ्या दृष्टियों द्वारा प्रतिपादित जो अहंकार बुद्धि उसके विनाशन करने वाले वचनों को प्राप्त 'प्रतितीर्थमदघ्नवाक्' गुण से विभूषित श्री.....।।१३५।।

'स्यात्पद' से चिन्हित वचन को प्राप्त 'स्यात्कारध्वजवाक्' गुण से समन्वित श्री.....।।१३६।।

मोहनीय कर्म के विनाश से इच्छा के बिना ही वचन के निकलने का जो अतिशय - बिना इच्छा के ही दिव्य ध्वनि खिरने रूप उपतिशय को प्राप्त 'ईहापेतवाक्' गुण से समन्वित श्री.....।।१३७।।

प्रभु के ओष्ठ वाणी निकलते समय अचल रहते हैं ऐसे निश्चल ओष्ठ से वचन के निकलने रूप अतिशय को प्राप्त 'अचलौष्ठवाक्' गुण से विभूषित श्री.....।।१३८।।

अनादि अनिधन द्वादशांग श्रुतज्ञान रूप वचनों का उपदेश करने वाले 'अपौरुषेयवाक्शास्ता' गुण से समन्वित श्री.....।।१३९।।

मुख के खोले बिना ही प्रमुख वाणी खिरती है ऐसे 'रुद्धवाक्' गुण से समन्वित श्री.....।।१४०।।

स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, स्यादस्ति-नास्ति, स्यादवक्तव्य, स्यादस्ति-अ-वक्तव्य, स्यान्नास्त्यवक्तत्य, स्यादस्तिनास्त्यवक्तव्य नाम के सात भंग महावचनों का उपदेश देने वाले 'सप्तभंगिवाक्' गुण से समन्वित श्री.....।।१४१।।

अकार आदि वर्णों से विरहित निशकार वचनों को प्राप्त 'अवर्णगी' नाम से समन्वित श्री महावीर.....।।१४२।।

संपूर्ण देशों की अठारह महाभाषा और सात सौ लघु भाषामयी वाणी के धारक 'सर्वभाषामयगी' गुण से समन्वित श्री.....।।१४३।।

श्रोताओं के कर्णों में पहुंचकर स्पष्ट अक्षर रूप से परिणत 'व्यक्तवर्णगी' नाम से समन्वित श्री महावीर.....।।१४४।।

विशेषार्थ - 'अवर्णगी' पद से भगवान की दिव्य ध्वनि को अनक्षरी कहा है और 'सर्वभाषामयगी' तथा व्यक्त वर्णगी' से सर्वभाषामय तथा स्पष्ट अक्षर रूप कहा है यह परस्पर विरोध दिख रहा है किंतु उसका परिहार यह है कि भगवान की वाणी स्वतः तो निरक्षरी है, किंतु श्रोताओं के कानों में पहुंचकर वे स्पष्ट अक्षर रूप से सुनायी देती है ऐसा भगवान का अतिशय है। अतः प्रथम नाम वक्ता की अपेक्षा से है और दूसरे-तीसरे नाम श्रोताओं की अपेक्षा से हैं इसीलिये कोई विरोध नहीं है।

सफल वाणी को प्राप्त 'अमोधवाक्' गुण से समन्वित श्री.....१४५।।

क्रम रहित युगपत सर्वतत्त्व को प्रकाशित करने वाले 'अक्रमवाक्' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१४६।।

शब्द के अगोचर अनंत पदार्थों के प्रकाशन करने में समर्थ 'अवाच्यानंतवाक्' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१४७।।

सर्वजनों में असाधारण ऐसे वचनों को प्राप्त 'अवाक्' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१४८।।

अद्वैतरूप - एकमात्र आत्मा पर शासन करने वाली वाणी को प्राप्त 'अद्वैतगी' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१४९।।

सत्यवचन का उपदेश करने वाली 'सूनृतगी' नाम के धारक श्री महावीर.....।।१५०।।

प्रभु के वचन सत्य और अनुभय रूप होते हैं अतः सत्य और अनुभय वचन रूप उपदेश करने में समर्थ 'सत्यानुभयगी' गुण से समन्वित श्री.....।।१५१।।

शोभन - सर्वजनप्रिय वाणी के नाथ 'सुगी' नाम से समन्वित श्री महावीर.....।।१५२।।

एक योजन तक फैलने वाली वाणी को प्राप्त 'योजनव्यापिगी' गुण से समन्वित श्री.....।।१५३।।

गाय के दूध के समान उज्ज्वल वाणी को प्राप्त 'क्षीरगौरगी' नाम से समन्वित श्री.....।।१५४।।

अनंतजन्म में संचित पापों को प्रक्षालित करने वाली वाणी के धारक 'तीर्थकृत्वगी' गुण से विभूषित श्री.....।।१५५।।

भव्यजीवों के श्रवण करने योग्य वाणी को प्राप्त 'भव्यैकश्रव्यगु' नाम से समन्वित श्री.....।।१५६।।

शाश्वत, समीचीन वाणी को प्राप्त 'सद्गु' नाम से समन्वित श्री महावीर.....।।१५७।।

नाना प्रकार के भव्यजीवों को संबोधन करने रूप वचनों को बोलने वाले 'चित्रगु' नाम से समन्वित श्री.....।।१५८।।

परम निःश्रेयस पथ के प्रदर्शक वचनों को बोलने वाले 'परमार्थगु' नाम से विभूषित श्री महावीर.....।।१५९।।

आत्यंतिक -परिपूर्ण शांति को प्रदान करने वाली ऐसी वाणी के धारक 'प्रशांतगु' नाम से मंडित श्री महावीर.....।।१६०।।

प्रश्न करने वालों के लिये प्रश्नों के उत्तर रूप वाणी को प्राप्त 'प्राश्निकगु' वचन से समन्वित श्री महावीर.....।।१६१।।

कर्मों का क्षय करने में समर्थ ऐसे वचनों के वक्ता 'सुगु' नाम से विभूषित श्री.....।।१६२।।

पूर्वाण्ह, मध्यान्ह, अपराण्ह और अर्धरात्रिक ऐसे चार काल में नियत समय - छह-छह घड़ी प्रमाण काल तक दिव्य ध्वनि के सिरने रूप पुण्य को प्राप्त 'नियत कालगु' नाम के धारक श्री महावीर.....।।१६३।।

द्वादशांग रूप श्रुति - शास्त्रों को प्राप्त 'सुश्रुति' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१६४।।

बाधारहित अर्थ वाले शास्त्रों का प्रणयन करने वाले 'सुश्रुत' गुण से समन्वित श्री.....।।१६५।।

महापंडित गण से पूज्य ऐसे शास्त्रों के प्रणेता 'याज्यश्रुति' नाम से समन्वित श्री.....।।१६६।।

श्रोता गणों को भक्तिपूर्वक श्रवण कराने वाले 'सुश्रुत' नाम से विभूषित श्री.....।।१६७।।

संपूर्ण पदार्थों को प्रकाशित करने में समर्थ ऐसी वाणी को प्राप्त 'महाश्रुति' गुण से विभूषित श्री महावीर.....।।१६८।।

संसार समुद्र से पार करने रूप ऐसे विशिष्ट धर्मोपदेश को करने वाले 'धर्मश्रुति' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१६९।।

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार पुरुषार्थों के प्रतिपादक स्वामी, 'श्रुतिपति' गुण से मंडित श्री महावीर.....।।१७०।।

अनादिकालीन अपौरुषेय-पुरुष के द्वारा नही किये गये ऐसे श्रुत -शास्त्र के उद्धारक 'श्रुत्युद्धर्ता' गुण से समन्वित श्री.....।।१७१।।

शाश्वत - हमेशा हमेशा रहने वाले ऐसे षट् द्रव्यों के उपदेशक 'ध्रुवश्रुति' गुण को प्राप्त श्री महावीर.....।।१७२।।

मोक्षमार्ग का उपदेश करने वाले 'निर्वाणमार्गदिक्' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१७३।।

श्रावक और मुनि धर्म के प्रतिपादक 'मार्गदर्शक' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१७४।।

सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि ऐसे प्राणियों को मोक्ष और संसार में गमन करने के कारण स्वरूप मोक्ष मार्ग के प्रतिपादक 'सर्वमार्गदिक्' गुण को प्राप्त श्री महावीर.....।।१७५।।

अपनी आत्मा के ज्ञान के पथ प्रदर्शक 'सारस्वत पथ' गुण से समन्वित श्री.....।।१७६।।

प्रभु तीर्थों में जो सर्वोत्कृष्ट तीर्थ उस के करने वाले हैं अतः वे 'तीर्थपरमोत्तमतीर्थवृत' कहलाते हैं अथवा तीर्थपरमोत्तम - सत्यार्थ शास्त्र के द्वारा मिथ्या -दृष्टियों के कुशास्त्र रूप तीर्थ का कर्तन करते हैं - उसके सौ-सौ खंड कर देते हैं। इसलिये 'तीर्थपरमोत्तमतीर्थकृत' गुण से समन्वित श्री.....।।१७७।।

भव्यजीवों के लिये स्वामीरूप से उपदेश करने वाले 'देष्टा' गुण से समन्वित श्री.....।।१७८।।

वाचोयुक्तिपटु - वचन बोलने में कुशल श्री गणधर देवादि्, उनके स्वामी 'वाग्मीश्वर' गुण से समन्वित श्री.....।।१७९।।

सम्यग्दर्शन ज्ञान, चारित्र लक्षण धर्म के प्रतिपादक 'धर्मशासक' गुण से समन्वित श्री.....।।१८०।।

सर्वजीवों के प्रति दयाधर्म का उपदेश देने वाले 'धर्मदेशक' गुण से समन्वित श्री.....।।१८१।।

ग्यारह अंग और चौदह पूर्व रूप वाणी को प्राप्त 'वागीश्वर' गुण से समन्वित श्री.....।।१८२।।

तीन लोक के या सम्यग्दर्शनावादि तीन रत्न के अथवा ब्रह्मा, विष्णु, महेश के स्वामी होने से 'त्रयीनाथ' गुण से समन्वित श्री.....।।१८३।।

उत्पाद, व्यय और धौव्यरूप तीन भंग के या सत्ता, उदय और उदीरणारूप तीन भंग के प्रतिपादक होने से 'त्रिभंगीश' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१८४।।

प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग और द्रव्यानुयोग रूप वाणी के पति होने से 'गिरांपति' गुण से समन्वित श्री.....।।१८५।।

आपकी आज्ञा सिद्ध है जो कुछ आदेश देते है वही होता है अतः सौधर्मेंद्र को भी आज्ञा पालन कराने वाले 'सिद्धाज्ञ' गुण से विभूषित श्री महावीर.....।।१८६।।

प्रभु की वाणी सिद्ध है जो कुछ कह देते है वह सिद्ध हो जाता है अतः वचनसिद्धि को प्राप्त 'सिद्धवाक्' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१८७।।

आदेश सिद्धकारी पद को प्राप्त 'आज्ञासिद्ध' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१८८।।

सर्वशासनों में एकमात्र सिद्धशासन को करने वाले 'सिद्धैकशासन' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१८९।।

प्रभु के सर्वाहितकारी अहिंसामयी सिद्धांत सर्वजगत् में प्रसिद्ध हैं प्रभु का भव्य हितकर सिद्धांत जगत्प्रसिद्ध और मान्य है ऐसे 'जगत्प्रसिद्धासिद्धांत' गुण से समन्वित श्री.....।।१९०।।

प्रभु का उपदेश और ज्ञान ही मंत्ररूप है वह विश्व में प्रसिद्ध है अतः जगत्प्रसिद्ध ज्ञान को प्राप्त 'सिद्धमंत्र' गुण से समन्वित श्री.....।।१९१।।

अतिशय सिद्धवाणी को प्राप्त 'सुसिद्धवाक्' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१९२।।

भव्यजनों के कर्ण को पवित्र करने वाले वचन के प्रतिपादक 'शुचिश्रवा' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१६३।।

प्रमाण संगत वचनों के वक्ता 'निरुक्तोक्ति' गुण से विभूषित श्री महावीर.....।।१६४।।

पूर्ण श्रुत ज्ञान - शास्त्रों के प्ररूपक 'तंत्रकृत्' नाम से विभूषित श्री महावीर.....।।१६५।।

न्याय शास्त्रों के प्ररूपण में समर्थ 'न्यायशास्त्रकृत' गुणों से विभूषित श्री.....।।१६६।।

सर्वजगत् में पूज्य वाणी के धारक 'महिष्ठवाक्' गुण से विभूषित श्री महावीर.....।।१६७।।

''ऊँ कार' मय महाध्वनि को प्राप्त 'महानाद' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१६८।।

कवि-गणधर देवादि के स्वामी 'कवीन्द्र' गुण से विभूषित श्री.....।।१६६।।

जय जयकार और पटह आदि नाना प्रकार के वाद्यों से पूजित 'दुंदुभिस्वन' गुण से अलंकृत श्री महावीर.....।।२००।।

पूजा नं. ५ के तीन सौ मंत्रों के अर्थ

राज्यावस्था में प्रजा से आमदनी का छठा भाग कर-टैक्स लेने की व्यवस्था बनाने वाले और स्वर्ग तथा मोक्ष की याचना करने वालों को फल प्रदान करने वाले 'नाथ गुण से समन्वित श्री.....।।१।।

संसार के दुःखों से संपूर्ण प्राणियों की रक्षा करने में समर्थ 'पति' गुण से समन्वित श्री.....।।२।।

विषय-कषायों से सर्वजन की रक्षा करने वाले और भक्तों के गुणों को बढ़ाने में समर्थ 'परिवृढ' गुण से विभूषित श्री.....।।३।।

अपनी आत्मा पर अनुशासन करने में समर्थ 'स्वामी' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।४।।

स्व और पर की आत्मा के पोषण में समर्थ 'भर्ता' गुण से विभूषित श्री महावीर.....।।५।।

केवलज्ञान किरणों से चराचर जगत् को व्याप्त करने वाले 'विभु' गुण से समन्वित श्री.....।।६।।

जगत् के भव्यजनों को तारने में समर्थ 'प्रभु' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।७।।

समवसरण की विभूति के धारक ऐसे महान ऐश्वर्य को प्राप्त 'ईश्वर' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।८।।

अज्ञानी जनों को संबोधित करने में समर्थ 'अधीश्वर' गुण से समन्वित श्री.....।।९।।

हरि हर हिरण्यगर्भ - विष्णु, महादेव और ब्रह्मा आदि के ईश 'अधीश' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१०।।

अधी-अविवेकी मिथ्यादृष्टि लोग आपके समवसरण आदि आदि बाह्य वैभव को देखकर ही आपको ईशान - महान् स्वामी मानते हैं इसलिये आप 'अधीशान' हैं अथवा अज्ञानी और ज्ञानी सर्व जनों के ईशपने को प्राप्त 'अधीशान' गुण से समन्वित श्री.....।।११।।

आपका स्वामित्व सबसे अधिक है और मिथ्यादृष्टि जनों पर शासन करने में 'अधीशिता' गुण से समन्वित श्री.....।।१२।

त्रिभुवन जनता के स्वामिपद को प्राप्त 'ईशिता' गुणों से समन्वित श्री महावीर.....।।१३।।

शिष्टों पर अनुग्रह और दुष्टों का निग्रह करने में समर्थ पद को प्राप्त 'ईश' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१४।।

सभी जन को सब प्रकार के सौख्य देने में समर्थ 'अधिपति' गुण से समन्वित श्री.....।।१५।।

अहभिंद्रों के स्वामीपद को प्राप्त 'ईशान' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१६।।

ध्यान से योगजन के हृदय कमल में स्थित 'इन' गुण से विभूषित श्री महावीर.....।।१७।।

इन्द्रादि के भी आराध्य परमैश्वर्य को प्राप्त 'इन्द्र' गुण से विभूषित श्री महावीर.....।।१८।।

अधिक रूप से सर्वजन के रक्षक और केवलज्ञान के द्वारा लोक-अलोक को व्याप्त 'अधिप' गुण से समन्वित श्री.....।।१९।।

सर्वजन के लिये मंगल ऋद्धि और सिद्धि के विधाता तीन जगत के नायक 'अधिभू' गुण से समन्वित श्री.....।।२०।।

इन्द्रादिकों के द्वारा पूजा को प्राप्त 'महेश्वर' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२१।।

महापुरुष के स्वामीपद को प्राप्त 'महेशान' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२२।।

महापूजा योग्य पद से समन्वित 'महेश' गुण के धारक श्री.....।।२३।।

प्रकृष्ट अनुशासन करने में समर्थ 'महेशिता' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२४।।

परमानंद सुख का अनुभव कहने वाले 'अधिदेव' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२५।।

महान् जो इंद्रादि उनके द्वारा श्री देवपद को प्राप्त 'महादेव' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२६।।

दिव्य आनंद को प्राप्त 'देव' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२७।।

ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक और अधोलोक के ईश्वर से भी पूज्य पद को प्राप्त 'त्रिभुवनेश्वर' गुण से मंडित श्री.....।।२८।।

अखिल जगत् के पूज्य 'विश्वेश' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२९।।

तीन जगत् के प्राणियों का पोषण करने में समर्थ 'विश्वभूतेश' गुण से विशिष्ट श्री.....।।३०।

सकल भुवन के जनों से स्तुति को प्राप्त 'विश्वेट्' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।३१।।

सकल भुवन के प्राणियों के ईश्वर पद को प्राप्त 'विश्वेश्वर' गुण से समन्वित श्री.....।।३२।।

तीन लोक के ऊपर विराजित 'अधिराट्' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।३३।।

तीन जगत के जीवों के स्वामीपद को प्राप्त वर्ग के रक्षक 'लोकेश्वर' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।३४।।

तीन भुवन में स्थित सभी प्राणी वर्ग के रक्षक 'लोकनापति' गुण से विशिष्ट श्री.....।।३५।।

तीन भुवन के जन को सुखदाता 'लोकनाथ' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।३६।।

अखिल विश्व के रक्षण में दक्ष 'जगत्पति' गुण के धारक श्री महावीर.....।।३७।।

त्रिभुवन जनता के पोषण में दक्ष 'त्रैलोक्यनाथ' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।३८।।

तीन जगत के प्राणीपद को प्राप्त 'लोकेश' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।३९।।

तीन जगत में स्थित प्राणियों के दुर्गति के कारण में समर्थ 'जगन्नाथ' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।४०।।

जगत् के जीवों के पालन करने में समर्थ 'जंगत्प्रभु' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।४१।।

जगत् के जीवों को दुर्गति में जाने से रक्षा करने वाले हैं अतः आप जगत् के पालन में समर्थ 'पिता' गुण से विशिष्ट श्री.....।।४२।।

तीन जगत् के प्राणियों को शिवपद में स्थापित करने में दक्ष 'पर' गुण से समन्वित श्री.....।।४३।।

श्रेष्ठ जनों में भी श्रेष्ठ होने से 'परतर' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।४४।।

कर्म शत्रु को जीतने में समर्थ 'जेता' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।४५।।

राग, द्वेष और मोह शत्रु को जीतने के स्वभाव वाले 'जिष्णु' गुण से विशिष्ट श्री.....।।४६।।

आपका कोई ईश्वर नहीं है और न आप से अतिरिक्त संसार में कोई ईश्वर अतः 'अनीश्वर' गुण से विशिष्ट श्री.....।।४७।।

आप अपने लिये अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत सुख और अनंतवीर्य के करने वाले हैं अतः आप 'कर्ता' गुण से विशिष्ट है ऐसे श्री.....।।४८।।

इंद्र धरणेन्द्र, चक्रवर्ती आदि के भी प्रभुत्व को प्राप्त 'प्रभूष्णु' गुण से विशिष्ट श्री.....।।४९।।

करोड़ों-करोड़ों चंद्र सूर्यों से भी अधिक दीप्ति के धारक 'भ्राजिष्णु' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।५०।।

अनंत शक्तिशाली प्रभाव से सहित 'प्रभविष्णु' गुण से विभूषित श्री महावीर.....।।५१।।

पर से निरपेक्ष स्वय अपने आप सर्वगुण प्रकटन में समर्थ 'स्वयंप्रभु' गुण से समन्वित.....।।५२।।

जीव-अजीव आदि पदार्थ जहां अवलोकित किये जाये वह लोक है ऐसे लोक पर विजय प्राप्त करने वाले 'लोकजित्' गुण से विशिष्ट श्री.....।।५३।।

तीन लोक विजयी 'विश्वजित्' गुण से समन्वित श्री.....।।५४।।

विश्व पर विजय प्राप्त करने वाले मौहशत्रु को भी जीतने में समर्थ 'विश्वविजेता' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।५५।।

विश्वविजयी जो यमराज वह महामंत्र है उस पर श्री विजय प्राप्त करने में कुशल 'विश्वजित्वर' गुण से समन्वित श्री.....।।५६।।

तीनों जगत् को जीतने वाले ज्ञानावरण आदि कर्म शत्रुओं को जीतने में कुशल 'जगज्जेता' गुण से समन्वित श्री.....।।५७।।

सर्व मिथ्यादृष्टिजनों को सेवक भाव कराने में समर्थ 'जगज्जैव' गुण से समन्वित श्री.....।।५८।।

तीनों लोकों के जनसमुदाय को भक्तिमार्ग का प्रतिपादन करने में तत्पर 'जगज्जिष्णु' गुण से समन्वित श्री.....।।५९।।

जगत् को जीतने में सक्षम 'जगज्जयी' गुण से समन्वित श्री.....।।६०।।

सर्वभव्यों को अग्र-श्रेष्ठ धर्म का प्रतिपादन करने वाले 'अग्रणी' गुण से समन्वित श्री.....।।६१।।

सिद्धपद प्राप्त कराने में समर्थ 'ग्रामणी' गुण से समन्वित श्री.....।।६२।।

अपने पथ से भ्रष्ट लोगों को उनके कर्तव्य पथ की ओर ले जाने में समर्थ और अहिंसा लक्षण धर्म के प्रतिपादक 'नेता' गुण से समन्वित श्री.....।।६३।।

ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक और अधोलोक को पोषण करने में समर्थ 'भूर्भुवः स्वीरधीश्वर' गुण से समन्वित श्री.....।।६४।।

रत्नत्रय स्वरूप परमधर्म को निरूपक 'धर्मनायक' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।६५।।

बुद्धि, तप, विक्रिया, औषधि, रस, बल और अक्षीण नामक सप्तर्द्धि से सहित ''ऋद्धीश' गुण से विशिष्ट श्री.....।।६६।।

भू-पृथिवी पर उत्पन्न होने वाले भूत-प्राणी कहलाते हैं उनके रक्षण करने में समर्थ 'भूतनाथ' गुण से विशिष्ट श्री.....।।६७।।

भूत, भविष्यत् और वर्तमान के प्राणियों के पालन करने में दक्ष 'भूतभृत' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।६८।।

गम् धातु का अर्थ ज्ञानवाचक भी होता है अतः ज्ञान गुण से सहित 'गति' गुण से विशिष्ट श्री.....।।६९।।

सर्वजनों की अर्ति-पीड़ा को दूर करने में समर्थ सर्वजन के रक्षक 'पाता' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।७०।।

संसार में धर्मामृत की वर्षा करने वाले 'वृष' गुण से विभूषित श्री महावीर.....।।७१।।

मुक्ति लक्ष्मी के वरण करने योग्य पद को प्राप्त 'वर्य' गुण से विभूषित श्री महावीर.....।।७२।।

द्वादशांग रूप श्रुत के प्रतिपादक और सर्वसिद्धि करने वाले मंत्रस्वरूप 'मंत्रकृत्' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।७३।।

एक हजार आठ शुभ लक्षणों के धारक 'शुभलक्षण' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।७४।।

सर्वप्रजानां के लिये प्रत्यक्षीभूत - संपूर्ण संसार के स्वामी और तीनों लोकों को प्रत्यक्ष करने में - जानने में समर्थ 'लोकाध्यक्ष' गुण से विभूषित श्री.....।।७५।।

महाकष्ट से पराभव होने योग्य जो मोह राजा उसकी भी भर्त्सना करने में समर्थ 'दुराघर्ष' गुण से विभूषित श्री.....।।७६।।

रत्नत्रय धारण करने के लिये योग्य ऐसे भव्यजीवों के उपकारक होने से 'भव्यबंधु' गुण से विभूषित श्री.....।।७७।।

उत्सुकता आदि दोषों से विवर्जित स्थिर प्रकृति के धारक 'निरुत्सुक' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।७८।।

ध्येय या कर्तव्य के प्रति बुद्धि को प्रेरित करने वाले और स्वभाव से ही बुद्धि - सन्मार्ग के प्रदायक 'धीर' गुण से विशिष्ट श्री.....।।७९।।

जगत् के जीवों का हित करने में कारण भूत उपदेश के दाता, 'जगद्धित' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।८०।।

काम, क्रोध, मोह, लोभादि के द्वारा अजेय ऐसे पद को प्राप्त 'अजय्य' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।८१।।

त्रिभुवन में मान्य अंतरंग और बहिरंग लक्ष्मी के प्रदायक 'त्रिजगत्परमेश्वर' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।८२।।

लोक और अलोक केवल ज्ञान की अपेक्षा आस् -स्थित हैं, अतः 'विश्वासी' गुण से समन्वित श्री.....।।८३।।

तीनों लोकों में स्थित सभी प्राणियों के प्रभु 'सर्वलोकेश' गुण से समन्वित श्री.....।।८४।।

पंच परिवर्तन के भ्रमण रूप भव से विरहित अथवा केवलज्ञान हो जाने से जन्म-मरण से विरहित विशिष्ट भव को प्राप्त 'विभव' गुण से समन्वित श्री.....।।८५।।

तीन भुवन में पूज्यपद को प्रदान करने में समर्थ 'भुवनेश्वर' गुण से समन्वित श्री.....।।८६।।

तीनों भुवन के भव्यजीवों को अतिशय प्रिय ऐसे मोक्ष पद को प्राप्त 'त्रिजगद्वल्लभ' गुण से समन्वित श्री.....।।८७।।

तीन लोक में स्थित भव्यजनों को पंचक कल्याणक रूप मंगल का लाभ प्रदान करने वाले

'त्रिजगन्मंगलोदय' गुण से समन्वित श्री.....।।८८।।

मोहरूपी शत्रु के खंडन करने में समर्थ ऐसे धर्मचक्र रूपी आयुध को धारण करने वाले ऐसे धर्म चक्र को प्रवर्तन करने रूप पद को प्राप्त 'धर्मचक्रायुध' नाम से समन्वित श्री.....।।८९।।

तत्काल में स्वर्ग से च्युत होकर माता के गर्भ में आने रूप गर्भ कल्याणक को प्राप्त 'सद्योजात' गुण से विशिष्ट श्री.....।।९०।।

तीनों लोकों के भव्यजनों को सुखप्रद 'त्रैलोक्य मंगल' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।९१।।

भव्यजनों को इष्ट ऐसे स्वर्ग - मोक्ष फल को देने वाले 'वरद' गुण से समन्वित श्री.....।।९२।।

प्रतिघ-क्रोधादि विकार भावों से विरहित 'अप्रतिघ' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।९३।।

किसी भी शत्रु बाह्य और अंतरंग शत्रुओं के शस्त्रों से छेदे नहीं जाने से 'अच्छेद्य' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।९४।।

अतिशय बलशाली स्थिर पद को प्राप्त 'दृढ़ीयान' गुण से समन्वित श्री.....।।९५।।

किसी श्री प्राणी को भय नहीं करने से एवं रौद्र तथा क्रूर परिणामों से विरहित 'अभयंकर' पद को प्राप्त श्री.....।।९६।।

इन्द्रादि से पूज्य महाभाग्यशाली पद को प्राप्त 'महाभाग' गुण से समन्वित श्री.....।।९७।।

तीनों जगत् में किसी भी उपमा को नहीं प्राप्त करने वाले 'निरौपम्य' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।९८।।

धर्म के चक्रवर्ती पद को प्राप्त 'धर्म साम्राज्यनायक' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।९९।।

धर्मतीर्थ प्रवर्तक ऐसे तीर्थंकर पद को प्राप्त 'धर्मतीर्थनायक' गुण से विशिष्ट श्री महावीर को मैं अर्घ्य चढ़ाता हूँ.....।।१००।।

शुक्लध्यान के बल से कर्म को जड़मूल से उखाड़ने में समर्थ 'योगी' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१०१।।

संसार शरीर और भोगों से वैराग्य आपके मुख कमल के विकसित होने से प्रगट हैं अथवा धर्म श्रवण के समय मुख कमल को विकसित करने की बुद्धि के प्रदाता 'प्रव्यक्तनिर्वेद' गुण से समन्वित श्री.....।।१०२।।

राग-द्वेष से रहित ऐसे समता भाव को प्राप्त कराने वाले 'साम्यारोहणतत्पर' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१०३।।

सब जीवों के प्रति समभाव परिणाम से परिणत 'सामयिकी' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१०४।।

सर्व सावद्य - हिंसा के योग से विरतिलक्षण एक अद्वितीय - परम - सामायिक चारित्र को प्राप्त 'सामायिक' गुण से समन्वित श्री.....।।१०५।।

चार विकथा, चार कषाय, पांच इंद्रिय विषय, प्रणय और निद्रा इन प्रमाद से विरहित 'निःप्रमाद' गुण से विभूषित श्री.....।।१०६।।

किये हुये दोषों के निराकरण का नाम प्रतिक्रमण है आप सर्व दोषों से रहित अप्रतिक्रम हैं। अथवा निश्चय प्रतिक्रमण है आप सर्व दोषों से रहित अप्रतिक्रम हैं। अथवा निश्चय प्रतिक्रमण रूप ध्यानलीन पद को प्रदान करने वाले 'अप्रतिक्रम' गुण से समन्वित श्री.....।।१०७।।

पाप, विषय, कषायादि के यावज्जीवन त्यागरूप यम के धारक और सर्व सावद्य योग विरहित पद को प्रदाता 'यम' गुण से समन्वित श्री.....।।१०८।

मोक्षपद के लिये साधनभूत प्रमुख नियम अनुष्ठान के धारक प्रधाननियम' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१०६।।

परम-उत्कृष्ट आसन का प्रभु ने अच्छी तरह अभ्यास किया है अतः आठ वर्ष और अंतर्मुहुर्त से कम एक कोटि वर्ष पर्यंत समवसरण में पद्मासन से बैटे हुये ही भव्यों को धर्मोपदेश देते रहते हैं और जघन्य से तीस वर्ष पर्यंत पद्मासन से बैठे रहते हैं। इसलिये अतिशय अभ्यस्त पद्मासन के धारक 'स्वभ्यस्तपरमासन' गुण से समन्वित श्री.....।।११०।।

कुंभक, पूरक और रेचक आदि लक्षण वायु प्रचार - वायु के निरोध में चण-प्रवीण होने से 'प्राणायामचरण' गुण से समन्वित श्री.....।।१११।।

पंचेन्द्रियों के विषय व्यापार से मन को खींचकर ललाट पट्ट पर 'अर्हं' वीजाक्षर को स्थापित कर योग के पांचवे अंग प्रत्याहार को सिद्ध करने वाले अथवा उस प्रत्याहार के प्रतिपादक 'सिद्ध प्रत्याहार' गुण से समन्वित श्री.....।।११२।।

पंचेन्द्रिय विषयों से विरत्, स्वात्म तत्त्व में तन्मय 'जितेन्द्रिय' गुण से विशिष्ट श्री.....।।११३।।

योगनाम के छठे अंग पर विजय प्राप्त करने से अथवा पार्थिवी, आग्नेयी, मारुती, वारुणी और तात्त्विकी इन पांच प्रकार की धारणाओं के धारक योगिसमुदाय के स्वामी 'धारणाधीश्वर' गुण से समन्वित श्री.....।।११४।।

चतुर्विध धर्म ध्यान को पूण्र रुपेण सिद्ध करने वाले अथवा व्यवहार-निश्चय धर्म ध्यान के प्रतिपादन 'धर्मध्यान निष्ठ' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।११५।।

आत्मस्वरूप में जल से भरे घड़े के समान निश्चल अवस्थित होना समाधि है इस योग के आठवें अंग रूप समाधि में विराजमान होने से अथवा शुक्लध्यान के बल से केवलज्ञान को प्राप्त 'समाधिराट्' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।११६।।

सर्वजीव शुद्ध, बुद्ध स्वभावरूप हैं इस प्रकार के समरसीभाव से परिणत अथवा आपमें यह समरसी भाव पूर्ण रूप से स्फुरायमान हो चुका है ऐसे 'स्फुरत्समरसी भाव' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।११७।।

सर्वसंकल्प-विकल्प से विरहित एक-अद्वितीय आत्मस्वरूप को प्राप्त 'एकाकी' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।११८।।

पंचेन्द्रिय और मन को वश करने में समर्थ, अधःकरण, अपूर्वकरण, अनिवृत्ति करण परिणाम को प्राप्त कराने की विधि के प्रतिपादक 'करण-नायक' गुण से समन्वित श्री.....।।११९।।

अंतरंग-बहिरंग परिग्रह से रहित ऐसे ऋषि, मुनि, यति और अनगार इन चार प्रकार के अथवा पुलाक, वकुश, कुशील, निर्ग्रथ और स्नातक ऐसे पंचविध निर्ग्रंथ मुनियों के स्वामी 'निर्ग्रंथनाथ' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१२०।।

संपूर्ण परिग्रहरहित योगियों के स्वामी 'योगीन्द्र' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१२१।।

बुद्धि, विक्रिया आदि चौंसठ ऋद्धियों से सहित 'ऋषि' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१२२।।

मोक्ष के लिये कारणभूत व्यवहार रत्नत्रय धर्म के प्रतिपादक 'साधु' गुण से मंडित श्री महावीर.....।।१२३।।

दोनों प्रकार की उपशम और क्षपक श्रेणी की आरोहण विधि के प्रतिपादक 'यति' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१२४।:

प्रत्यक्षज्ञान-केवल ज्ञान से चराचर जगत् के ज्ञात 'मुनि' गुण से समन्वित श्री.....।।१२५।।

ऋद्धि संपन्न महर्षियों में भी प्रमुख 'महर्षि' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१२६।।

रत्नत्रय धारी साधु गणों में भी अग्रसर 'साधुधौरेय' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१२७।।

कषाय रहित - महामुनियों के भी स्वामी 'यतिनाथ' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१२८।।

प्रत्यक्षज्ञानी - अवधिज्ञानी मनःपर्ययज्ञानी मुनियों में भी स्वामीपद को प्राप्त 'महामुनि' गुण से समन्वित श्री.....।।१२९।।

वचन गुप्ति के बल से दिव्यध्वनिरूप वचन को प्राप्त 'महामुनीश्वर' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१३०।।

छद्मस्थ अवस्था में वाचंयम के धारक-मौन के धारक 'महामौनी' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१३१।।

धर्म्य -शुक्ल ध्यान के बल से कर्मरूपी ईंधन को नष्ट करने में समर्थ 'महाध्यानी' गुण से समन्वित श्री.....।।१३२।।

महापुरुषों के लिये अनुष्ठान के योग्य ऐसे महान् व्रतों के प्रतिपादक 'महाव्रती' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१३३।।

अन्यजनों में असाधारण ऐसे क्षमा गुण के धारक 'महाक्षम' गुण से समन्वित श्री.....।।१३४।।

अठारह हजार भेद से युक्त ब्रह्मचर्य को प्राप्त 'महाशील' गुण से समन्वित श्री.....।।१३५।।

राग, द्वेष, मोहरूप कषाय को शांत करने वाले 'महाशांत' गुण से समन्वित श्री.....।।१३६।।

इन्द्रियों का दमन और तपश्चर्या करने से उत्पन्न हुये क्लेशों की सहिष्णुता के बल से स्वात्मपद को प्राप्त 'महादम' गुण से समन्वित श्री.....।।१३७।।

कर्ममल कलंक के लेप से विरहित 'निर्लेप' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१३८।।

संशय, विपरीत और अनध्यवसाय दोषों से रहित 'निर्भ्रम स्वान्त' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१३९।।

रत्नत्रयस्वरूप धर्म, अहिंसा रूप परमधर्म और दशधर्मों का अधिकार पूर्वक प्रतिपादन करने में कुशल 'धर्माध्यक्ष' गुण से समन्वित श्री.....।।१४०।।

करूणा मार्ग में गमन करने में समर्थ ऐसे योगीजन, उनके हृदय में भी स्थित 'दयाध्वज' गुण से समन्वित श्री.....।।१४१।।

ब्रह्म शब्द से आत्मा, ज्ञान मोक्ष और चारित्र माने गये हैं इनकी उत्पत्ति के स्थानभूत होने से 'ब्रह्मयोनि' गुण से समन्वित श्री.....।।१४२।।

गुरु के उपदेश के बिना निर्वेद को प्राप्त करने से 'स्वयंबुद्ध' गुण से समन्वित श्री.....।।१४३।।

स्वात्म तत्त्व के ज्ञाता 'ब्रह्मज्ञ' गुण से समन्वित श्री.....।।१४४।।

'ब्रह्म' शब्द से मोक्ष, ज्ञान, तप और चारित्र कहे गये हैं। इनके स्वरूप के ज्ञाता 'ब्रह्म तत्त्ववित्' नाम से समन्वित श्री.....।।१४५।।

कर्ममल कलंक से रहित पवित्र आत्मा होने से 'पूतात्मा' गुण से समन्वित श्री.....।।१४६।।

द्रव्यकर्म, भावकर्म और नोकम्र से विरहित 'स्नातक' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१४७।।

अभयदान को देने के स्वभाव वाले 'दान्त' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१४८।।

सौधर्मेन्द्र आदि इन्द्र, चन्द्र, धरणेन्द्र और मुनीन्द्र आदि के भी पूज्य पर्याय को प्राप्त 'भदन्त' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१४९।।

शुभक्रियाओं के प्रति द्वेष करने वाले ऐसे भावों से विरहित 'वीत मत्सर' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१५०।।

प्रभु का धर्मरूपी वृक्ष भव्यजीवों को स्वर्ग-मोक्ष फल को प्रदान करने वाला हैं वह धर्म वृक्ष ही आपका आयुध है कर्मरूपी शत्रु को मारने के लिये शस्त्र का काम करता है। अतः स्वर्ग-मोक्ष फल के प्रदाता कर्मशत्रु के नष्ट करने के लिये शस्त्र के धारक ऐसे 'धर्मवृक्षायुध' गुण से समन्वित श्री.....।।१५१।।

तीनों लोकों में क्षोभ उत्पन्न करने में समर्थ ऐसे वज्र अग्नि आदि के द्वारा भी चारित्र से चलायमान होने में अशक्य ऐसी शक्ति को प्राप्त करने वाले 'अक्षोभ्य' गुण से समन्वित श्री.....।।१५२।।

भव्यजीवों को पवित्र करने में कुशल 'प्रपूतात्मा' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१५३।।

भव्यजीवों के लिये मोक्ष का उत्पत्ति में कारणभूत ऐसे 'अमृतोद्भव' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१५४।।

'णमो अरिहंताणं' इत्यादि सात अक्षर के मंत्र स्वरूप होने से 'मंत्रमूर्ति' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१५५।।

स्वयमेव परमसमरसी भाव स्वरूप 'स्वसौम्यात्ता' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१५६।।

पराधीन स्वरूप जड़-पौद्गलिक शरीर से विरहित -'स्वतन्त्र' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१५७।।

ब्रह्मस्वरूप जो निश्चय चारित्र उसको उत्पन्न कराने वाले 'ब्रह्मसंभव' गुण को प्राप्त श्री महावीर.....।।१५८।।

अतिशय प्रहसित वदन- मंद-मंद मुस्कान सहित स्वर्ग-मोथा के प्रदाता 'सुप्रसन्न' गुण से समन्वित श्री.....।।१५९।।

अनन्त केवलज्ञान, दर्शन, वीर्य, सौख्य, सम्यक्त्व, अस्तित्व, प्रमेयत्व, चैतन्य आदि अनंत गुणों को समुद्र 'गुणाम्भोधि' नाम से समन्वित श्री.....।।१६०।।

शुभ-अशुभ कर्मों के आसव के निरोध रूप पूर्ण संवर को प्राप्त 'पुण्यापुण्य निरोधक' गुण से समन्वित श्री.....।।१६१।।

आत्मतत्त्व के स्वरूप में स्थित संवर गुण को पूर्ण करने वाले 'सुसंवृत' नाम के धारक श्री महावीर.....।।१६२।।

अपनी आत्मा में स्थित होने से सर्व प्रकार से सुरक्षित 'सुगुप्तात्मा' नाम से समन्वित श्री महावीर.....।।१६३।।

कर्मरूपी अंजन से विरहित कृतकृत्यस्वरूप 'सिद्धात्मा' पद को प्राप्त श्री महावीर.....।।१६४।।

सर्वोपद्रव को दूर करने वाले 'निरूपप्लव' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१६५।।

सर्वकर्मों के छूट जाने से अनंत केवल ज्ञानादिलक्षण उत्तर फल को प्राप्त 'महोदर्क' गुण से मंडित श्री महावीर.....।।१६६।।

सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र लक्षण जो मोक्ष का उपाय है उसके प्रतिपादक 'महोपाय' गुण से समन्वित श्री.....।।१६७।।

अधोलोक मध्यलोक, ऊर्ध्वलोक में स्थित भव्यजीवों के लिये एक अद्वितीय जनक-पिता के भी पितास्वरूप परमहित कारक 'जगदेक पितामह' गुण के धारक श्री.....।।१६८।।

सभी जीवों के प्रति दयालक्षण धर्म के उपदेशक 'परमकारुणिक' गुण से समन्वित श्री.....।।१६९।।

चौरासी लाख उत्तर गुणों के धारक 'ग्रण्य' नाम से समन्दि श्री महावीर.....।।१७०।।

तपश्चरण, संयम, परीषह सहन आदि क्लेशलक्षण अंकुश के द्वारा मनरूपी मत्त हाथी को उन्मार्ग में जाने से रोकने वाले 'महाक्लेशांकुश' गुण से मंडित श्री.....।।१७१।।

जन्मकाल से ही मल-मूत्रादि से विरहित, शुद्ध बुद्ध एक स्वभावरूप परमपवित्र तीर्थ स्वरूप को प्राप्त 'शुचि' गुण से समन्वित श्री.....।।१७२।।

अट्ठाईस भेदरूप जो मोहनीय कर्म नहीं हुआ शत्रु उस पर विजय प्राप्त करने वाले 'अरिंजय' गुण से मंडित श्री.....।।१७३।।

सर्वकालों में नहीं प्राप्त हुये ऐसे अलरब्धलाभ लक्षण वाले परमशुक्ल ध्यान के धारक 'सदायोग' गुण से समन्वित श्री.....।।१७४।।

सर्वकाल में निज शुद्ध बुद्ध एक स्वभाव वाले परमात्मा में एक लोलीभाव - तन्मय को प्राप्त लक्षण परमानंद रूपी अमृत के रसास्वादन रूप स्वभाव वाले भाग को प्राप्त 'सदाभोग' गुण से समन्वित श्री.....।।१७५।।

हमेश परम धैर्य के धारक 'सदाधृति' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१७६।।

शत्रु-मित्र, तृण-कंचन आदि में परममध्यस्थ भाव को प्राप्त 'परमौदासिता' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१७७।।

केवलज्ञान होने के बाद कवलाहार-ग्रास के भोजन से रहित हमेशा कल्याण मार्ग पर आरुढ़ 'अनाश्वान' गुण से समन्वित श्री.....।।१७८।।

अभयदान रूप सफल आशीर्वाद को प्रदान करने वाले 'सत्याशीः' गुण से मंडित श्री.....।।१७९।।

राग, द्वेष और मोह को शांत करने वाले जो साधुगण, उनके भी स्वामी 'शान्तनायक' गुण से समन्वित श्री.....।।१८०।।

जन्म से लेकर भी जो व्याधियों से पीड़ित हैं ऐसे प्राणियों की नाममात्र से ही सर्व व्याधियों को विनष्ट करने में समर्थ तथा जन्म जरा और मरण रूपी संसार रोग को जड़ मूल से उखाड़ने में कुशल 'अपूर्ववैद्य' गुण से विशिष्ट.....।।१८१।।

निर्विकल्प समाधि लक्षण शुक्ल ज्ञान के ध्याता 'योगज्ञ' गुण से समन्वित श्री.....।।१८२।।

परमचारित्र लक्षण स्वरूप से परिणत 'धर्ममूर्ति' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१८३।।

हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह लक्षण जो पाप हैं उनको भस्म करने में कुशल 'अधर्मधक' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१८४।।

स्वात्म ज्ञान में निष्ठ 'ब्रह्मेड़' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१८५।।

पंचम केवलज्ञान के स्वामी 'महाब्रह्मपति' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१८६।।

संपूर्ण करने योग्य कार्यों को आपने पूर्ण कर लिया है अतः 'कृतकृत्य' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१८७।।

इन्द्रादिकों के द्वारा पूजा को प्राप्त 'कृतक्रतु' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१८८।।

केवल ज्ञानादि अनंत गुणों की उत्पत्ति के स्थान स्वरूप 'गुणाकर' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१८९।।

क्रोधादि विभाव भावों को विनष्ट करने वाले 'गुणोच्छेदी' गुणों से विशिष्ट श्री.....।।१९०।।

नेत्र की पलकों को खोलने और बंद करने रूप मेषोन्मेष से रहित दिव्यनेत्र को धारण करने वाले 'निर्निमेष' गुण से समन्वित श्री.....।।१९१।।

गृह, परिकर आदि आश्रय से विरहित 'निराश्रय' गुण से विशिष्ट श्री महावी.....।।१९२।।

सर्वोच्च बुद्धि के जनक 'सूरि' गुण से समन्वित श्री.....।।१९३।।

स्यात्कार शब्द से उपलक्षित सुनयों के मर्म के प्रतिपादक 'सुनयतत्त्वज्ञ' गुणा से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१९४।।

सर्व जीवों के लिये जीवन जीने की बुद्धि के प्रदाता 'महामैत्रीमय' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१९५।।

संपूर्ण कर्मों के उपशमन करने की विधि के विधायक 'शमी' गुण से समन्वित श्री.....।।१९६।।

प्रकर्ष रूप जो कर्म बंध, उसको नष्ट करने वाले 'प्रक्षीणबंध' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१९७।।

असहिष्णु भाव से उत्पन्न हुआ जो कलह उससे विरहित 'निर्द्वन्द्व' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१९८।।

केवलज्ञान रूपी ऋद्धि को प्राप्त 'महर्षि' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१९९।।

संसार में पुनः आगम से विरहित ऐसे मोक्षधाम को प्राप्त 'अनंतग' नाम से समन्वित श्री महावीर स्वामी को मैं अर्घ्य चढ़ाता हूँ।।२००।।

वाण आदि नाना प्रकार के आयुध से विरहित 'निर्वाण' गुण से समन्वित श्री.....।।२०१।।

अभ्युदय और निःश्रेयस रूप जो लक्ष्मी, उससे आलिंगित है कंठ जिनका ऐसे 'सागर' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२०२।।

जिनकल्प और स्थविरकल्पी साधुओं के धर्म के प्रतिपादक 'महासाधु' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२०३।।

कर्मकलंक से विरहित शोभा को प्राप्त 'विमलाभ' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२०४।।

शुद्ध आभा रूप शुक्ल लेश्या को प्राप्त 'शुद्धाभ' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२०५।।

समवसरण रूप बहिरंग लक्ष्मी और केवल ज्ञानादिरूप अंतरंग लक्षमी के धारक 'श्रीधर' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२०६।।

वाच्छित फल के प्रदाता 'दत्त' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२०७।।

पापमल से विरहित-आभा से सहित 'अमलाभ' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२०८।।

ऊर्ध्व स्थान की स्थापना करने में शुक्ल 'उद्धर' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२०९।।

'ऊर्ध्वं व्रज्या स्वभाव' ऊर्ध्व गमन के स्वभाव से त्रैलोक्य के अग्र भाग पर स्थित पद को प्राप्त 'अग्नि' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२१०।।

जीवन पर्यंत परम चारित्र के धारक 'संयम' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२११।।

परम कल्याण रूप पंच कल्याणक को प्राप्त 'शिव' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२१२।।

इन्द्रादि मुकुलित कमल के समान अंजुलि जोड़कर नमस्कर करते हैं ऐसे इंद्रादि से कमलवत् अंजलि बनाकर नमस्कार के योग्य 'पुष्पांजलि' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२१३।।

श्रेयस्कर बारह सभा के भव्यों से सहित 'शिवगण' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२१४।।

उत्कृष्ट रूप से परीषह आदि को सहन करने में दक्ष 'उत्साह' गुण से समन्वित श्री.....।।२१५।।

सर्वोकृष्ट ज्ञान को प्रदान करने वाले 'ज्ञान' या ज्ञानेश्वर नाम के गुण से विशिष्ट श्री.....।।२१६।।

परम विभूमि के धारक 'परमेश्वर' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२१७।।

व्रतों में निरतिचार गुण के प्रतिपादक 'निमलेश' गुण से सहित श्री महावीर.....।।२१८।।

पुण्य गुणों के कीर्तन योग्य पद को प्राप्त 'यशोधर' नाम से समन्वित श्री महावीर.....।।२१९।।

घाति कर्म को निर्मूल रूप से घातन में दक्ष 'कृष्ण' या कृष्णनाथ गुण से समन्वित श्री.....।।२२०।।

केवलज्ञान रूप बुद्धि को प्राप्त 'ज्ञानमति' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२२१।।

कर्मकलंक से रहित, सकलविमफल केवल ज्ञान को प्राप्त 'शुद्धिमति' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२२२।।

अंतरंग-बहिरंग लक्ष्मी को प्राप्त 'श्रीभद्र' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२२३।।

राग-द्वेष रहित शांतपद को प्राप्त 'शान्त' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२२४।।

वृषरूप-अहिंसा लक्षण धर्म से शोभनशील 'वृषभ' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२२५।।

काम-क्रोधादि शत्रुओं के द्वारा अजेय 'अजित' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२२६।।

सभीचीन भव को प्राप्त, सुख के प्रदायक 'संभव' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२२७।।

अपने रूपादि के अतिशय से बुद्धिमानों को भी आनंद उत्पन्न कराने वाले 'अभिनंदन' गुण से समन्वित श्री.....।।२२८।।

लोकालोक को प्रकाशित करने वाली बुद्धि से सहित 'सुमति' गुण से विभूषित श्री.....।।२२९।।

लाल कमल के समान वर्ण को प्राप्त 'पद्मप्रभ' गुण से विभूषित श्री महावीर.....।।२३०।।

शोभन गुण के प्रदाता 'सुपार्श्व' गुण से समन्वित श्री.....।।२३१।।

करोड़ों चन्द्रमा की प्रभा के धारक 'चन्द्रप्रभ' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२३२।।

कुंद पुष्प के समान उज्ज्वल दंतों से सहित 'पुष्पदंत' गुण से समन्वित श्री.....।।२३३।।

श्री-आशीर्वाद देने के तल-स्वभाव वाले अथवा संसार ताप के निवारक शीतल वचन सहित शांतमूर्ति 'शीतल' गुण से समन्वित श्री.....।।२३४।।

अतिशय प्रसंशनीय गुण के धरक 'त्रेयांस' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२३५।।

देवों से पूजित हैं पादकमल जिनके ऐसे 'वासु पूज्य' गुण से समन्वित श्री.....।।२३६।।

जन्मकाल से ही मल-मूत्र से विरहित अथवा भावकर्म-राग द्वेषादि मल से विरहित 'विमल' गुण से विभूषित.....।।२३७।।

अनंत संसार से पार करने वाले 'अनंत' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२३८।।

संसार समुद्र में डूबते हुये जीवों के उद्धारक और श्रेष्ठपद को प्राप्त कराने वाले ऐसे 'धर्म' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२३९।।

संपूर्ण कर्मों का क्षय करने वाले 'शांति' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२४०।।

तपश्चरण के क्लेश को शातिपूर्वक सहन करने वाले 'कुंभु' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२४१।।

गऋ धातु गमनार्थक है भगवान एक समय में लोकांत तक गमन करते हैं अतः 'अर' कहलाते हैं। एक समय मात्र में लोक-अलोक को जानने-देखने वाले 'अर' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२४२।।

भव्यजीवों को मोक्षपद प्राप्त कराने में कुशल 'मल्लि' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२४३।।

मुक्तिपद के लिये कारणभूत ऐसे सुंदर व्रतों को देने में कुशल 'मुनिसुव्रत' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२४४।।

इन्द्रों को, चन्द्रादिज्योतिषी देवों को एवं मुनीन्द्रों – गणधर देवादिकों को नमित करने वाले 'नमि' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२४५।।

आत्म धर्म के प्रति ले जाने में समर्थ 'नेमि' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२४६।।

जो अपने भक्तों के पास में अदृश्य रूप से रहते हैं ऐसे 'पार्श्व' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२४७।।

ज्ञान और वैराग्य इन दो प्रकार की लक्ष्मी से वृद्धि को प्राप्त, परम अतिशय ज्ञान और पूजा से समन्वित 'वर्द्धमान' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२४८।।

मोहरूपी मल्ल के विनाशक महासुभटस्वरूप 'महावीर' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२४९।।

अपने भक्तों को विशिष्ट लक्ष्मी के प्रदाता 'सुवीर' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२५०।।

सभीचीन और शाश्वती बुद्धि के धारक 'सन्मति' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२५१।।

मल-पाप को हनन करने वाले, अनके हजारों-लाखों भटों, करोड़ों भटों को विघटित-नष्ट करने में कुशल, 'महति महावीर' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२५२।।

केवलज्ञान प्रगट होने के बाद श्रीविहार के समय एक योजन प्रमाण हजार दलवाले कमल जो कि संख्या में दो सौ पच्चीस होते हैं उन कमलों पर चरण कमल रखकर चलने वाले 'महापद्म' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२५३।।

कामदेव रूप योद्धाओं के आराध्य 'सूरदेव' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२५४।।

नेत्रों को प्रिय ऐसे करोड़ों चंद्र-सूर्यों के समान कांति मंडल के धारक 'सुप्रभ' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२५५।।

स्वयं अपने द्वारा प्रकर्ष रूप से शोभा को प्राप्त 'स्वयंप्रभ' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२५६।।

कर्मशत्रुओं के विध्वंसक ऐसे ध्यान, अध्ययन, संयम और तपश्चरण रूप शस्त्र के धारक 'सर्वायुध' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२५७।।

हमेशा-हमेशा जयशील स्वभाव वाले 'जयदेव' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२५८।।

उदय के तीन भेद हैं - चय, उपचय और चयोपचय। निदानदोष रहित तीर्थंकर प्रकृति नाम कर्म और उच्चगोत्र आदि लक्षण पुण्य कर्म पुण्य के उपार्जन को 'उपचय' कहते हैं और निर्वाण गमन को 'चयोपचय' कहते हैं। इन त्रिविध उदय से सहित 'उदयदेव' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२५९।।

करोड़ों चन्द्र और सूर्यों के तेज से सहित, सर्वज्ञ, वीतरागस्वरूप 'प्रभादेव' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२६०।।

जगद् विजयी कामदेव या मोह शत्रु को जीतने से उत्कृष्ट अंक-विरुदावली को प्राप्त, मुक्ति कांता के पति 'उदंक' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२६१।।

भगवान की दिव्यध्वनि तीन काल या चार वार स्वभाव से खिरती है पुनः गणधर देव - इंद्रराज और मुख्य श्रोता चक्रवर्ती आदि के प्रश्न के होने पर ध्वनि को प्रवृत्त करने वाले 'प्रश्नकीर्ति' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२६२।।

मोह शत्रु का विध्वंस करने वाले 'जय' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२६३।।

लोक-अलोक को प्रकाशित करने वाली ऐसी बुद्धि के धारक 'पूर्णबुद्धि' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२६४।।

क्रोध मान माया लोभ रूप कषायों से सहित अथवा निष्क की सा-लक्ष्मी के आय-रत्नवृष्टि के समागम के योग से भी आप निष्कषाय हैं अर्थात् भगवान की माता के आंगन में, आहारदाता के घर पर भगवान के आगमन के निमित्त से रत्नवृष्टि आदि पंचाश्चर्य होते हैं। अथवा स्वर्ण के समान निघर्षण, छेदन, तापादि रूप सर्व प्रकार की परीक्षाओं में उर्त्तीर्ण सरस्वती के आगमन स्वभाव को प्राप्त 'निष्कषाय' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२६५।।

सहस्रनाम टीका। पृ.१०३।।

घातिया समूह का घात कर देने पर तेजोमंडलस्परूप 'विमलप्रभ' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२६६।।

संयम के भार को धारण करने में वह - स्कंध-कंधे की समानता को प्राप्त 'बहल' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२६७।।

मलमूत्र से विरहित, निर्ग्रंथमुनियों के स्वामी 'निर्मल' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२६८।।

आकाश के समान गुप्त और अलक्ष्यस्वरूप 'चित्रगुप्त' गुण से समन्वित श्री.....।।२६९।।

उपसर्ग, परीषह आदि के आने पर भी धीर गुण से रत्नत्रय को परलोक पर्यंत निर्विध्वरूप से पालन करने में कुशल 'समाधिगुप्त' गुण से समन्वित श्री.....।।२७०।।

गुरु के उपदेश की अपेक्षा से रहित स्वयं-अपने द्वारा निर्वेद-संसार से वैराग्य को प्राप्त करके लोक-अलोक स्वरूप के ज्ञाता 'स्वयंभू' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२७१।।

कं-सुख को प्राप्त-अनंत सौख्य के धारक 'कंदर्प' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२७२।।

आर्यखंड में धर्मचक्र का निराबाधरूप प्रवर्तन करने वाल 'जयनाथ' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२७३।।

अपने व्रतों और शीलों को निरतिचार रखने वाले, बाह्य-अभ्यंतर लक्ष्मी से सहित 'श्रीविमल' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२७४।।

दिव्य पैंतीस अक्षर वाले -णमोकार मंत्र का उपदेश देने वाले 'दिव्यवाद' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२७५।।

कर्मशत्रु के विनाशक अविनश्वर पद को प्राप्त 'अनंतवीर' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२७६।।

इन्द्रादिगण और असंख्य देव-देवियों से सेवित 'पुरुदेव' गुण से समन्वित श्री.....।।२७७।।

सुंदर सृष्टि के विधाता, निरतिचार चारित्र के धारक 'सुविधि' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२७८।।

प्रज्ञा में पारंगत महापंडित जनों से प्रमाणित, प्रत्यक्ष-परोक्ष प्रमाण में चतुर ऐसे गणधरदेव गणों से सम्मानित, 'प्रज्ञापारमित' गुण से समन्वित श्री.....।।२७९।।

अपने शुद्ध स्वरूप के विनाश से रहित 'अव्यय' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२८०।।

अनादिकालीन सर्वोत्कृष्ट स्थान पर स्थित - विराजमान 'पुराणपुरुष' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२८१।।

अहिंसा लक्षण सर्वोत्कृष्ट धर्म के प्रवर्तक 'धर्मसारथि' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२८२।।

भगवान का कीर्तन-स्तवन परमकल्याण रूप है अथवा परम कल्याण के दाता तीर्थंकर नाम उच्च गोत्र को कराने वाल स्तुति को प्राप्त 'शिवकीर्तन' गुण से विभूषित श्री.....।।२८३।।

लोक जीवनकारी क्रियाओं के उपदेशक 'विश्वकर्मा' गुण से विभूषित श्री महावीर.....।।२८४।।

आत्मा में एक लोली भाव-तन्मय भाव से अच्यवन स्वरूप-आत्मा में तन्मय होकर कभी च्युत न होने वाले ऐसे 'अक्षर' गुण से विभूषित श्री महावीर.....।।२८५।।

छद्म-ज्ञानावरण-दर्शनावरण कर्मों के विघातक 'अच्छद्म' गुण से विभूषित श्री.....।।२८६।।

केवलज्ञान की अपेक्षा से विश्व को व्याप्त करने वाले 'विश्वभू' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२८७।।

संपूर्ण जगत् में स्वधर्म को व्याप्त कर वाले 'विश्वनायक' गुण से समन्वित श्री.....।।२८८।।

दिशारूपी वस्त्र के धारक पूर्णरूपेण शीलगुप्प से विभूषित 'दिगम्बर' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२८९।।

तत्काल में प्राण नष्ट करने वाली जो व्याधि, उसके भी विनाशक 'निरातंक' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२९०।।

तत्त्वविषयक शंका से रहित, दृढ़ निश्चय धर्म के प्रतिपादक 'निरारेक' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२९१।।

भक्तों के संसार को नष्ट करने वाले 'भवांतक' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२९२।।

निश्चल व्रत और दीक्षास्वरूप 'दृढ़व्रत' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२९३।।

नैगम नय आदि सर्वोत्तम नयों के प्रतिपादक 'नयोत्तुंग' गुण से समन्वित श्री.....।।२९४।।

अपवाद-अवर्णवाद आदि दोषों से रहित 'निष्कलंक' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२९५।।

संसार से विरहित एवं शरीर से रहित अथवा चरम शरीरधारी 'अकलाधर' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२९६।।

शारीरिक मानस और आगंतुक क्लेशों से विरहित 'सर्वक्लेशापहा' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२९७।।

अजेय जो महाराज उसके द्वारा भी क्षय को नहीं प्राप्त होने वाले 'अक्षय्य' गुण से विभूषित श्री महावीर.....।।२९८।।

सर्व परीषह और उपसर्गों के सहने में समर्थ, उत्तम क्षमादि दश धर्मों के गुणों में सहित 'क्षान्त' गुण से विभूषित श्री.....।।२९९।।

समवसरण में अशोक वृक्ष रूप चिन्ह से उपलक्षित 'श्रीवृक्ष-लक्षण' गुण से विभूषित श्रीमहावीर स्वामी को मैं अर्घ्य चढ़ाता हूँ।।३००।।

पूजा नं. ६ के तीन सौ मंत्रों के अर्थ

केवलज्ञानादि गुणों को वृद्धिंगत करने वाले 'ब्रह्मा' इस गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१।।

समवसरण में घातिसमूह के नाश से उत्पन्न भगवान के परमौदारिक शरीर की निर्मलता के निमित्त चारमुख सहित, चार अनुयोगरूप मुखों के द्वारा चार पुरुषार्थ को प्रतिपादित करने वाले 'चतुर्मुख' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२।।

चारों गतियों के दुःखों से जीवों को निकालकर मोक्षपद में स्थापित करने वाले 'धाता' गुण से विशिष्ट श्री.....।।३।।

सूक्ष्म-वादरदि सर्व जीवों के रक्षक 'विधाता' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।४।।

समवसरण में कमल के ऊपर चार अंगुल अधर विराजमान 'कमलासन' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।६।।

निज शुद्ध बुद्ध एक स्वभाव निच्चमत्कार एक लक्षण वाले परब्रह्म स्वरूप टंकोत्कीर्ण स्फटिक मणि

के बिंब सदृश निवासस्थान को प्राप्त 'आत्मभू' गुण से समन्वित श्री.....।।७।।

असंख्यात अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी में आदिकाल में असि, मषि, कृषि, विद्या, वाणिज्य और शिल्प इन षट् क्रियाओं के प्रतिपादनरूप धर्म के शासक 'सृष्टा' इस गुण से विशिष्ट श्री.....।।८।।

देवगणों में श्रेष्ठ माता के समान हितैषी 'सुरज्येष्ठ' गुण के धारक श्री महावीर.....।।९।।

तीनों लोकों में रहने वाली जनता के स्वामी 'प्रजापति' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१०।।

गर्भ में आगमन के समय पंद्रहमास पर्यंत माता के घर के आंगन में रत्नकनक वृष्टि के संपादक 'हिरण्यगर्भ' गुण से विशिष्ट श्री.....।।११।।

चार अनुयोग स्वरूप वेद के ज्ञाता 'वेदज्ञ' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१२।।

केवलज्ञान प्राप्ति के लिये उपाय के प्रतिपादक 'वेदांग' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१३।।

पंचविधज्ञान के पार को प्राप्त ऐसे पद के प्रतिपादक 'वेदपराग' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१४।।

पुनर्जन्म से विरहित 'अज' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१५।।

वस्तु तत्त्व मनन कराने वाले 'मनु' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१६।।

असंख्य प्राणियों को सौख्य के प्रदाता 'शतानंद' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१७।।

परमात्मा में गमन-प्रवेश स्वरूप सूर्य के समान बिना इच्छा के गमन स्वभाव वाले 'हंसयान' गुण से समन्वित श्री.....।।१८।।

सम्याग्दर्शन, ज्ञान और चारित्र इन तीनों के समूह निर्वृत्तं - बने हुये होने से 'त्रयीमय' गुण से समन्वित श्री.....।।१९।।

केवल ज्ञान के द्वारा संपूर्ण विश्व में व्याप्त 'विष्णु' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२०।।

तीनों लोकों में विशेष परंपरा के प्रतिपादक अथवा तीनों लोकों में विशिष्ट क्रम- सर्वोच्च स्थान को प्राप्त 'त्रिविक्रम' गुण से समन्वित श्री.....।।२१।।

कर्म शत्रुओं को जीतने में समर्थ 'शौरि' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२२।।

अभ्युदय-लौकिक सुख और निःश्रेयस-मोक्ष सुखरूपी द्विविध लक्ष्मी को प्राप्त 'श्रीपति' गुण से समन्वित श्री.....।।२३।।

त्रेसठ शलाका पुरुषों में श्रेष्ठ 'पुरुषोत्तम' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२४।।

माता को दिक्कुमारियों द्वारा प्रश्न करने पर उत्तर देने में विकुंण-विचक्षण बुद्धि को कराने वाले 'वैकुंठ' गुण से समन्वित श्री.....।।२५।।

प्रधानभूत -आत्म तत्त्व में तन्मयता को प्राप्त 'पुण्डरीकाक्ष' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२६।।

इन्द्रियों को विजय प्राप्त करने वाले जितेंन्द्रिय 'हृषीकेश' गुण से समन्वित श्री.....।।२७।।

पाप को दूर करने में समर्थ 'हरि' गुण से समन्वित श्री.....।।२८।।

स्वात्म तत्त्व को बतलाने वाले 'स्वभू' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२९।।

नरकादिदुर्गतियों में गिरने से रोकने वाले त्रैलोक्यपालन में समर्थ 'विश्वम्भर' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।३०।।

मोहराज और मृत्युराज का विध्वंस करने वाले 'असुरध्वंसे' गुण से मंडित श्री.....।।३१।।

समवसरण आदि विभूति-लक्ष्मी और केवलज्ञानादिलक्षण लक्ष्मी के भर्ता 'माधव' गुण से मंडित श्री महावीर.....।।३२।।

बलि-कर्म को बंधन बतलाने वाले अथवा बलवत्ता और तीनों लोकों में क्षोभ-आश्चर्य उत्पन्न

करने में कारण ऐसी बली तीर्थंकर प्रकृति और उच्च गोत्र प्रकृति के बंध को करने वाले 'बलिबंधन' गुण से मंडित श्री.....।।३३।।

अक्ष- इंद्रियो को विजय कर 'अधः' नीचे डालने वाले दिगंबर मुनि 'अधोक्ष' हैं ऐसे जितेंद्रिय मुनियो के ध्यान गम्य हैं। अतः जितेंद्रिय दिगंबर गुरुओं के भी ध्यान के गोचर पद को प्राप्त 'अधोक्षज' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।३४।।

मद्य और मधु को पाप का मूल कारण कहने वाले 'मधुद्वेषी' गुण से विशिष्ट श्री.....।।३५।।

सर्वकाल नीलवर्ण रूप केशों से सहित अथवा क-आत्मा के स्वरूप की प्राप्ति में ईश-समर्थ ऐसे महामुनियों से भी सेवित 'केशव' गुण से मंडित श्री महावीर.....।।३६।।

अंगबाह्य और अंग प्रविष्ट श्रुत ज्ञानमयी श्रोत्र से सहित 'विष्टरश्रवा' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।३७।।

वक्षःस्थल पर श्रीवत्स चिन्ह के धारक 'श्रीवत्सलांछन' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।३८।।

बहिरंग समवसरण आदि लक्ष्मी और अंतरंग अनंत चतुष्टय लक्ष्मी से सहित 'श्रीमान्' गुण से समन्वित श्री.....।।३९।।

सर्वकाल परमात्मा में निष्ठ-तन्मयता को प्राप्त 'अच्युत' गुण से विशिष्ट श्री.....।।४०।।

नरकादि दुर्गातियों को नष्ट करने वाले- वहां जाने से रोक-देनेवाले 'नरकान्तक' गुण से समन्वित श्री.....।।४१।।

सब तरफ से बारह सभा के देव, मनुष्य, तिर्यंच स्वरूप सेना से वेष्टित 'विष्वक् सेन' गुण से समन्वित श्री.....।।४२।।

सुरेन्द्र, नागेन्द्र, नरेन्द्र और मुनीन्द्रों को उपदेश देने वाले 'चक्रपाणि' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।४३।।

कमल के समान नाभि के धारक 'पद्मनाभ' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।४४।।

मोक्ष की याचना करने वाले तीनों भुवन में स्थित जो भव्यजन उनको उपदेश देने वाले 'जनार्दन' गुण से समन्वित श्री.....।।४५।।

मुक्ति कन्या को विवाहने में समर्थ 'श्रीकंठ' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।४६।।

परमानंद लक्षण सुख के कर्ता होने से 'शंकर' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।४७।।

परमाल्हाद लक्षण सुख को प्राप्त कराने वाले होने से 'शंभु' गुण से समन्वित श्री.....।।४८।।

सर्वजीवों के पालन करने की विधि को बतलाने वाले 'कपाली' गुण से विशिष्ट श्री.....।।४९।।

अहिंसा लक्षण धर्म की ध्वजा को धारण करने वाले 'वृषकेतन' गुण से समन्वित श्री.....५०।।

आयु कर्मस्वरूप जो यमराज उसके विजयी 'मृज्युंजय' नाम को सार्थक करने वाले श्री.....।।५१।।

अमूर्तिक और अतीन्द्रिय जो केवलज्ञान उस नेत्र के धारक होने से 'विरूपाक्ष' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।५२।।

सुंदर आकार और मनोहर रूप को धारण करने वाले 'वामदेव' गुण से विशिष्ट श्री.....।।५३।।

स्वर्ग, मर्त्य-मनुष्यलोक और पाताललोक में स्थित जो भव्यजीव उनके नेत्र के सदृश स्थानस्वरूप पद को प्राप्त 'त्रिलोचन' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।५४।।

कान्ति और कीर्ति के पति 'उमापति' गुण से समन्वित श्री.....।।५५।।

कर्म बंधन से बंधे हुये जो सुर नर और पशुगण उन सबके पालक होने से 'पशुपति' गुण से विशिष्ट श्री.....।।५६।।

कामदेव के विजयी पद की प्राप्ति 'स्मरारि' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।५७।।

जन्म जरा और मरण लक्षण जो तीन नगर उनके विध्वंस करता होने से 'त्रिपुरान्तक' गुण से विशिष्ट श्री.....।।५८।।

घाति चतुष्टय- चार घातियों कर्म रूप आधे कर्म शत्रुओं के नाशक होने से अर्ध न अरि ईश्वर 'अर्धनारीश्वर' पद से समन्वित श्री.....।।५९।।

कर्म शत्रुओं को भस्म करने में समर्थ होने से 'रुद्र' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।६०।।

भव्यजनों को स्वर्ग मोक्ष प्राप्त कराने में समर्थ 'विश्वोत्पादन' गुण से समन्वित श्री.....।।६१।।

ध्यान के बल से काम-क्रोध आदि को भस्मसात् करने वाले 'भर्ग' गुण से समन्वित श्री.....।।६२।।

सर्वकाल भव्यजनों का कल्याण करने वाले 'सदाशिव' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।६३।।

लोकामर्यादा की विधिवत लाने वाले होने से 'जगत्कर्ता' गुण से समन्वित श्री.....।।६४।।

मोह वही हुआ अंधक शत्रु उसको जड़मूल से नष्ट करने वाले होने से 'अन्धकाराति' गुण से समन्वित श्री.....।।६५।।

जन्ममरण से रहित होने से 'अनादिनिधन' गुण से मंडित श्री महावीर.....।।६६।।

अनन्तभवों में उपार्जित जो पाप उसका हरण करने वाले होने से 'हर' नाम के धारक श्री महावीर.....।।६७।।

बारह सभा लक्षण जो सेना उससे समन्वित होने से 'महासेन' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।६८।।

संसार समुद्र से उतारने वाले जो गणधर देव आदि उनको भी उपदेश देने वाले होने से 'तारकजित्' गुण से समन्वित श्री.....।।६९।।

भव्यगणों के स्वामी और सर्वजन को ऐश्वर्य के प्रदाता होने से 'गणनाथ' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।७०।।

गणधरदेव, सुरेन्द्र, नागेन्द्र, चक्रवर्ती और विद्याधर आदि से समन्वि तीनों लोकों के एकमात्र स्वामी स्वयं नायक-मालिक से रहित ऐसे 'विनायक' गुण से मंडित श्री.....।।७१।।

क्षायिक सम्यक्त्व से विभूषित वस्त्र-आभूषण से रहित होकर भी अतिशय सुंदर ऐसे 'विरोचन' गुण से मंडित श्री.....।।७२।।

माता के आंगन में पंद्रह मास पर्यंत आकाश से रत्नवृष्टि को कराने वाले अथवा निर्वाण प्राप्ति के काल में तनुवात वलय के ऊपर सिद्ध शिला के अग्र भाग पर विराजमान होने से- आकाश में रत्न के समान 'वियद्रत्न' गुण से विशिष्ट श्री.....।।७३।।

द्वादश सभा के लिये प्राणस्वरूप अथवा बारह अंग श्रुतज्ञान स्वरूप होने से 'द्वादशात्मा' गुण से विभूषित श्री.....।।७४।।

अग्नि के समान कर्म ईंधन को भस्म करने वाले, सूर्य के समान मोहांधकार के विनाशक, चन्द्रमा के समान संसार के दुःखों से संतप्त प्राणियों के लिये अमृत की वर्षा करने वाले, रुद्र के समान कर्मसृष्टि का प्रलय करने वाले इस प्रकार अग्नि, सूर्य, चन्द्र, रुद्र आदि अनेक अर्थों का सार्थक करने वाले 'विभावसु' गुण से विशिष्ट श्री.....।।७५।।

माता से जन्म और संस्कार से जन्म को प्राप्त ऐसे व्रतिक जन द्विज कहलाते है। इन व्रतिक द्विज गणों से पूजा को प्राप्त 'द्विजाराध्य' गुण से विशिष्ट श्री.....।।७६।।

केवलज्ञान किरणों की अपेक्षा लोकाकाश भाग पर्यंत व्याप्त होने से 'बृहद्भानु' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।७७।।

तीनों लोकों के जीवों के चित्त में चमत्कार को करने वाली ऐसी विचित्र किरणों से विश्व को प्रकाशित करने वाले ऐसे 'चित्रभानु' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।७८।।

अतुल बलशाली होने से व्रत नियम और उपवासों को करके भी लोक में मोक्षमार्ग को दिखलाने के लिये पारणा करते हुये काय का पतन नहीं करते हैं– शरीर को नष्ट नहीं करते हैं इसलिये 'तनूनपात्' नाम के धारण करते हैं ऐसे श्री.....।।७९।।

विश्व में ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के स्वामी अथवा विजय वैजयंत आदि अनुत्तर विमान वासी जो दो जन्म ही शेष हैं जिनके उन अहमिद्रों के स्वामी 'द्विजराज' गुण से विशिष्ट श्री.....।।८०।।

संसार सुख को देने वाली अमृत के समान किरणों से सहित 'सुधाशोची' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।८१।।

जन्म, जरा और मरण के निवारण में समर्थ ऐसे सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र और तप स्वरूप के प्ररूपक 'औषधीश' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।८२।।

लोक में प्रसिद्ध बत्तीस कलाओं के स्थानस्वरूप 'कलानिधि' गुण से विशिष्ट श्री.....।।८३।।

नक्ष अर्थात् ज्ञान के त्र-रक्षा करने में समर्थ अथवा अश्विनी, भरणी आदि नक्षत्रों के स्वामी 'नक्षत्रनाथ' गुण से विशिष्ट श्री.....।।८४।।

केवलज्ञान रूपी उज्ज्वल किरणों के धारक निर्मल ज्ञानरूपी ऋद्धि से समन्वित 'श्रीशुभ्रांशु' गुण से विशिष्ट श्री.....।।८५।।

सा अर्थात सरस्वती और लक्ष्मी इन दोनों से उमा-युक्त हैं अतः 'सोम' हैं अथवा सुमेरु के मस्तक पर देवों द्वारा अभिषेक को प्राप्त तथा मुक्ति लक्ष्मी से समन्वित 'सोम' गुण से विशिष्ट श्री.....।।८६।।

भव्यरूपी कैरव-श्वेतकमलों को मोक्ष प्राप्त कराने वाले 'कुमुदबांधव' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।८७।।

लेख-देवों में ऋषभ-श्रेष्ठ सर्वश्रेष्ठ पद को प्राप्त 'लेखर्षभ' गुण से विशिष्ट श्री.....।।८८।।

इला-पृथ्वी जिसके पास न हो वह अनिल है अथवा पृथ्वी के आधार से रहित आकाश में विहार करने वाले 'अनिल' गुण से विशिष्ट श्री.....।।८९।।

पवित्र जनों से सेवित 'पुण्यजन' गुण से समन्वित श्री.....।।९०।।

पुण्यवान-पवित्र पुरुषों के स्वामी 'पुण्यजनेश्वर' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।९१।।

उत्तम क्षमा, अहिंसा आदि लक्षण धर्म के प्रतिपादन में तत्पर 'धर्मराज' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।९२।।

नागेन्द्र, चक्रवर्ती आदि के पति 'भोगिराज' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।९३।।

मन के सर्वव्यापार से विरहित अथवा सर्वजन के दुःख, दारिद्र्य को दूर करने में कुशल 'प्रचेता' गुण से विशिष्ट श्री.....।।९४।

अधो, मध्य और ऊर्ध्व लोक में स्थित जो प्राणीगण उनकी समृद्धि को करने वाले 'भूमिनंदन' गुण से विशिष्ट श्री.....।।९५।।

सिंह के समान पराक्रमधारिणी तथा इंद्रादि से वंद्य ऐसी श्रेष्ठ माता के पुत्र 'सिंहिकातनय' गुण से विशिष्ट श्री.....।।९६।।

प्रभु की वंदना के लिये आये भक्तजन अशोक वृक्ष की छाया में शोक रहित हो जाते हैं अतः अशोक वृक्ष की छाया में तीनों लोकों के भव्यों को आनंद विधायक 'छायानंदन' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।९७।।

देवेन्द्र, नरेन्द्र, मुनीन्द्र आदि से सेवित हैं चरण कमल जिनके ऐसे 'बृहतांपति' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।९८।।

असुरादिके संक्लेश परिणामों के निषेध करने वाले ऐसे उपदेश के दाता 'पूर्वदेवोपदेष्टा' गुण से विशिष्ट श्री.....।।९९।।

द्विज-मुनियों में राजते- शोभित हो वह द्विवराज रत्नत्रय है उन स्वतंत्रधारियों में ही आपके शुद्ध आत्मस्वरूप का जन्म होता है अतः आप 'द्विजराज समुद्भव' गुण से विशिष्ट हैं ऐसे श्री महावीर स्वामी को मैं अर्ध्य चढ़ाता हूँ।।१००।।

सर्व जगत् के जानने वाले केवलज्ञान लक्षण बुद्धि सहित 'बुद्ध' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१०१।।

उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग आकिंचन्य और ब्रह्मचर्य लक्षण दशधर्म सामर्थ्य से शिव पद को प्राप्त 'दशबल' गुण के धारक श्री.....।।१०२।।

शक-सर्वशक्तिशाली कार्यों को करने में समर्थ जो तीर्थंकरों के पिता है उनके पुत्र होने से अथवा अनंतसुख और ज्ञान से समन्वित होने से 'शाक्य' गुण से विभूषित श्री.....।।१०३।।

जीव, पुग्दल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल इन षट् द्रव्यों के ज्ञाता 'षडभिज्ञ' गुण से विभूषित श्री महावीर.....।।१०४।।

वस्तु स्वरूप के तथा-यथार्थ, गत-ज्ञाता 'तथागत' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१०५।।

सब तरफ से जगत् के कल्याणकर्ता होने से 'समन्तभद्र' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१०६।।

सु-सुष्टु-पूर्ण, गत-ज्ञान केवलज्ञान को प्राप्त 'सुगत' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१०७।।

स्वर्गावतार से छह माह पूर्व आकाश से भूतल पर रत्नवृष्टि कराने वाले 'श्रीघन' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१०८।।

भूत-प्राणियों की कोटि-अनंतसंख्या का उपदेश देने से या प्राणियों को ज्ञानादि गुणों की वृद्धि करने वाले ऐसे उपदेश देने से 'भूतकोटिदिक्' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१०९।।

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि करने वाले 'सिद्धार्थ' गुण से विशिष्ट श्री.....।।११०।।

कामदेव पर विजय प्राप्त करने वाले 'मारजित्' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१११।।

मोक्षमार्ग के लिये कारण भूत ऐसे सत्यधर्म का उपदेश देने वाले 'शास्ता' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।११२।।

सभी पदार्थ क्षणिक है- प्रतिसमय उत्पाद, व्यय और ध्रौव्यरूप हैं एकरूप स्थायी नहीं है इस प्रकार अद्वितीय सुदर सर्वज्ञता के प्रतिपादक लक्षण होने से 'क्षणिकैक सुलक्षण' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।११३।।

भव्यजीवों के लिये हितकर रत्नत्रय स्वरूप बोधि के अस्तित्व के उपाय के प्रदर्शक 'बोधिसत्त्व' गुण से विभूषित श्री.....।।११४।।

निर्विकल्प स्वरूप स्वात्म तत्त्व का दर्शन कराने वाले होने से 'निर्विकल्पदर्शन' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।११५।।

शुद्ध बुद्ध एक आत्म तत्त्व के अनुभव को प्राप्त 'अद्ववादी' गुण से विशिष्ट श्री.....।।११६।।

प्राणीमात्र के लिये दयाधर्म का उपदेश देने वाले 'महाकृपालु' गुण से विशिष्ट श्री.....।।११७।।

नीर-जल के समुदाय को 'नैर' कहते हैं इन जलादि में – पांचों स्थावर जीवों में – पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति में भी जीवात्मा है ऐसा उपदेश देने वाले अथवा इन पांच स्थावर जीवों की रक्षा रूप धर्म का उपदेश देने वाले 'नैरात्म्यवादी' गुण से समन्वित श्री.....।११८।।

अनादिसंतान स्वरूप जीव स्वभाव का उपदेश देने वाले होने से 'संतानशासक' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।११९।।

शुद्धनय की अपेक्षा से सभी जीव शुद्ध बुद्ध एक सामान्य लक्षण वाले हैं ऐसा उपदेश देने वाले 'सामान्यलक्षण चण' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१२०।।

बुद्धमतों में रूप, वेदना, विज्ञान, संज्ञा और संस्कार ये पांच स्कंध माने हैं, इन पांच स्वरूप ही आत्मा को माना है। किन्तु जैन शासन में शुद्धनय की अपेक्षा सभी जीव पांच स्कंध– ज्ञानमय है ऐसा माना हैं अतः 'पंचस्कंधमयात्मदृक्' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१२१।।

सत्यार्थ की भावना के बल से सिद्धपद को प्राप्त 'भूतार्थ साधना सिद्ध' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१२२।।

नरक गति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति और देवगति लक्षण वाले शासन के प्रतिपादक होने से 'चतुर्भूमिक शासन' गुण से समन्वित श्री.....।।१२३।।

मति, श्रुत, अवधि और मनः पर्यय रूप चार ज्ञान के धारी गणधर देव आदि को भी सत्यधर्म का उपदेश देने से 'चतुरार्यसत्यवक्ता' गुण से समन्वित श्री.....।।१२४।।

राग द्वेष मोहरूप विकल्प जाल से विरहित चिच्चैतन्य' गुण से समन्वित विराश्रय गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१२५।।

संतान परंपरा से अनादिनिधन 'अन्वय' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१२६।।

ध्यान रूप योग को प्राप्त 'योग' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१२७।।

अतीन्द्रिय केवल ज्ञान विशेष से सहित 'वैशेषिक' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१२८।।

वैशेषिकों ने अभाव को भावान्तर स्वभावी न मानकर तुच्छाभाव रूप शून्य माना हैं किन्तु जैन शासन में अभाव को अन्य पदार्थ के सद्भावरूप माना है जैसे कि घड़े में पुस्तक का अभाव है तो भी उसमें पुस्तक का सद्भाव है इत्यादि अथवा 'खे नास्ति पुष्पं तरुषुप्रसिद्ध' आकाश का पुष्प नहीं होता तो भी वह वृक्षों में प्रसिद्ध है इत्यादि। अतः शून्य स्वरूप के निषेधक भावान्तर स्वभाव पदार्थ के प्रतिपादक 'तुच्छाभावश्रित्' गुण से समन्वित श्री.....।।१२९।।

जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल इन षट् पदार्थों के उपदेशक होने से 'षट् पदार्थदृक्' गुण से समन्वित श्री.....१३०।।

स्याद्वादरूप न्याय के प्रयोग करने वाले होने से 'नैयायिक' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१३१।।

तीर्थंकर प्रकृति के बंध के कारण भूत ऐसी दर्शन विशुद्धि, विनय संपन्नता आदि सोलह कारण भावनाओं के प्रतिपादक होने से 'षोडशार्थवादी' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१३२।।

कुंदपुष्प, चंद्र आदि पांच वर्ण के शरीरधारी तीर्थंकर समुदाय का उपदेश करने से अथवा पांच अस्तिकायों का प्रतिपादन करने से 'पंचार्थवर्णक' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१३३।।

चारों प्रकार के ज्ञानों में प्रधानभूत प्रत्यक्षरूप केवल ज्ञान से विशिष्ट होने से 'ज्ञानान्तराध्यक्ष बोध' गुण से समन्वित श्री.....।।१३४।।

समवाय-अपृथक् आश्रय के वश रहने वाले पदार्थ को पृथक्-पृथक् रूप से जानने वाले होने से 'समवायवशार्थभित्' गुण से समन्वित श्री.....।।१३५।।

किये हुये कर्मों का अन्त-विनाश एकमात्र फल को भोगने द्वारा ही साध्य है। ऐसे अनुभव साध्य, कर्म स्वभाव के प्रतिपादक 'भुक्तैक साध्य कर्मान्त' गुण के धारक श्री.....।।१३६।।

तीर्थंकर परमदेव और गणधर देवादि सभी घातिया कर्मो के नष्ट हो जाने पर अनंत ज्ञानादि गुणरूपी अमृत को प्राप्त कर लेते हैं ऐसे 'निर्विशेष गुणामृत' नाम से समन्वित श्री.....।।१३७।।

गणना के किये जाने पर- ईश्वर के अन्वेषण किये जाने पर आदि मध्य और अन्त में आप ही प्राप्त होते हैं आपसे अतिरिक्त अन्य कोई परमेश्वर की गिनती में नहीं आता अतः 'साख्य' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१३८।।

अन्यजनों के अगोचर और सभीचीन दर्शन के योग्य 'समीक्ष्य' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१३९।।

विषय कषायों में जाते हुये चित्त-मन को आत्मा में स्थापित करने वाले तीर्थंकर परम देव 'कपिल' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१४०।।

पचीस भावनाओं के स्वरूप के ज्ञाता 'पंचविंशति तत्त्ववित्' गुण से समन्वित श्री.....।।१४१।।

व्यक्तज्ञ - इंद्रियों के गोचर संसारी जीव, अव्यक्तज्ञ - इंद्रियों के अगोचर सिद्ध जीव, इन दोनों के अंतर के ज्ञाता 'व्यक्तव्यक्तज्ञविज्ञानी' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१४२।।

पांच प्रकार के ज्ञान और ज्ञान चेतना कर्मचेतना तथा कर्म फल चेतना ऐसी तीन प्रकार की चेतनारूप भेदों के प्रतिपादक 'ज्ञानचैतन्यभेददृक' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१४३।।

निर्विकल्प समाधि के समय रागद्वेष मोहादि विकल्पों से विरहित ज्ञान के प्रतिपादक 'अस्वसंविदितज्ञानवादी' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१४४।।

सभीचीन संवर निर्जरा आदि उत्तम कार्यों के करने का उपदेश देने से 'सत्कार्यवादसात्' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१४५।।

मोक्षमार्ग के लिये प्रमाणभूत सम्यग्दर्शन ज्ञान, चारित्र रूप तीन रत्न के प्रतिपादक होने से 'त्रिःप्रमाण' गुण के धारक श्री.....।।१४६।।

शुद्धात्मा के तत्त्व को ही प्रमाण स्वरूप से प्रतिपादन करने से 'अक्षप्रमाण' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१४७।।

प्रत्येक जन को स्याद्वाद के प्रयोग करने का उपदेश देने से 'स्याद्वाहंकारिकाक्षदिक्' गुण से समन्वित श्री.....।।१४८।।

लोक और अलोक क्षेत्र के ज्ञानी होने से 'क्षेत्रज्ञ' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१४९।।

तीनों लोकों के स्वरूप के ज्ञाता होने से ज्ञानस्वरूप 'आत्मा' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१५०।।

इन्द्रादि के द्वारा पूजित पद में विश्राम करने से 'पुरुष' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१५१।।

न्याय के कर्ता 'नर' होते हैं अथवा र-रमणी नहीं होने से कामविकार विजयी 'नर' कहलाते हैं ऐसे न्याय के कर्ता और काम विकार विरहित 'नर' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१५२।।

भव्यजीवों को मोक्षमार्ग में ले जाने वाले होने से 'ना' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१५३।।

लोक-अलोक स्वरूप से वेत्ता 'चेतन' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१५४।।

तीनों लोकों में स्थित भव्यजीवों को पवित्र करने से 'पुमान्' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१५५।।

पापों के अकर्ता होने से अथवा परमकल्याण को करने वाले होने से 'अकर्ता' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१५६।।

रागद्वेषादि वैभाविक गुणों के निकल जाने से -नष्ट हो जाने से 'निर्गुण' नाम के धारक श्री महावीर.....।।१५७।।

स्पर्श, रस, गंध और वर्ण स्वरूप से विरहित होने से 'अमूर्त' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१५८।।

परमानंद सुख का अनुभव करने से 'भोक्ता' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१५९।।

लोकपूरण समुद्घात की अपेक्षा तीनों लोकों में व्याप्त होने से 'सर्वगत' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१६०।।

मन, वचन, काय की क्रिया से विरहित निश्चल होने से 'अक्रिय' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१६१।।

केवलज्ञानरूपी नेत्र के द्वारा संपूर्ण लोक-अलोक का अवलोकन करने से 'दृष्टा' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१६२।।

मोक्ष के निकट स्थित होने से 'तटस्थ' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१६३।।

तीन लोक के अग्रभाग पर स्थित होने से 'कूटस्थ' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१६४।।

चर-अचर स्वरूप सर्व जगत् के ज्ञाता होने से 'ज्ञाता' गुण से समन्वित श्री.....।।१६५।।

ज्ञानावरणादि अष्टकर्मों के बंधन से छूट जाने से 'निर्बंधन' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१६६।।

संसार का अभाव-नाश करने में समर्थ 'अभव' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१६७।।

अपने सर्व विकारों को दोषों को बहार कर देने से 'बहिर्विकार' गुण से समन्वित श्री.....।।१६८।।

इसी भव से मोक्ष की प्राप्ति निश्चित होने से 'निर्मोक्ष' गुण से समन्वित श्री.....।।१६९।।

एकाग्ररूप से आत्मा में स्थित होने से 'प्रधान' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१७०।।

प्रचुर निर्जरा के करने वाले और परम शुक्ल ध्यान के धारक होने से 'बहुधानक' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१७१।।

तीर्थ प्रवर्तन रूप कृति प्रकृष्ट है अतः आप प्रकृति हैं तीनों लोकों के लिये हितकर कर्मतीर्थ का प्रवर्तन करने से 'प्रकृति' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१७२।।

यथावत् तत्त्व स्वरूप का निरूपण करने से 'ख्याति' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१७३।।

तीनों भुवन में प्रसिद्ध तीर्थकर नाम कर्म की प्रकृति से समन्वित होने से 'आरूढप्रकृति' गुण से विभूषित श्री.....।।१७४।।

स्वभाव से सर्वजगत् को प्रिय होने से 'प्रकृतिप्रिय' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१७५।।

अध्यात्म रस का अनुभव करने से और कवलाहार से रहित होने से 'प्रधान भोज्य' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१७६।।

दुष्ट त्रेसठ प्रकृतियों का क्षय करने से और अघाति कर्मों को जली हुई रस्सी के समान अकिंचित्कर कर देने से 'अप्रकृति' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१७७।।

इन्द्र, धरणेन्द्र आदि के द्वारा भी सुंदर आत्मास्वरूप से विशिष्ट होने से 'विरम्य' गुण से समन्वित श्री महावीर.....१७८।।

विशिष्ट क्रियाओं के कर्ता अथवा 'कृतिकर्म' से विरहित जो साधुओं की क्रियाओं से 'कृतिकर्म' नाम से कहीं गई हैं उनसे विरहित -परमध्यान के द्वारा सर्वोत्कृष्ट पद प्राप्त 'विकृति' नाम के गुण से समन्वित श्री.....।।१७९।।

निदान आदि दोषों से रहित, इन्द्रादि के द्वारा की गई पूजा के योग्य ऐसे 'कृति' नाम के गुण से समन्वित श्री.....।।१८०।।

स्वसिद्धांत और पर सिद्धांत में कथित समस्त तत्त्वों की मीमांसा - परीक्षा करने की बुद्धि को देने वाले 'मीमांसक' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१८१।।

चार्वाक आदि अपने को सर्वज्ञ मानने की बुद्धि वालों के अहंकार को अस्त करने वाले होने से 'अस्तसर्वज्ञ' गुण से समन्वित श्री.....।।१८२।।

दिव्यवाणी के द्वारा जगत् को पवित्र करने वाले होने से 'श्रुतिपूत' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१८३।।

जो सतत पूजा के योग्य हैं, अध्ययन-अध्यापन रूप क्रियायें वे ही कर्म क्षय स्वरूप यज्ञ कहलाती है उनके करने वाले 'सदोत्सव' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१८४।।

अतीन्द्रिय ज्ञान रूप स्वाभाविक गुण के प्रतिपादक 'परोक्षज्ञानवादी' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१८५।।

पवित्र करने वाले पुरुषों के लिये इष्ट ऐसे 'इष्टपावक' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१८६।।

यथाख्यात चारित्र की प्राप्ति रूप कर्तव्य को सिद्ध करने वाले 'सिद्धकर्मक' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१८७।।

विश्व को जानने वाले ऐसे केवलज्ञान को प्राप्त एवं सर्वजगत् के पापमल को क्षालन करने में समर्थ एवं भव्यजीवों को आनंददाता "चार्वाक' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१८८।।

समवसरण विभूति रूप ऐश्वर्य से सम्पन्न, प्राणियों के ज्ञानोत्पत्ति के उपाय के प्रतिपादक 'भौतिकज्ञान' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१८९।।

भूत -प्राणियों में चेतना गुण की अभिव्यक्ति के प्रतिपादक 'भूताभिव्यक्तचेतन' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१९०।।

केवलज्ञान स्वरूप एक प्रमाणीभूत होने से 'प्रत्यक्षैक प्रमाण' गुण से समन्वित श्री.....।।१९१।।

जैनमत से बहिर्भूत शासन को चूर्ण करने वाले, 'पुनर्जन्म से विरहित 'अस्तपरलोक' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१९२।।

केवलज्ञान के समान ऐसे पूर्णश्रुत -शास्त्र से विशिष्ट 'गुरुश्रुति' गुण से समन्वित श्री.....।।१९३।।

इन्द्र के द्वारा किये कर्णवेधन संस्कार से समन्वित 'पुरंदर विद्धकर्ण' गुण के धारक श्री.....।।१९४।।

पूर्ण ज्ञान से समन्वित, त्रिवेदरहित पद को प्राप्त 'वेदान्ती' गुण से विशिष्ट श्री.....।।१९५।।

अद्वितीय केवलज्ञान के धारक 'संविदद्वयी' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।१९६।।

सर्वपुद्गलों में शब्द की शक्तिरूप 'शब्दाद्वैती' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१९७।।

केवलज्ञान को प्रगट करने रूप शुद्ध बुद्ध आत्मस्वभाव वाले 'स्फोटवादी' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।१९८।।

मिथ्यामत को नष्ट करने की बुद्धि के प्रदाता 'पाखण्डध्न' गुण से समन्वित श्री.....।।१९९।।

परस्पर सापेक्ष नये समूह की प्रवृत्ति के प्रतिपादक 'नयौघयुक्' गुण से विशिष्ट श्रीमहावीर स्वामी को मैं अर्घ्य चढ़ाता हूँ।।२००।।

संसार के अन्त को करने वाले 'अन्तकृत्' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२०१।।

संसार समुद्र को पार करने वाले 'पारकृत्' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२०२।।

संसार समुद्र के तट को प्राप्त 'तीरप्राप्त' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२०३।।

पापरूपी अंधकार के स्थान विरहित अष्टापद, सम्मेदशिखर, चंपापुरी, पावापुरी और गिरनार आदि सिद्ध क्षेत्रों में स्थित 'पारेतमः' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२०४।।

मन वचन काय के तीनों योगों के निरोध करने में कुशल 'त्रिदण्डी' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२०५।।

असाता वेदतीय आदि कर्म शत्रुओं को मृत सदृश करने वाले 'दण्डितारति' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२०६।।

आत्मज्ञान रूप और यथाख्यात चारित्र लक्षण क्रिया समूह से समन्वित 'ज्ञानकर्म समुच्चयी' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२०७।।

मोक्षगमन का समय निकट आने पर दिव्यध्वनि को संकोचित करने वाले 'संहृतध्वनि' गुण से समन्वित श्री.....।।२०८।।

आत्म प्रदेश को चंचल करने वाले योगों के विनाशक 'उत्सन्नयोग' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२०९।।

निस्तब्ध-स्थिर समुद्र की उपमा के धारक 'सुप्तार्णवोपम' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२१०।।

मन वचन कायरूप व्यापार के अनुराग को दूर करने वाले 'योगस्नेहापहा' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२११।।

आत्मा के प्रदेश में चिपके हुये जो कर्मरूपी सूक्ष्म रजकण उनको निवारण करने में समर्थ 'योगकिट्टिटनिर्लेपनोद्यत' गुण से समन्वित श्री.....।।२१२।।

बादर परमौदारिक काय योग निवृत्त 'स्थितसूक्ष्मवपुर्योग' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२१३।।

बादर वचनयोग और बादर मनोयोग को कृशी करने वाले 'गीर्मनोयोगकार्श्यक' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२१४।।

सूक्ष्म वचन योग और सूक्ष्म मनोयोग में अवस्थित 'सूक्ष्मवाक्चित्त योगस्थ' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२१५।।

औदारिक काय योग को सूक्ष्म करने वाले 'सूक्ष्मीकृतवपुः क्रिय' गुण से समन्वित श्री.....।।२१६।।

किंचित् काल तक सूक्ष्य काय योग में स्थित 'सूक्ष्मकाय क्रियास्यायी' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२१७।।

सूक्ष्म वचन योग और सूक्ष्ममनोयोग को नष्ट करने वाले 'सूक्ष्मवाक् चित्त योगहा' गुण के धारक श्री महावीर.....२१८।।

कुछ समय तक सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती रूप शुक्ल ध्यान के ध्याता और एक मात्र काय योग में स्थित 'एकदण्डी' गुण से समन्वित श्री.....।।२१९।।

आत्मा और कर्म जोकि दूध और पानी के समान एकमेक हो रहे हैं उनको पृथक-पृथक् करने में समर्थ 'परमंहस' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२२०।।

सर्वकर्मास्रव के निरोध लक्षण संवर को प्राप्त 'परमसंवर' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२२१।।

संपूर्ण कर्मों का अभाव करने वाले 'नैष्कर्म्यसिद्ध" गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२२२।।

सर्वकर्मों के क्षयलक्षण निर्जरा को प्राप्त वृद्धावस्था आदि दोषों से रहित 'परमनिर्जर' गुण से समन्वित श्री.....।।२२३।।

लोक-अलोक के प्रकाशक केवल ज्ञान रूप तेज से विशिष्ट 'प्रज्ज्वलत्प्रभ' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२२४।।

कर्म समूह को निष्फल करने वाले 'मोघकर्म' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२२५।।

कर्मपाश को छेदने में समर्थ 'त्रुट्यत्कर्मपाश' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२२६।।

अठारह हजार संख्या रूप शील के स्वामी 'शैलेश्यलंकृत' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२२७।।

निज शुद्ध बुद्ध एक स्वभाव व ज्ञानामृत रस के अनुभव में समर्थ 'एकाकार-रसास्वादी' गुण से समन्वित श्री.....।।२२८।।

अनंत सौख्य की उत्पत्ति कराने वाले ऐसे व्यापार-क्रियाओं से समन्वित 'विश्वाकार रसाकुल' गुण से विभूषित श्री.....।।२२९।।

श्वासोच्छ्वास से विरहित जीवन के धारक 'अजीवन्' गुण से विभूषित श्री.....।।२३०।।

मरण से विरहित जीवन से मुक्त 'अमृत' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२३१।।

योगनिद्रा से विरहित 'अजाग्रत' गुण से समन्वित श्री.....।।२३२।।

मोहनिद्रा से विरहित और स्वात्म स्वरूप में सावधान 'असुप्त' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२३३।।

मन वचन काय के व्यापार से विरहित 'शून्यतामय' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२३४।।

सर्वजगत् को अतिशय प्रिय 'प्रेयान्' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२३५।।

चौदहवें गुण स्थान में अर्हंत अवस्था को प्राप्त मन वचन काय के परिस्पंदन से रहित 'अयोगी' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२३६।।

चौरासी लाख उत्तर गुणों से समन्वित 'चतुरशीतिलक्ष' गुण से विभूषित श्री.....।।२३७।।

राग द्वेषादि वैभाविक गुणों से विरहित 'अगुण' नाम से मंडित श्री महावीर.....।।२३८।।

केवलज्ञान के अन्तर्गत अनंत पर्याय को प्राप्त 'निःपीतानन्तपर्याय' नाम के धारक श्री महावीर.....।।२३९।।

अनादि कालीन अज्ञान संस्कार के विनाशक 'अविद्यासंस्कार नाशक' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२४०।।

समुद्घात की अपेक्षा लोकाकाश प्रमाण व्याप्त होकर रहने वाले 'वृद्ध' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२४१।।

कहने के लिये अशक्य अथवा अपकीर्ति से विरहित 'निर्वचनीय' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२४२।।

दिव्य ध्वनि रूप वचन को प्राप्त अथवा अतिसूक्ष्म होने से योगियों के अगम्य 'अणु' नाम से समन्वित श्री.....।।२४३।।

इंन्द्रियों के अगोचर होने से अमूर्त हैं अतः 'अणीयान्' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२४४।।

क्षुद्रता रहित और महापुरूषों के वल्लभ 'अनणुप्रिय' गुण के धारक श्री महावीर.....।।२४५।।

तीनों भुवन में स्थित इन्द्र, चन्द्र और मुनीन्द्रों को प्रिय 'प्रेष्ठ' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२४६।।

आत्म प्रदेशों में स्पंदन का अभाव होने से एक रूप स्थिर स्वभाव को प्राप्त 'स्थेयान्' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२४७।।

सुमेरु के समान अचल स्वभाव वाले होने से 'स्थिर' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२४८।।

अपने आत्मरूप ध्येय तत्त्व में स्थित 'निष्ठ' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२४९।।

अत्यंत प्रशंसा योग्य पद को प्राप्त 'श्रेष्ठ' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२५०।।

ज्ञान की अपेक्षा अत्यंत वृद्ध स्वभाव वाले होने से 'ज्येष्ठ' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२५१।।

योग निरोध के समय स्वात्मा में स्थित 'सुनिष्ठित' गुण से समन्वित श्री.....।।२५२।।

कर्मसेना के प्रध्वंसक और स्वात्म स्वरूप की प्राप्तिरूप प्रयोजन से परिपूर्ण 'भूतार्थशूर' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२५३।।

पंचेन्द्रिय विषय भोगों से विरहित 'भूतार्थदूर' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२५४।।

राग द्वेष आदि विभाव भावों से विरहित एवं अनंत गुणां के पुंज स्वरूप 'परमनिर्गुण' नाम के धारक श्री.....।।२५५।।

संसार के कार्यों में मौन को धारण करने वाले 'व्यवहारसुसुप्त' गुण से समन्वित श्री.....।।२५६।।

स्वात्म स्वरूप में अतिशय सावधान 'अतिजागरूक' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२५७।।

स्वस्वरूप में अत्यंत सुखपूर्वक स्थित 'अतिसुस्थित' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२५८।।

परम प्रकर्ष महिमा को प्राप्त 'उदितोदितमाहात्म्य' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२५९।।

संपूर्ण परिग्रह, मानसिक पीड़ा, धर्मोपदेश देना और श्रीविहार आदि क्रियाओं से विरहित 'निरूपाधि' गुण से समन्वित श्री.....।।२६०।।

अपने आत्म स्वभाव की उपलब्धि से सहित 'अकृत्रिम' गुण से समन्वित श्री.....।।२६१।।

लोक-अलोक में व्यापी ऐसे प्रभाव से समन्वित 'अभेय महिमा' गुण से समन्वित श्री.....।।२६२।।

भावकर्म, द्रव्यकर्म और नोकर्म मल से विरहित ''अत्यंतशुद्ध' गुण से विशिष्ट श्री.....।।।२६३।।

आत्मस्वरूप की प्राप्ति रूप मुक्तिरमणी का परिणय करने वाले 'सिद्धि स्वयंवर' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२६४।।

अनन्त सिद्धों के अनंतर -पश्चात् सिद्धिपद को प्राप्त 'सिद्धानुज' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।।२६५।।

'ईषत्प्राग्भार' नाम की आठवीं-सिद्धभूमि पृथिवी को प्राप्त 'सिद्धपुरीपान्थ' गुण के धारक श्री महावीर.....।।२६६।।

अनंत सिद्ध समूह के लिये अतिथि-मेहमान अवस्था को प्राप्त 'सिद्धगणतिथि' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२६७।।

कर्मों से निर्मुक्त हुये जो सिद्धगण उनके साथ समागम-मिलने के लिये उत्कंठित -उत्सुकता युक्त 'सिद्धसंगोन्तुख' गुण से समन्वित श्री.....।।२६८।।

मुक्ति वल्लाभा के आलिगंन के लिये उचित पद को प्राप्त 'सिद्धालिंग्य' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२६९।।

अनंत गुणों की वृद्धि करने वले 'सिद्धोपगूहक' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।।२७०।।

सिद्धों के सदृश अनंतज्ञान दशर्न, सुख, वींर्य आदि अनंतगुणों के बल से सहित 'पुष्ट' गुण से समन्वित श्री.....।।२७१।।

मोक्षपुरी को प्राप्त कराने में समर्थ ऐसे अठारह हजार शील से समन्वित 'अष्टादशसहस्त्रशीलाश्व' गुण से विशिष्ट श्री.....।।।२७२।।

मोक्षमार्ग के लिये पाथेय-कलेवा-नाश्ता स्वरूप पुण्य को प्राप्त कराने वाले 'पुण्यशंबल' गुण से समन्वित श्री.....।।२७३।।

सम्यक चारित्ररूपी वाहन के धारक होने से 'वृत्ताग्रयुग्य' गुण से समन्वित श्री.....।।२७४।।

अपनी आत्मा में स्थिति स्वरूप परमशुक्ल लेश्या के धारक 'परमशुक्ललेश्य' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२७५।।

घातियाकर्मों के समूह को नष्ट करने में समर्थ 'अपचारकृत्' गुण से समन्वित श्री.....।।२७६।।

तीन लोक के अग्र पर विराजमान 'क्षेपिष्ठ' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२७७।।

अन्तिम निर्वाण कल्याणक को प्राप्त 'अन्त्यक्षणसखा' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२७८।।

अयोगी केवली गुणस्थान में 'अ इ उ ऋ लृ' इन पांच लघु अक्षरो के उच्चारण काल प्रमाण स्थित रहने वाले 'पंचलघ्वक्षर-स्थिति' गुण से समन्वित श्री.....।।२७९।।

चौदहवें गुण स्थान के द्विचरम समय में अघातिया कर्मों की बहत्तर प्रकृतियों के विनाशक 'द्वासप्ततिप्रकृत्यासी' नाम से समन्वित श्री.....।।२८०।।

अयोगी केवली के- चौदहवें गुण स्थान के अंतिम समय में तेरह प्रकृतियों का क्षपण करने वाले 'त्रयोदशकलिप्रणुत्' गुण से समन्वित श्री.....।।२८१।।

स्त्री, पुरुष, नपुंसक वेद से विरहित तथा अपनी आत्मा के लिंग से समन्वित 'अवेद' गुण के धारक श्री.....।।२८२।।

योग निरोध के काल में श्रीविहार धर्मोपदेश आदि से विरहित 'अयाजक' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२८३।।

अलक्ष्य स्वरूप को प्राप्त 'अयज्य' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२८४।।

अतीन्द्रिय अमूर्त स्वरूप होने से द्रव्यपूजा से विरहित 'अयाज्य' गुण से समन्वित श्री.....।।२८५।।

गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिणाग्नि ये तीन प्रकार की हवन की अग्नि हैं इन त्रिविध अग्नि से विरहित 'अनग्नि परिग्रह' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२८६।।

अग्नि के बिना ही कर्म रूपी समिधा से आंहुति देकर भस्म करने वाले 'अनग्निहोत्री' गुण को प्राप्त श्री.....।।२८७।।

संसार में संपूर्ण इच्छाओं से विरहित 'परमनिःस्पृह' गुण से विशिष्ट श्री महावीर.....।।२८८।।

यमराज-मृत्यु का नाश करते समय करूणा से विरहित होने से 'अत्यंतनिर्दय' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२८९।।

जन्म समय से ही मति, श्रुत और अवधि इन तीन ज्ञानों से समन्वित स्वयंप्रबोध गुण के धारक होने से अर्थात् किसी को गुरु न बनाने से 'अशिष्य' नाम से विशिष्ट श्री.....।।२९०।।

योग निरोध के काल में शिष्यों को उपदेश न देने से 'अशसक' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२९१।।

गुरु के बिना स्वयं दीक्षा ग्रहण करने योग्य पद-तीर्थंकर पद को प्राप्त 'अदीक्ष्य' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२९२।।

स्वयं की दीक्षा कल्याणक के समय शिष्य जनों को दीक्षा न देने से 'अदीक्षक' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२९३।।

स्वयं दीक्षा ग्रहण कराने वाली तीर्थंकर प्रकृति के धारक होने से 'अदीक्षित' गुण से समन्वित श्री महावीर.....।।२९४।।

इन्द्रियों की सहायता से रहित अक्ष-ज्ञानस्वरूप अथवा स्वात्मस्वरूप के क्षय से रहित 'अक्षय' पद से समन्वित श्री.....।।२९५।।

परम योगिजनों के भी अगोचर 'अगम्य' नाम से समन्वित श्री महावीर.....।।२९६।।

निज शुद्धात्म स्वरूप में स्थित 'अगमक' गुण से विशिष्ट श्री.....।।२९७।।

आपके आत्म स्वरूप के सिवाय अन्य कोई भी वस्तु रम्य नहीं है अतः संसार के मध्य स्थित वस्तुओं में रमणीयता का अभाव होने से 'अरम्य' गुण से समन्वित श्री.....।।२६८।।

अपने शुद्ध बुद्ध आत्म स्वरूप से अतिरिक्त अन्यत्र कहीं भी रमण नहीं करने से 'अरमक' गुण से समन्वित श्री.....।।२६९।।

केवलज्ञान से कंठपर्यंत-लबालब अमृत से भरे हुये सुवर्ण घड़े से सदृश परिपूर्ण भरित होने से 'ज्ञाननिर्भर' गुण से समन्वित श्री.....।।३००।।

पूजा नं. ७ के चार सौ मंत्रों के अर्थ

(गुण स्थानों में जिस जिस क्रम से कर्मप्रकृतियां नष्ट होती हैं यहां वैसा ही क्रम रखा है)

अनंतानुबंधी क्रोध कषाय के विनाशक श्रीमहावीर स्वामी को मैं अर्घ्य चढ़ाता हूँ।.....।।१।।

अनंतानुबंधी मान कषाय के विध्वंसक श्री.....।।२।।

अनंतानुबंधी माया कषाय को नष्ट करने वाले श्री.....।।३।।

अनंतानुबंधी लोभ कषाय को निर्मूल करने वाले श्री.....।।४।।

मिथ्यात्व प्रकृतिनामक दर्शन मोहनीय के विध्वंसक श्री.....।।५।।

सम्यक मिथ्यात्व नामक दर्शन मोहनीय के निर्मूलक श्री.....।।६।।

सम्यक्त्व प्रकृति नाम के दर्शन मोहनीय के विनाशक श्री.....।।७।।

नरकायु कर्म के विनाशक श्री.....।।८।।

तिर्यंचायु कर्म के विनाशक श्री.....।।९।।

देवायु कर्म के विध्वंसक श्री.....।।१०।।

नरकगति नाम कर्म को निर्मूल करने वाले श्री.....।।११।।

नरक गत्यानुपूर्वी नाम कर्म के निवारक श्री.....।।१२।।

तिर्यग्गति नाम कर्म के विध्वंसक श्री.....।।१३।।

तिर्यग्गत्यानुपूर्वी नाम कर्म के विध्वंसक श्री.....।।१४।।

एकेन्द्रिय जाति नाम कर्म के विनाशक श्री.....।।१५।।

द्वि इन्द्रिय जाति नाम कर्म के उच्छेदक श्री.....।।१६।।

त्रीन्द्रिय जाति नाम कर्म के उच्छेदक श्री.....।।१७।।

चतुरिन्द्रिय जाति नाम कर्म को निर्मूल करने वाले श्री.....।।१८।।

निद्रानिद्रा दर्शनावरण कर्म के नाशक श्री.....।।१९।।

प्रचला प्रचला दर्शनावरण कर्म के विघातक श्री.....।।२०।।

स्त्यानगृद्धि दर्शनावरण कर्म के उच्छेदक श्री.....।।२१।।

आतप नामकर्म को जड़ मूल से नष्ट करने वाले श्री.....।।२२।।

उद्योत नाम कर्म के विध्वंसक श्री.....।।२३।।

साधारण नाम कर्म के निवारक श्री.....।।२४।।

सूक्ष्म नाम कर्म निवारक श्री.....।।२५।।
स्थावर नाम का नाश करने वाले श्री.....।।२६।।
अप्रत्याख्यानावरण क्रोध कषाय के विध्वंसक श्री.....।।२७।।
अप्रत्याख्यानावरण मान कषाय के विनाशक श्री.....।।२८।।
अप्रत्याख्यानावरण माया कषाय के निवारण करने वाले श्री.....।।२९।।
अप्रत्याख्यानावरण लोभ कषाय के विध्वंसक श्री.....।।३०।।
प्रत्याख्यानावरण क्रोध कषाय से विरहित श्री.....।।३१।।
प्रत्याख्यानावरण मान कषाय के विध्वंसक श्री.....।।३२।।
प्रत्याख्यानावरण माया कषाय के निवारक श्री.....।।३३।।
प्रत्याख्यानावरण लोभ कषाय को निर्मूल करने वाली श्री.....।।३४।।
नपुंसक वेद नोकषाय के विध्वंसक श्री.....।।३५।।
स्त्रीवेद नोकषाय के विध्वंसक श्री.....।।३६।।
हास्य नोकषाय के विनाशक श्री.....।।३७।।
रति नोकषाय के विनाशक श्री.....।।३८।।
अरति नोकषाय के विनाशक श्री.....।।३९।।
शोक नोकषाय के विनाशक श्री.....।।४०।।
भय नोकषाय को नष्ट करने वाले श्री.....।।४१।।
जुगुत्सा नोकषाय से निरहित श्री.....।।४२।।
पुरुषवेद नोकषाय के विध्वंसक श्री.....।।४३।।
संज्वलन क्रोध कषाय के निवारक श्री.....।।४४।
संज्वलन मना कषाय के विध्वंसक श्री.....।।४५।।
संज्वलन माया कषाय के विध्वंसक श्री.....।।४६।।
संज्वलन लोभ कषाय के विध्वंसक श्री.....।।४७।।
निद्रार्दशनावरण कर्म के निवारक श्री.....।।४८।।
प्रचलादर्शनावरण कर्म निवारक श्री.....।।४९।।

ऐसे ही मतिज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, मनःपर्यय, ज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुर्दर्शनावरण, लाभान्तराय, भोगांतराय, उपभोगान्तराय और वीर्यान्तराय इन ५० नं. से लेकर ६३ तक प्रकृतियों को नष्ट कर केवली बनते हैं।

पुनः अयोगि केवलीनाम के चौदहवें गुण स्थान के द्विचरम समय और चरम समय में शेष ८५ प्रकृतियों के नाम निम्नलिखित हैं-

औदारिक, वैक्रियक, आहारक, तैजस, कार्मण शरीर, औदारिक बंधन आदि ५ बंधन, औदारिक संघात आदि ५ संघात, वज्रवृषभनाराच, वज्रनाराच, नाराच, अर्द्धताराच, कीतक और असंप्राप्त सृपाहिका ये ६ संहनन, औदारिक, वैक्रियिक, आहारक, ये तीन अंगोपांग, समचतुरस्र, न्यग्रोधपरिमंडल, कुब्जक, स्वति, वामन और हुंडक ये ६ संस्थान, कृष्ण, नील, रक्त, हरित और शुक्ल ये ५ वर्ण, सुगंध और दुर्गंध ये २ गंध तिक्त, कटु, कषाय, अम्ल, मधुर ये ५ रस, कर्कश, मृदु, गुरु, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध, रूक्ष ये ८ स्पर्श हैं।

स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ, सुस्वर-दुःस्वर, देवगति, देवगत्यानुपूर्वी, प्रशस्त-अप्रशस्त विहायोगति,

दुर्भग, निर्माण, अयशस्कीर्ति, अनादेय, प्रत्येक शरीर, अपर्याप्त, अगुरुलघु, उपघात परघात, उच्छ्वास, असातावेदनीय और नीच गोत्र ये ७२ प्रकृतियां द्विचरम समय में नष्ट होती है।

सातावेदनीय, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय, सुभग, त्रस, बादर, पर्याप्त, आदेय, यशस्कीर्ति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, मनुष्यायु, उच्चगोत्र और तीर्थंकर इन १३ प्रकृतियों का विनाश अयोगिकेवली के अंतिम समय में होता है। इस प्रकार मंत्र ६४ से १४८ तक हुये हैं।

पुनः-

असंख्यात् लोकप्रमाण भेद सहित सर्व कर्म से रहित श्री महावीर जिनेंद्र को अर्घ्य चढ़ाता हूँ.....।।१४६।।

अनन्तनंत भेदों से सहित संपूर्ण कर्मों को निर्मूल नष्ट करने वाले श्रीमहावीर.....।।१५०।।

सम्यग्दर्शन रूप संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१५१।।

सम्यग्ज्ञान रूप संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१५२।।

सम्यक्चारित्र रूप संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१५३।।

सम्यक्तप रूप संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१५४।।

चार प्रकार के वीर्य रूप संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१५५।।

पांच सीमित और तीन गुप्ति में आठ प्रवचन माता है इन आठ मातृका के प्रवेश रूप संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१५६।।

आठ प्रकार की शुद्धि के संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१५७।।

बाईस परीषह जीतने के संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१५८।।

मन वचन काय के असंयम से च्युति रहित शील रूप संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१५९।।

तीन करण के असंयम से अरति रूप संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१६०।।

दश प्रकार के असंयम से विरतिरूप संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१६१।।

अक्ष-इंद्रियों के जीतने रूप-इंद्रियजय संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१६२।।

आहार, भय, मैथुन और परिग्रह लक्षण चार संज्ञा के निग्रह रूप संस्कार को प्राप्त श्री महावीर.....।।१६३।।

दशधर्मों में धैर्यरूप संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१६४।।

अठारह हजार शील के संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१६५।।

चौरासी लाख उत्तर गुणों के संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१६६।।

विशिष्ट धर्म ध्यान के संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१६७।।

अतिशायी संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१६८।।

अप्रमत्त संयम संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१६९।।

दृढ़युत के तेज से अकंपित ऐसे करण-परिणामों द्वारा श्रेणी में चढने रूप संस्कार को प्राप्त श्री महावीर.....।।१७०।।

अनंत गुणों की शुद्धि के संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१७१।।

अधः अप्रवृत्तकरण रूप संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१७२।।

पृथक्त्व वितर्क वीचार ध्यान के संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१७३।।

अपूर्वकरण-परिणामों के संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१७४।।

अनिवृत्ति करण संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१७५।।

बादर कषाय को कृश करने के संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१७६।।
सूक्ष्म कषाय को कृश करने रूप संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१७७।।
बादर कषाय के लेप से रहित होने रूप संस्कार को प्राप्त श्री महावीर.....।।१७८।।
सूक्ष्म कषाय की वृष्टि के लेप परहित होने रूप संस्कार को प्राप्त श्री महावीर.....।।१७६।।
सूक्ष्म कषाय चारित्र रूप संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१८०।।
मोह को क्षीण-क्षय करने रूप संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१८१।।
यथाख्यात चारित्र की प्राप्ति रूप संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१८२।।
एकत्ववितर्क अवीचार नाम के द्वितीय शुक्ल ध्यान के संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१८३।।
घातिया कर्मों के घात रूप संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१८४।।
केवलज्ञान केवलदर्शन के उत्पन्न होने रूप संस्कार को प्राप्त श्री महावीर.....।।१८५।।
तीर्थ प्रवर्तन के संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१८६।।
सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती नाम के तृतीय शुक्ल ध्यान के संस्कार को प्राप्त श्री महावीर.....।।१८७।।
संपूर्ण शीलों के ईशपने सहित ऐसे शैलेशी करण संस्कार को प्राप्त श्री महावीर.....१८८।।
परम संवर रूप संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१८६।।
योगों को कृश करने रूप संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१६०।।
योगों को कृश करने एवं उनके लेप को दूर करने रूप संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१६१।।
समुच्छिन क्रिया प्रतिपाती नामक के चौथे शुक्ल ध्यान के संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१६२।।
परम निर्जरा के आश्रय रूप संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१६३।।
संपूर्ण कर्मों के क्षय रूप संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१६४।।
अनादि भव पर्याय के विनाश रूप संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१६५।।
अनादि सिद्धत्व आदि रूप संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१६६।।
देह सहजज्ञानोपयोग के ऐश्वर्य रूप संस्कार को प्राप्त श्री.....।।१६७।।
देह रहित सहज दर्शन उपयोग रूप ऐश्वर्य के संस्कार को प्राप्त श्री महावीर.....।।१६८।।
केवलज्ञान रूप साकारोपयोग से समन्वित श्री.....।।१६६।।
केवल दर्शन स्वरूप निराकारोपयोग से समन्वित श्री महावीर स्वामी को मैं अर्ध्य चढ़ाता हूँ.....।।२००।।
मिथ्यात्व गुणस्थान के निवारण की बुद्धि को प्रदान करने वाले श्री महावीर.....।।२०१।।
सासादन गुणस्थान के निवारण करने की बुद्धि के प्रदाता श्री महावीर.....।।२०२।।
सम्यड् मिथ्यात्व गुणस्थान के निवारण करने की बुद्धि के प्रदाता श्री महावीर.....।।२०३।।
अविरत नाम के चौथे गुणस्थान से निवारण करने की उससे आगे बढ़ने की बुद्धि के प्रदाता श्री महावीर.....।।२०४।।
देशविरत नाम के पांचवे गुणस्थान को प्राप्त करने की बुद्धि के प्रदाता श्री महावीर.....।।२०५।।
प्रमत्त गुणस्थान नाम के छठे गुणस्थान में मुनिव्रतों को धारण करने बुद्धि के प्रदाता श्री महावीर.....।।२०६।।
अत्तमत्त विरत नाम के सातवें गुणस्थान को प्राप्त करने की बुद्धि के प्रदाता श्री.....।।२०७।।
अपूर्व करण नाम के आठवें गुणस्थान को प्राप्त करने की बुद्धि के प्रदाता श्री.....।।२०८।।
अनिवृत्ति कर" गुणस्थान की विशुद्धि को प्राप्त करने वाले श्री महावीर.....।।२ ६।।

सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान की विशुद्धि को प्राप्त करने वाले श्री महावीर.....।।२१०।।
उपशांतकषाय गुणस्थान की विशुद्धि को प्राप्त करने वाले श्री महावीर.....।।२११।।
क्षीणकषाय नाम के बारहवें गुणस्थान को प्राप्त करने वाले श्री महावीर.....।।२१२।।
सयोग केवली नाम के तेरहवें गुणस्थान में अर्हंत अवस्था को प्राप्त कराने में समर्थ श्री महावीर.....।।२१३।।
अयोगि केवली गुणस्थान को प्राप्त कराने में समर्थ श्री.....।।२१४।।
सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवसमास में जाने के निवारण में समर्थ श्री महावीर.....।।२१५।।
बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवसमास को रोकने में समर्थ श्री.....।।२१६।।
दो इंन्द्रिय अपर्याप्त जीवसमास को रोकने में समर्थ श्री.....।।२१७।।
तीन इंन्द्रिय अपर्याप्त जीवसमास में जाने को रोकने में समर्थ श्री महावीर.....।।२१८।।
चार इंन्द्रिय अपर्याप्त जीवसमास में जाने को रोकने में समर्थ श्री महावीर.....।।२१९।।
असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवसमास में जाने को रोकने में समर्थ श्री महावीर.....।।२२०
संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवों में जाने को रोकने में समर्थ श्री महावीर.....।।२२१।।
सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवों में जाने को रोकने में समर्थ श्री.....।।२२२।।
बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवों में गमन को रोकने में समर्थ श्री.....।।२२३।।
द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवों में जाने को रोकने में समर्थ श्री.....।।२२४।।
त्रीन्द्रिय पर्याप्त जीवों में गमन के निवारण में समर्थ श्री.....।।२२५।।
चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीवों में गमन के निवारण में समर्थ श्री.....।।२२६।।
असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवों में जाने को रोकने में समर्थ श्री महावीर.....।।२२७।।
संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवों में जाने से रोकने में समर्थ श्री.....।।२२८।।
कर्म वर्गणा के ग्रहण रूप आहार पर्याप्ति से विरहित पद को प्रदान कराने में समर्थ श्री महावीर.....।।२२९।।
शरीर निर्माण योग पर्याप्ति से विरहित पद को प्रदान कराने में समर्थ श्री महावीर.....२३०।।
इन्द्रियों के निर्माण योग्य कर्म वर्गणा को प्राप्त कराने वाली इंन्द्रिय पर्याप्ति से विरहित पद को प्रदान कराने में समर्थ श्री.....।।२३१।।
श्वासेच्छ्वास पर्याप्ति से विरहित सिद्ध पद को प्राप्त कराने में समर्थ श्री महावीर.....!।२३२।।
भाषा पर्याप्ति से विरहित स्वशुद्धात्मा की उपलब्धि रूपपद को प्राप्त कराने में समर्थ श्री महावीर.....।।२३३।।
मनःपर्याप्ति से विरहित निजशुद्ध पद को प्राप्त कराने में समर्थ श्री महावीर.....।।२३४।।
स्पर्शनेन्द्रिय प्राण से विरहित चैतन्य प्राण से समन्वित पद को प्राप्त कराने वाली श्री.....।।२३५।।
रसना इन्द्रिय प्राण से विरहित चैतन्य प्राणों से समन्वित सिद्धपद को प्राप्त कराने में समर्थ श्री महावीर.....।।२३६।।
घ्राणोन्द्रिय प्राण से विरहित चैतन्य प्राणों से समन्वित श्री.....।।२३७।।
चक्षु इंद्रिय प्राण से विरहित वैतन्य प्राणों से समन्वित श्री.....।।२३८।।
श्रोत्रेन्द्रिय प्राणों से विरहित चित् चैतन्य प्राणों से समन्वित पद को प्रदान कराने वाले श्री महावीर.....।।२३९।।
बल प्राण से विरहित चिच्चैतन्यमयी प्राणों से समन्वित पद को प्रदान कराने वाले श्री

महावीर.....।।२४०।।

वचनबल प्राण विरहित चिच्चैतन्मयी प्राण से समन्वित पद को प्रदान कराने वाले श्री महावीर.....।।२४१।।

कायबल प्राण से विरहित चिच्चैतन्मयी प्राण से समन्वित पद को प्रदान कराने वाले श्री महावीर.....।।२४२।।

आयु प्राण से विरहित चिच्चैतन्मयी प्राण से समन्वित पद को प्रदान कराने वाले श्री.....।।२४३।।

श्वासोच्छ्वास प्राण से विरहित चिच्चैतन्यमयी प्राण से समन्वित सिद्ध पद को प्रदाता श्री महावीर.....।।२४४।।

आहार संज्ञा को निवारण में समर्थ श्री.....।।२४५।।

भय संज्ञा निवारण में समर्थ श्री.....।।२४६।।

मैथुन संद्या को निवारण में समर्थ श्री.....।।२४७।।

परिग्रह संज्ञा निवारण में समर्थ श्री.....।।२४८।।

नरक गति गमन के निवारण में समर्थ श्री.....।।२४९।।

निर्यग्गति गमन के निवारण में समर्थ श्री.....।।२५०।।

मनुष्य गति को सफल करने की बुद्धि को प्रदान करने वाले प्रदाता श्री महावीर.....।।२५१।।

देव गति को सफल करने की बुद्धि के प्रदाता श्री.....।।२५२।।

स्पर्शनेन्द्रिय के निवारण में समर्थ श्री.....।।२५३।।

रसनेन्द्रिय के निवारण में समर्थ श्री.....।।२५४।।

घ्राणेन्द्रिय के निवारण में समर्थ श्री.....।।२५५।।

चक्षुरिन्द्रिय के निवारण में समर्थ श्री.....।।२५६।।

श्रोत्रेन्द्रिय के निवारण में समर्थ श्री.....।।२५७।।

पृथ्वी कायिक में गमन करने को निवारण करने वाले श्री.....।।२५८।।

जलकायिक में गमन करने को रोकने वाले श्री.....।।२५९।।

अग्नि कायिक में गमन के निवारक श्री.....।।२६०।।

वायु कायिक में गमन के निवारक श्री.....।।२६१।।

वनस्पति कायिक में गमन के निवारक श्री.....।।२६२।।

त्रसाकयिक जीवों में गमन के निवारक श्री.....।।२६३।।

सत्य मनोरोग को प्राप्त कराने में समर्थ श्री.....।।२६४।।

असत्यमनोयोग के निवारण में समर्थ श्री.....।।२६५।।

उभय मनोयोग के निवारण में समर्थ श्री.....।।२६६।।

अनुभय मनोयोग को प्राप्त कराने में समर्थ श्री.....।।२६७।।

सत्य वचन योग को प्राप्त कराने में समर्थ श्री.....।।२६८।।

असत्य वचन योग के निवारक श्री.....।।२६९।।

उभय वचन योग के निवारण में समर्थ श्री.....।।२७०।।

दिव्य ध्वनि स्वरूप अनुभव वचन योग को प्राप्त कराने वाले श्री महावीर.....।।२७१।।

विशेष :- सत्य और अनुभव ये दोनों मनोयोग-वचन योग केवली भगवंती के पाये जाते हैं अतः इनको प्राप्त करने की भावना की गई है।

औदारिक योग से विरहित सिद्धपद को प्राप्त कराने वाले श्री.....।।२७२।।
औदारिक मिश्र से विरहित पद को प्राप्त कराने वाले श्री.....२७३।।
वैक्रियिक योग से रहित पद के प्रदाता श्री.....।।२७४।।
वैक्रियिक मिश्र योग विरहित पद के प्रदाता श्री.....।।२७५।।
आहारक योग से विरहित सिद्ध पद के प्रदाता श्री.....।।२७६।।
आहारक मिश्रयोग से विरहित शुद्ध पद के प्रदाता श्री.....।।२७७।।
कार्मण योग से विरहित शुद्ध-बुद्ध पद के प्रदाता श्री.....।।२७८।।
स्त्रीवेद विरहित चिच्चैतन्य पद के प्रदाता श्री.....।।२७९।।
पुरुषवेद विरहित चिच्चैतन्य पद के प्रदाता श्री.....।।२८०।।
नपुंसक वेद से विरहित चिच्चैतन्य पद के प्रदायक श्री.....।।२८१।।
अनंतानुबंधी क्रोध कषाय को शमन करने की बुद्धि के प्रदाता श्री.....।।२८२।।
अनंतानुबंधी मान कषाय को शमन करने की बुद्धि के प्रदायक श्री.....।।२८३।।
अनंतानुबंधी माया कषाय को शमन करने की बुद्धि के दाता श्री.....।।२८४।।
अनंतानुबंधी लोभ कषाय को शमन करने की बुद्धि के प्रदाता श्री.....।।२८५।।
अप्रत्याख्यान क्रोध के उपशांत कारक श्री.....।।२८६।।
अप्रत्याख्यान मान कषाय के उपशांत कारक श्री.....।।२८७।।
अप्रत्याख्यान माया कषाय की उपशांति करने वाले श्री.....।।२८८।।
अप्रत्याख्यान लोभ कषाय की उपशांति करने वाले श्री.....।।२८९।।
प्रत्याख्यान क्रोध कषाय विनाशन का उपाय दिखाने वाले श्री.....।।२९०।।
प्रत्याख्यान मान कषाय नाश का उपाय दिखाने वाले श्री.....।।२९१।।
प्रत्याख्यान माया कषाय नाश का उपाय बतलाने वाले श्री.....।।२९२।।
प्रत्याख्यान लोभ कषाय के विनाश का उपाय दिखलाने वाले श्री.....।।२९३।।
संज्वलन क्रोध कषाय के नाश करने की बुद्धि देने वाले श्री.....।।२९४।।
संज्वलन मान कषाय के नाश करने की बुद्धि के प्रदायक श्री.....।।२९५।।
संज्वलन माया कषाय के नाश करने की बुद्धि के प्रदाता श्री.....।।२९६।।
संज्वलन लोभ कषाय के विनाशन की बुद्धि के प्रदायक श्री.....।।२९७।।
हास्य नोकषाय नाश करने की युक्ति के प्रदायक श्री.....।।२९८।।
रति नोकषाय नाश करने की युक्ति के प्रदाता श्री.....।।२९९।।
अरति नोकषाय नाश करने की युक्ति के प्रदाता श्री.....।।३००।।
शोक नोकषाय नाश करने की युक्ति के प्रदाता श्री.....।।३०१।।
भय नोकषाय नाश करने की युक्ति के प्रदाता श्री.....।।३०२।।
जुगुप्सा नोकषाय को नष्ट करने की युक्ति बतलाने श्री.....।।३०३।।
अनेक भेदों से समन्वित मतिज्ञान को देने वाले श्री.....।।३०४।।
अनेक भेदों से समन्वित श्रुतज्ञान को प्रदान करने वाले श्री.....।।३०५।।
अनेक भेदों से सहित अवधि ज्ञान को प्रदान करने वाले श्री.....।।३०६।।
विविध भेदों से युक्त मनःपर्यय ज्ञान के प्रदाता श्री.....।।३०७।।
असहाय और अतीन्द्रिय केवलज्ञान को प्रदान करने वाले श्री.....।।३०८।।

कुमति ज्ञान के विनाशन की युक्ति को देने वाले श्री.....।।३०६।।
कुश्रुत ज्ञान के विनाशन की युक्ति को देने वाले श्री.....।।३१०।।
विभंगावधि ज्ञान के नष्ट करने की युक्ति के प्रदाता श्री.....।।३११।।
सामायिक नाम के संयम के प्रदायक श्री.....।।३१२।।
छेदोपस्थापना संयम के प्रदाता श्री.....।।३१३।।
परिहार विशुद्धि संयम के प्रदाता श्री.....।।३१४।।
सूक्ष्म सांपराय संयम के प्रदायक श्री.....।।३१५।।
यथाख्यात शुद्धि संयम के प्रदायक श्री.....।।३१६।।
संयमासंयम को पूर्ण कराने वाले श्री.....।।३१७।।
असंयम के निराकरण की युक्ति को प्रदान करने वाले श्री.....।।३१८।।
चक्षुर्दर्शन के सार्थक कराने वाले श्री.....।।३१६।।
अचक्षुर्दर्शन को सार्थक कराने वाले श्री.....।।३२०।।
अवधि दर्शन को सार्थक कराने वाले श्री.....।।३२१।।
केवल दर्शन को प्राप्त करने की युक्ति को प्रदान करने वाले श्री.....।।३२२।।
कृष्ण लेश्या को विध्वंस करने की बुद्धि के प्रदाता श्री.....।।३२३।।
नील लेश्या को विध्वंस करने की बुद्धि के प्रदाता श्री.....।।३२४।।
कापोत लेश्या को विध्वंस करने की बुद्धि के प्रदाता श्री.....।।३२५।।
पीत लेश्या को सार्थक करने की युक्ति के प्रदाता श्री.....।।३२६।।
पद्म लेश्या को सफल करने की युक्ति के प्रदाता श्री.....।।३२७।।
शुक्ल लेश्या को सफल करने की युक्ति के प्रदाता श्री.....।।३२८।।
भव्य मार्गणा से विरहित सिद्ध पद के प्रदाता श्री.....।।३२६।।
अभव्यमार्गणा से विरहित सिद्ध पद के प्रदाता श्री.....।।३३०।।
औपशमिक सम्क्त्व के प्रदाता श्री.....।।३३१।।
क्षायिक सम्क्त्व के प्रदाता श्री.....।।३३२।।
क्षायोपशमिक सम्यक्त्व के प्रदाता श्री.....।।३३३।।
मिथ्यात्व शत्रु के विनाशन की युक्ति के प्रदाता श्री.....।।३३४।।
सासादन सम्यक्त्व के विनाशन की युक्ति के प्रदाता श्री.....।।३३५।।
मिश्र सम्यक्त्व के विनाशन की युति के प्रदाता श्री.....।।३३६।।
संज्ञीमार्गणा के सदुपयोग करने की बुद्धि के प्रदाता श्री.....।।३३७।।
असंज्ञी मार्गणा के विनाशन की युक्ति के प्रदाता श्री.....।।३३८।।
आहारक मार्गणा से विरहित पद के प्रदाता श्री.....।।३३६।।
अनाहारक मार्गणा से विरहित सिद्ध पद के प्रदाता श्री.....।।३४०।।
आज्ञा सम्यक्त्व के प्रदायक श्री.....।।३४१।।
मार्ग सम्यक्त्व के प्रदायक श्री.....।।३४२।।
उपदेश सम्यक्त्व के प्रदायक श्री.....।।३४३।।
सूत्र सम्यक्त्व के प्रदायक श्री.....।।३४४।।
बीज सम्यक्त्व के प्रदायक श्री.....।।३४५।।

संक्षेप सम्यक्त्व के प्रदायक श्री.....।।३४६।।
विस्तार सम्यक्त्व के प्रदायक श्री.....।।३४७।।
अर्थ सम्यक्त्व के प्रदाता श्री.....।।३४८।।
अवगाढ़ सम्यक्त्व के प्रदाता श्री.....।।३४९।।
परमागाढ़ सम्यक्त्व के प्रदाता श्री.....।।३५०।।
विशेष – ये दश सम्यक्त के नाम हैं।
अनंत प्राणी गणों को अभयदान देने वाले अहिंसा महाव्रत के विधाता श्री.....।।३५१।।
दिव्य ध्वनि के लिये कारण स्वरूप सत्य महाव्रत के विधाता श्री.....।।३५२।।
अनंत चतुष्टय के लिये कारण स्वरूप अचौर्य महाव्रत के विधाता श्री.....।।३५३।।
सिद्धि कन्या के मुख का अवलोकन कराने वाले ब्रह्मचर्य महाव्रत के विधाता श्री.....।।३५४।।
तीन लोक के साम्राज्य के लिये कारण स्वरूप अपरिग्रह महाव्रत के विधाता श्री.....।।३५५।।
चार हाथ आगे जमीन देखकर सावधानीपूर्वक चर्या के करने वाले ईर्या समिति के प्रतिपादक श्री महावीर.....।।३५६।।
सर्वजनों को आल्हादित करने वाले भाषा समिति के प्रतिपादक श्री.....।।३५७।।
शरीर से संबंधित सज्जाति से पिंड शुद्धि तथा छयालीस दोष बत्तीस अंतराय टालकर आहार ग्रहण की शुद्धि ऐसे दोनों प्रकार की पिंड शुद्धि से समन्वित ऐषणा समिति के प्रतिपादक श्री.....।।३५८।।
जीवों की रक्षा करने में समर्थ ऐसी आदान निक्षेपण समिति के प्रतिपादक श्री.....।।३५९।।
शरीर शुद्धि के लिये कारण ऐंसी उत्सर्ग समिति के प्रतिपादक श्री.....।।३६०।।
संसार समुद्र से पार करने में समर्थ स्पर्शनेन्द्रिय निरोध व्रत के प्रतिपादक श्री.....।।३६१।।
अतीन्द्रिय पद के प्रदान करने में समर्थ रसनोन्द्रिय निरोध व्रत के प्रतिपादक श्री.....।।३६२।।
आत्मा की सुगंधि को प्रदान करने वाले घ्राणोन्द्रिय निरोध व्रत के प्रतिपादक श्री.....।।३६३।।
शुद्ध बुद्ध स्वरूप निज आत्मा के अवलोकन के लिये कारण ऐसे चक्षुरिन्द्रिय निरोध व्रत के प्रतिपादक श्री.....।।३६४।।
तीनों लोकों की जनता के उपदेश के लिये कारण ऐसे कर्णोन्द्रिय जय व्रत के प्रतिपादक श्री महावीर.....।।३६५।।
सर्व जीवों में मैत्री भाव स्वरूप समता-सामायिक नाम की आवश्यक क्रिया के उपदेशक श्री महावीर.....।।३६६।।
तीनों लोकों में यश को फैलाने में कारण ऐसी स्तव नाम की आवश्यक क्रिया के उपदेशक श्री महावीर.....।।३६७।।
जगत् वंद्य पद के लिये कारणभूत ऐसी वंदना नाम की आवश्यक क्रिया के उपदेशक श्री.....।।३६८।।
संपूर्ण दोषों को दूर करने में कारणभूत ऐसी प्रतिक्रमण नाम की आवश्यक क्रिया के उपदेशक श्री महावीर.....।।३६९।।
सर्वसावद्य-हिंसादि प्रवर्तक योगों के त्याग के कारणभूत प्रत्यख्यान की आवश्यक क्रिया के उपदेशक श्री महावीर.....।।३७०।।
परिपूर्ण देह से ममत्वत्याग स्वरूप कायोत्सर्ग नाम की आवश्यक क्रिया के उपदेशक श्री महावीर.....।।३७१।।
दो प्रकार के मुंडन के लिये मुद्रा के धारक आचेलक्य मूल गुण के प्रतिपादक श्री.....।।३७२।।

जन्मजात निर्विकार मुद्रा अस्नान व्रत के उपदेशक श्री.....।।३७३।।

परमपवित्रता के कारणभूत अस्नान व्रत के उपदेशक श्री.....।।३७४।।

परममोक्षधाम में विश्राम के लिये कारण क्षितिशयन-भूमिशयन व्रत के उपदेशक श्री महावीर.....।।३७५।।

परम सुंदरता के लिये कारण स्वरूप अदंतधावन व्रत के उपदेशक श्री.....।।३७६।।

अपनी शुद्धात्मा के अनुभव रूप अमृतास्वादन के लिये कारणभूत ऐसे स्थिति भोजन नाम के मूलगुण व्रत के उपदेश में तत्पर श्री.....।।३७७।।

आहार, विहार और नीहार से विरहित परमानंद पद के लिये कारण ऐसे, 'एकंभक्त' व्रत के उपदेशक श्री.....।।३७८।।

शत्रुभाव के निवारण में समर्थ उत्तम क्षमा धर्म से परिणत श्री.....।।३७९।।

संपूर्ण अहंकार के विनाशन में समर्थ उत्तम मार्दव धर्म के उपदेशक श्री.....।।३८०।।

तिर्यंच योनि में गमन के लिये कारण ऐसी माया दोष से विरहित उत्तम आर्जव धर्म के उपदेशक श्री महावीर.....।।३८१।।

परम पवित्रता के निये निमित्त ऐसे उत्तम शौच धर्म के उपदेशक श्री.....।।३८२।।

सर्वजन के लिये वशीकरण ऐसे उत्तम सत्यधर्म के उपदेशक श्री.....।।३८३।।

संपूर्ण असंयम के निवारण में समर्थ उत्तम संयम धर्म के उपदेशक श्री.....।।३८४।।

अनंत संसार में पतन के निवारण में समर्थ उत्तम तप धर्म के उपदेशक श्री.....।।३८५।।

स्वात्म सौख्य के प्रदायक उत्तम त्याग धर्म के उपदेशक श्री.....।।३८६।।

तीनों लोकों में श्रेष्ठ ऐसे पद को प्रदान करने में समर्थ उत्तम आकिंचन्य धर्म के उपदेशक श्री महावीर.....।।३८७।।

परम निराकुल सुख के लिये कारणभूत उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म के उपदेशक श्री.....।।३८८।।

स्वात्मसुधा के आस्वादन में कारण ऐसे अनशन तप के प्रतिपादक श्री.....।।३८९।।

स्वात्मा की पुष्टि के लिये कारण ऐसे अवमौदर्य तप के प्रतिपादक श्री.....।।३९०।।

नाना प्रकार के संकल्प रूप आत्मा को संतुष्ट करनेवाले ऐसे वृत्तपरिसंख्यान तप के प्रतिपादक श्री महावीर.....।।३९१।।

नानाविध ऋद्धियों को प्रदान करने वाले ऐसे रस परित्याग नाम के तप के प्रतिपादक श्री महावीर.....।।३९२।।

स्वात्मा में रमण के लिये कारण विविक्त शयनासन तप के प्रतिपादक श्री.....।।३९३।।

आत्मा की पुष्टि करने वाले कायक्लेश तप के प्रतिपादक श्री.....।।३९४।।

असंख्यात लोक प्रमाण जो अपराध उनकी शुद्धि को करने वाले ऐसे प्रायश्चित्त तक के प्ररूपक श्री महावीर.....।।३९५।।

मुक्ति महल के द्वार स्वरू नानाविध विनय तप के प्ररूपक श्री.....।।३९६।।

नाना विध तपश्चरण के प्राण स्वरूप वैयवृत्य तक के प्ररूपक श्री.....।।३९७।।

स्वात्मा के अध्ययन के लिये कारणभूत सर्वश्रेष्ठ स्वाध्याय तक के प्ररूपक श्री.....।।३९८।।

कर्मक्षय के लिये कारणभूत तप के प्ररूपक श्री.....।।३९९।।

सिद्धशिला के अग्रभाग को प्राप्त कराने में समर्थ नानाविध ध्यान तप के प्ररूपक श्रीमहावीर स्वामी के लिये मैं अ र्घ चढ़ाता हूँ।।४००।।

वीर ज्ञानेदय ग्रन्थमाला

विश्वशांति महावीर विधान की आरती

रचयित्री – आर्यिका चन्दनामती

विश्वशांति महावीर विधान की, आरति कर लो आज।
तीर्थंकर महावीर की महिमा, गाओ सब मिल आज।।
आओ सब मिल उतारें प्रभु आरती, आओ सब मिल उतारें प्रभु आरती। टेक.।।
तीर्थंकर की परम्परा में, चौबिसवें तीर्थंकर।
सत्य अहिंसा अनेकान्त के, पोषक वीर जिनेश्वर।।
आओ सब मिल उतारें प्रभु आरती, आओ सब मिल उतारें प्रभु आरती ।।१।।
पितु सिद्धारथ माता त्रिशला, के नन्दन महावीरा।
चैत्र सुदी तेरस को कुण्डलपुर में जन्मे वीरा।।
आओ सब मिल उतारें प्रभु आरती, आओ सब मिल उतारें प्रभु आरती ।।२।।
छब्बिस सौवाँ जन्मकल्याणक, महावीर का आया।
शासन औ जनता ने मिलकर, उत्सव खूब मनाया।।
आओ सब मिल उतारें प्रभु आरती, आओ सब मिल उतारें प्रभु आरती ।।३।।
छब्बिस सौ गुण के सूचक, छब्बिस सौ मंत्र हैं इसमें।
गणिनी माता ज्ञानमती ने, रचा पाठ भक्ती से।।
आओ सब मिल उतारें प्रभु आरती, आओ सब मिल उतारें प्रभु आरती ।।४।।
मेरु सुदर्शन के मंडल पर, रत्न चढ़ाए जाते।
श्रद्धा से पूजा कर श्रावक, भक्ती का फल पाते।।
आओ सब मिल उतारें प्रभु आरती, आओ सब मिल उतारें प्रभु आरती ।।५।।
घृत दीपक से आरति करके, भव आरत टलता है।
तभी "चन्दनामती" हृदय में ज्ञानामृत बहता है।।
आओ सब मिल उतारें प्रभु आरती, आओ सब मिल उतारें प्रभु आरती ।।६।।

भजन

रचयित्री - प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

(तर्ज - श्री सिद्धचक्र का पाठ.....)

श्री विश्वशान्ति का पाठ, करो सब ठाट बाट से प्राणी,
प्रभु भक्ती है कल्याणी। टेक.।।

इस आर्यखण्ड की धरती पर,
जन्मा करते हैं तीर्थंकर।
उनसे ही लाभ उठाते जग के प्राणी,
प्रभु भक्ती है कल्याणी।।१।।

महावीर ने जन्म लिया था जब।
भारत भू धन्य हुई थी तब।।
खुश थे सिद्धारथ पिता व त्रिशला रानी,
प्रभु भक्ती है कल्याणी।।२।।

है प्रान्त विहार में कुण्डलपुर।
जहाँ वीर जनम में रत्नवृष्टि।।
है ग्रन्थ पुराण में वह प्राचीन कहानी,
प्रभु भक्ती है कल्याणी।।३।।

प्रभु वीर के जन्मकल्याणक में।
रचा पाठ ज्ञानमति माता ने।।
नूतन विधान की कृति अतिशय सुखदानी,
प्रभु भक्ती है कल्याणी।।४।।

छब्बिस सौ मंत्र सहित विधान।
महावीर गुणों का जो निधान।।
श्री विश्वशांति महावीर विधान की वाणी,
प्रभु भक्ती है कल्याणी।।५।।

मेरू पर रत्न चढ़ा करके।
इस महायज्ञ को जो करते।।
वे पुण्यरतन के बन जाते हैं स्वामी,
प्रभु भक्ती है कल्याणी।।६।।

हे प्रभु ! मैं भी कुछ गुण पाऊँ।
तुम चरणों में मैं रम जाऊँ।।
"चन्दनामती" है पाठ की यही निशानी,
प्रभु भक्ती है कल्याणी।।७।।